॥ श्रीः ॥

रोहतासमठ

श्री दुर्गा प्रसाद खत्री रचित

लहरी बुक डिपो

वाराणसी

—०—

प्रकाशक—

श्री कृष्णापति शर्मा,

लहरी बुक डिपो,

वाराणसी ·

मूल्य :—

सजिल्द—१० -　　　　　　अजिल्द—८ ५०

मुद्रक—

लहरी प्रेस,

वाराणसी ।

॥ श्रीः ॥

रोहतासमठ

उपन्यास

पहिला भाग

—:*:—

पहिला बयान

"यह है, यह यहां छिपा है !!"

"कहां ? कहां ?"

"इधर, यहां देखिये, इस झाड़ी में !"

"देखो जाने न पावे, अभी आया !"

सरपट दौड़ते आने वाले घोड़े के टापों की आवाज सुनाई पड़ी और एक नौजवान जिसके चेहरे से पसीने की लकीरें बह रही थी लम्बा भाला हाथ मे लिए घोड़ा उछालता हुआ वहां आ पहुंचा। कुछेक हांफते हुए उसके मुंह से निकला, "कहां है ! कहा है वह कम्बख्त !!" दूसरे घुड़सवार ने बता कर कहा, "वह देखिए छिपा बैठा है—पर सम्हलिए, बचिए, देखिए वह झपटना चाहता है !!" झाड़ी मे से एक भयानक रीछ अपने मुंह से झागदार फेन गिराता हुआ बाहर निकला और सीधा इस

नये आने वाले घुड़सवार पर झपटा। मगर हमारा नौजवान भी कोई कम फुर्तीला नहीं था, इसके पहिले कि गुस्से से पागल हुए भये उस खूनी जानवर के भयानक पंजे नौजवान अथवा उसके घोड़े के बदन को लहू लुहान कर दे, उसका लम्बा बरछा पीछे हटा और तब तेजी से आगे बढ़ कर उस रीछ के बदन में धंस गया। मगर उस जानवर का धक्का भी भयंकर था। उस तरफ वह रीछ भाले की चोट खाकर डरावने तौर पर बलबलाता हुआ जमीन पर गिरा और इधर उसका धक्का खाके वह नौजवान भी घोड़े पर से नीचे आ रहा।

दूसरा नौजवान फौरन अपने घोड़े पर से कूद पड़ा और उस गिरते हुए जवान को सम्हाल कर उसने इस खयाल से अपनी भुजाली पर हाथ रक्खा कि शायद वह रीछ पुनः हमला करे मगर वह जानवर इस समय जमीन पर पड़ा हुआ था अस्तु इसने अपने दोस्त पर ध्यान दिया। रूमाल निकाल के उसका मुंह पोंछा और तब उसी से हवा करते हुए व्याकुल स्वर से बार बार पूछने लगा, "कुमार, कुमार, क्या हुआ? क्या चोट खा गए।" उस नौजवान ने उसी समय आंखें खोल दी और कुछ मुस्कुरा कर कहा, "नहीं, यों ही जरा गश सा आ गया था, पर वह भालू कहां गया?"

सहारा देकर अपने दोस्त को खड़ा करते हुए उस नौजवान ने हाथ से बताया—"वह उधर पड़ा है! मगर है, यह क्या!!"

वह भालू उस जगह कहीं न था, जमीन खाली पड़ी थी, मगर खून की एक पतली लकीर वहां से एक तरफ कुछ दूर को चली गई थी जिसे देख नौजवान बोला, "मालूम होता है वह कम्बख्त कहीं भाग गया, मगर ताज्जुब की बात है, अभी अभी तो पड़ा था, इसी बीच में निकल कहां गया!!"

"खैर जायगा कहां वह पाजी, यह खून की लकीर हमें उसका पता बतावेगी!" कहता हुआ वह नौजवान जिसे उसके साथी ने कुमार के नाम से सम्बोधित किया था उठ खड़ा हुआ और अपने घोड़े की तरफ

वढ़ा। उसका साथी भी अपने घोड़े के पास गया मगर रकाब पर पांव धरा ही था कि चमक कर रुक गया। उसके कानों मे कहीं से आता हुआ बांसुरी का कोमल स्वर पड़ा था। घनघोर भयानक जंगल मे यह वांसुरी कौन बजा रहा है। दोनों नौजवान अचम्भे के साथ इधर उधर देखने लगे। वांसुरी का मधुर संगीत दोनों को मुग्ध करने लगा।

आखिर उनसे रहा न गया और एक ने कहा, "पता लगाना चाहिए कि इस निर्जन जंगल मे बासुरी कौन बजा रहा है!" दूसरा बोला, "क्या रीछ को छोड दोगे?" पर कुमार ने अपने घोडे की लगाम बांह में डाल ली और उसी आवाज की सीध पर बढ़ा। लाचार दूसरा नौजवान भी उसके पीछे हुआ।

जिस जगह ये दोनों थे वह एक पहाड़ी की चोटी थी और वहां चारो तरफ मकोय झरबेरी तथा दूसरे वैसे ही जंगली पेड़ो ने एक किस्म का जंगल सा बना रक्खा था जिससे ज्यादा दूर तक दिखाई देना कठिन था। दोनों दोस्त कुछ ही आगे बढ़े होंगे कि उन्हे एक पतली सी पगडण्डी नजर आई और उस पर कुछ कदम चलने के बाद ही यकायक आगे जाकर उस पहाड़ी की उतार शुरू हो गई। सामने थोड़ी ही दूर एक दूसरी पहाड़ी दिखाई पड़ी और इन दोनो के बीच की तलहटी मे बने और जंगली पेड़ों से घिरे हुए एक छोटे से मकान पर इनकी निगाह पड़ी जिसके इस जगह होने का अभी तक इन्हे कोई शानगुमान भी न था। दोनो ताज्जुब करते हुए उसी जगह रुक गये और कुमार ने उंगली से उस मकान की तरफ बताते हुए पूछा, "इस सूनसान भयानक जंगल मे वह मकान किसका है?" उसके साथी ने भी उसी की तरह ताज्जुब से उंगली उठा कर कहा, "और वह औरत कौन है जो उसकी छत पर बैठी बांसुरी बजा रही है!"

सचमुच उस मकान के ऊपर वाली निगोल पर एक कमसिन औरत बैठी हुई बांसुरी वजा रही थी और इसमे कोई शक नहीं कि इसी

बांसुरी की आवाज ने हमारे नौजवानों के कानों मे पड़ कर उनके दिलों मे इस कदर खलबली पैदा कर दी थी कि शिकार का खयाल छोड़ इस तरफ चल निकले थे। कुछ देर तक ये दोनो उस औरत की तरफ देखते रहे और तब एक ने दूसरे से कहा, "चल के देखना चाहिए कि यह कौन है और ऐसी जगह मे किस लिए रहती है!" दोनो उस तरफ बढ़े।

वह पगडण्डी घूमती फिरती पहाड़ी के नीचे उतर गई थी और अन्दाज से मालूम होता था कि उस मकान तक गई होगी, इसलिए हमारे नौजवानो ने उसी का सहारा पकड़ा और मकान की तरफ बढ़े यहां तक कि पहाड़ो की आधी ऊचाई उतर आए। इस जगह घने पेड़ो की आड़ पड़ जाने के कारण वह मकान या उसकी छत पर बैठी वह औरत तो यद्यपि दिखाई नही पड़ती थी मगर यहां से सामने ही एक पुराना कूआं और उसकी जगत से सट कर दूर तक गई अनगढ़ पत्थरों की बनी एक चारदीवारी जरूर नजर आई। दोनो नौजवानो ने एक दूसरे से निगाह मिलाई और तब उसी दीवार की तरफ बढ़े जिसमे कुछ आगे जाकर एक छोटा सा दर्वाजा भी दिखाई पड़ रहा था। बीस पचीस गज और जाने के बाद वह दर्वाजा आ पहुंचा और उसे भिड़का हुआ पा एक ने उस पर हाथ रक्खा। धक्का देते ही दर्वाजा खुल गया और एक छोटा सा मकान दिखाई पड़ा जो वही था जिस पर दूर से इन दोनों की निगाह पड़ी थी। ठीक सामने एक दालान था जिसमे काठ की मामूली चौकी पर एक मृगछाला बिछी हुई और नीचे धूनी लगी हुई थी और उस धूनी के पास इन लोगो की तरफ पीठ किए बैठा हुआ एक साधु कुछ कर रहा था। दर्वाजा खुलने की आहट पा उसने घूम कर इस तरफ देखा और तब चौंक कर बोला, "अहा, कुंअर गोपालसिंह और उनके दोस्त कामेश्वरसिंह आ गए? आओ आओ, मैं तुम्हारे ही इन्तजार मे बैठा हुआ हूं!"

हमारे दोनों नौजवानों ने एक दूसरे की तरफ देखा। गोपालसिंह ने धीरे से पूछा, "भीतर चलना चाहिए?" कामेश्वर ने जवाब दिया, "क्या हर्ज है!" मगर इनकी हिचकिचाहट को उस सुन्दरी ने दूर किया जो बगल की सीढी से उतरती हुई इसी समय वहां आ पहुँची थी और उस साधू से पूछ रही थी, "बाबूजी, आप आ गए? और मुझे पता ही नही। मगर हैं, यह क्या? यह खून आपके बदन से क्यों निकल रहा है!" साधू ने उठते हुए कहा, "यह कुछ नही हैं बेटी, या जो है वह धोखा है! तू इसकी चिन्ता न कर और उस खूंटी पर से कम्बल उतार कर यहां बिछा दे, देख मेरे व मेहमान आ पहुँचे जिनकी राह मैं देख रहा था।" उस सुन्दरी ने यह सुनते ही घूम कर पीछे की तरफ देखा परन्तु हमारे नौजवानों की गहरी निगाह अपने ऊपर जमी पा सकुचा के गर्दन घुमा ली और तब एक तरफ को हट गई। साधू ने इसी समय पुनः इन लोगो की तरफ देखा और कहा, "आओ राजकुमार, आओ कामेश्वर, रुके क्यो हो?"

घोडों को दर्वाजे के पास ही एक पेड के साथ बांध कुंअर गोपालसिंह और कामेश्वर भीतर घुसे। साधू दो चार कदम अगवानी के लिए इनकी तरफ बढ़ आया और तब उन्होंने देखा कि उसके कपड़ों पर जगह जगह खून के छीटे पडे हुए है, मगर इस पर गौर करने का उन्हे समय न मिला क्योंकि वह साधू पुनः बोला, "आओ, इस कम्बल पर बैठो, और उन बातों को गौर से सुनो जिन्हें तुमसे कहने के लिए ही मैं यहां बैठा हूं।"

कुछ कुछ हिचकते हुए दोनों दोस्त बीच का फासला तय कर उस दालान मे पहुँचे और उस कम्बल पर बैठ गए जिसे सुन्दरी ने इनके लिए बिछा दिया था। दूर से जिसे औरत समझा था, पास से देखने पर हमारे नौजवानो ने उसे एक कम उम्र लड़की पाया। सरसरी निगाह देखने से उसकी अवस्था मुश्किल से पन्द्रह सोलह बरस की मालूम होती

थी परन्तु मामूली कपड़ो के भीतर से भी उसका सौन्दर्य फूट फूट कर निकल रहा था। इस समय वह कुछ संकोच के साथ एक तरफ की दीवार से सटी हुई खड़ी थी पर बार बार इन लोगों की तरफ छिपा निगाह भी डालती जाती थी।

अपना ध्यान उसकी तरफ से जबर्दस्ती हटाते हुए कामेश्वर ने उन साधू महाराज से कहा, "इस निर्जन स्थान मे आपको और आपके इस आश्रम को देख हमे आश्चर्य होता है क्योंकि पचासो ही दफे शिकार खेलते हुए इधर आ चुके है पर कभी यहा किसी ऐसे स्थान के होने का अब तक गुमान भी न हुआ था। पर आप कौन है, यहा किस लिए रहते है, और हम दोनो को आपने कैसे पहिचान लिया यह सब जानने के पहिले मै यह पूछना चाहता हूं कि आपके कपड़ो पर जगह जगह खून क्यो पड़ा हुआ है!"

साधू महाराज अपने मृगचर्म पर बैठते हुए बोले, "यह मेरा नही है, फिर भी मुझे कुछ चोट जरूर लग गई है!" मगर कामेश्वर ने कहा, "नहीं किसी साधारण चोट से इतना खून नहीं निकल सकता। क्या बात है, स्पष्ट कहिए?" साधू ने हंसते हुए जवाब दिया, "एक नौजवान ने शिकार खेलते हुए चोट पहुंचा दी।" और तब लम्बा कुरता जो उसके बदन पर पड़ा हुआ था उठा कर दिखाया। दोनो ने देखा कि साधू महाराज के कन्धे के पास, कुछ बगल हट कर एक हलका सा घाव है जिस पर यद्यपि उन्होंने धूनी की राख मल दी है फिर भी रह रह कर जरा जरा खून निकल पडता है। गोपालसिंह के मुंह से बरबस निकल गया, "साधू महाराज, मुझे कुछ शक होता है? अभी अभी मैंने एक भालू को अपने नेजे से जख्मी किया था पर वह खून की लकीरें छोड़ता हुआ अद्भुत रीति से गायब हो गया। मगर आपका 'यह' घाव भी भाले की चोट की ही तरह मालूम पड़ते हुए भी इतना गहरा नही है कि उतना खून निकल सके! क्या..?"

साधू महाराज जोर से हंस पड़े और बोले, "कुमार, इसके लिए

चिन्ता करने की तुम्हें जरूरत नही ! मुझे तुमको इस जगह लाना था और इसीलिए कुछ तरकीब करनी पड़ी, तुम इसकी फिक्र छोड़ो और जो कुछ मै कहता हूं उसे ध्यान से सुनो ! (उस सुन्दरी की तरफ देख कर) बेटी नन्हों, जरा मेरा वह झोला तो ले आ जो भीतर खूंटी पर टंगा है ।" वह लड़की उस कोठड़ी के अन्दर चली गई जिसका दर्वाजा दालान की बगली दीवार मे नजर आ रहा था और वे साधू महाराज घूम कर अपने आसन के नीचे से कोई चीज निकालने लगे, मगर उसी समय कामेश्वर ने झुक कर धीरे से गोपालसिंह से कहा, "कुमार, कुछ देखते हो ? दर्वाजे से वह देखो साधू महाराज की चौकी तक, भालू के पंजो का निशान पड़ा हुआ है और खून की बूंदें भी जगह जगह गिरी हुई है !" गोपालसिंह ने धीरे से जवाब दिया, "केवल यही नहीं, दर्वाजे के बाहर भी जमीन पर भालू के पैरों और पजों के दाग थे और कुछ खून भी गिरा हुआ था जिसको देख मै हिचकिचाया था जब इन्होंने हम लोगों को भीतर बुला लिया !"

कामेश्वर ने पूछा, "तब क्या हम यह समझें कि ये साधू महाराज ही भालू बने हुए ऊपर जंगल मे विचर रहे थे ?" पर गोपालसिंह को अपनी राय जाहिर करने का मौका न मिला । साधू महाराज उसी समय पलट पड़े और वह सुन्दरी भी जिसे उन्होंने नन्हों के नाम से सम्बोधित किया था एक गेरुए रंग का बड़ा सा झोला लिए हुए वहां आ पहुंची जिसे उसने साधू महाराज के पास रख दिया और तब शर्मीली निगाह दोनों नौजवानों पर डालती हुई एक बगल जा खड़ी हुई । साधू ने उससे कहा, "बेटी नन्हों, मुझे इन दोनों से कुछ गुप्त बातें करनी है । तुम वह दर्वाजा बन्द कर दो और पीछे जाकर इनके लिए कुछ जलपान का बन्दोबस्त करो ।" "अच्छा बाबूजी" कह वह लड़की वहां से हटी और तब इन दोनो पर पुनः तेज निगाहे डालती हुई दालान के नीचे उतर गई, चारदीवारी मे बना वह दर्वाजा बन्द कर दिया, और तब घूमती हुई

इमारत के पीछे की तरफ चली गई। मगर यदि हमारे गोपालसिंह ने नही तो कामेश्वरसिंह ने यह अवश्य लक्ष्य किया कि उसे इस समय यहा से हटना अच्छा न लगा और उसकी निगाहे आखीर तक उस कोने पर पड़ती रही जो उसने लाकर अपने पिता के सामने रक्खा था।

इसी समय उस साधू ने कहा, "नौजवानों, देखो तुम इस इमारत को पहिचानते हो ?" और तब एक कागज इनके सामने रख दिया जो उन्होंने अपनी मृगछाला के नीचे से निकाला था। हमारे दोनों दोस्तो ने उसे गौर कर देखा और साथ ही कुंअर गोपालसिंह बोल उठे, "अरे यह तो वही खंडहर है जो हमारे राज्य की सरहद पर पड़ता है और जिसके पास ही मेरे पिता का वह शिकारगाह है जहां हम लोग कई दफे जा चुके है।" कामेश्वर ने भी कहा, "ठीक हे, और इसी जगह वह विचित्र गोल मटोल पहाड़ी है जिसे लोग 'लुटिया पहाड़ी' के नाम से पुकारते है और जिस पर एक मन्दिर बना हुआ है।"

साधू इनकी बातें सुन बोले, "ठीक है, यह वही जगह है, मगर क्या तुम्हे यह भी मालूम है कि यह खण्डहर एक बहुत ही पुराना तिलिस्म है और उसके अन्दर करोड़ो रुपये की दौलत रक्खी हुई है।"

कामेश्वर के चेहरे से इस सवाल के साथ ही आश्चर्य का भाव प्रकट होने लगा मगर कुंअर गोपालसिंह तुरत बोल उठे, "मैने अपनी मां के मुंह से एक बार सुना था कि उस जगह कोई बहुत बड़ा खजाना गडा हुआ है, पर वहा कोई तिलिस्म भी है इसका हाल मुझे मालूम न था।"

साधू बोले, "ठीक है मगर अब तुम्हे यह मालूम हो जाना चाहिए कि वह एक ऐसा तिलिस्म है जो तुम्हारे हाथों से टूटेगा और जिसकी ताली देखो यह हे!" कहते हुए उन्होंने अपने झोले में हाथ डाला और उसमे से कोई चमकती हुई चीज निकाल कर अपने सामने रक्खी। वह एक छोटा सा सुनहला डिब्बा था जिसे खोलते हुए उन साधू महाराज ने कहा, "कितने ही जमाने से यह चीज मेरे पास एक पवित्र धरोहर

की तरह चली आ रही थी, मगर आज इसे उन हाथो मे जाने की घड़ी आ गई जिनके लिए यह वास्तव मे बनी है, इस किताब मे जो तुम इसके अन्दर रक्खी देख रहे हो उस तिलिस्म को तोडने की तर्कीब लिखी हुई है और इसे लेकर तुम्हे आज ही आधी रात के समय उस काम के लिए रवाना हो जाना पड़ेगा !"

कुअर गोपालसिह बोले, "आपकी आज्ञा मेरे सिर माथे पर है और जिस खजाने का आप जिक्र करते है उसकी चाह लालच पैदा करती है, मगर आप ही सोचिए कि मै बिना अपने पिताजी की आज्ञा पाए किसी ऐसे बडे काम मे क्योकर हाथ लगा सकता हू ?" साधू ने यह सुन कर कहा, "तुम्हारा कहना ठीक है, मगर मेरी जानकारी यह भी कहती है कि अगर आज ही वह काम शुरू न कर दिया जायगा तो फिर शायद बरसों तक उसको पूरा करने का मौका न मिलेगा, अस्तु अपने पिता की आज्ञा की चिन्ता न करो और जो कुछ मैं कहता हूं उसे गौर से सुन कर इस मुहिम पर रवाना हो जाओ।"

गोपालसिह इस बात कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि यकायक मकान के पीछे की तरफ से किसी औरत के चीखने की आवाज आई जिसे सुनते ही वे साधू महाराज घबड़ा गए और यह कहते हुए अपनी जगह से उठ खडे हुए—"क्या हुआ ? क्या हुआ ? नन्हो चिल्लाई क्यों ?" तब दोनों आदमियो से यह कह कर कि—"तुम लोग जरा ठहरो, मैं अभी आया।" वहां से हट कर उस कोठरी के अन्दर घुस गये जहां से नन्हो उनका झोला निकाल कर लाई थी। दोनों दोस्त कुछ देर तक तो बैठे रहे, फिर गोपालसिह ने कामेश्वर से कहा, "अब क्या करना चाहिए दोस्त ?" कामेश्वर ने इधर उधर देख कर कहा, "यह तो मैंने भी सुना है कि उस खण्डहर मे कोई बहुत बड़ा खजाना गडा हुआ है मगर बिना महाराज की आज्ञा लिए इतने बडे काम पर चले जाने की राय मै कभी नही दे सकता।" गोपालसिह बोले, "यही बात है, मगर

साधू महाराज का यह कहना कि अगर आज यह काम न शुरु होगा तो फिर वरसों तक......"

गोपालसिंह की बात पूरी न हो सकी। यकायक उस कोठड़ी के अन्दर से किसी भयंकर जानवर के चिग्घाड़ने की खौफनाक आवाज आई और इसके साथ ही एक बहुत बड़ा भालू उसके अन्दर से बाहर निकल कर चिग्घाड़ मारता हुआ इनकी तरफ बढ़ा। हमारे दोनो दोस्त उसे देखते ही घबड़ा कर उठ खड़े हुए और अपने अपने हरबे सम्हालने लगे, साथ ही कामेश्वर ने घबडाये हुए ढंग से कहा, "कुमार, यह तो वही रीछ है जिसको तुमने जख्मी किया था!" और कुअर गोपालसिंह ने अपना नेजा उठाया, मगर उसकी जरूरत न पड़ी। वह खूंखार जानवर एक सायत तक इन दोनो को अपनी लाल लाल छोटी छोटी आखो से देखता रहा, और तब झपटता हुआ मकान के पीछे की तरफ, उधर ही को लपका जिधर कुछ देर पहिले वह लड़की गई थी।

दोनो नौजवान एक दूसरे की तरफ देखने लगे, मगर इसी समय पीछे की तरफ से पुनः उसी तरह की चीख और तब "बचाओ, बचाओ" की आवाज सुनाई पड़ी। इसके साथ ही किसी भारी गले के "कुंअर गोपालसिंह, कामेश्वरसिंह, आओ आओ और मेरी बेटी को इस दुष्ट के जालिम पंजों से बचाओ।" की आवाज सुनाई पड़ी जिसके सुनते ही कामेश्वर ने अपनी भुजाली निकाल कर हाथ मे ले ली और कुमार से कहा, "उस लड़की पर जरूर कोई आफत आई है, उसे बचाना चाहिए।" इतना कह दालान से उतरे मगर गोपालसिंह ने रोक कर कहा, "क्या तुमने गौर नही किया कि आवाज इस कोठरी के अन्दर से आती मालूम होती है। पहिले इसमे देख लेना चाहिए।" ये उस तरफ बढ़े और उनके साथ साथ कामेश्वर भी चले मगर दर्वाजे तक पहुंच के दोनो ही को ठिठक जाना पड़ा। कोठरी के अंदर एक ऐसी डरावनी चीज इन्हे दिखाई पड़ी कि इनके कदम रुक गये और साथ ही गले से आश्चर्य डर और घबराहट की आवाज निकल पड़ी।

दोनो दोस्तो ने देखा कि उस कोठड़ी के अन्दर जो काफी लम्बी चौड़ी थी, सामने की दीवार मे कई खिड़कियां बनी हुई हैं और उन्ही मे से एक के आगे कोई खड़ा खिडकी की राह वाहर की तरफ देख रहा है। पर वह जो उस खिडकी के सामने खड़ा था, कोई आदमी औरत या लड़का न था बल्कि हड्डियो का एक भयानक ढाचा था ! ऐसा मालूम पड़ता था मानों कोई नर-कंकाल उस जगह खडा हो जिसके बदन मे लहू मांस या चमड़ा कुछ भी न होकर केवल हड्डिया ही हड्डिया हों। इसी भयानक शय को देख ये दोनो घबड़ाए थे, मगर इनकी आहट पाते ही उस आसेब ने, या जो कुछ भी वह हों, घूम कर इनकी तरफ देखा। बिना चमड़े या मास का उसका खौफनाक चेहरा जिसके खुले हुए मुह में केवल दांतो की दो लकीरें ही भयानक हसी हंसती हुई दिखाई पड़ रही थी, क्षण भर के लिए इनके सामने हुआ और साथ ही उस बिना जीभ के मुंह के अन्दर से एक डरावनी आवाज निकली, इसके बाद ही आग की एक भयानक लपट उस जगह दिखाई पड़ी और जब इन दोनो की डरी हुई आखें पुनः जमी तो वहा पर कोई न था, वह भूत प्रेत पिशाच या जो कोई भी हो, उस जगह से गायब हो चुका था !

गोपालसिंह ने घबड़ाए हुए ढंग मे पूछा, "तुमने देखा ? क्या था ?" कामेश्वर ने जवाब दिया, "जरूर कोई भूत था !" और तब दोनो डरी हुई निगाहे उस कोठरी मे चारो तरफ डालने लगे, इस खयाल से कि शायद अभी तक वह वहीं कही मौजूद हो, पर उस आसेब का अब कही नाम निशान भी न था और कोठरी एकदम खाली नजर आ रही थी जिससे इन्हे कुछ हिम्मत हुई और कामेश्वर ने कहा, "भीतर चल कर देखो उस खिड़की के दूसरी तरफ क्या है ?" इनके इरादे को उस चीख ने पक्का कर दिया जो उसी समय खिड़की के दूसरी तरफ से आई थी और दोनो जल्दी से कोठड़ी के अन्दर घुस कर खिड़की की राह बाहर की तरफ देखने लगे। जो कुछ इन्होंने देखा वह इनके डर तथा घबराहट

को और भी बढ़ा देने वाला था।

दोनों दोस्तों ने देखा कि एक डरावनी सूरत का आदमी अपने बगल में उस लड़की को दबाए है और एक खौफनाक भालू भयानक रूप से उस आदमी पर अपने पंजे चला रहा है, मगर उस फौलादी कवच के कारण कुछ कर नही पाता जो उस आदमी ने अपने बदन पर पहिन हुआ है। साथ ही उन्हे यह देख ताज्जुब भी हुआ कि वह आदमी यद्यपि इस भालू के वारों से बचने की कोशिश कर रहा है पर उस नीमचे का वार उस पर नही करता जो उसके दाहिने हाथ मे मौजूद है। हमारे दोनो दोस्त कुछ देर तक तो इस दृश्य को देखते रहे, तब कामेश्वर ने गोपालसिंह से कहा, "चल कर उस लड़की को बचाना चहिए।" गोपालसिंह ने कहा, "जरूर मगर मालूम होता है इस कोठड़ी में से उधर जाने का कोई रास्ता नही है, हमें बाहर से घूम कर वहां जाना पडेगा।" "बेशक ऐसा ही है" कह कर कामेश्वर अपनी जगह से हटे और दोनो दोस्त पीछे की तरफ घूमे मगर चौंक कर रुक गए। कोठड़ी का दर्वाजा बन्द था और इस आश्चर्यजनक रीति से बन्द था कि जिसका कोई हिसाब नही अर्थात् उस जगह उस दर्वाजे का कहीं कोई नाम निशान भी दिखाई नही पड़ रहा था जिसकी राह से अभी अभी ये दोनो भीतर आए थे और इनके सामने की दीवार एक दम साफ चिकनी और बराबर दिखाई पड़ रही थी।

दोनो दोस्तो के मुंह से एक साथ निकला—"क्या हम लोग किसी धोखे मे डाले गए!!"

दूसरा बयान

एक खुशनुमा बाग के बीचोबीच में बनी हुई संगममंर की खूबसूरत बारहदरी में आरामकुर्सी पर अधलेटे पड़े हुए भैयाराजा तमाखू के कश

खींच रहे हैं और उनके बगल मे एक दूसरी कुर्सी पर कुंअर गोपालसिंह बैठे हुए धीरे धीरे बातें कर रहे है।

इन दोनो के सिवाय और तीसरा उस जगह कोई नहीं है मगर नीचे बाग मे कुछ मुसाहब और मुलाकाती लोग जरूर फैले हुए है जो पेचीली रविशो का चक्कर लगाते हुए बार बार इस बारहदरी की तरफ देखते और इस बात पर आश्चर्य कर रहे है कि इन दोनो मे क्या गुप्त बातें हो रही है और वे कब खतम होंगी।

भैयाराजा ने पूछा, "अच्छा तब क्या हुआ ?"

गोपाल०। जब हम दोनों ने देखा कि जिस दर्वाजे से अभी थोड़ी ही देर पहिले हम लोग भीतर आए है वह ऐसे तौर पर बन्द हो गया है कि उसका नाम निशान भी नजर नही आता तो हम लोग बहुत घबड़ाए और सोचने लगे कि यह क्या किसी दुश्मन की कार्रवाई है, बल्कि मेरे दिल मे यह भी आया कि कहीं यह जगह भी कोई तिलिस्म या उससे सम्बन्ध रखने वाला कोई स्थान न हो, पर उसी समय हम लोगों का ध्यान इस तरफ से हट गया, क्योंकि खिड़की के बाहर की तरफ से एक बड़ी डरावनी चीख की आवाज सुनाई पड़ी। खिड़की की तरफ घूमे तो देखा क्या कि वही भयानक आसेब, हड्डियो का ढांचा, जो हम लोगो को कोठड़ी मे घुसते समय खिड़की के पास दिखा था, इस समय बाहर खड़ा है और उसी को देख के वह भयानक सूरत वाला आदमी चिल्लाया था जो उस साधू की लड़की को पकड़े हुआ उस भालू से लड़ रहा था। वह आसेब सचमुच एक डरावनी चीज थी और उसे देख कर हर एक आदमी घबड़ा सकता था, अस्तु उस भयानक आदमी ने उसे देखते ही उस लड़की को हाथ से छोड़ दिया और दो कदम पीछे हट गया। फिर भी शायद वह कुछ करता मगर इसी समय नरकंकाल के मुंह से आग का एक भयानक फौवारा निकला जिसे देखते ही वह एक दम डर गया और तब पीछे हट

कर भागता हुआ देखते देखते नजरो को ओट हो गया। जब हम लोगों ने दूसरी बार देखा तो वह नरकंकाल भी गायब हो चुका था।

धीरे धीरे उस लड़की की बेहोशी दूर हुई और वह उठ कर बैठ गई। उस समय हम लोगो ने उसे आवाज दी और जब खिड़की के पास आई तो बतलाया कि इस कोठड़ी के बाहर निकलने का रास्ता बन्द हो गया है। वह बोली, "घबडाइये नहीं, मैं अभी खोल देती हूं!" और तब वहा से हट कर मकान के बगल से होती हुई बाहर के दालान में पहुं उसने हम लोगो को कैद से छुट्टी दी। मैंने देखा कि पत्थर की दो सिल्लिया दो बगल हट गईं और वह दर्वाजा पुनः दिखाई पड़ने लगा जिसे खोल हम लोग बाहर निकल आए और उस लड़की से पूछने लगे, "यह सब क्या खेल था जो हम लोगों ने देखा?" मगर कुछ जवाब न दे उसने कहा, "पहिले आप लोग चल कर मेरे पिता की देख रेख कीजिए, वे ही सब बातें आपको बतावेंगे!" हम लोग यह सुन उसके साथ मकान के पिछले हिस्से मे पहुंचे जहां यह सब काण्ड हुआ था और जहा उस साधू को हमने दीवार के साथ बेहोश पडे पाया। उसे उठा कर दालान में ले आए और बहुत कुछ कोशिश करके उसकी बेहोशी दूर की।

इतना कह गोपालसिंह जरा देर के लिए रुके। भैयाराजा ने पूछा, "अच्छा उस भालू का क्या हुआ जिसे तुम लोगों ने कोठड़ी के अन्दर से निकलते देखा था और जो उस भयानक सूरत के आदमी से लड़ रहा था?"

गोपाल०। वह हम लोगो को फिर कही नजर न आया, न मालूम कही भाग गया या क्या हुआ, और न उस साधू ने ही मेरे पूछने पर उसका कोई हाल बताया। मगर चाचाजी मुझे तो बहुत शक इसी बात का हो रहा है कि उस भालू और उस साधू मे जरूर कोई सम्बन्ध था और शायद वह साधू ही भालू का भेप धर उस भयानक सूरत वाले आदमी

से लड़ रहा था जो उसकी लड़की को ले जाना चाहता था। मगर यह कैसे सम्भव है यह मेरी समझ में कुछ न आया। अगर आप कुछ सोच सकते हों तो बताइए।

भैया०। यों तो मैं बहुत कुछ सोच समझ रहा हूं मगर अभी तुम्हें कुछ बताऊंगा नहीं, तुम कहो आगे क्या हुआ ?

गोपाल०। हम लोगों की कोशिश से किसी तरह वह साधू होश में आया मगर उठके बैठते ही पहिली निगाह उसने अपने झोले की तरफ डाली और तब इधर उधर कुछ तलाश कर जोर से चीख उठा। मैंने पूछा, "क्या मामला है महात्माजी ?" और वह घबराहट भरी आवाज से बोला, "क्या तुम लोगों ने वह डिब्बा कहीं रक्खा है जिसमें तिलिस्मी किताब थी ?" हमारे "नहीं" कहने पर उसने अपनी लड़की से वही सवाल किया और उससे भी इनकार का जवाब सुन माथे पर जोर से हाथ मार बोल उठा, "आखिर वही हुआ जिसका मुझे डर था ! दुश्मन वह किताब ले गया और अब न केवल वह तिलिस्म ही बरसों तक बिना टूटा रह जायगा बल्कि और भी न जाने कौन कौन सी आफतें तुम्हें झेलनी पड़ें !"

वह साधू उस किताब के जाने से इस कदर गमगीन और परेशान हुआ कि आखिर मुझसे रहा न गया और मैंने पूछा, "उस किताब में कौन सी अद्भुत बात थी और उसके जाने से आप क्यों इतना घबड़ा रहे हैं ?" मगर उसने कोई जवाब न दिया बल्कि मुझसे कहने लगा "राजकुमार, उस किताब का यकायक ठीक ऐसे मौके पर गायब होना जब कि उससे काम लेने का वक्त आ गया था, एक बहुत बुरा असगुन है ! अब शायद तुम बरसों तक वह काम पूरा कर न पाओगे जिसे तुमको करना है, बल्कि यह कहना चाहिये कि जिसके लिये तुम्हारा जन्म हुआ है, और मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि तुम पर और तुम्हारे खानदान पर कोई बड़ी भारी मुसीबत आने वाली है। अब तुम यहां एक पल भर भी न ठहरो और तुरत अपनी राजधानी को लौट जाओ।" मैंने बहुत कुछ पूछा और बार

वार यह जानने की कोशिश की कि जो कुछ विचित्र बातें हम लोगों के देखने मे आईं उनका रहस्य क्या है पर उसने हमारी एक बात का भी जवाब न दिया और बार बार यही कहता रहा कि बस तुरत यहाँ से चले जाओ नही दुश्मन के फन्दे मे पड जाओगे, यहा तक कि मुझे उस पर कुछ क्रोध भी आ गया पर उसी समय हम दोनो को ढूंढते हुए मेरे बहुत से साथी और सिपाही वहा आ पहुंचे जो हमारे इतनी देर गायब रहने से घवड़ा कर चारो तरफ हमे ढूंढ रहे थे। उनके सामने कुछ पूछताछ करना मैंने अच्छा न समझा और अपने लश्कर को वापस लौट आया। दूसरे दिन हम लोग फिर उस तरफ गये मगर वहां न तो वह साधू था न उसकी लड़की, और न कोई सामान ही नजर आया। मकान एक दम खाली था और हम लोग देख भाल कर वैरंग वापस लौट आए। वस यही तो सारा किस्सा है!"

गोपालसिंह की बात सुन भैयाराजा किसी चिन्ता मे पड़ गए और देर तक कुछ सोचते रहे। इसके वाद उन्होने पूछा, "क्या तुमने भाई साहव से इस वारे मे कुछ कहा?" गोपालसिंह सिर हिला कर वोले, "जी अभी तक तो यह सोच के नही कहा कि शायद वे चिन्ता में पड़ जायं और न जाने क्या क्या खयाल करें, मगर आप यदि आज्ञा दें....?' भैयाराजा बोले, "नही, मेरी समझ मे उनसे अभी कुछ कहने की जरूरत नही, इससे उनको सिर्फ परेशानी ही होगी, मगर तुमको भी मैं राय दूंगा कि अभी कुछ दिन तक उधर न जाओ और न इन सव वातों की ज्यादा छानवीन करने की ही कोशिश करो।"

गोपाल०। जो हुक्म, मगर मेरी तो इच्छा थी कि मै कुछ आदमी लेकर जाता और उस पहाडी तथा जंगल की अच्छी तरह खोज करता। वह साधू और उसकी लड़की आखिर वही कहीं तो छिपे होंगे। क्योंकि यह एक ऐसी विचित्र घटना हुई है कि विना कुछ ठीक ठीक पता लगे मेरा मन मानेगा नही और तरह तरह के खयाल उठा करेंगे, हां आप

इन बातों से अगर कोई मतलब निकाल सके हों और मुझे कुछ बतलाना उचित समझें तो......!

भैया०। (मुस्कुरा कर) मैंने बहुत कुछ समझा और बहुत कुछ मतलब लगाया परन्तु मैं यह नही चाहता कि उसके बारे मे अभी तुम कुछ मुझसे पूछो, फिर भी संक्षेप मे और तुम्हारे कौतूहल की शान्ति के लिए मैं इतना कह सकता हू कि इस तिलिस्म की, जिस पर हम लोग राज्य कर रहे है, उम्र समाप्त हो गई और बहुत शीघ्र इसके कई हिस्से टूटेंगे। हमारे खानदान के हो कई आदमियों के हाथ से यह भारी काम होगा इसकी मुझे खुशी है और मुझे यह भी पता लग चुका है कि तुम्हारे हाथ से भी इसका एक मुख्य भाग टूटने वाला है, मगर कब या कैसे वह काम होगा इसके बारे मे मैं कुछ नही कह सकता और न मुझे इसका कोई पता ही है।

गोपाल०। वह साधू तो कहता था......

भैया०। उस साधू की बात ठीक भी हो सकती है और नही भी! अगर वह कोई दगाबाज हो और हम लोगों को धोखे मे डाल कर अपना कोई मतलब सिद्ध करना चाहता हो तो क्या ताज्जुब है? अस्तु उसकी बातो को ब्रह्मवाक्य समझ लेने की जरूरत नही। तुमने जो कुछ कहा और देखा है अभी अपने पेट मे रक्खो बल्कि अपने दोस्त कामेश्वर से भी ऐसा ही करने की हिदायत कर दो, और मुझे इस मामले की छानबीन करने दो। मेरे पास ऐसे आदमी है जो उस साधू को, वह चाहे जहा भी हो, पकड कर मेरे पास हाजिर कर देंगे अस्तु तुम निश्चिन्त रहो। जो कुछ असल असल मामला है उसका मैं बहुत जल्द पता लगा लूगा और तब तुमसे कहूगा..... (सामने की तरफ गौर से देख और चौंक कर) मुझे आज उनके पास जाने मे देर हो गई इसलिए भाईजी स्वयम् ही इधर चले आ रहे है। देखो, अगर कुछ पूछें तो बचा जाना।

कहते हुए भैयाराजा ने कुर्सी छोड़ दी और गोपालसिह भी खड़े हो

गए। भैयाराजा ने एक खिदमतगार की तरफ देख कुछ इशारा किया जिसके साथ ही वह हुक्का उठा कर पिछली राह से बारहदरी के नीचे उतर गया, और ये दोनो उस तरफ बढ़े जिधर से कई मुसाहिबो के साथ महाराज गिरधरसिंह चले आ रहे थे।

कुछ देर तक साधारण बातचीत होती रही, तब महाराज गिरधरसिंह ने भैयाराजा का हाथ थाम लिया और बातचीत करते हुए एक तरफ को बढ़ चले। सब लोग उनका मतलब समझ पीछे ही रुके रहे और उन्ही की तरह गोपालसिंह भी वहां से हट कर एक संगमर्मर के खूबसूरत फौवारे के पास खडे हो उसकी चक्करदार टूटियो से निकलते हुए पानी की फुहार तथा नीचे जल मे खेलने वाली रंग विरंगी मछलियो की बहार देख रहे थे जब एक नौजवान ने आकर उनके कंधे पर हाथ रख दिया और पूछा, "कहिए दोस्त, क्या देख रहे हैं ?"

गोपालसिंह ने घूम कर देखा और यकायक चौंक के खुशी खुशी उस नौजवान का हाथ पकड़ते-हुए बोले, "अरे श्यामजी, आप लौट आए ! कब आए ?"

वह नौजवान बोला, "बस अभी चला ही आ रहा हूं, अभी घर नही गया, सीधा इधर ही चला आया !"

गोपाल० । क्यो क्यो ? सब कुशल तो है ? क्या कोई तरद्दुद की खबर है ? नौगढ से आ रहे हैं न ?

श्याम० । (सिर हिला कर) महाराज ने तो मुझे नौगढ़ ही भेजा था पर इस समय मैं वहा से नही आ रहा हूं ।

गोपाल० । तब कहां से आ रहे हैं ?

श्याम । (इधर उधर देख कर) काशीजी से !

गोपाल० । काशीजी से ! वहां किस लिए चले गये थे ? क्या रियासत के ही किसी काम से ?

श्याम० । नही अपने निजी काम से, मगर वहां एक बात ऐसी

मालूम हुई कि तबीयत घबड़ा गई और सीधा यहीं चला आ रहा हूं। अभी घर भी नहीं गया। सोचा पहिले वह बात कह के अपने दिल का बोझ हल्का कर लूं तब घर जाऊं। महाराज कहां हैं ?

गोपाल०। चाचाजी को लिए उस लतामंडप में चले गये हैं और वहीं बातें कर रहे हैं। क्या उनसे कुछ कहना है ? चलूं, देखूं ?

श्याम०। नही मुझे आपसे ही काम है और आप ही से कुछ कहना है, चलिए कही आड की जगह मे हो जांय तो कहे।

यह श्यामलाल गोपालसिंह का लडकपन का दोस्त तथा जमानिया के एक रईस खानदान का लड़का था। महाराज ने इसे अपनी फौज मे एक ऊंचा रुतबा दे रक्खा था और इस पर बहुत ज्यादा विश्वास करते थे। अक्सर राज्य के मामलों मे भी इससे सलाह मशिवरा लेते थे क्योंकि यह बड़ा ही बुद्धिमान दबंग तथा वीर पुरुष था और राजनीतिक गुत्थियों को सुलझाने मे भी इसकी अक्ल खूब काम करती थी। कामेश्वर तथा भरतसिंह से इसकी कुछ रिश्तेदारी थी और इन्द्रदेव से भी गहरी दोस्ती तथा मुहब्बत।

दोनों दोस्त टहलते हुए आड की एक जगह में चले गए और वहां रक्खी हुई संगमर्मर की चौकी पर बैठ कर बातें करने लगे। महाराज अभी तक भैयाराजा से बातें कर रहे थे और इन्हे किसी गैर के इधर निकल आने का डर न था।

बैठते ही श्यामलाल ने धीरे से कहा, "मै काशीजी नागर से मिलने गया था!"

गोपाल०। (मुस्कुरा कर) यही मैंने भी सोचा था!

श्याम०। मगर वहां एक ऐसी बात मेरे जानने मे आई कि मैं घबरा गया।

गोपाल०। उसे भी कह डालिए।

श्याम०। आपके दारोगा साहब को तिलिस्म तोड़ने का शौक पैदा

हुआ है और वे चाहते हैं कि जमानिया का तिलिस्म तोड़ कर उसकी दौलत निकाल लें।

गोपाल०। अच्छा! मगर यह कैसे सम्भव है, और आपको यह बात किस तरह मालूम हुई?

श्याम०। उसी नागर की जुबानी! उससे मेरी जितनी मुहब्बत है और वह जिस तरह मुझ पर जान देती है इसका हाल आपको मालूम ही है?

गोपाल०। (मुस्कुरा कर) हां, और मुझे यह भी मालूम है कि मेरे कई और दोस्तो पर भी वह ठीक उसी तरह मरती रहती है!

श्याम०। वेशक और लोग भी उसके पास जाते आते हैं मगर यह मै विश्वास दिला सकता हू कि उनके साथ उसकी मुहब्बत बनावटी और फकत पैसे के लालच से है, मगर मेरे साथ वह बात नही है और इसका एक सब से नया सबूत यही बात है जो मैं आपसे कह रहा हूँ और जिसका पता खास उसी के जरिये मुझे लगा

गोपाल०। खैर क्या बात है खुलासा कहो तो कुछ मै भी गौर करूं।

श्याम०। आजकल राजा वीरेन्द्रसिंह और राजा गोपालदत्त से पुन: खटपट शुरू हो गई है सो आपने सुना ही होगा?

गोपाल०। जरूर सुना है!

श्याम०। ठीक है, तो चूंकि नागर के पास तरह तरह के लोग आया जाया करते हैं और अकसर वह रजवाड़ों मे भी जाया करती है इसमे उसको भी यह खबर मालूम है और उसको यह भी पता है कि बहुत वर्ष हुए राजा वीरेन्द्रसिंह ने कोई तिलिस्म तोड़ कर बहुत दौलत निकाली थी और वहाँ अभी बहुत कुछ मौजूद भी है। मेरी उसकी अकसर इस बारे मे बातें हुआ करती थी और वह कई दफे मुझसे कह चुकी थी कि 'मेरा मन तिलिस्म देखने का होता है' मगर कल जब बातें होने

लगी तो वह यकायक बोल उठी, "ईश्वर ने चाहा तो अब मैं तिलिस्म की सैर कर सकूंगी।" मैंने पूछा, "सो कैसे? क्या कोई जानकार मिल गया क्या!" तो बोली, "हां।" मुझे ताज्जुब हुआ और यद्यपि वह बताना नहीं चाहती थी फिर भी जिद्द करके मैंने पूछ ही लिया।

गोपाल०। और तब उसने यही बात कही?

श्याम०। उसने कहा कि दो आदमियों ने उससे कसम खाकर वादा कर दिया है कि उसे तिलिस्म की सैर जरूर करा देंगे।

गोपाल०। एक तो हमारे यही दारोगा साहब होंगे, मगर दूसरा?

श्याम०। दूसरा भूतनाथ ऐयार, भूतनाथ का नाम तो आपने सुना ही होगा?

गोपाल०। हां मैंने सुना है, मगर उसे तिलिस्म से क्या सरोकार?

श्याम०। जो कुछ भी हो, मगर उसने नागर से वादा किया है कि एक किताब, जिसको दस्तयाब करने की फिक्र मे वह है, हाथ में आते ही वह उसे अच्छी तरह तिलिस्म की सैर करा देगा।

गोपाल०। खैर अगर मैं थोड़ी देर के लिए मान भी लूं कि यह बात सही है तो इसमे घबड़ाने या डरने की कौन सी बात है?

श्याम०। वह मै अब कहता हू। आपके दारोगा साहब और इस भूतनाथ ऐयार मे आज कल बहुत घिसपिस बढ़ रही है और ये दोनों मिल कर कोई घात करना चाहते हैं मगर अफसोस ताज्जुब और डर की बात यह है कि इनका वार हमारे कामेश्वर भाई पर होना चाहता है और इस मामले मे राजा शिवदत्त का भी कुछ हाथ है।

गोपाल०। (घबड़ा कर) हैं, यह आप क्या कह रहे हैं।

श्याम०। मै बहुत ठीक कह रहा हूं और जो कुछ कह रहा हूं उसका सबूत भी अपने साथ लाया हू।

इतना कह श्यामलाल ने अपनी जेब से एक कागज का टुकडा निकाला जो बहुत कटा फटा और मोड़ा मुड़ाया सा था और जिसको

देखने ही से मालूम होता था कि यह पढ़ कर फाड़ डाला गया था पर किसी ने टुकड़े जोड़ के इसे फिर से पूरा किया है। इसे गोपालसिंह के हाथ मे देते हुए श्यामलाल ने कहा, "देखिए और पढ़िए, किसको लिखावट है यह पहिचानने में देर न लगेगी।"

गोपालसिंह ने उस कागज पर नजर दौड़ाई मगर पहिली निगाह डालते ही वे चौंक गए और तव झुक कर वड़े गौर से पढने लगे। एक वार, दो वार, तीन वार, वे उस कागज को पढ़ गये और तव एक लम्बा सांस खीच कर वोले, "दोस्त, यह मै ठीक देख रहा हू या मेरी आंखें धोखा खा रही हैं ?"

उनके हाथ से कागज ले और मोड़ माड़ कर पुनः वड़ी सावधानी से अपने जेव मे रखते हुए श्यामलाल ने कहा, "वहुत ठीक देख रहे है। अव कहिए कि जो कुछ मैने कहा वह ठीक है कि नही और मेरा घवड़ाना वाजिव था या नही ?"

गोपाल०। वेशक अव इस वात मे कोई शक नही रह सकता और आपने वहुत ठीक किया जो आते ही मुझे इसकी खवर दी, मगर यह तो कहिए यह कागज आपको मिला कहां ?

श्याम०। (झुक कर गोपालसिंह के कान मे) खास नागर के तकिए के नीचे से ! मालूम होता है कि जिसे यह चिट्ठी मिली उसने पढ़ कर फाड फूड़ के फेंक दिया था मगर वह वटोर लाई थी और उसकी इच्छा थी कि टुकड़ो को जोड़ के चिट्ठी का मतलव निकाले, मगर वीच ही मे मौका पा मैने इन टुकडो को उड़ा लिया और जव पढ़ने की कोशिश की तव तो मेरा माथा चकराया। उसके वाद मैं क्षण भर भी न ठहरा और मारामार चला आ रहा हू। वस जो कुछ वात थी मैंने कह दी, अव जो आप मुनासिव समझिये सो कीजिए, मै चलता हू। घर पर लोग इन्तजार करते होगे।

गोपाल०। क्या महाराज से मिले विना ही ? वे खफा होगे, जरा

ठहर जाइए, अब वे निकलते हो होंगे और इस बीच मे मुझे भी सलाह दीजिए कि अब क्या करना मुनासिब है ? मैं तो समझता हूं कि सब के पहिले कामेश्वर को इस बात से आगाह कर देना चाहिये ।

श्याम० । जरूर बल्कि मेरी तो यह राय है कि वे कुछ दिन के लिए जमनिया छोड़ दें तभी बेहतर होगा, तथा इसके लिए कोई अच्छा बहाना ढूंढ़ लेना मुश्किल न होगा, और कुछ नहीं तो आबोहवा बदलने के बहाने ही वे अपनी स्त्री को ले के कही निकल जा सकते हैं। मगर साथ ही मैं यह भी कहूंगा कि अभी महाराज से इस मामले में कुछ कहना ठीक न होगा ।

गोपाल० । सो क्यो !

श्याम० । वे दिल के साफ आदमी है और किसी बात को छिपा के रखने का उनका स्वभाव नही है । अगर कही इस चीठी को पढ़ के गुस्से में आ उन्होंने कुछ कर दिया या दारोगा साहब के सामने ही कुछ कह बैठे तो उसका नतीजा अच्छा न होगा ।

गोपाल० । सो तो ठीक है मगर उनसे न कहूंगा तो फिर इस मामले का निपटारा कैसे होगा ? यह कुछ ऐसी बात तो है नही कि यों ही चलने दी जाय, जल्दी ही कुछ न किया गया तो कौन ठिकाना दुश्मन अपनी कार्रवाई कर बैठे और हम लोग कही के न रह जांय ?

श्याम० । आप चाचाजी से इस मामले में सलाह लीजिए, वे बड़े नीतिकुशल बुद्धिमान और चतुर आदमी हैं और बहुत पक्की कार्रवाई सोच सकेंगे । हम लोगों से अधिक पहुंच भी है और मुमकिन है कि वे इस बात की जड ही काट दे सकें ।

गोपाल० । हां यह आपने बहुत ठीक सोचा है । उन्ही से कहना उचित होगा, मगर फिर उस हालत में आपका भी साथ रहना जरूरी है क्योंकि मुझसे यह बात सुन यकायक उन्हे विश्वास न होगा ।

श्याम०। अच्छी बात है मैं भी चला चलूंगा, मेरी लाई हुई चिट्ठी उनके मन में कोई शक रहने न देगी। (देख कर) यह लीजिए, महाराज और चाचाजी आ रहे हैं, च लए बातें की जायं।

गोपाल०। मगर इस समय देर बहुत हो गई है, अब उनके स्नान ध्यान और पूजा पाठ का समय हो गया। मुमकिन है इस समय वे हमारी बातें सुनने को तैयार न हों या सब के सामने ही पूछ बैठें कि क्या है कहो, तो ठीक न होगा। इससे मेरी राय है कि खाना खा के दोपहर को जब वे लेटते हैं उस समय यह बात उनसे कही जाय। आप भी सफर के थके मांदे हैं इस बीच में अच्छी तरह सुस्ता ले सकेंगे।

श्याम०। अच्छी बात है, मैं दोपहर को आपके पास आऊंगा और तब हम लोग एक साथ उनके पास चलेंगे।

गोपाल०। तो चलिए इस समय महाराज को सलाम करिए और तब मुनासिब मौका देख विदा हो जाइए।

दोनो दोस्त उठ खड़े हुए और उस तरफ बढ़े जिधर महाराज गिरधरसिंह अपने मुसाहिबो से घिरे खड़े थे।

मगर इस बात की खबर दोनो में से किसी को भी न हुई कि इनके बीच में अभी अभी जो कुछ बातें हुई है वह केवल इन्हीं दोनों तक नही रही और एक तीसरा कान भी उन्हें सुन चुका है। जिस जगह बैठे ये लोग बातें कर रहे थे उसके पीछे मेंहदी की घनी टट्टी की आड़ में खड़े एक आदमी ने इनकी बाते बड़े गौर से सुनी थी जो इनके उठते ही वहा से हटा और तब तेजी से लपकता हुआ एक तरफ को चला गया।

तीसरा बयान

विन्ध्यगिरि का वह लम्बा फैलाव जो नौगढ़ विजयगढ़ और चुनार होता हुआ गयाजी तक चला गया है अपने पेट के भीतर कैसे कैसे अद्भुत स्थानों को छिपाए हुआ है इसका थोड़ा बहुत पता उन्ही लोगो

को हो सकता है जो उस तरफ का सफर कर चुके है तथा जगह जगह पर जो घनघोर जंगल पडते है उनके अन्दर रहने वाले भयंकर जानवरों का हाल भी पुराने शिकारी ही जानते है, पर इतना हम कह सकते है कि इस पहाड़ी सिलसिले में रमणोक स्थानो की भी कमी नही है और अगर कोई हिम्मती आदमी इन पहाड़ियों के भीतर धंसे तो उसे एक से एक अनूठी जगहे दिखाई पड़ सकती है।

इन्ही पहाड़ियों की एक शाखा जमानिया और रोहतासगढ़ के बीच मे भी आ पडी है जो इन दोनों राज्यों की सरहद ही नही बनाती बल्कि जिसके बीच मे दबी हुई वह अनोखी लुटिया पहाड़ी है जहा हम अपने पाठको को इस वक्त ले चलना चाहते हैं।

सचमुच इस पहाड़ी का यह नाम बहुत ठीक रक्खा गया है और दूर से उसको गोलमटोल चोटी देख के किसी लुटिया को ही याद आ जाती है क्योकि अन्य पहाड़ी चोटियो का तरह यह ऊचो चिपटी या नुकीली नही है बल्कि गोलाई लिए हुई है और कम से कम दूर से तो यही नजर आता है कि इसके ऊपर जाने की कोई राह नही हो सकती पर वास्तव में यह बात नही है और इस पहाड़ो की चोटी पर बन पुराने जमाने के किले (जिसे गढ़ी कहना ज्यादा मुनासिब होगा) या मन्दिर पर जाने के एक नही कई रास्ते है जो करीब करीब सभी यद्यपि खतरनाक तो है पर अभी तक काम में आने लायक हैं और जिनका हाल पाठकों को समय समय पर आप ही मालूम होता रहेगा।

इस पहाड़ी के नीचे और इसकी जड़ के साथ सटी हुई एक छोटी नदी है जो घूमती और तीन तरफ से उस पहाड़ी को घेरती हुई दूर निकल जाती है, और इस नदी के ठीक किनारे ही पर एक मकान है जो किसी समय में जरूर ही आलीशान और खूबसूरत रहा होगा पर इस समय बेमरम्मत टूटा फूटा और भयावना हो रहा है। मगर बाहर से यह जैसा उजाड या खंडहर सरीखा जान पड़ता है भीतर से वैसा

नही है। अन्दर से इस मकान का एक काफी भाग अब भी बहुत कुछ दुरुस्त और ठीक हालत में है और यही सबब है कि इस वक्त जो लोग इसमें रहते है उन्हे कोई विशेष तकलीफ नही हो सकती। पर साथ ही यह कह देना भी जरूरी है कि न जाने किस सबब से आस पास के जंगली और पहाडी लोगों में ये दोनों ही जगहे—वह ऊपर वाली गढ़ी जिसे 'शिवगढ़ी' कहते हैं, और यह नीचे वाला मकान जो 'रोहतासमठ' कहलाता है 'भूतहा' कर के मशहूर है और उनका विश्वास है कि इनमें बडे बडे भूत प्रेत और पिशाच रहा करते हैं जो कभी कभी निकल कर पास के जंगलों में घूमते फिरते भी हैं। यही सबब है कि इस तरफ रात को तो क्या दिन में भी कोई आदमी आता जाता दिखाई नही पड़ता और हमेशा घोर सन्नाटा छाया रहता है जिसे कभी कभी केवल वे जंगली और खूंखार जानवर ही अपनी खौफनाक आवाजो से तोड़ते है जिनसे आस पास के जंगल और पहाड़िया भरी हुई हैं।

मगर फिर भी उस अकेले मुसाफिर को इन सब बातो ने से किसी का भी डर नही जान पडता जो संध्या की अवाई को देखते हुए भी बेफिक्री और लापरवाही के साथ कदम उठाता हुआ उसी नदी के किनारे किनारे जा रहा है जिसका जिक्र हम ऊपर कर आए है। इस मुसाफिर की चुस्त पोशाक कमन्द बटुआ और खंजर साफ कह रहे हैं कि यह कोई ऐयार है और इसीलिए हम भी अपने पाठकों को तरद्दुद मे न डाल कर बताए देते है कि यह भूतनाथ है और इसका इरादा इस मठ मे एक रात काट कर सुबह ही रोहतासगढ के लिए रवाना हो जाने का है और शायद यही सबब है कि इसे रात की अवाई का कोई शौक नही है और यह लापरवाही के साथ चलता हुआ इस खयाल से इधर उधर भी निगाहें दौड़ाता जा रहा है कि अगर उस मठ में रहने वालों मे से कोई बाहर हों तो उसकी नजर मे आ जाय।

और उसका खयाल ठीक भी निकला। उस मठ से कुछ दूर इधर

हो उस पहाड़ी नदी के किनारे की एक बड़ी चट्टान पर बैठ अपना पैर पानी में लटकाये धीरे धीरे कुछ गुनगुनाती तथा जल में किलोल करने वाली मछलियों को देखती हुई एक कमसिन लड़की पर उसकी निगाह पड़ी जिसके साथ ही उसके कदम रुक गये और वह खड़ा हो एकटक उसी तरफ देखने लगा। मालूम होता है कि उस लडकी को भूतनाथ के आने की कोई खबर न हुई थी क्योंकि वह उसी लापरवाही के साथ बैठी जल मे पैर हिलाती हुई गुनगुनाती रही और इसी सबब से भूतनाथ को भी उसके रूप की छटा देखने का पूरा मौका मिला जिससे वह देर तक उसी हालत में खड़ा उस पर अपनी ललचौंही निगाहे डालता रहा, मगर यकायक वह चौंका और उसकी निगाहें उस सुन्दरी पर से हट कर एक झाड़ी की तरफ घूम गईं जो उसके दाहिनी ओर पड़ती थी और जिधर से आती हुई खड़खड़ाहट की आवाजे दो एक बार उसके कानों तक पहुंच चुकी थी। इस समय उसे अपना ध्यान जबर्दस्ती खींच कर उधर ले जाना पड़ा क्योंकि उस झाड़ी की आड़ में छिपे हुए किसी जानवर की अस्पष्ट शक्ल उसे दिखाई पड़ी और उसकी तेज निगाहों ने तुरत ही बता दिया कि यह एक शेर है जो अपनी खूंखार आंखें उस लड़की पर जमाये हुआ उस पर हमला करना ही चाहता है। भूतनाथ का कलेजा यह देखते ही एक बार धड़क गया मगर उस फुर्तीले ऐयार को अपना कर्तव्य निश्चय करने मे देर न लगी। उसने गरज कर कहा, "नन्हो, खबरदार! चट्टान की आड मे हो जाओ, तुम्हारे बाईं तरफ शेर खडा है!!" और साथ ही फुर्ती से अपना ऐयारी का बटुआ खोल उसने उसमे से एक गेंद निकाला जिसे एक हाथ मे और दूसरे मे अपना खंजर लिए वह आगे को झपटा। नन्हों घबड़ा कर इधर उधर देखने लगी और वह शेर शायद झपटने के लिये अपने पंजों पर झुक ही रहा था कि भूतनाथ का फेंका हुआ गेंद उसके सामने जाकर गिरा और बड़ी भयानक आवाज से फूटा। उसमे से आग की एक डरावनी

चमक निकली और बहुत सा धूआं चारो तरफ फैल गया जिससे वहां की सब जगह ढंक गई। भूतनाथ लपकता हुआ नन्हों के पास पहुंचा और उसका हाथ पकड़ चट्टान के नीचे उसे खींच अपनी आड़ मे करता हुआ बोला—

"जल्दी से घर भागो, वहां एक बहुत बड़ा शेर खड़ा है!" क्योंकि वह इस बात को बखूबी समझता था कि अगर उस गोले की आवाज और चमक से डर कर शेर न भागा तो तुरत ही हमला कर देगा, मगर उसे बहुत ही ताज्जुब हुआ जब नन्हों खिलखिला कर हंस पड़ी और बोली, "वाह क्या खूब! शेर कहां? वह तो देखो बाबूजी चले आ रहे हैं!"

सचमुच उस धूएं के पर्दे को चीर कर एक वृद्ध साधू उसी तरफ आ रहे थे जिनको भूतनाथ आश्चर्य से देखने लगा। हमारे पाठक इन साधू महाशय को देखते ही पहिचान लेंगे क्योंकि ये वे ही हैं जिनके साथ गोपालसिंह और कामेश्वर की भेंट हुई और जिनका हाल हम पहिले बयान मे लिख आये हैं। भूतनाथ ताज्जुब के साथ उनकी तरफ दो कदम बढ़ गया और पूछने लगा, "बाबाजी, आप किधर से आ रहे हैं? वहा तो झाड़ी मे अभी अभी एक खौफनाक शेर खड़ा था जो नन्हो पर हमला करना चाहता था मगर मालूम होता है मेरे छोड़े हुए गोले से डर कर भाग गया। क्या आपने उसे नही देखा?"

वह साधू हंस कर बोले, "नही भूतनाथ, मुझे तो कोई शेर बेर दिखाई नही पड़ा और शेरो को इतनी हिम्मत भी नही हो सकती कि मेरे आश्रम के पास आवें, तुम्हे भ्रम हुआ होगा।" भूतनाथ बोला, "नही नही, मेरी आंखें इतना बड़ा धोखा नही खा सकती! खैर जो कुछ भी हो यह कहिए आप आज रात अपने आश्रम में टिकने की इजाजत मुझे दे सकते हैं? मैं शेरसिंह से मिलने रोहतासगढ़ जा रहा था पर अब रात बहुत हो गई और आज वहा पहुँचने मे तरद्दुद होगा।"

बाबाजी बोले, "हां हा, क्या इसके लिए भी कुछ पूछने की जरूरत है। (नन्हों की तरफ देख के) जा बेटी, इनके लिए वही पूरब वाली कोठरी साफ कर दे। मैं अभी आता हू, जरा इनसे कुछ बातें कर लूं।"

नन्हों उस मकान या मठ की तरफ बढ़ गई जो पेडों की आड़ में से कुछ कुछ दिखाई पड़ रहा था, और वह साधू आगे आकर उसी पत्थर की चट्टान पर जिस पर कुछ ही देर पहिले नन्हों बैठी हुई थी बैठता हुआ भूतनाथ से बोला, "आओ भूतनाथ, जरा यहा बैठ कर मेरी कुछ बातें सुन लो जिन्होंने मुझे इतने बडे तरद्दुद में डाल रक्खा है कि अगर तुम स्वयम् न आ जाते तो शायद मुझे तुमसे मदद लेने के लिए तुम्हारे पास जाना पडता।"

भूतनाथ ने ताज्जुब से पूछा, "आपको और मुझसे मदद लेने की जरूरत!" बाबाजी बोले, "हा ऐसी ही बात है।" भूतनाथ ने गरदन घुमा कर एक बार जाती हुई नन्हों की तरफ देखा, तब बाबाजी से कुछ हट कर उसी चट्टान पर बैठने बाद बोला, "कहिए क्या हुक्म है?"

हम नही कह सकते कि बाबाजी ने भूतनाथ से क्या कहा या किस बारे मे उसकी मदद मांगी, हां यह कह सकते है कि दोनो की बातचीत बहुत देर तक होती रही, यहां तक कि उस जगह पूरा अंधकार हो गया और डरावना जंगल सांय सांय करने लगा। इस समय तक उस मठ की तरफ से दो तीन दफे सीटी की आवाज आ चुकी थी जो वास्तव में नन्हों वजा रही थी और आखिरी दफे उसकी आवाज सुन वे साधू महाशय बोल पड़े, "नन्हो अकेली घबड़ा रही है। चलो अब मठ में चलें, मगर जो कुछ मैंने कहा है उसको तुम अपने ही तक रखना, प्रकट हो जाने से बहुत बड़ी मुसीबत आ सकती है।" भूतनाथ यह सुन बोला, "मेरी जुबान से यह बात कभी बाहर न आवेगी और अपने भरसक मैं पूरी कोशिश करूंगा कि जिसमें पता लग जाय कि यह किसकी कार्रवाई है, मगर अफसोस यही है कि आप पूरी बातें और समूचा भेद मुझे

बता नहीं रहे हैं जिससे इस मामले का पता लगाना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य होगा !"

बाबाजी ने उठते हुए कहा, "इतना भी जो मैंने तुमसे कहा, अपने गुरुदेव के आदेश के विरुद्ध और तुम पर पूरा विश्वास होने के कारण ही कहा है। इससे ज्यादा कहना असम्भव है। इतने ही मे जो कुछ पता लगा सको लगाओ और मुझसे ज्यादा जानने की आशा छोड़ दो। हां यह मैं जरूर कह सकता हू कि अगर किसी समय मौका आया और मेरी जुबान पर लगी हुई मोहर टूटी तो तुम्ही पहिले आदमी होगे जिससे मैं सब खुलासा हाल बयान करूंगा क्योंकि मैं तुम्हें अपने लड़के से बढ़ कर मानता हू और खूब समझता हूं कि तुम एक दिन दुनिया मे ऐसा नाम पैदा करोगे जैसा आज तक किसी ऐयार ने नहीं किया !"

भूतनाथ ने प्रसन्नता और कृतज्ञता के साथ साधू महाराज का चरण छूआ और तब कहा "मैं भी अपने भरसक पूरा उद्योग करूंगा और जैसे भी बन पड़ेगा पता लगाऊंगा कि यह किसकी कार्रवाई है !" दोनो आदमी दूसरी बातें करते हुए उस मकान की तरफ रवाना हुए जिसके दर्वाजे पर खडी नन्हो बेचैनी के साथ इनकी राह देख रही थी। बाबाजी को देखते ही वह बोली, "वाह बाबूजी वाह, मैं यहां अकेली बैठी घबड़ा रही हूं और आपकी बातें ही खतम नहीं होती !" साधू महाराज बोले, "हां बेटी, कुछ ऐसा ही मामला था। अब तो मैं पूजा पाठ के लिए जाता हूं तू भूतनाथ का सब प्रबन्ध कर दे।" नन्हो ने पूछा—"आप भोजन नहीं करेंगे !" साधू बोले, "मुझे अभी आधे पहर की देर है।" भूतनाथ बोला, "तो क्या हर्ज है, अभी मुझे भी जरूरी कामों से निपटते और स्नान सन्ध्या आदि करते इतना ही समय लग जायगा। हम लोग साथ ही भोजन करेंगे।" साधू महाराज बोले, "जैसी मर्जी तुम्हारी।" और तब एक कोठरी के अन्दर घुस उसका दर्वाजा बन्द करके इन दोनो की ओट हो गए।

अब निराला पा भूतनाथ ने नन्हों का हाथ पकड़ लिया और पूछा, "कहो नन्हों, क्या हालचाल है ? अबकी बहुत दिन बाद तुमसे मुलाकात हुई है !" नन्हों बोली, "अच्छी ही हूँ, तुम अपनी कहो, कहां रहे इतने दिनों तक जो एक दफे भी इधर न आये !" भूतनाथ बोला, "इधर मैं बड़ी झंझट में पड गया था जिसका हाल तुमसे कहूंगा तो घबड़ा जाओगी।" नन्हो बोली, "मुझे भी तुमसे बहुत कुछ कहना है। स्नान ध्यान से निपट कर भोजन कर लो तो कहूं। चलो उस तरफ।"

भूतनाथ शीघ्र ही सब जरूरी कामो से निपट गया, मगर बाबाजी की पूजा अभी तक समाप्त न हुई थी इसलिए वह नन्हों की तरफ चला गया जो चूल्हे के पास बैठी रोटिया सेंक रही थी। दोनो मे इधर-उधर की बातें होने लगी। यकायक नन्हों ने पूछा—

नन्हो०। हा खूब याद आया, बाबूजी को क्या बातें तुमसे करनी थी जो तुम लोगो को आने में इतनी देर लग गई।

भूत०। उनकी कोई बहुत जरूरी चीज खो गई है उसी के बारे में कह रहे थे कि पता लगाओ कि कौन ले गया है और जैसे बने उसे वापस लाओ पर पूरा हाल बताते नही, न यही बताते है कि कैसी वह चीज है, किसके उसे ले जाने की सम्भावना है, अथवा किस काम में वह आ सकती है, ऊपर से यह भी कसम दे दी है कि किसी से यह हाल कहना नही। अब तुम्ही बताओ कि पता लगेगा तो क्योंकर ! उनकी तसल्ली के लिए मैने कह तो दिया है कि पता लगाऊंगा मगर मुझे विश्वास नही होता कि मै इस काम में सफल होऊंगा।

नन्हो०। आखिर कुछ तो बताया ही होगा कि वह कौन सी चीज है ?

भूत०। कुछ भी नही, बस यह कहते हैं कि छोटा सा जड़ाऊ डिब्बा है जिसके ऊपर पन्ने का एक ऐसा टुकडा जड़ा है जिसकी शकल कुछ कुछ एक ताली की तरह पर है।

नन्हो० । ओ हो, अब मैं समझ गई, वह तो मेरे सामने ही की बात है ।

भूत० । (चौंक कर खुशी से) अच्छा, क्या मामला है तुम्ही कुछ कहो ।

नन्हो० । मगर बाबूजी कहीं खफा न हों । मुझसे बोले थे कि किसी गैर से कदापि यह हाल न कहना ।

भूत० । तो मैं तो कोई गैर नहीं तुम्हारे खास आदमियों में से हूं । मुझसे कहने में थोड़ा ही कोई हर्ज है ?

नन्हो ने भूतनाथ की बात सुन मुस्कुरा कर टेढ़ी निगाह से उसकी तरफ देखा । भूतनाथ फिर बोला, "और फिर मुझसे खुद उन्होंने जब इसका जिक्र करके मदद मांगी है तो तुम्हारे कह देने से क्या हर्ज पड़ेगा ?"

नन्हो० । हां यह तो ठीक है । अच्छा तो जो कुछ मुझे मालूम है मैं कहे देती हूं आगे तुम जानो तुम्हारा काम जाने ।

जरा रुक कर चूल्हे की आग को मद्धिम करती हुई नन्हो बोली, "यह कोई दस बारह दिन की बात है । जमानिया का एक सवार इधर से गुजरा और जरा देर सुस्ताने के लिए यहां ठहर गया । बाबूजी से उसकी बातें होने लगीं । मैं भी यहां थी । बात ही बात में उस सवार ने कहा, "जमानिया के कुंअर गोपालसिंह शिकार खेलने निकले हैं और कल डहना पहाड़ी के नीचे उनका पड़ाव लगेगा ।" बाबूजी न जाने क्यों इस बात को सुनते ही बड़े उतावले हुए । उस सवार के जाते ही मुझसे बोले, "बेटी तू जल्दी से खा पीकर तैयार हो जा । कल बहुत सवेरे ही हम लोग एक जगह जायंगे ।" मैंने पूछा, "कहां ?" पहिले तो कुछ बताया नहीं, पर बहुत जिद्द करने पर बोले, "गोपालसिंह से मिल कर कुछ जरूरी बातें कहनी हैं इसलिए उसी डहना पहाड़ी की तरफ जाऊंगा ।" मुझे सुन के बहुत प्रसन्नता हुई क्योंकि एक तो कभी यहां से निकलने का मौका नहीं मिलता दूसरे कुंअर गोपालसिंह को देखने की भी बड़ी इच्छा थी जिनके बारे में तरह तरह की बातें सुन चुकी हूं ।

"खैर मुख्तसर यह कि दूसरे दिन दो घण्टा रात रहे ही हम लोग रवाना हुए और रुकते रुकाते संध्या तक उस जगह के पास पहुंचे गये जहां गोपालसिंह का लश्कर पड़ा था। एक पहाड़ी की तरहटी में बने छोटे से मकान में बाबूजी ने डेरा डाल दिया जिसमें सिर्फ एक दालान और दो कोठड़ियां थी, उन्ही में से एक में कुछ खाने पीने का सामान और बासन आदि भी थे। बाबूजी से मालूम हुआ कि यह उनके गुरुभाई का आश्रम है और इस जगह वे अभी भी अक्सर घूमते फिरते आ जाया करते हैं।

रात हम लोगों ने उसी जगह डेरा डाला। दूसरे दिन सुबह ही बाबूजी कही चले गये और मुझसे कहते गये कि इस मकान की चौहद्दी के बाहर कही न जाना मैं जल्दी ही आ जाऊंगा। मगर उनको गये दो पहर से भी ज्यादे हो गए और वे न लौटे तो मै घबड़ाई और अकेले मुझे कुछ डर भी लगने लगा। दिल बहलाने की नीयत से मै उस मकान की छत पर चली गई और देर तक वहां टहलती रही पर बाबूजी न आए। तब मै और भी घबड़ाई तथा एक जगह बैठ कर सोचने लगी कि वे कहां चले गए। जब किसी तरह मन न माना तो दिल बहलाने के लिये बांसुरी बजाने लगी। यकायक उसी समय मेरी निगाह दो नौजवानों पर पड़ी जो पहाड़ी से उतर मेरी ही तरफ आ रहे थे। वे कौन हैं और क्या चाहते है यह जानने के लिये छत से नीचे उतरी तो देखा कि बाबूजी नीचे दालान मे मौजूद हैं पर न जाने कैसे कुछ चुटीले हो गये हैं क्योंकि उनके कपड़ो में खून लगा हुआ था। मैं घबड़ा कर पूछने लगी कि यह क्या हुआ पर वे उसका कुछ जवाब न दे मुझसे बोले कि जिनकी राह मैं इतने दिनों से देख रहा था वे आ पहुँचे, तू इनके बैठने का इन्तजाम कर। मैंने देखा तो वे ही दोनों नौजवान जिन्हे मैंने पहाड़ी से उतर कर आते देखा था वहा आ पहुंचे थे।

भूत०। वे दोनों कौन थे?

नन्हों० । बाद में मालूम हुआ कि वे कुंअर गोपालसिंह और उनके दोस्त कामेश्वरसिंह थे ।

भूत० । अच्छा तब ? उनसे क्या बातें हुईं तुम्हारे पिता की ?

नन्हों० । अफसोस, बातें क्या हुईं यह मैं बिल्कुल सुन न सकी क्योंकि बाबूजी ने मुझे वहां से हटा दिया और उन लोगों के लिए कुछ जलपान तैयार करने को भेज दिया । मगर जहां तक मुझे मालूम होता है उन्होंने कोई चीज उन दोनों को दी या दिखाई क्योंकि अपना झोला उन्होंने मुझसे मंगवाया था और उसमें से कुछ सामान तथा कागज पत्र निकाले थे ।

भूत० । खैर तब क्या हुआ ?

नन्हों० । मैं मकान के पिछवाड़े की तरफ जा के, जिधर चौका बना हुआ था, कुछ खाना तैयार कर रही थी कि उसी समय यकायक मुझे अपने पीछे कोई आहट सुन पड़ी और घूम के देखा तो डर के मारे चीख पड़ी । मेरे पीछे एक भूत खड़ा था ।

भूत० । (हंस कर) भूत !

नन्हों० । (उस वक्त की याद से अब भी कांप कर) हां भूत ! एक-दम हड्डी ही हड्डी ! मालूम होता था मानों कोई हड्डियों का ढांचा मेरी तरफ बढ़ा आ रहा है । मैं देखते ही जोर से चीख पड़ी और जब वह मेरी तरफ झपटा तब तो एक दम ही बदहवास हो गई । फिर मुझे कुछ होश न रहा कि क्या हुआ ।

भूत० । ताज्जुब है ! अच्छा तब ?

नन्हों० । जब मैं होश में आई तो देखा क्या कि बाबूजी मेरे बगल ही में बेहोश पड़े हैं और खिड़की के जंगले की राह गोपालसिंह और कामेश्वरसिंह मुझे पुकार रहे हैं । मैं उनके पास गई तो मालूम हुआ कि वे उसी कोठड़ी में बन्द हो गये हैं जो वास्तव में कुछ विचित्र तरह की थी मगर मुझे उसका भेद बाबजी ने बता दिया था जिससे मैंने उन दोनों

को कोठरी के बाहर निकाला और वे कोशिश करके बाबूजी को होश में लाए।

भूत०। उस कोठरी में क्या विचित्रता थी ?

नन्हों०। उसका दर्वाजा कुछ अजीब तरह का था। बन्द हो जाने पर बिल्कुल पता नही लगता था कि कहाँ से रास्ता है। लेकिन उसी तरह के कई दर्वाजे इस मकान में भी हैं अस्तु मुझे उसमे कोई ताज्जुब की बात मालूम न हुई। मौका पड़ेगा तो मैं तुम्हें भी दिखा दूंगी।

भूत०। अच्छा तब ?

नन्हों०। जब बाबूजी होश में आये तो मैं उनसे पूछने लगी कि क्या हुआ, पर वे कुछ न बोले। मुझे फिर अपने पास से हटा दिया और उन दोनों गोपालसिंह और कामेश्वर से कुछ बाते करने लगे, पर इस बार मैं हटी नही बल्कि एक जगह छिप कर सुनती रही। मालूम हुआ कि उनकी कोई चीज गायब हो गई है जिस पर वे बहुत घबड़ा रहे हैं।

भूत०। वह कौन सी चीज ?

नन्हों०। वही जिसका जिक्र उन्होंने तुमसे किया—एक जड़ाऊ डिब्बा।

भूत०। मगर उस डिब्बे में क्या था यह भी कुछ बोले ?

नन्हों०। (इधर उधर देख कर धीरे से) एक बार उनके मुंह से निकला—'वह डिब्बा जिसके भीतर तिलिस्मी किताब थी !' अस्तु मैं समझती हूं कि उसके भीतर कोई ऐसी किताब थी जिसमें तिलिस्म का हाल था और जिसे.......

भूत०। हां, कुछ कुछ यही शक मुझे भी होता है। अच्छा तब ?

नन्हों। बस फिर कुछ नही। बाबूजी ने उन दोनों को विदा कर दिया और जब वे चले गए तो मुझसे बोले, "बेटी हम लोग अभी यह जगह छोड़ देंगे।" उन्होने अपना सामान उठाया और हमलोग रातो रात वहा से चल कर दूसरे दिन दोपहर के पहिले यहा पहुंच गये।

भूत०। तुमसे इस बारे में फिर कोई बात उनसे नही हुई ?

नन्हों० । कुछ भी नही ! उन्हें बहुत सुस्त और उदास देख मैने कई बार पूछा भी कि बाबूजी आप इतने उदास क्यों है ? पर सिवाय यह कहने के कि मेरी एक बड़ी कीमती चीज कोई चुरा ले गया, और उन्होंने कुछ न बताया । जब मैंने बहुत जिद्द की तो बोले, "तेरे जानने लायक बात नही है, तू उसे जानने की कोशिश मत कर ।' लाचार मैं चुप रह गई ।

भूतनाथ ने और भी तरह तरह के कई सवाल नन्हों से किये और अन्त मे उसे निश्चय हो गया कि जो कुछ नन्हो ने कहा उससे ज्यादा कोई हाल वह नही जानती अस्तु वह चुप हो रहा मगर कुछ देर बाद फिर बोला, "तो इससे कम से कम इतना तो निश्चय हो गया कि तुम्हारे पिता को तिलिस्म से कोई गहरा सम्बन्ध है और वे उसका बहुत कुछ हाल जानते हैं । मुझे बराबर ही इस बात का शक रहा करता था मगर अफसोस अब इस बात को जान के भी कोई फायदा उठाया नहीं जा सकता !"

नन्हो० । सो क्यों ?

भूत० । बिना तिलिस्मी किताब पास में हुए तिलिस्म का कोई हाल तो जाना नही जा सकता ! न तो उसकी सैर ही की जा सकती है और न उसकी दौलत ही निकाली जा सकती है । तुम्हारे पिता के पास जो तिलिस्मी किताब थी या जिसे वे गोपालसिंह को दिया चाहते थे जब वही चली गई तो अब क्या हो सकता है ? जिसने उसे लिया वह जरूर तिलिस्म तोड़ डालेगा और वहाँ का खजाना निकाल लेगा ।

नन्हो० । यह कोई बात नही है । तिलिस्म ऐसे सहज में नहीं टूटा करते और न केवल किताब पास मे होने से टूटते है । उसके लिए बड़ी कोशिश बड़ी मेहनत और बडी ताकत चाहिए, किस्मत तो चाहिए ही !

भूत० । खैर अब इन बातों का जिक्र करना फजूल है । हमारी, मेरी और तुम्हारी, किस्मत में वह चीज नही है बस इतना पता लग गया ।

नन्हों०। (हंस कर) वाह जी! तुममें अगर इतनी ही हिम्मत और इतनी ही मर्दानगी है तो तुम तिलिस्म तोड़ चुके और मुझे भी उसकी सैर करा चुके! तुम्हें तो बल्कि यह जान के खुश होना चाहिए था कि हम लोगों का खयाल ठीक निकला, ऐसी कोई किताब है, और उसकी मदद से तिलिस्म की सैर की जा सकती है और उसकी दौलत का लुत्फ उठाया जा सकता है, सो तो हुआ नहीं उलटा तुम रही सही हिम्मत भी गवां बैठे! तुम्हें कमर कस के उस किताब का पता लगाने के लिए तैयार हो जाना चाहिए था सो न कर उसके बदले तुम... ...

भूत०। तुम्हीं न कह चुकी हो कि तुमने एक भूत देखा था। जरूर वही किताब भी ले गया होगा। किसी आदमी ने उसे चुराया होता तो एक बात भी थी, भला भूत प्रेत और पिशाचों का मैं कहां तक मुकाबला कर सकता हूं!

नन्हों०। (उस आसेब की याद से कांप कर) ओफ, उसका जिक्र न करो! बेशक तुम ठीक कहते हो, वह एक भयानक नरपिशाच था और अगर वही मेरे पिता की तिलिस्मी किताब ले गया है तो बेशक उससे वापस पाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव होगा!

भूत०। (हंस कर) तब फिर मुझे क्या दोष दे रही हो? मैं भी तो उसी को याद करके यह बातें कह रहा था। न उस आसेब के हाथ से किताब निकलेगी और न हम लोग तिलिस्म की सैर कर सकेंगे।

नन्हों। मगर मेरा मतलब कुछ और ही था।

भूत०। वह क्या?

नन्हों०। (भूतनाथ की तरफ झुक कर और उसके कान के पास मुंह ले जा कर) वह किताब गई तो गई, बाबूजी के पास अभी एक किताब दूसरी और भी ऐसी मौजूद है जिसकी मदद से हमलोग तिलिस्म की सैर पूरी तरह से कर सकते हैं।

भूत०। (चौंक कर और खुशी से नन्हों का हाथ पकड़ कर) सच कहो, क्या तुम ठीक कह रही हो ?

नन्हों०। हाँ मैं बिल्कुल सही कह रही हूं और इस बात का पता...

नन्हों अपनी बात समाप्त न कर सकी क्योंकि उसी समय बाहर से खड़ाऊं की आवाज सुनाई पड़ी जिसने खबर दी कि बाबाजी चले आ रहे हैं। दोनों आदमी अलग अलग हो गए और नन्हों ने मतलब भरी निगाहों से देखते हुए अपने होठों पर उंगली रक्खी। उसी समय बाबाजी ने कोठरी में पैर रक्खा और पूछा, "क्यों बेटी, अभी भोजन में देरी है क्या ?" नन्हों बोली, "नहीं बाबूजी सब तैयार है, मैं तो आपको बुलाने जाना चाहती थी। आज आपने पूजा में बड़ी देर कर दी।" बाबाजी इसके बिछाए हुए पीढ़े पर बैठते हुए बोले, "हां कुछ देर हो गई, भूतनाथ को भूख लगी होगी, लाओ जल्दी परोसो।"

चौथा बयान

रात आधी के कुछ ऊपर जा चुकी है। चारो तरफ सन्नाटे और अंधियारे का राज्य फैला हुआ है। कहीं से किसी तरह की कोई आहट नहीं आ रही है।

रोहतासमठ की उस टूटी फूटी इमारत में जिसमें कुछ घण्टे पहिले हम भूतनाथ बाबाजी और नन्हों को देख चुके हैं, इस समय ऐसा अंधेरा छाया हुआ है कि कोई अनजान आदमी अगर यहां आवे तो यही समझेगा कि इस समय मकान में कोई भी नहीं है, मगर हम खूब जानते हैं कि ऐसा नहीं है और वे तीनों ही आदमी जिनका हम ऊपर जिक्र कर आए हैं इस समय यहां गहरी नींद में बेखबर पड़े हुए हैं।

मगर नहीं, यह बात भी नहीं है। बाकी के दोनो, वे बाबाजी और उनकी बेटी नन्हों चाहे भले ही नींद में और बेखबर हों पर भूतनाथ

की आंखों में इस समय नींद नहीं है। यद्यपि इस समय वह उस कोठरी में जो उसे रात काटने के लिए मिली हुई है एक खाट पर चादर ताने पड़ा हुआ है पर नींद में कदापि नहीं है और इस समय भी वह बार बार आखें खोल कर और कानों पर जोर देकर यह जानने की कोशिश कर रहा है कि बाकी दोनों को क्या कैफियत है जो उसको बगल वाली कोठड़ी में है। यद्यपि इसके बहुत पहिले ही से, और कई बार, नन्हों के घुर्राटे की हलकी आवाज उसके कानों में पड़ चुकी है पर उन बाबाजी के नींद में गाफिल हो जाने की कोई आहट नहीं आई है बल्कि कई बार उनकी चौकी के मचमचाने तथा अन्य आहटों से वह समझ चुका है कि वे अभी तक सोए नहीं बल्कि किसी न किसी फिक्र में पड़े हुए और चिन्तित होकर जाग रहे हैं, क्योंकि बीच बीच में उनके मुंह से निकलने वाले कई अस्पष्ट स्वर भी उसके कानों में पड़ चुके हैं, यद्यपि इधर कुछ समय से वैसी कोई आहट नहीं आई है।

आखिर भूतनाथ की इच्छा पूरी हुई और उसके कानों में घुर्राटे की एक नई आवाज ने पड़ कर बता दिया कि अन्ततोगत्वा बाबाजी को भी नींद ने गाफिल कर ही दिया। उसके मुंह से धीरे से निकला, "भला किसी तरह सोये तो सही! मैं तो सोच रहा था कि आज की रात जागते ही बिता देंगे।" और वह आहिस्ते से उठ कर बैठ गया। कुछ देर तक वह गौर के साथ आहट लेता रहा, जब घुर्राटे की आवाज लगातार और नियमित रूप से आने लगी और उसे निश्चय हो गया कि बाबाजी बेशक सो गये तब वह उठ खड़ा हुआ। सिरहाने के नीचे से अपना ऐयारी का बटुआ खींचा और अंधेरे में ही टटोल कर उसमें से कुछ चीजें निकालीं, तब उस बटुए को पुनः ज्यों का त्यों रख वह दबे पांव अपनी कोठड़ी के बाहर निकला जिसका दर्वाजा खुला हुआ था। बगल ही में वह दूसरी कोठड़ी थी जिसके अन्दर बाबाजी और नन्हों इस समय गाफिल पड़े हुए थे। वह उसके दर्वाजे पर पहुंचा। दर्वाजा

भिड़का हुआ था जिससे उसे कुछ अन्देशा हुआ मगर जब हाथ से धक्का दिया तो पता लग गया कि भीतर से सांकिल लगी हुई नही है, अतः वह आगे बढ़ा और धीरे धीरे होशियारी से पल्ले को ढकेल कोठरी के अन्दर हो उसने दर्वाजे को पुनः ज्यों का त्यों भिड़का दिया।

इस कोठरी में भी घना अन्धकार था क्योंकि चिराग बहुत पहिले बुझ चुका था पर एक तो भूतनाथ आज के पहिले भी बहुत दफे यहां आ चुका था दूसरे आज इसी नीयत से उसने खाने जाने के पहिले बहुत गौर से यहां की हर एक चीज को देख कर अपने दिमाग पर नक्श कर लिया था, इसलिये उसे कोई आशंका न मालूम हुई और वह चुपचाप एक कोने में खड़ा होकर आहट लेने लगा। कुछ ही देर मे उसे विश्वास हो गया कि न केवल दोनों ही आदमी, नन्हो और बाबाजी, नीद मे गाफिल पड़े हैं बल्कि उसके इस जगह आने का आहट भी किसी को नही लगी है, अस्तु अब वह आगे की कार्रवाई करने लगा। अन्दाज से और बहुत आहिस्ते आहिस्ते बढ़ता हुआ, वह उस चौकी के पास पहुंचा जिस पर बाबाजी का आसन लगा रहता था या इस समय जिस पर बाबाजी नीद मे गाफिल पड़े हुए थे। यहां के घने अंधकार को भेद कर आंखे कुछ बताने मे असमर्थ थी पर भूतनाथ केवल अपने कानों की सहायता से आहट लेता हुआ बाबाजी के मुंह के पास जा खड़ा हुआ और तब वह चीज सम्हाल कर हाथ में पकडी जो अभी कुछ ही देर पहिले अपने बटुए में से निकाली थी। इस समय अंधेरे मे पता लग नही सकता था पर वास्तव में वह चीज और कुछ नही एक बहुत छोटी किताबनुमा भाथी थी जिसके अन्दर किसी तरह की बहुत ही बारीक सी बुकनी भरी हुई थी। भूतनाथ ने भाथी का मुंह बाबाजी की नाक की तरफ किया और धीरे धीरे हवा करने लगा। अंधेरे में दिखाई पड़ नही सकता था और रोशनी करने अथवा और किसी

दवा सुंघाने से बाबाजी के जाग जाने या चौकन्ने हो जाने का डर था, जिनकी नींद वह जानता था कि बहुत ही कच्ची है और जिनसे वास्तव में वह बहुत ही ज्यादा डरता भी था, इसलिए भूतनाथ ने यह तर्कीब निकाली थी, क्योंकि उस बुकनी में तेज बेहोशी का असर था जो इस समय भाथी की हवा के साथ निकल कर बाबाजी कि नाक और मुंह के चारो ओर फैल रही थी और जिसके कारी असर से अपने को बचाने के लिए भूतनाथ इस समय अपनी नाक और मुंह दुपट्टे से अच्छी तरह बन्द किये हुए था।

कुछ ही सायत के अन्दर उस बुकनी ने अपना काम पूरा किया जिसका कुछ हिस्सा सांस के साथ बाबाजी की नाक में चढ गया था। बाबाजी को एक के बाद एक कई छींकें आईं पर वे आखें न खोल सके और तब कुछ ही सायत बाद उनकी सांस भारी और गहरी पड़ जाने से भूतनाथ को विश्वास हो गया कि उसकी दवा ने असर किया। फिर भी एहतियातन वह कुछ देर तक और भाथी चलाता रहा, इसके बाद जब बाबाजी के बेहोश हो जाने में कोई भी शक न रह गया तो उसने भाथी को मोड़ कर जेब के हवाले किया और सामान निकाल कर रोशनी जलाई। बाबाजी अपने स्थान पर बेहोश पडे हुए थे और उनके दूसरी तरफ चौकी के नीचे जमीन पर नन्हों बेखबर सोई हुई थी जिसकी गहरी नींद भूतनाथ की इस कार्रवाई से खुली न थी, पर जो यकायक चेहरे पर रोशनी पडने से अब कुछ सकपका रही थी। बगल से घूमता हुआ भूतनाथ इसके सिहाने पहुंचा और तब बेहोशी की हवा की एक चुटकी इसके नाक में भी चढ़ा इधर से भी निश्चिन्त हो गया। अपने बाप ही की तरह दो एक छींकें मार कर नन्हों भी बेहोश हो गई और अब भूतनाथ के काम में विघ्न डालने वाला कोई न रह गया। भूतनाथ ने वह मोमबत्ती जो जलाई थी एक तरफ रख दी और अपना वह काम जारी किया जिसके लिए इतना सब तरद्दुद उठाया था, और वह काम

क्या था ? बाबाजी के सामानों की तलाशी ।

बेचारे सीधे सादे बाबाजी को यह खबर कब थी कि वही भूतनाथ जिसे वे अपने लड़के की तरह मानते है उनके साथ दगा करने पर तैयार हो जायगा, अस्तु उन्होंने अपने उस थोडे बहुत सामान को छिपाने या हिफाजत से रखने की कोई विशेष फिक्र न की थी जो उस जगह था, और उनका सामान ही बहुत क्या था ? कुछ थोड़े से सन्दूक किताबों से भरे हुए, कुछ आलमारियां तरह तरह के सामानों से भरी हुई, कुछ पेटियां तरह तरह की विचित्र दवाओं से भरी हुई, और कुछ झोले जो इधर उधर खूटियों से लटक रहे थे और जिनकी बहुत जल्दी ही भूतनाथ ने तलाशी ले डाली, पर वह चीज जिसकी उसे खोज थी उसके हाथ न लगी। अच्छी तरह एक एक बक्स एक एक आलमारी और एक एक कोना तलाश डालने पर भी उसके मन की इच्छा पूरी न हुई और तब वह उदासी और कुछ बेचैनी के साथ खड़ा होकर इधर उधर निगाह डालने लगा, इस फिक्र में कि कही कोई जगह ऐसी तो रह नही गई जहा वह तलाश कर न पाया हो। पर ऐसी कोई भी जगह उसे दिखाई न पड़ी!

यकायक उसे कुछ सूझ गई। वह बाबाजी की चौकी के पास पहुंचा और उनके बिछौने को उलट पुलट कर तलाश करने लगा। साथ ही उसके मुंह से खुशी की एक किलकारी निकल पड़ी। तकिया के नीचे हाथ डालते ही उसे एक छोटी सी किताब वहां रक्खी नजर आई। फुर्ती से उसने उसे निकाला और तब रोशनी के पास ले जाकर देखा। पहिली ही निगाह में वह इसे पहिचान गया और खुशी से उसकी बाछें खिल गईं क्योंकि नन्हों ने इसी किताब का उससे जिक्र किया था। उसने किताब जेब में रक्खी, जल्दी जल्दी बाबाजी का सब सामान ज्यों का त्यों किया जैसा कि पहिले था, ऐसे अच्छे ढंग पर कि खुद बाबाजी तो क्या कोई चालाक ऐयार भी नही कह सकता था कि वहां का कोई

छोटा से छोटा सामान भी इधर उधर किया गया है, और तब मोमबत्ती उठा वह उस कोठड़ी के बाहर निकल गया। दर्वाजा ज्यों का त्यों भिड़का दिया और अपनी कोठड़ी में जा खाट पर लेट उस किताब को देखने लगा। देर तक उसकी जिल्द और ऊपरी निशानों को देखता रहा, तब उसे खोला और भीतर जगह जगह से थोड़ा थोड़ा पढने के बाद अच्छी तरह निश्चय कर लिया कि यही वह किताब है जिसका जिक्र उन्होंने किया था, तब निश्चिन्त हो कर शुरू से उसे पढने में मन लगाया।

ऐसी एकाग्रता और ऐसे ध्यान के साथ भूतनाथ उस छोटी किताब को पढ़ने लगा कि इस समय अगर कोई उस जगह आकर उसके बगल में भी खड़ा हो जाता तो शायद उसे पता न लगता! किताब बहुत बड़ी न थी और उसके अक्षर बहुत ही सुन्दर पुष्ट और साफ लिखे हुए थे, इसलिए भूतनाथ बहुत सहज मे उसे पढ़ता चला गया, मगर कुछ आगे पढ़ने पर उसे तरद्दुद यह होने लगा कि अक्षर कहीं कहीं बहुत ही बारीक मिलने लगे और शब्द भी कुछ ऐसे आने लगे जिनका अर्थ वह कुछ समझ न सकता था। इससे भूतनाथ को तकलीफ होने लगी, लेकिन फिर भी उसे उस पुस्तक को पढ़ जाने की इतनी जल्दी थी कि जहा उसकी समझ मे न आया उन जगहों को छोड़ता हुआ वह जल्दी जल्दी पुस्तक को पढता ही चला गया, यहां तक कि उसको एक दम समाप्त कर डाला। केवल अन्त के कुछ पृष्ट वह पढ न सका, वे इतने महीन लिखे हुए थे कि उन अक्षरों पर उनकी निगाह जम नहीं पाती थी, और उनके बाद के कुछ नकशों का मतलब भी वह समझ न सका जो एकदम आखीर मे बने हुए थे, पर इससे उसे कोई विशेष अफसोस न हुआ और वह उस पुस्तक को खतम कर जोश के साथ बोल उठा, "भला अब भी कोई मुझे तिलिस्म में जाने से रोक सकता है।"

मगर इसके बाद ही भूतनाथ किसी चिन्ता मे डूब गया। उसने हथेली पर गाल रक्खा और आखें बन्द कर तरह तरह की बातें सोचने लगा।

जिस समय एक लम्बी सांस लेकर भूतनाथ ने आंखें खोलीं तो इतना वक्त गुजर गया था कि सुवह होने में दो ढाई घन्टे से अधिक देर बाकी नहीं थी। वह चौंक पड़ा मगर फिर अपने को सम्हाल कर बोला, "कोई हर्ज नहीं, मेरी दवा अभी और कुछ देर तक उन्हें उठने न देगी।" और तब पुनः कुछ सोचने के बाद अन्त में यह कह कर कि, "बेशक यही ठीक है, नन्हों को भी इस काम मे साथ रखना ही मुनासिब और निष्कंटक होगा और इसलिए उचित है कि इस काम में जल्दबाजी न की जाय।" भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और उस कोठड़ी के बाहर होकर पुनः बाबाजी वाली कोठड़ी में पहुँचा। उसने देखा कि दोनों ही, नन्हों और बाबाजी, ज्यों के त्यों बेहोश पड़े हुए हैं अस्तु वह बेखटके आगे बढ़ा और नन्हों के बगल में जा खड़ा हुआ। अपनी जेब से लखलखा निकाल उसने नन्हों को सुंघाया और एक कपड़े से चेहरे पर हवा भी की जिससे कुछ ही देर में नन्हो की बेहोशी जाती रही और उसने एक अंगड़ाई लेकर आंखें खोल दीं। अपने ऊपर भूतनाथ को झुका पा उसने ताज्जुब से कुछ कहना चाहा पर भूतनाथ ने मुंह पर उंगली रख चुप रहने का इशारा किया और तब धीरे से बोला, "चुपचाप इस कोठड़ी के बाहर आओ तो मैं एक चीज तुम्हें दिखाऊं।" इतना कह बिना जवाब की राह देखे भूतनाथ कोठरी के बाहर निकल आया और उसके कुछ देर बाद नन्हों भी उठ कर बाहर आई जिसके चेहरे से इस वक्त ताज्जुब टपक रहा था। बाहर आते ही भूतनाथ हाथ पकड़ कर उसे अपनी कोठरी में ले गया जहां मोमबत्ती अब तक जल रही थी और वहां वह किताब उसको दिखाता हुआ बोला, "देखो यही न वह किताब है जिसका जिक्र तुमने मुझसे किया था?"

आश्चर्य के साथ नन्हों ने उस किताब को देखा और तब बोली, "मालूम तो यही होती है, यह तुम्हारे हाथ कैसे लगी?" भूतनाथ ने कहा, "सो पीछे बताऊंगा पर तुम इसे जल्दी जल्दी देख जाओ और

तब बताओ कि क्या इसकी मदद से हम लोगों का काम हो सकता हैं!" नन्हो उसके बगल में उसी खाट पर बैठ गई और उस किताब को उलट पुलट कर जगह जगह से देखने लगी। भूतनाथ इस बीच विचित्र ढंग से उसके मुंह की ओर देखता रहा।

यकायक चौंक कर नन्हों बोली, "कहीं बाबूजी न आ जांय?" मगर भूतनाथ ने कहा, "उनका डर न करो, वे इस समय गाफिल पड़े हुए हैं!" नन्हों ने प्रश्न की दृष्टि उस पर डाली और भूतनाथ ने विचित्र ढंग से गर्दन हिला दी जिसके बाद नन्हों ने फिर कुछ न पूछा और उस किताब के वरक उलटने लगी यहां तक कि शीघ्र ही उसके अन्त तक पहुंच गई और तब बोली, "बेशक यही चीज है, और इसकी मदद से और कुछ नहीं तो तिलिस्म की सैर तो हम लोग जरूर ही कर सकते हैं।"

भूतनाथ बोला, "यही मेरा भी खयाल है मगर अफसोस कि इसके कुछ पृष्ट पढे नहीं जाते और बहुत से शब्दो का मतलब भी नहीं लगता!" इसके जवाब मे नन्हों ने कहा, "अब पहिले यह तय करो कि किस दिन किस तरह और कैसे क्या किया जाय?" भूतनाथ ने कहा, "यह बात जल्दी में तय नही की जा सकती और इसे सोचने का काम तुम्ही से ठीक बनेगा क्योकि तुम्हे तिलिस्म का जितना हाल मालूम है मुझे उतना भी नहीं मालूम, अस्तु तुम्ही इस बात का फैसला करो। फिलहाल मैं इस किताब का जहा की तहा रक्खे देता हूं जिसमें उठने पर बाबाजी इसे गायब पा घबड़ायें नहीं, और खुद अब बिदा होता हूं क्योंकि रोहतासगढ़ मे मुझे बहुत जरूरी काम है, पर वहां से लौट कर मै पुनः यहा आऊंगा और तब हम लाग निश्चय करें कि कैसे क्या करना चाहिए।"

नन्हों ने कहा, "जैसी तुम्हारी मर्जी, मगर तुम कब तक लौट कर आ सकोगे?" भूतनाथ बोला, "सो अभी मै ठीक ठीक नहीं कह सकता, शायद तीन चार रोज के अन्दर आ न सकूंगा!" नन्हों बोली, "और इस बीच मे अगर बाबूजी ने यह किताब कहीं छिपा दी या किसी को दे-

दो तब ?" भूतनाथ बोला, "इस पर निगाह रखना तुम्हारा काम है।"

कुछ देर तक नन्हों और भूतनाथ में और भी बातें होती रहीं। इसके बाद भूतनाथ उठा और बाबाजी के पास पहुंच उसने वह किताब पुनः ज्यों की त्यों उनके सिरहाने के नीचे रख दी। इसके बाद नन्हों से बोला, "अगर छेड़ा न जाय तो आप से आप घण्टे भर बाद इनकी नींद खुल जायगी।" नन्हों उसका मतलब समझ कर बोली, "मगर सो ठीक न होगा। ये कभी सूर्योदय के बाद सोए नहीं रहते। आज देर से उठेंगे तो इन्हें जरूर शक हो जायगा!" भूतनाथ बोला, "तब मैं इनकी बेहोशी कुछ कम किए देता हूं मगर इनके होश में आने तक ठहरूंगा नहीं। मुझे यों ही देर हो चुकी है।"

भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से किसी दवा की एक शीशी निकाली और उसका डाट खोल उसे बाबाजी की नाक के पास कुछ देर तक लगाए रहा। इस बीच में गौर से वह उनकी हालत भी देखता जाता था। जब उसने समझ लिया कि अब कोई खतरा नहीं है और इनकी बेहोशी बहुत कुछ कम हो चुकी है तो उसने शीशी बन्द करके रख ली और नन्हों से यह कहता हुआ कि—'अब मैं जाता हूं, ये उठें तो मेरा प्रणाम इनसे कहना और यह भी कि बहुत जल्दी रहने के कारण तथा इन्हें नींद में गाफिल देख मैं बिना मिले चला गया पर लौटती वक्त जरूर आऊंगा'—वह मठ के बाहर निकल गया। नन्हों दरवाजे तक उसके साथ साथ आई जहां दोनों में फिर कुछ बातें हुई और तब भूतनाथ बाहर निकल गया तथा नन्हो मठ के भीतर लौट अपने रोजमर्रा के कामों में लग गई।

पांचवां बयान

रोहतासगढ़ के मशहूर किले का हाल हमारे पाठकों को अच्छी तरह मालूम होगा जहां के राजा दिग्विजयसिंह के बारे में चन्द्रकान्ता सन्तति में खुलासा तौर पर लिखा जा चुका है।

पर इस समय जब कि हम अपने पाठकों को वहां ले चल रहे हैं, वहां की हालत उस ढंग की नहीं है जैसी कि चन्द्रकान्ता सन्तति में दिखाई गई है क्योंकि वह बाद का हाल है और अभी हम उससे पहिले का हाल लिख रहे हैं जब कि दिग्विजयसिंह को राज्य-सिंहासन नहीं मिला था और तख्त पर उसके पिता महाराज त्रिभुवनसिंह विराज रहे थे। इसीलिए राजदर्बार की हालत था कुछ दूसरी थी क्योंकि पुराने सर्दारों और दरबारियों को दिग्विजयसिंह ने सिंहासन पर आते ही इस फुर्ती और तेजी से निकाल बाहर करना शुरू किया था कि चन्द्रकान्ता सन्तति मे जिस राजदर्बार का जिक्र किया गया है उसकी हालत एक दम बदल चुकी थी। महाराज त्रिभुवनसिंह के जमाने में जिस दर्बार मे एक से एक पहलवान, दबंग, बहादुर, लड़ाके, और बांके जवान दिखाई पड़ते थे, दिग्विजयसिंह के राज्य-काल में उसी दर्बार में 'गुणी-जन' की वृद्धि हो गई थी और शिकार तथा कुश्ती के बदले मजलिसों और महफिलों का बाजार गर्म हो गया था मगर-खैर उन बातों से हमारे किस्से का कोई सम्बन्ध नहीं है और न हम उनका जिक्र ही यहां पर करेंगे।

आज हम अपने पाठकों को लेकर एक बार फिर उसी राजमहल में पहुंचते हैं जिसमें बाद के जमाने में राजा दिग्विजयसिंह की रानी रहा करती थी, जिसमें किशोरी कुछ दिन कैद रहने पर मजबूर की गई थी, अथवा आखिरी दफे जिसमें नकटे दारोगा और शेरअली को लेकर माया-रानी गई थी। यद्यपि राजा दिग्विजयसिंह के समय में इस महल की हालत कुछ दूसरी थी क्योंकि उसे इमारतों का बहुत शौक था और उसने इस महल को बहुत कुछ तरक्की दी थी पर इस समय भी जब का हम हाल लिख रहे हैं, यहां की शान शौकत और ठाठ बाट में कोई कमी न थी चाहे इमारतों का हिस्सा कुछ कम ही क्यो न हो।

इस राजमहल के उत्तर तरफ वाले एक बड़े कमरे में जहां की खिड़-कियां किले के बाहरी हिस्से में पड़ती है और जहां से दूर तक के

जंगल मैदान और पहाड़ों का दृश्य दिखाई पड़ता है हम पाठकों को ले चलते हैं। इस कमरे में एक तरफ तो मोटा फर्श बिछा हुआ है और दूसरी तरफ एक पलंग है जिस पर एक अधेड़ उम्र औरत गर्दन तक चादर ओढ़े पड़ी है। इस औरत की सूरत शक्ल तथा पलंग के आस पास पड़े हुए सामानों के देखने से साफ जाहिर होता है कि यह मरीज है और बीमारी की ही तरह अपने दिन बिता रही है। पाठकों को ज्यादा देर तक तरद्दुद में न डाल हम कहे देते हैं कि ये महाराज त्रिभुवनसिंह की बड़ी बहिन अर्थात् दिग्विजयसिंह की वही बुआ हैं जिनका कुछ हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है अथवा जिनके पास जाकर लाडिली ने रोहतासगढ के तिलिस्मी तहखाने के कई भेदों के बारे में जानकारी हासिल की थी।*

मरीज की चारपाई की पाटी पर हाथ धरे एक कम उम्र लौंडी बैठी पंखी डुला रही है और एक दूसरी लौंडी कुछ दूर दर्वाजे के पास बैठी खल में कोई दवा घोंट रही है। इनके अलावा उस बड़े कमरे में इस समय और कोई भी दिखाई नही देता। वृद्धा की आखें बन्द हैं और जान पड़ता है मानो वह सोई हुई हो, पर वास्तव में यह बात नही है क्योंकि कुछ ही देर बाद एक लम्बी सांस फेंक कर उसने आखें खोली और लौंडी की तरफ देख के पूछा, "जा पूछ तो शेरसिंह अभी आया कि नहीं ?"

"जो हुक्म" कह वह लौंडी उठी और कमरे के बाहर की तरफ चली मगर दर्वाजे तक भी न पहुंची थी कि बाहर से किसी की आहट मिली और शेरसिंह नजर पड़े। लौंडी उन्हे देखती ही बोली, "बारे आप किसी तरह आए तो सही, देवीरानी बीसो दफे आपको पूछ चुकी हैं !"

'देवीरानी' से लौंडी का मतलब उन्ही वृद्धा से था और इस महल में वे इसी नाम से मशहूर थी। शेरसिंह के आने की आहट वृद्धा को मालूम पड़ी और उन्होंने करवट बदल के कहा, "ओह शेरसिंह, तुमने तो बहुत

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति तेरहवा भाग ग्यारहवा बयान।

देर लगा दी ? मैं डर रही थी कि मेरे रहते रहते लौटोगे भी कि नहीं !" शेरसिंह ने आगे बढ़ देवीरानी को प्रणाम किया और तब चरण छूकर बोले, "सो क्या ? तबीयत कुछ ज्यादा खराब हो गई क्या ?"

वृद्धा बोली, "हां कमजोरी बढ़ती जा रही है और अब तो करवट फेरने मे भी तक्लीफ होती है, खैर सो सब बातें पीछे होती रहेंगी, तुम यह बताओ महात्माजी से भेंट हुई ?"

शेरसिंह० । जी हां । वे अपने स्थान पर थे नही कही गये हुए थे अस्तु उनके आसरे रुकना पड़ा, जब लौट कर आए तो भेंट हुई और आपका सन्देशा दिया । आपकी बीमारी का हाल सुन वे बड़े चिन्तित हुए और बोले कि मैं खुद आने वाला था पर कई तरह की झंझटों मे पड़ के रुक गया ।

वृद्धा० । वे खुद आने वाले थे ! सो किस लिए ? और अब कब आयेंगे ?

शेरसिंह० । सो तो उन्होंने मुझे कुछ बताया नही सिर्फ इतना कहा कि रोहतासगढ़ लौट जाओ, तुम्हारे पहुँचते पहुँचते तक बल्कि उससे पहिले ही मैं भी पहुंच जाऊंगा । मैंने कहा कि मेरे साथ ही चलिए सवारी मौजूद है, पर वे बोले कि मै जंगल में कुछ बूटियां लेता हुआ आऊंगा तुम चलो, मेरे लिए रुकने की जरूरत नही और न मुझे किसी सवारी की ही जरूरत है । तुम देवीरानी से कह देना कि पुतलियों वाला दर्वाजा खुला रक्खेंगी मैं उधर ही से आऊंगा ।

वृद्धा० । (चौक कर) पुतलियों वाले दर्वाजे की राह ! तो क्या...?

वृद्धा यकायक चुप हो रही और कुछ सोचने बाद अपने सिरहाने की तरफ से ताली का एक गुच्छा निकाल कर शेरसिंह को देती हुई बोली, "तो फिर तुम्ही जाओ, मेरे लिये तो उठना मुमकिन नही है ।"

शेर० । हां हां क्या हुक्म है कहिए ?

वृद्धा० । गुच्छे को वह जो लम्बी ताली है उससे तुम (हाथ से बता

कर) उस दर्वाजे का ताला खोल के भीतर चले जाओ। भीतर एक दूसरा दर्वाजा दिखेगा, उसकी ताली भी इसी गुच्छे में है खोल लेना। नीचे जाने को सीढ़िया मिलेंगी जिनके अन्त तक उतर जाने पर एक बड़ा दर्वाजा दिखाई पड़ेगा। वह दर्वाजा बन्द होगा मगर उसमे कोई ताला लगा हुआ न होगा। उसे खोलने की तरकीब मैं बताती हूं, आगे झुको तो कहूं, उसी ढंग से उसे खोल कर तुम लौट आओ।

शेरसिंह आगे को झुक गए और बुढ़िया ने उनके कान मे कुछ कहा इसके बाद उस लौंडी से जो उन्हें पंखा झल रही थी बोली, "मैना एक रोशनी ले ले और इनके साथ जा, भीतर अन्धेरा होगा।" "जो हुक्म" कह लौंडी ने पंखा रख दिया और कमरे के बाहर जा एक लालटेन ले आई।

जिस तरह देवीरानी ने बताया था उसी तरह सब दर्वाजे खोलते हुए शेरसिंह जब उन सीढ़ियों पर पहुचे तो उन्हें बहुत ही घना अन्धकार नजर आया और साथ ही सीढ़ियां भी ऐसी घुमघुमौवा और चक्करदार मिली कि अनजाने अगर बिना रोशनी के वे आते तो जरूर गिर कर चोट खा जाते, पर उस लौंडी के हाथ वाली रोशनी की मदद से शेरसिंह सम्हलते हुए धीरे धीरे सीढ़ियां उतरने लगे और साथ ही निराला पा उससे बातें भी शुरू की।

शेर०। कहो मैना क्या हालचाल है, आज तो बहुत दिनों बाद तुम दिखाई पड़ीं, कहीं गई थी क्या ?

मैना। जी नहीं जाऊंगी कहां, बड़ी महारानी ने अपनी खिदमत में बुला लिया था वहीं चली गई थी, जब छुट्टी मिली तो फिर आ गई। आप अच्छी तरह हैं ?

शेर०। खाक अच्छी तरह हूं ! (लम्बी सांस लेकर) तुम कोई मेहरबानी ही नहीं करतीं !

मैना०। (गर्दन नीची करके) भला मैं किस लायक हूं जो आप.....

शेर० । क्यों, इसमें लायकी गैरलायकी की क्या बात ? दिल क्या लायक नालायक खोजता है, यह तो दिल खोजता है ।

मैना० । (मुस्कुरा के) और वह दिल आपका छुट्टन.......

शेर० । (बिगड़ कर) बस खबरदार, उसका नाम मत लो ! न जाने किसने कह दिया है कि मैं छुट्टन को चाहता हूं, और तुम मौके बे मौके जब देखो इस बेसिर-पांव की बात को ले उड़ती हो !

मैना० । (टेढ़ी नजरों से देख कर) तो क्या यह बात सही नहीं है ?

शेर० । झूठ, बिल्कुल झूठ ! तुमसे किसने ऐसा कहा !

मैना० । छुट्टन ने !

शेर० । झूठी है ! बेईमान है ! मेरे सामने कहे तो मैं उसकी जुबान.....।

मैना० । (खिलखिला कर) अच्छा अच्छा ऐसा आपे के बाहर न होइए और जरा देख कर कदम रखिए, वह सीढ़ी खतरनाक है !

शेरसिंह सम्हल कर मैना से बोले, "मुझे तुम्हारे सिवाय इस वक्त और कुछ सूझता ही नहीं है ! खैर तुम सच सच बताओ कि तुम्हारे मन में क्या है ! जिस तरह मैं तुम पर जान देता हूं उसी तरह तुम्हे भी मेरा कोई खयाल है या नहीं ? एक दफे सच सच बता दो !"

मैना ने ठण्ढी सांस खीच कर कहा, "मर्दों से क्या कहा जाय और क्या न कहा जाय ? वे तो जिसे देखते है उसी को दिल दिए फिरते हैं ! न जाने ईश्वर ने उन्हें कितने दिल दे रक्खे है ? खराबी तो हम औरतों की है जो सिर्फ एक ही दिल ले के पैदा हुईं और सो भी ऐसा नाजुक कि जरा भी ठेस खा के चूर हो जाने वाला ! मेरे दिल का हाल आप क्या पूछते है ? और अगर पूछना ही है तो अपने दिल से पूछिए ! मैं किसे क्या बताऊं ?"

शेरसिंह ने देखा कि खूबसूरत मैना की आंखें इतना कहते कहते डबडबा आईं और दो बूंद आंसू उसके गाल पर ढुलक आए जिन्होने

उनका दिल बेकाबू कर दिया। वे चाहते ही थे कि उससे कुछ कहते या उसके आंसू पोछते कि इसी समय उन्हे अपने सामने की तरफ किसी की आहट मिली। सीढ़ियों का सिलसिला यहां तक आकर खतम हो गया था और शेरसिंह को अपने सामने चन्दन की लकड़ी का बना हुआ एक बहुत बड़ा दर्वाजा दिखाई पड रहा था जिस पर तरह तरह के देवी देवताओं की पचीसों तरह की मूर्तियां खुदी हुई थी। इस समय इस दर्वाजे के दूसरी तरफ से कोई इस पर थपकी मार रहा था जिसकी आवाज शेरसिंह के कान मे गई और वे जल्दी जल्दी मैना से बोले, "मालूम होता है दूसरी तरफ महात्माजी आ गए हैं। अब बात करने का मौका नही है! बताओ, तुम आज रात को उसी ठिकाने मुझसे मिलोगी?" मैना ने सिर हिला कर 'नही' कहा, शेरसिंह ने उसका हाथ पकड़ लिया और आग्रह के साथ कहा, "नही, तुम्हें आना ही पड़ेगा! अगर तुम न आओगी तो फिर मुझे तुम्हारे पास आना होगा और उससे यदि कुछ गड़बड़ी हो जाय तो फिर मुझे दोष न देना!", मैना यह सुनते ही डर के बोली, "नही नही, आप हरगिज मेरे यहां मत आइएगा! महारानी को वैसे ही मेरे ऊपर...!" शेरसिंह बोले, "तो फिर तुम आती हो? बोलो जल्दी!" लाचार मैना को धीरे से "अच्छा, मगर मै ज्यादा न रुकूंगी!" कहना ही पड़ा, और जवाब में एक बार उसका हाथ जोर से दबा शेरसिंह उस दर्वाजे की तरफ बढ़ गए।

मैना यद्यपि बराबर उधर ही देख रही थी फिर भी वह कुछ समझ न सकी कि शेरसिंह ने किस तरह इस दर्वाजे को खोला। सिर्फ इतना ही नजर आया कि शेरसिंह ने कुछ खास खास मूर्तियों को किसी क्रम से दबाया जिसके साथ ही भारी दर्वाजा बिना किसी प्रकार की आहट के खुल गया और दूसरी तरफ एक बाबाजी खड़े दिखाई देने लगे। हमारे पाठक इन महात्माजी को देखते ही पहिचान लेंगे क्योंकि ये वही हैं जिनसे गोपालसिंह और कामेश्वर की भेंट हुई थी अथवा जिनकी लड़की नन्हों

है। इनको देखते ही शेरसिंह ने झुक कर इन्हें प्रणाम किया जिसके जवाब मे बाबाजी हंसते हुए बोले, "देखो मैं तुम्हारे पहिले हो यहा आ पहुंचा कि नही !" शेरसिंह बोले, "जी हां बेशक !" और तब मैना के हाथ से लालटेन लेकर हिलाते हुए कहा, "मैं अभी अभी यहा पहुंचा और देवीरानी के हुक्म से दर्वाजा खोलने आ ही रहा था। अच्छा चलिए, वे बड़ी बेचैनी के साथ आपकी राह देख रही है !"

महात्माजी ने घूम कर वह दर्वाजा बन्द कर दिया और तब बोले, "चलो मै तैयार हू।" सब कोई उन पेचीली और घुमावदार सीढ़ियों को तय करते हुए ऊपर आ पहुंचे जहा वह वृद्धा इनके आने का इन्तजार ही कर रही थी। महात्माजी को देखते ही वह उठ बैठी और शायद पलंग से नीचे उतर आती-पर महात्माजी ने रोक कर कहा, "हा हां, यह क्या करती हो देवी, पड़ी रहो !"

पलंग के बगल मे एक चौकी पर आसन बिछाया हुआ था जिस पर बाबाजी आकर बैठ गए। देवीरानी ने उनका चरण छूकर माथे के साथ लगाया और उन्होने आशीर्वाद देकर कहा, "मै खुद ही कई दिनों से तुम्हारे पास आने की बात सोच रहा था। कल जब शेरसिंह से तुम्हारी बीमारी का हाल जाना तो चिन्ता हुई। तुम्हारे लिए एक बूटा लेने जंगल मे चला गया था नही तो और भी जल्दी पहुंचता। तुम्हे अब जल्दी अच्छा हो जाना चाहिये क्योंकि तुम्हारे जरिये एक बहुत वड़ा काम निकलने वाला है।"

इतना कह बाबाजी ने अपने कन्धे पर का झोला उतारा और उसमे से एक बूटी जिसकी पत्तियां लाल रंग की और डंठल काली थी निकाल कर शेरसिह को देते हुए बोले, "इसका तीन भाग कर लो और तुलसीकी पत्ती के साथ घोंट कर शर्बत की तरह छान सुबह दोपहर शाम तीन दफे पिला दो। ईश्वर चाहेगा तो इनका रोग शीघ्र ही दूर हो जायगा !"

शेरसिह ने वह बूटी ले ली और कमरे के बाहर चले गए। देवीरानी

ने आश्चर्य की मुद्रा से बाबाजी की तरफ देख कर पूछा, "महाराज ने क्या कहा सो मेरी समझ मे कुछ न आया ! मै बूढी अपाहिज औरत इस दुनिया मे किसी के क्या काम आ सकती हूं !" महात्माजी ने देवीरानी की तरफ झुक कर धीरे से कहा, "जिस चीज को तुम इतने दिनों से एक धरोहर की तरह अपने पास रक्खे आई हो उसके निकालने का वक्त आ गया । अपना 'भानुमति का पिटारा' अब तुमको खोलना पड़ेगा ।"

बाबाजी की कही हुई बात मे न जाने क्या असर था कि बूढ़ी देवीरानी अपनी बीमारी भूल उठ कर बैठ गईं और ताज्जुब के साथ उनका मुंह देखने लगी । बाबाजी उनका भाव देख मुस्कुरा कर बोले, "क्या तुम भूल गईं कि तुम्हारी मां ने मरती समय तुम्हे वह चीज देते हुए क्या कहा था ?"

देवीरानी बोली, "जी नही, मैं बिलकुल भूली नही हूं और मुझे एक एक लफ्ज याद है । मुझे खूब याद है कि मेरी मा ने मरती समय वह चीज मुझे सौंपते हुए कहा था कि—'बेटी, यह एक ऐसी चीज मैं तुझे देती जा रही हूँ जिसे जन्म भर अपनी जान से बढ़ कर समझियो । यद्यपि मै तुझे बता नही सकती कि इसके अन्दर क्या है, पर समय आने पर तुझे आप से आप यह बात मालूम हो जायगी और जब तक वह वक्त न आवे तू इसे उसी तरह हिफाजत से रखियो जिस तरह मै इतने दिनों से रखती चली आई !' बस इससे ज्यादा उन्होंने मुझसे कुछ न कहा । यद्यपि मै बार बार पूछती रही कि यह क्या चीज है किस काम आवेगी और किस तरह इसका भेद मुझे मालूम होगा, पर वे सिर्फ इतना बोलीं कि—बस तू इसे 'भानुमति का पिटारा' समझ ! पर खबरदार इसको खोलने का इरादा कभी न करियो ! इसके लिये बहुत बड़ी कसम उन्होने मुझे दे दी और यहा तक डरा दिया कि तब से आज तक मुझे उस चीज को देखने से डर लगता है । वह ज्यों की त्यो बन्द की बन्द अपनी जगह पर पड़ी हुई है ।"

बाबाजी० । ठीक है, मगर अब उसके निकलने का वक्त आ गया। आज उसका मालिक पैदा हो गया।

देवीरानी० । इसके क्या मानी ? वह क्या चीज है ? उसका मालिक कौन है ? और आपको उसका हाल कैसे मालूम हुआ ?

बाबाजी० । सुनो मैं उसका सब हाल तुम्हे बताता हूं।

इतना कह बाबाजो ने अपने चारो तरफ देखा। कमरे में सिर्फ एका लौडी थी जो दर्वाजे के पास खडी हुई थी, मगर देवीरानी का इशारा पा वह भी बाहर चली गई और वहां एकदम एकान्त हो गया, बाबाज कुछ खसक कर देवीरानी के और पास हो गए जो कमजोरी के सबब पुनः लेट गई थी और तब धीरे धीरे उनसे कुछ कहने लगे।

कुछ देर तक बाबाजी देवीरानी से न जाने क्या क्या कहते रहे। इस बीच मे केवल एक बार शेरसिंह वह बूटी छान कर ले आए जिसे बाबाजो ने देवीरानी से पीने को कहा, और तब वे भी देवीरानी की इच्छा समझ कमरे के बाहर चले गए जिससे इन लोगो की बातचीत में किसी तरह का विघ्न न पड़े।

आखिर महात्माजी की बातें समाप्त हुईं। देवीरानी इस समय बहुत कुछ प्रसन्न और स्वस्थ जान पड़ती थी। महात्माजो के एक सवाल के जवाब में उन्होने एक ताली जो उनके गले मे तावीज की तरह हरदम लटकी रहा करती थी निकाल कर उन्हे दी और हाथ जोड कर कहा, "आज आपकी जुबानी एक ऐसे भेद की बात सुनने मे आई जिसका कभी स्वप्न में भी गुमान न हो सकता था ! उस जगह की ताली यह है जहां वह भानुमति का पिटारा रक्खा हुआ है। आपके सुपुर्द मैं इसे करती हू, अब आप जो जी चाहे और जैसे जी चाहे उसका हेस नेस करें। वह चीज आज से आपके कब्जे मे देती हूं, मुझे अब उससे कोई मतलब नही !"

बाबाजी ने वह ताली ले ली और देवीरानी से विदा हो अपने स्थान

की ओर रवाना हुए, मगर इस बार वे उधर से नही गये जिधर से आये थे बल्कि किले से होते हुए सदर दर्वाजे की राह बाहर हुए। देवीरानी के हुक्म से शेरसिंह उन्हे किले के बाहर तक पहुंचा आये और तब बाबाजी की आज्ञा से वापस लौटे। अकेले बाबाजी ने किले से निकल घने जंगल का रास्ता लिया।

छठवां बयान

बाबाजी को बिदा कर शेरसिंह राजमहल के उस हिस्से की तरफ चले जिधर उनके रहने का स्थान था, मगर अभी रास्ते ही मे थे कि यकायक घबड़ाई हुई मैना उनके पास पहुची और बोली, "चलिए जल्दी आपको बूआजी बुला रही है!" शेरसिंह ने पूछा, "क्यों ऐसी घबड़ाई हुई क्यो हो! क्या उनकी तबीयत कुछ.....?" पर वह बोली, "नहीं नही कुछ और ही बात है, आप जल्दी चलिये!!" लाचार शेरसिंह जल्दी जल्दी कदम बढाते हुए उसके पीछे रवाना हुए और शीघ्र ही पुनः उसी कमरे में पहुंच गये जहां से अभी कुछ ही देर पहिले बाबाजी के साथ बाहर हुए थे।

मगर यहा पहुंचते ही वे चौंक गये। उनके पैर दर्वाजे ही पर रुक गए। वे ही बाबाजी जिन्हे अभी अभी किले के बाहर छोडते हुए आ रहे थे यहां देवीरानी के पास बैठे हुए थे और देवीरानी उनसे आश्चर्य और घबराहट के साथ कुछ पूछ रही थी। शेरसिंह को देख उन्होंने कहा, "आओ शेरसिंह, और यह क्या हो गया इसे कुछ समझने की कोशिश करो!" शेरसिंह ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा और महात्माजी को प्रणाम करते हुए पूछा, "महात्माजी को पुनः यहाँ लौट आते देख मुझे आश्चर्य होता है क्योंकि मैं अभी अभी आपको किले के बाहर छोड़ता हुआ आ रहा हूं।"

बाबाजी हंस कर बोले, "मैं तो अभी चला ही आ रहा हूं। पुतलियों

वाला दर्वाजा जिसे खोल रखने के लिए मैंने तुमसे कहा था खुला न रहने के कारण मुझे घूम कर चक्कर लगाते हुए दूसरी राह से आना पड़ा। मगर तुम किसको कहा छोड़ आए यह जरूर जानना चाहता हूं। यहां देवी भी यही पूछ रही है कि मैं अभी ही गया था और अब फिर दुबारा कैसे आ पहुंचा, अस्तु तुम जल्द बताओ क्या मामला है ?''

शेरसिंह०। (ताज्जुब से) तो क्या आपका मतलब यह है कि अभी कुछ ही देर पहिले तक आप यहां बैठे हुए नही थे और इस समय आपको मैं किले के बाहर छोड़ता हुआ नही आ रहा हूँ ?

बाबाजी०। कभी नहीं, मैंने कहा न कि मैं अभी अभी बस चला ही आ रहा हूं।

देवीरानी०। और क्या आपका यह भी कथन है कि वह भानुमति का पिटारा आपने मुझसे नही मांगा जिसे मेरी मां मरते समय मुझे सौंप गई थी और वह जिस जगह है वहा की ताली भी मैंने आपको नही दी ?

बाबाजी०। भानुमति का पिटारा ? क्या वह तुमने किसी को दे दिया ? हाय हाय ! यह तो बड़ा गजब कर दिया !! उसी के लिये तो मैं आया था, उसकी अब जरूरत आ पड़ी है मगर हुआ क्या आखिर ? किसको तुमने वह चीज दे दी ? खुलासा मुझे बताओ, मेरी समझ ने कुछ नही आ रहा है कि बात क्या है।

देवीरानी०। खुद मेरी ही समझ से कुछ नही आता कि यह क्या हो गया ? (शेरसिंह से) अब तुम्ही महात्माजी को सब हाल सुनाओ, मेरी तो अक्ल परेशान हो गई है।

शेरसिंह०। मैं सब कुछ खुलासा कहता हूँ पर महाराज पहिले आप इतना बता दीजिये कि उस जगह, रोहतासमठ मे, मैं आप ही से न मिला था और आप ही ने न मुझसे कहा था कि मैं देवीरानी के लिए एक बूटी लेता हुआ आऊंगा तुम पुतलियों वाला दर्वाजा खुला रखना, अथवा वह भी कोई दूसरा ही था जिससे मेरी वे सब बातें हुई ?

बावाजी० । हां हां, तुम जरूर मुझसे मिले थे और मैंने तुमसे यह बात कही थी ! मैं जंगल मे गया और वहां बड़ी तलाश के बाद मुझे वह बूटी मिली जिसकी मै खोज मे था और जो यह देखो (अपने झोले मे से एक जंगली बूटी जो लता की तरह थी निकालते हुए) यह मै लेता हुआ आ रहा हूं ! मगर यहां आने पर मुझे वह दर्वाजा खुला हुआ न मिला और इसी सबब से मुझे चक्कर लगा कर दूसरी राह से आना पड़ा जैसा कि मैंने कहा और इसी कारण मुझे इतनी देर हो गई ।

शेरसिंह० । ठीक है, तो मैं समझता हूं कि किसी ने छिप कर हम लोगो की बातें सुन ली और आपकी सूरत बन वह काम कर गुजरा जिसका (देवीरानी की तरफ देख कर) आपने जिक्र किया । खैर मै सब हाल आपसे कहता हूं ।

इतना कह शेरसिंह वह सब हाल जो कि हम ऊपर के बयान में लिख आए हैं पूरा पूरा महात्माजी से कह सुनाया और अन्त में यह भी कहा, "उस नकली महात्मा ने विदा होते हुए अन्त मे मुझसे कहा कि अब तुम इस किले में ज्यादा देर न रहो और महाराज से छुट्टी लेकर सीधे नौगढ चले जाओ अस्तु मैं सफर की तैयारी करने डेरे की तरफ जा रहा था कि लौंडी पहुंची और मै इधर आ गया । अब आप ही बताइये कि क्या मामला है, और वह अगर आप नहो थे तो और कौन हो सकता है !"

महात्माजी कुछ देर तक चुपचाप न जाने क्या गौर करते रहे, इसके बाद उन्होने पूछा, "नौगढ़ जाने को उस बदमाश ने तुम्हे किस लिए कहा ?"

शेरसिंह० । उसका कहना था कि नौगढ के कई ऐयार यहां आए हुए हैं और कुछ शैतानी करना चाहते हैं, कौन कौन आये हैं और किस लिए आए हैं इसी का पता लगाने के लिए मुझे उधर जाने को उसने

कहा था और यह भी कहा था कि इस बात की खबर महाराज को हो चुकी है, तुम्हें वे फौरन इजाजत दे देंगे।

महात्मा०। मैं समझता हूं कि वह किसी बहाने तुमको यहां से हटा देना चाहता था ताकि मैं जब जाऊं तो मुझसे तुम्हारी भेंट न हो सके? (देवीरानी से) अच्छा तुम बताओ कि तुमसे उसकी क्या क्या बातें हुईं?

देवीरानी०। उसने मुझसे यकायक भानुमति के पिटारे का जिक्र किया जिसके सुनते ही मैं घबड़ा गई क्योंकि आपसे कई दफे सुन चुकी थी कि वह कोई बड़ी ही भयानक चीज है और ऐसा ही मेरी मां ने भी मुझसे कहा था। मैंने उससे पूछा कि उसके अन्दर क्या है, उसका हाल उसे क्योंकर मालूम हुआ, और वह उसका क्या करेगा? इसके जवाब में उसने बहुत कुछ कह डाला जिसका संक्षेप यही है कि उसके अन्दर कोई डरावना तिलिस्मी सामान है और कुछ ऐसी चीजें भी हैं जिनकी मदद से तिलिस्म खोला जा सकता है। अन्त मे उसने कहा कि जमानिया के तिलिस्म का एक हिस्सा अब टूटने वाला है जिसके लिए उन चीजों की जरूरत है और इसीलिए वह उसे ले जाना चाहता है।

महात्मा०। (घबड़ा कर) उसने ऐसा कहा?

देवीरानी०। जी हां, और जब मैंने पूछा कि आपको उससे क्या सम्बन्ध? तो बोला कि मैं ही उस हिस्से का दरोगा हूँ, उसकी एक ताली मेरे पास है, और बिना मेरी मदद के तिलिस्म तोड़ने वाला किसी तरह अपना काम पूरा नही कर सकता, मगर यह पूछने पर कि उसे कौन तोड़ेगा, कुछ जवाब न दिया।

महात्मा०। तब? तुमने वह पिटारा उसे दे दिया?

देवी०। जी, पिटारा तो नही दिया मगर उस स्थान की ताली दे दी जहां वह रक्खा हुआ है।

महात्मा०। (चौक के) सिर्फ ताली दी, वह पिटारा नही दिया! तो क्या वह कहीं दूसरी जगह रक्खा हुआ है?

देवी० । जी हां, वह तो (झुक कर धीरे से) जोगी बावा की समाधि में न रक्खा हुआ है ? आप ही ने एक दफे कहा था कि ऐसी चीजें अपने पास रखना ठीक नही, कही दूसरी जगह रखवा दो, सो मैंने वहीं रखवा दिया था और आज मुद्दत से वह वहीं पड़ा है ?

महात्मा० । (चमक कर) ओह, तव कुछ उम्मीद है कि वह अभी तक उस चीज को न ले जा सका होगा, क्योंकि वहां से किसी सामान को सहज में निकालना मुश्किल है, फिर दिन में वहा भीड़भाड़ भी रहती है जिससे शायद वह रात ही में इस काम को करना मुनासिव समझे। अगर मैं अभी दौड़ा चला जाऊं तो शायद उसे पकड़ सकूं। क्यो शेरसिंह!

शेर० । (हाथ जोड़ कर) आज्ञा ?

महात्मा० । जोगीबाबा की समाधि तो तुम्हारी देखी ही हुई है !

शेर० । जी हां क्यो नही, मै सैकड़ो दफे वहां जा चुका हूं।

महात्मा० । वहां तक जाना और वहां से किसी छिपी चीज को निकाल लाना सहज काम नही है ! अगर हम लोग तेजी से वहा जाय तो मुमकिन है कि उस चोर के पहिले पहुंच सकें या उसके काम में वाधा डाल सकें।

शेर० । सम्भव है, यद्यपि मुझे यह अन्देशा है कि वह भी इस वात को समझता होगा और जानता होगा कि जैसे ही असली महात्मा यहा पहुंचे और भण्डा फूटा वैसे ही उसका पीछा किया जायगा।

महात्मा० । हां सो तो ठीक ही है फिर भी ... (कुछ सोच कर) अच्छा देवी, तुम मुझे वहां के कामदार के नाम एक चिट्ठी लिख दो कि जैसा मैं कहूं वैसा ही वह करे तथा मेरी सब तरह से मदद करे, और इस शेर को हुक्म दो कि दो तेज घोड़े ले के मेरे साथ चले।

देवी० । भला आपको कामदार पहिचानता नही जो कुछ उज्र करेगा। फिर भी मैं चीठी लिखे देती हूं, और शेर आपके साथ जाता है।

इतना कह देवीरानी ने शेरसिंह की तरफ देखा। उन्होने कलम

दावात और कागज निकाल कर सामने रख दिया और यह कहते हुए कि—'मैं घोड़ों का इन्तजाम अभी करता हूं' कमरे के बाहर निकल गए। देवीरानी ने एक चिट्ठी लिख कर महात्माजी के हवाले की और कहा, "नीचे वाले तहखाने म जिसके दर्वाजे पर अजगर है वह पिटारा रक्खा होगा, अगर वह दुष्ट उसे ले न गया हो। लेकिन यदि वह ले के चला गया तब......?"

बाबाजी उतावली से कागज लेते हुए बोले, "तब समझ लो कि बड़ा भारी गजब हो जायगा और क्या कहूं। खैर अब देर करना मुनासिब नहीं, मैं जाता हू। वह लो शेरसिंह भी आ पहुँचा। (दर्वाजे की तरफ देख कर) क्यों शेरसिंह, घोडों का इन्तजाम हो गया? तुम अभी मेरे साथ चल सकते हो न?" शेरसिंह बोले, "जी हां, मैं तो हरदम तैयार रहता हू!" और तब दोनो आदमी कमरे के बाहर निकले।

पाठक, अब थोडी देर के लिए इनका साथ छोड़ हम आगे बढ़ चलते हैं और एक ऐसे स्थान पर पहुचते है जो सुन्दरता मनोहरता और स्वाभाविक रमणीयता मे अपना सानी नही रखता।

रोहतासगढ़ किले के करीब दस कोस पश्चिम वह अनूठा स्थान है जिसे यहां के लोग जोगी बाबा की समाधि के नाम से पुकारते हैं। पहाडियों के लम्बे सिलसिले को फोड़ती हुई इन्द्रावती नदी जिस जगह से बाहर निकली है वहां उसके किनारे पर ही एक भारी गांव बसा हुआ है। इस गांव के उत्तर लगभग आधा कोस के फासले पर पहाड़ियों के भीतर दबा हुआ वह मनोरम स्थान है। पहाड़ की ऊंचाई से एक झरना नीचे आता है जो आगे चल कर पहाड़ी नाले के रूप मे बहता हुआ इन्द्रावती मे मिल जाता है। इस झरने के किनारे ही बहुत पुराने जमाने की बनी हुई बावली और उसके साथ सटा हुआ बहुत बडा मकान है जिसके पीछे एक बाग भी है जो पहिले कभी जरूर ही बहुत खूबसूरती से संवारा जाता होगा पर आजकल उसमे केवल फलों के पेड़ों की हीं

भरमार है। इस स्थान को देखने से यह भी पता लगता है कि किसी जमाने में इस जगह कोई किला या गढ़ी भी जरूर रही होगी क्योंकि अब भी उसके टूटे फूटे निशान कही कही दिखाई पड़ते हैं मगर बहुत ही कम कारण यह कि इमारत के काम में आने लायक चीजें पास के गांव वाले उठा ले गये है जिससे अब वहां वीरान सा हो गया है। मगर वे ही गांव वाले सुबह और शाम इस जगह की रौनक भी कायम रखते हैं। यहां का दृश्य बहुत ही मनोरम होने के कारण गांव के शौकीन लोग यहां भांग बूटी छानने बराबर आया करते है तथा पूजा पाठ और भजन पूजन के शौंकीनों के लिए भी वह मन्दिर बहुत ही अच्छा है जो देवीरानी का बनवाया हुआ उस बाग के बीचोबीच में है और जहां का पुजारी ही उस छोटे तोशेखाने का कामदार भी है जो बावली वाले मकान में किसी पुराने जमाने से है और जिसमें देवीरानी का सामान रहता है जो इस स्थान की मालिक हैं।

इस समय देर हो जाने के कारण बावली और झरने के किनारे का आनन्द लेने वालों की संख्या बहुत कम हो गई है, फिर भी इक्के दुक्के लोगो की आवाजाही जारी है और वहां एकदम सन्नाटा नही होने पाया है। इस जगह दस पन्द्रह आदमी बावली के किनारे और बगल के दालानो में तथा उतने ही झरने के आस पास सघन पेड़ों की झुरमुट मे दिखाई दे रहे है जो तरह तरह के कामों मे लगे हुए हैं। इन लोगों में से ज्यादातर लोग आसपास के रहने वाले ही हैं मगर कुछ लोग ऐसे भी है जो यहां के बाशिन्दे नही हैं और जिन पर बाकी के लोग भी ताज्जुब की निगाहें डाल रहे हैं। मुमकिन है कि इन लोगों से हमें भी आगे चल कर काम पडे अस्तु इस जगह इनका हाल कुछ खुलासे तौर पर लिख देना चाहते हैं।

ये लोग गिनती मे तीन हैं और इनके तीन घोड़े भी पास ही मे बंधे दिखाई दे रहे हैं जिनमे से एक तो सवारी का है जिस पर चारजामा

वगैरह कसा है और बाकी दोनों पर कुछ असबाब लदा हुआ है। एक मोटा ताजा व्यक्ति जो रंग ढंग सूरत शक्ल और पोशाक से कोई देहाती बनिया या महाजन जान पड़ता है बावली के किनारे एक चिकने पत्थर पर, जहां पीपल की घनी छाया है, थकावट की मुद्रा से पड़ा और दूसरा उसके पैर दबा रहा है तथा तीसरा व्यक्ति घोड़ों पर का बोझ हटाने और उन्हे लम्बी बागडोरों से बांधने की फिक्र कर रहा है। न जाने कहां से चले आते हुए ये तीनों व्यक्ति अभी अभी यहा पहुँचे हैं और बिना किसी से पूछे ताछे या बात चीत इस तरह रुक गये हैं मानों आज यही डेरा डालने का इरादा हो।

घोड़ों को चरने के लिए छोड़ वह आदमी जो उनका इन्तजाम कर रहा था ऊपर आया और उस मोटे आदमी के पास पहुंचा जो उसे देखते ही बोला, "अब तुम हम लोगों के खाने पीने का कुछ इन्तजाम करो। जंगल से सूखी लकड़ियां और जड़ें बीन लो और अहरा लगा दो। मै भी नहाने धोने की फिक्र करता हूँ। और रामदास, (उस आदमी की तरफ देख कर जो उसके पैर दबा रहा था) तुम पुजारीजी से मिल कर रात भर रहने लायक किसी जगह का इन्तजाम कर लो, बल्कि वही घोड़ों पर का सामान भी रख कर बिस्तर लगा दो। लाओ एक लोटा दो तो मैं निपट आऊं।"

नौकर ने लोटा भर के दिया और सेठजी उसे हाथ में लिए अपनी मोटी तोंद हिलाते बावली के नीचे उतर जंगल में घुस गए। उनके जाते ही एक आदमी ने जो वहीं बगल की एक साफ चट्टान पर बैठा भाग रगड़ रहा था, नौकर से पूछा, "साबजी कहां के है और किधर जा रहे है?" नौकर बोला, "चुनार के हैं, रोहतासगढ़ के राजा साहब के पास जा रहे हैं!" उसने फिर पूछा, "क्या काम होता है इनके यहां!" जवाब मे—"बस यही लेन देन गिरों गट्टा, और कुछ किमखाब का!" कहता

हुआ वह नौकर नीचे उतर गया और वह पूछने वाला फिर अपनी भंग घोटने मे लग गया।

लगभग घण्टे भर के बाद हमारे सावजी जंगल से आते दिखाई पड़े। मालूम होता था कि ये जंगल ही में किसी झरने के किनारे हाथ मुंह धो और स्नान आदि भी करके निश्चिन्त हो चुके है क्योंकि इनके दोनों गमछे गीले थे और हाथ का लोटा भी जल से भरा था जिसे शायद पूजा आदि के लिए लाए हों, पर इस समय ये अकेले नही थे। इनके साथ साथ एक बाबाजी भी थे जिनका लम्बा चौडा डील डौल और घनी सफेद दाढ़ी भक्ति और श्रद्धा उत्पन्न करती थी। सावजी बड़ी दीनता के साथ इनसे बात करते चले आ रहे थे और ऐसा जान पड़ता था मानों जंगल ही मे दोनों को भेंट हो गई हो।

सावजी की गैरहाजिरी मे उन दोनों आदमियों ने जिनमे से एक बहुत ही चलता पुर्जा जान पड़ता था पुजारीजी से पूछ इस बावली के दक्खिन तरफ बने हुए दालान और उसके बगल वाली कोठरी मे अपना डेरा डाल दिया था। एक तरफ सावजी का बिछावन लग गया था, दूसरी तरफ एक दरी बिछा दी गई थी और कोठरी में वह सब असबाब जो घोडो की पीठ से उतारा गया था करीने से सजा हुआ था। एक तरफ की जमीन धोकर सावजी की पूजा के लिए एक कम्बल कई तह करके बिछाया हुआ था और कुछ पोथी पत्रा गुप्ती माला आदि भी बगल में धरा हुआ था। सावजी ने अपने हाथ का लोटा उसी आसन के पास रख दिया और नौकर को पुकार के कहा, "अरे जगुआ, महात्माजी के लिए कुछ बिछा तो सही!" और दूसरे को आवाज दी जो दालान के कोने में लगे अहरे पर फूंकें मार रहा था, "रामा, महात्माजी भी आज यहीं भोजन पायेंगे, रसद बढ़ा देना।" महात्माजी ने इन्कारी के भाव से कहा, "नही नही, भोजन वोजन का बखेड़ा अब मत लगाओ!" मगर सावजी ने हाथ जोड़ और गिड़गिड़ा कर कहा, "भला ऐसा कैसे हो

सकता है महाराज! इतने दिनों के बाद भाग्य से ही तो आपके दर्शन हुए हैं और प्रसादी भी नहीं पाऊंगा!" बहुत बड़े आग्रह के साथ इन्होंने महात्माजी का मुंह बन्द कर दिया और लाचार होकर उन्हे भी कबूल करना ही पड़ा।

महात्माजी ने अपना झोला और पीठ का कम्बल उतार कर रख दिया और तब बोले, "अच्छा तुम अपनी पूजा से निपट लो तब तक मैं भी एक जरूरी काम पूरा कर लूं जिसके लिए यहां आया हूं।" सावजी बोले, "जो आज्ञा।" और पूजा वाले कम्वल पर जा विराजे मगर अपने एक नौकर की तरफ उन्होने कनखी से कुछ इशारा जरूर कर दिया जिसके जवाब में उसने भी जरा सा सिर हिला दिया। सावजी ने कम्बल पर बैठ नाक से हाथ लगाया और वह नौकर दबे पांव उन महात्माजी के पीछे हो लिया जो उस तरफ बढ़े जा रहे थे जिधर वह इमारत थी जिसका जिक्र हम ऊपर कर आए हैं या जिसमे देवीरानी का तोशाखाना था।

बावली के पीछे की तरफ बने इस मकान की बनावट कुछ विचित्र ढंग की थी। बाहर से सरसरी निगाह मे देखने पर तो यह एक मामूली इमारत ही जान पड़ती थी पर वास्तव मे कारीगरी से खाली न थी और उसका जितना हिस्सा ऊपर नजर आता था उससे कही ज्यादा जमीन के भीतर था और उसमे कई बड़े बड़े कमरे दालान और तहखाने बने हुए थे।

सदर दरवाजा पार कर महात्माजी इस मकान के अन्दर घुसे ही थे कि उस आदमी की निगाह, जो यहां का कामदार और देवीरानी के मंदिर का पुजारी भी था, इन पर पड़ी और वह दौड़ा हुआ इनके पास पहुंचा। जमीन पर लोट उसने महात्माजी को साष्टांग दण्डवत किया और उनके चरणो की धूल माथे से लगाई, तब हाथ जोड कर विनीत भाव से पूछा,

"गुरुदेव ने इस असमय में आने का कष्ट किया !" महात्माजी बोले, "हां मातादीन, मुझे देवीरानी के तोशेखाने से कुछ निकालना है जिसको ताली मैं लेता आया हूं। तुम जरा पूरब तरफ वाले तहखाने का दर्वाजा खोल दो और एक रोशनी भी मुझे ला दो क्योंकि नीचे अंधेरा होगा।
"जो आज्ञा" कहता हुआ मातादीन चला गया और कुछ ही देर में एक मोमबत्ती तथा तालियों का झब्बा लिए हुए आ मौजूद हुआ। महात्माजी उसको लिए हुए मकान के पूरब वाली एक कोठरी में घुस गए और करीब घड़ी भर उसके अन्दर ही रहे। इसके बाद जब निकले तो उनके हाथ मे लाल कपड़े मे बंधा एक पिटारा नजर आ रहा था जिसका पेटा यद्यपि हाथ भर से कुछ ही कम होगा मगर बोझ जिसका ज्यादा नही जान पड़ता था, क्योंकि महात्माजी आसानी से उसे अपने हाथ में लटकाए हुए थे।

सावजी का वह नौकर दूर ही से ताक झांक लगाए हुए था। जैसे ही उसने महात्माजी को वह पिटारा लिए तहखाने के बाहर निकलते देखा वैसे ही वह उस मकान के बाहर आया और सावजी के पास पहुंच कर उनसे कुछ बोला जो अपनी पूजा समाप्त कर आसन से उठ रहे थे। मालिक और नौकर में धीरे धीरे कुछ बातें हुईं और तब सावजी अपनी तोंद झुलाते हुए उसी मकान के अन्दर चले। उनका वह नौकर भी साथ हुआ।

मगर उतनी ही देर में मकान के भीतर का दृश्य एक दम ही बदल गया था। नौकर के जाने और सावजी के यहा पहुचने के बीच में मुश्किल से पांच मिनट का समय लगा मगर इतनी ही देर में न जाने कहा से ठीक उसी सूरत शकल और रंग ढंग के एक दूसरे बाबाजी भी वहा आ मौजुद हुए थे और इस समय इन दोनों ही महात्माजो में खूब हाथापाही हो रही थी। हर एक दूसरे को चोर बनाता हुआ क्रोध के साथ कहनी अनकहनी सब कह रहा था और दोनों ही एक एक हाथ से उस

पिटारे के बेठन को पकड़े हुए थे जिसे कुछ ही देर पहिले उनमें से एक ने नीचे के तहखाने से निकाला था। बेचारा पुजारी मातादीन बौखलाया हुआ कभी एक और कभी दूसरे की तरफ देखता और बड़ी चिन्ता के साथ सोच रहा था कि यह एक से दो महात्मा कैसे हो गये और इनमें से किसको वह असली समझे और किसको नकली !

मगर हमारे सावजी को इस भ्रम ने बिल्कुल नही सताया। उन्होंने चट आगे बढ़ दोनों ही महात्माओं के पैर थाम लिए और कहा, "शान्त होइये, शान्त होइये ! इसमे कोई सन्देह नही कि आप मे से एक मेरे गुरुदेव और दूसरे उनकी परीक्षा लेने को आये हुए कोई देवता है ! आप दोनों क्रोध न करें, आपके क्रोध से संसार क्षण भर मे भस्म हो जायगा ! आप मुझे बतावें क्या झगड़ा है ?"

एक महात्मा लाल आंखों से दूसरे को देखते और हाथ से बताते हुए बोले, "इसे देखते हो, इसे ! बेईमान कही का, मेरा रूप बन के आया है और कहता है मै चोर हूं ! इसकी हिम्मत तो देखो !" दूसरे महात्मा अपना बदन कंपाते हुए हाथ उठा के बोले, "यह दगाबाज ऐयार मेरा रूप बन देवीरानी को धोखा दे तोशेखाने की ताली ले आया है और इस पिटारे की चोरी करके भागना चाहता है ! ऊपर से मुझे झूठा बनाता है ! मारूंगा एक चिमटा अभी खोपड़ी लाल हो जायेगी !" दूसरे की बात सुन क्रोध से कांपते हुए पहिले महात्मा ने अपना चिमटा सम्हाला तो उधर दूसरे ने भी अपने चिमटे वाले हाथ को ऊंचा किया। क्षण भर के लिये उस पिटारे पर से दोनों ही का ध्यान हट गया और दोनों एक दूसरे पर सांघातिक आक्रमण करना ही चाहते थे कि हमारे सावजी ने फिर बीच बचाव किया। उन्होंने पहिले तो अपने नौकर की ओर एक कनखी मारी और तब दोनों क्रोधित महात्माओं के बीच मे जाकर अपना सिर झुकाते हुए बोले, "आप भले ही इस दास के सिर को अपने चिमटो का निशाना बनावें पर मेरी प्रार्थना है किकंघनो

करें नही तो गजब हो जायगा।"

इन दोनों महात्माओं के झगडे की आवाज बाहर तक पहुच गई थी और बावली तथा झरने पर जितने भी आदमी थे सभी कौतूहलवश या तमाशा देखने आ मौजूद हुए थे जिससे वहाँ पन्द्रह बीस आदमियों का एक छोटा सा मजमा इकट्ठा हो गया था, मगर चूंकि सभी की निगाहे उन्ही महात्माओं की तरफ थी इसलिये किसी ने भी इस बात को लक्ष्य न किया कि सावजी के उस नौकर ने धीरे से हाथ बढा कर वह पिटारा अपनी तरफ खीच लिया और उस पर अपनी चादर डाल दी है। दोनों महात्माओ को क्रोध ने पागल किया हुआ था और सावजी ने उनके बीच में अपने मोटे थुलथुल शरीर को डाल के केवल अच्छी खासो आड़ ही नहीं कर रक्खी थी वल्कि अपनी नम्रता भक्ति तथा आदर विश्वास भरी चलती फिरती बातों से सभो का ध्यान भी बिल्कुल अपनी तरफ खीचा हुआ था अस्तु वह आदमो कब पिटारे को बगल मे दबाये वहां से दबका हुआ निकल भागा इस पर किसी का भी ध्यान नही गया, खास कर इसलिये कि उसी समय एक लम्बा चौड़ा रोबीला व्यक्ति जो पौशाक तथा कपड़े लत्ते से किसी रियासत का ओहदेदार जान पड़ता था वहा आ पहुँचा और ऊंची आवाज मे बोला, "क्या हुआ, क्या हुआ!"

इस नये आदमी को देखते ही एक महात्मा ने कहा, "आओ आओ, शेरसिंह, तुम कहां रह गये थे? देखो इस चोर को मैंने पकड़ रक्खा है?" दूसरे महात्मा बोले, "यह कौन है शेर? कम्बख्त मुझे चोर बनाता है और कहता है कि मैं देवीरानी को धोखा दे के उसकी चीज लूट ले जाना चाहता हू! इसे कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिये।"

शेरसिंह बोले, "मैं बहुत जल्द निर्णय कर लूंगा कि आप दोनों में से कौन असली महात्मा है और कौन उसका भेष धरने वाला ऐयार। आप लोग चलिये उस कोठरी में, मगर पहिले मुझे यह कहा दीजिये

कि तोशेखाने में से कोई चीज तो अभी निकाली नही गई है ?"

अब उन दोनों महात्माओं का ध्यान उस पिटारे की तरफ गया जो इस झगड़े की बुनियाद था। एक बोला, "यह कम्बख्त वह पिटारा लेकर बाहर भागा जा रहा था जब मैंने इसे पकड़ा !" दूसरे ने इधर उधर देख के कहा, "यह नकली साधू उसे अपना बताता है, मगर है, वह पिटारा गया कहां ?"

दोनों महात्मागण और उनकी देखादेखी बाकी के लोग भी इधर उधर देखने लगे, मगर वह पिटारा अब था कहां जो दिखाई पड़ता ? उसे कहीं का कही पहुंचा सावजी का वह नौकर अब लौट आया था और भीड़ मे खुद भी एक तमाशाई बन इस तरह खड़ा था मानो कुछ जानता ही न हो। एक महात्मा उस पिटारे को गायब पा चीख के बोले, "हाय हाय ! आखिर यह कम्बख्त उस चीज को मार ही ले गया !" दूसरे ने बिलख के कहा, "ओफ, सारी मेहनत बर्बाद गई और अब न जाने क्या गजब हो जायगा ? मगर जरूर यह इसी शैतान का काम है !"

शेरसिंह बोले, "मालूम होता है आप दोनों ने आपुस मे झगड़ा करके उस चीज को भी गवां दिया जिसके लिए यहां आए थे। खैर, उसकी खोज तो होती रहेगी मगर पहिले मैं निश्चय कर लेना चाहता हूं कि आप में से असली कौन है और नकली कौन ? (पुजारी की तरफ देख के) मातादीन, फाटक पर जो सिपाही है उनसे कह दो कि इस इमारत के बाहर किसी को न निकलने दें, बल्कि बाहर भी जो लोग नजर आवें उनको रोक रक्खें मैं सबकी अच्छी तरह जाच करके तब किसी को जाने दूंगा। और महात्माजी, आप दोनो दया करके मेरे साथ आवें !"

मातादीन फाटक की तरफ चला गया और शेरसिंह दोनों महात्माओं का हाथ थामे हुए उस कोठडी के अन्दर घुस गए जो बगल ही में पडती थी। यहां पहुँच उन्होंने अपना ऐयारी का बटुआ खोला और उसमें से एक शीशी निकाली जिसमें किसी तरह का अर्क था। इसे दिखाते हुए

उन्होने कहा, "बाप दोनो महात्मागण कृपा कर इस अर्क का एक एक चिल्लू भर के अपने चेहरे पर मल लें, अभी पता लग जायेगा कि कौन असली है और कौन बनावटी !"

एक ने चट हाथ बढा कर कहा, "ठीक बात है, लाओ, अभी इस कम्बख्त का भण्डा फूटेगा।" दूसरे ने कहा, "इतनी बडी बेइज्जती आज तक मेरी कभी न हुई थी !" और हाथ बढा दिया। शेरसिंह ने एक एक चिल्लू अर्क दोनों को अंजुली में दिया और कहा, "कृपा कर अच्छी तरह चेहरे पर मल लीजिए।" इसके बाद शीशी बन्द कर बटुए के हवाले कर ही रहे थे कि बाहर से किसी ने आवाज दी, "सर्दार साहब, सर्दार साहब, जल्दी बाहर आइए।" जिसे सुन कोठड़ी के दर्वाजे पर पहुच वे बाहर की तरफ झाक कर देखने लगे कि क्या मामला है, परन्तु जो कुछ उन्होने देखा उसने उन्हे चौका दिया और वास्तव मे चौंकने की बात ही थी। हमारे सेठजी गुस्से मे भरे अपना बदन कंपाते हाथ मे अपना ही जूता लिए अपने नौकर को बेतहाशा मार रहे थे और साथ साथ कहते जाते थे, "कम्बख्त, जब तैने देखा कि वह आदमी गठड़ी उठा के भागा जा रहा है तो उसे रोका क्यो नही ! हमारे महाराज का नुकसान अब कौन देगा, तू कि मैं ? बोल पाजी !!"

शेरसिंह ने पास जा के पूछा, "क्या बात हैं !" एक आदमी ने बताया, "ये सेठजी कुछ समय से यही ठहरे हुए हैं, राजा साहब के कारबारी भी हैं। इनके इस नौकर का कहना कि जब दोनो महात्मा लड़ रहे थे और वह उनका झगड़ा देखने बाहर से भीतर आ रहा था तो उसने एक आदमी को एक गठरी दबाए भागे जाते देखा था। इसी पर सेठजी मारे डाल रहे है कि तूने उसे रोका क्यो नही ! भला बताइए इस बेचारे का क्या कसूर और इसे खबर ही क्या थी कि वह कौन है और क्या लिए जाता है !"

शेरसिंह लपक के उस नौकर के पास पहुचे और सेठजी को मारने

से रोक उससे पूछते लगे—"उस आदमी की सूरत शकल क्या थी जिसे गठरी लिए जाते तूने देखा ?" वह नौकर जो मार खा के बडा मुर्झा सा गया था इनके दोनो पैर पकड़ गिड़गिड़ा कर बोला, "सरदार साहब, मुझे बचाइए, मेरा कोई कसूर नहीं ! मुझे जरा भी पता होता कि वह कम्बक्त चोर है तो मैं कभी उसे जाने न देता ?" सावजी यह सुन गुस्से से एक लात उसे जमाना ही चाहते थे कि शेरसिंह ने उन्हे रोका और शान्त करने के लिए बोले, "जाने दीजिए सेठजी, इस बेचारे का कोई कसूर नही, यह अगर जानता ही होता तो भला उस पाजी को जाने क्यों देता ! (नौकर से) खैर तू बतला कि वह आदमी कैसा था जो गठड़ी ले के भाग रहा था ?"

नौकर बोला, "सरकार, लम्बे कद छरहरे बदन का दुबला पतला आदमी था, सुफेद कपड़े पहिने था, कमर के साथ उसके एक झोला लटक रहा था। एक गठरी जो लाल रंग के कपडे मे बंधी थी हाथ मे लिए था। सरकार मेरा कोई कसूर नही, मै जानता तो........!"

शेरसिह बोले, "अच्छा अच्छा, घबड़ा नही, तेरा कुछ नुकसान न होगा, (अपने सिपाहियों से)तुममे से दो आदमी यहा फाटक पर रहो। किसी को बाहर जाने न दो, और दो आदमी बाहर निकल कर देखो। जिस शकल सूरत का यह शख्स कह रहा है वैसा कोई आदमी कही दिखाई दे तो फौरन गिफ्तार कर लो, मै अभी आता हूं।"

इतना कह शेरसिह पुनः उस कोठडी की तरफ लौटे जिसमे दोनों महात्माओं को छोड़ गये थे मगर उसकी ड्योढ़ी पर पहुंचते ही चौक कर रुक गए। कोठड़ी एक दम खाली थी और वहां किसी का नाम निशान भी न था। दोनो महात्मा न जाने कब कहां गायब हो गए थे ! ताज्जुब के साथ शेरसिह ने उस कोठरी को देखा और तब उस मकान का कोना कोना तलाश मारा पर वे दोनो साधू कही नजर न आये। न जाने जमीन उन्हे खा गई या वे आसमान मे उड़ गये। फाटक पर दरियाफ्त करने से

मालूम हुआ कि कोई भी आदमी यहां का बाहर नहीं गया है। उन्होंने स्वयं या वहा मौजूद इतने आदमियों में से किसी ने भी उन दोनों को उस कोठड़ी के बाहर आते भी नही देखा था, अस्तु शेरसिंह समझ गए कि जरूर उस कोठडी मे कोई न कोई गुप्त राह या सुरंग ऐसी है जिसकी राह दोनो गायब हो गये। मगर बहुत माथा लड़ाने पर भी उस रास्ते का पता न लगा और न यही समझ मे आया कि अगर भागना ही था तो उनमे से जो नकली था वह भागता असली महात्मा क्यों भागे या उन्होंने दूसरे ही को क्यो भाग जाने दिया ? जरूर इसमे कोई भेद है !

कुछ देर तक शेरसिंह मकान के भीतर और बाहर बावली पर के आदमियों से पूछताछ और छानबीन करते रहे पर चूंकि उन्हें विश्वास हो गया था कि जो आदमी वह पिटारा ले के भागा वह अब तक कहीं का कही निकल गया होगा और यहां मौजूद आदमियो में से किसी का यह काम नही हो सकता अस्तु उन्होने उन लोगो को रोकना या ज्यादा तंग करना मुनासिब न समझा। मामूली तौर पर पूछताछ कर तथा सभो का नाम पता लिख उन्होने सबको छोड़ देने का हुक्म दिया और आप वहा से चल दिये, मगर जाने के पहले यहां के पुजारी मातादीन को अकले मे ले जाकर जरूर न जाने क्या क्या समझाया जिसे हम भी सुन न सके।

हमारे साबजी या उनके नौकरो पर किसी को कोई शक न हुआ और शेरसिंह के चले जाने के बाद औरो के साथ साथ वे लोग भी वहां से रुखसत हो गये। किसी ने लक्ष्य न किया कि साबजी जब आए थे तो उनके साथ तीन घोड़े थे मगर अब दो ही क्यो रह गए हैं ! लेकिन हमें यह बात जरूर मालूम है और हम यह भी जानते है कि महात्माओ के हाथ से भानुमति का पिटारा ले के साबजी का नौकर जो भागा तो उसने फुर्ती फुर्ती एक घोड़े के पेट के साथ वह गठरी बांध दी और उसे एक चाबुक लगाई। सिखाया हुआ घोड़ा गठड़ी ले नौ दो ग्यारह हुआ और

अब एक हिफाजत की जगह मे खड़ा इन लोगों के आने की राह देख रहा था।

सातवां बयान

सुबह होने में अभी घण्टे भर से ज्यादा की देर है। यद्यपि पूरब तरफ का आसमान सुफेदी पकड़ रहा है फिर भी वह भयानक जंगल अभी तक डरावना मालूम होता है जिसके अन्दर रोहतासमठ की इमारत है या जिसके एक सिरे पर लुटिया पहाड़ी और दूसरे पर वह नाला है जो आगे चल कर उस नदी का रूप धारण कर लेता है जिसने घूम कर तीन तरफ से लुटिया।पहाड़ी को घेर रक्खा है।

ऐसे समय मे एक अकेली औरत को बेधड़क उस नाले के किनारे किनारे जाते देख हम ताज्जुब कर सकते हैं क्योंक सुबह नजदीक आ जाने पर भी डरावना जंगल इक्के दुक्के की आवाजाही के लायक नही हुआ है और वह भी खास कर किसी औरत के, अस्तु हम देखना चाहते हैं कि यह कौन है और कहां जा रही है। आइए जरा इसका पीछा करें।

एक मोटी काली चादर ने इस औरत को इस तरह ढांक रक्खा है कि इसके बदन की बात ही क्या चेहरे का भी कोई हिस्सा देखना मुश्किल हो रहा है। फिर भी इसकी चाल बता रही है कि यह कोई नौजवान औरत है और साथ ही इसके अन्दाज से यह भी पता लगता है कि इसके साथ कोई चीज गठरी या ऐसी ही कुछ भी है जिसे यह चादर की आड़ में लिये हुए है पर फिर भी जिसके कारण यह उस तेजी से चल नही पाती जितना कि यह चाहती है। इसका बार बार पीछे की तरफ फिर के देखना यह भी बताता है कि इसे अपने पीछा किए जाने का डर है या इस बात का ख्याल है कि कोई इसके संग न लगा हो। कभी कभी सिर उठा कर यह सामने की तरफ देख लेती है जहां कुछ दूर पर किसी छोटी इमारत की सुफेदी नजर आ रही है।

लीजिए, अब इसने नाले के किनारे किनारे चलना छोड़ दिया और कुछ दाहिनी तरफ को झुकती हुई जाने लगी। साथ ही हमने भी यह समझ लिया कि इसका लक्ष्य वह कूआ है जिसकी ऊंची जगत दूर से नजर आ रही थी। इस घोर जंगल में जिसमें ने जाने के लिए सड़क की तो बात ही क्या मुसाफिरों की आवाजाही बताने वाली कोई पगडंडी भी नही नजर आती इस बहुत बड़े और मजबूत कूएं को किसने किस नायन से बनवाया यह सोच कर ताज्जुब हो सकता है, पर खैर उसका खयाल छोड़ हम इस औरत का हाल लिखते हैं जो किसी नौजवान आदमी को जगत पर इस तरफ पीठ किए बैठा देख यकायक ठिठक गई और कुछ सोच रही है।

औरत की चंचल निगाहों ने कूएं से कुछ ही दूर बंधे एक घोड़े को भी देखा और तब उसकी झिझक बिल्कुल दूर हो गई। मालूम होता है घोड़े को देख वह उसके सवार को भी पहिचान गई क्योंकि दबे पाव आगे बढ़ती हुई वह कूएं के पास जा पहुंची और तब बहुत आहिस्ते से सीढ़िया चढ़ ऊपर पहुंच गई। अपनी चादर और हाथ का बोझ रख वह मुस्कुराती हुई आगे बढ़ी और पीछे से जा दोनो हाथों से उस नौजवान की आखें बन्द कर ली।

नौजवान जो लापरवाही की मुद्रा से कूएं की जगत के नीचे अपना पैर लटकाए कुछ गुनगुना रहा था यकायक चमक गया। दबी जुबान से उसके मुंह से निकला, "कौन?" और तब उसने अपने हाथ पीछे कर जिस किसी ने भी उसके साथ यह खिलवाड़ किया है उसकी बांह पकड़ कर उसको पहिचानने की कोशिश की मगर जनानी चूड़ियां हाथ में लगते ही वह भी ताज्जुब में पड़ गया और दुबारा धीरे से बोल उठा, "हैं यह कौन?" अपनी आवाज बदल कर वह औरत बोली, "पहिचानो।" नौजवान कुछ देर तक आवाज पर गौर करता रहा, तब बोला, "मैं नही पहिचान सका, बताओ तुम कौन हो?" इसके

साथ ही उसने दोनों हाथों से जोर कर उस औरत की कलाई हटा दी मगर पकड़े रक्खा और तुरत ही घूम कर देखा। साथ ही दोनों के मुंह से आश्चर्य की आवाजें निकल गईं। नौजवान ने देखा कि वह कोई ऐसी औरत है जिसका चेहरा नक़ाब से ढंका हुआ है और उस औरत ने जिसे नौजवान की आवाज ने पहिले ही कुछ शक मे डाल दिया था देखा कि यह कोई दूसरा ही नौजवान है, वह नही जिसका उसने गुमान किया था।

दोनों ताज्जुब से कुछ देर तक एक दूसरे को देखते रहे। इसके बाद नौजवान ने पूछा, "तुम कौन हो, और इस सूनसान भयावने जंगल मे अकेली क्यों दिखाई पड़ रही हो?" उस औरत ने पूछा, "और तुम कौन हो, यहां क्या कर रहे हो, और यह घोड़ा जो मैं बंधा देख रही हूं किसका है?"

नौजवान बोला, 'इस घोड़े ही को देख कर तो मैं यहा आ बैठा हू क्योंकि यह मेरे एक बहुत ही प्रेमी मित्र का है जिसके इधर आने का मुझे पता लगा था। इसे बंधा देख मैं इस खयाल से यहां बैठा हूँ कि वह कही दूर न गया होगा और लौट कर आता ही होगा। मगर क्या तुम भी इस घोड़े को पहिचानती हो?"

इसका जवाब उस औरत ने न दिया और कुछ सोचने लगी तथा इस बीच वह नौजवान भी कुछ गौर करता रहा, फिर दोनों मे बातचीत होने लगी।

नौजवान०। इस सूनसान और डरावने जंगल मे जहां किसी आबादी का नाम निशान तक नही है एक अकेली औरत को देख कर मुझे ताज्जुब होता है।

औरत०। बेशक ताज्जुब हो सकता है, और इसी तरह मैं भी आपको यहां देख ताज्जुब कर सकती हू।

नौजवान०। मेरे यहा आने मे तो कोई ताज्जुब की बात नही है।

यहां से कुछ ही दूर उस पहाड़ी के दूसरी तरफ मेरा डेरा पड़ा हुआ है जहां मैं शिकार के लिए आया हूं और इस समय भी कुछ रात रहते इसी फिक्र में निकला था, मगर तुम्हें

औरत०। मेरा मकान इसी जंगल में है और मैं भी घूमती फिरती यहां तक आ निकली हूं।

नौज०। (सिर हिला कर) यह तो मुझे विश्वास नहीं होता।

औरत०। किस बात पर विश्वास नहीं होता? कि मेरा घर इस जंगल में होगा?

नौज०। तुम्हारा घर शायद यहां हो, पर यह बात नहीं जान पड़ती कि तुम घूमने निकली हो। साधारण रूप से हवा खाने जो बाहर निकलता है वह नकाब से अपना चेहरा छिपा कर काली चादर ओढ़ कर और हाथ में असबाब लेकर नहीं निकलता जैसा मैं देख रहा हूं।

कहते हुए नौजवान ने उस चादर और गठरी की तरफ इशारा किया जो इस औरत ने कूएं पर चढ़ते समय एक तरफ रख दी थी। वह औरत नौजवान की यह बात सुन कुछ कहना चाहती थी कि यकायक रुक गई और पीछे को तरफ देखने लगी जिधर से एक घोड़े के टापों की आवाज आती हुई अभी अभी उसके कानों में पड़ी थी। नौजवान ने भी घूम कर उधर देखा और एक घुडसवार को घने जंगल से निकल कर उसी कुएं की तरफ आते पाया।

यह आने वाला भूतनाथ था जो अपनी मामूली सूरत और पोशाक में एक तेज घोड़े पर चढ़ा हुआ इसी तरफ को आ रहा था। बात की बात में वह इस जगह आ पहुंचा और घोड़े की बागडोर एक डाल के साथ अटकाने बाद कूएं पर चढ़ता हुआ बोला, "इतने सुबह के समय जमानिया के इतने बड़े ओहदेदार को इस जगह बैठे एक अजनबी औरत से बातें करते देख मुझे ताज्जुब होता है।"

वह नौजवान इसकी बात सुन मुस्कुरा कर बोला—"बेशक तुम्हें ताज्जुब

हो सकता है भूतनाथ, मगर मैं तुम्हारे इस ताज्जुब को सहज ही मे दूर भी कर सकता हूं !!" भूतनाथ बोल उठा, "उसकी जरूरत नही, क्योंकि मुझे मालूम है कि महाराज साहब शिकार के लिए इस तरफ आने वाले हैं, मगर मैंने यह भी सुना है कि इन्द्रदेव भी इधर आवेंगे। अगर ऐसा हो तो मेरी 'जय माया की' उन्हे कह दीजियेगा।"

इतना कह भूतनाथ उस औरत की तरफ घूमा और उसका हाथ पकड़ एक किनारे ले जाकर धीरे से बोला, "तुम इससे क्या बातें कर रही थी ! मेरा कोई भेद तो इससे नही कह दिया ?" वह बोली—"क्या मुझे इतना बेवकूफ समझते हो ! मैं तो जानती भी नही कि यह कौन है ! लाचारी थी कि तुमने यही जगह अपने मिलने के लिए बताई थी नही तो मै इधर आती भी नही।"

भूतनाथ उतावली से बोला, "खैर तो ठीक है, यह बताओ मेरी चीज लाई ?" औरत ने जवाब में उस गठरी की तरफ इशारा किया जो उसकी चादर से ढंकी पड़ी थी और भूतनाथ ने झुक कर वह गठरी उठा ली, इसके बाद कहा, "अच्छा अब मै चलता हूं, फिर तुमसे मिलूंगा।" औरत ने पूछा, "यह क्या, रुकोगे नही ! और मुझे साथ भी न लोगे ?" भूतनाथ ने जवाब दिया, "नही, नही, इस वक्त सो मौका नही है, कई सवार मेरा पीछा कर रहे हैं, हो सका तो कल मिलूंगा और बातें करूंगा, उसी मामूली जगह पर, तुम भी अब यहां न रुको और लौट जाओ।" औरत बोली, "अच्छा कम से कम यह तो बताते जाओ कि यह नौजवान है कौन ?" भूतनाथ बोला, "यह जमानिया के एक बहुत बडे रईस खानदान का लडका और रियासत का ओहदेदार राय श्यामलाल है, मगर तुम इससे बच के रहना, यह बडा ही दुष्ट है !" और तब उतावली के साथ कूएं से नीचे उतर अपने घोड़े पर सवार हो गया। उस नौजवान ने पूछा, "यह क्या भूतनाथ, तुम रुकोगे नही, कुछ काशीजी का हाल चाल तो सुनाते जाओ कम से कम ?" मगर भूतनाथ ने सिवाय एक

टेढ़ी निगाह देखने के कोई जवाब न दिया और घोड़े को एड मार दूर निकल गया। कुछ देर तक नौजवान उसी तरफ देखता रहा, तब उस औरत से कुछ पूछने के लिए घूमा मगर इसी बीच मे वह भी न जाने कहां गायब हो चुकी थी। उसकी खोज में सब तरफ निगाहे दौडाने लगा मगर वह कही नजर न आई, हां एक नौजवान जरूर दिखाई पडा जो इसी तरफ को बढा आ रहा था और जिसे देखते ही वह खुशी खुशी उठ खडा हुआ।

इस आने वाले नौजवान को पाठक बखूबी जानते हैं क्योंकि यह कामेश्वर है। कामेश्वर भी हमारे नौजवान को देख बहुत खुश हुआ और तेजी से कूएं की तरफ बढ़ता हुआ बोला, "वाह वाह श्यामजी, आप यहां यकायक कैसे आ पहुचे और कब से मौजूद हैं!"

दोनो दोस्त गले मिले और तब दोनो में इस तरह बातचीत होने लगी :—

कामे०। कहिए आप नौगढ़ से कब आए?

श्याम०। मै कल ही आ गया और तभी से आपको खोज रहा हू पर आपका कही पता ही नही लगता था। महाराज का शिकार के लिये पास वाले जंगल में आना हो रहा है इस लिये मुझे भी इस तरफ आना पड़ा और यहा आपको देख ताज्जुब हो रहा है। आप इस सूनसान जगल में इतने भोर के समय कहां?

कामे०। मैं अभी बताता हूं, मगर पहिले यह बताइये कि आप मुझे खोज क्यो रहे थे? क्या कोई नई बात हुई है?

श्याम०। हां नई और ऐसी मार्के की बात कि जिसके लिए हमारा आपका और कुंअर गोपालसिंह का तथा सम्भव हो तो इन्द्रदेव और भरथसिंह का भी एक साथ बैठ कर सलाह करना बहुत जरूरी है।

कामे०। ऐसा! आपकी बातें तो मेरा ताज्जुब बढा रही हैं। ऐसी

कौन सी घटना हो गई जिसके लिए इतनी बड़ी कुमेटी की जरूरत आ पड़ी है।

इतना सुनते ही श्यामलाल ने अपनी जेब में से एक कागज निकाला और उसे कामेश्वर के हाथ मे देते हुए कहा, "इस कागज को पढने से आपको सब कुछ मालूम हो जायगा।"

यह वही कागज था जो श्यामलाल ने गोपालसिंह को दिखाया था और इसको पढ़ते ही कामेश्वर की भी वही हालत हुई जो गोपालसिंह को हुई थी बल्कि ये उनसे भी ज्यादा घबड़ा गए और बेचैनी के साथ बोले, "यह मैं क्या पढ़ रहा हूं?"

श्याम०। यह लिखावट किसके हाथ की है आपने पहिचाना?

कामे०। अच्छी तरह! क्या इसको पहिचानने में भी मैं भूल कर सकता हूं? मगर क्या इसमें लिखी बातें सही हो सकती है?

श्याम०। (कागज लेते हुए) ये बातें जब सब लोग इकट्ठे होंगे तब होंगी, यहां अभी मौका नही है, हां अब आप यह बताइये कि इस जगह किस लिए आए थे और अब तक कहा थे या क्या कर रहे थे?

कामे०। अगर कुंअर गोपालसिंह से आपकी भेंट हुई होगी तो उन्होंने जरूर एक बाबाजी से अपनी मुलाकात का हाल कहा होगा, जिनके यहां हम लोगों ने कई अद्भुत घटनाएं देखी थी।

श्याम०। हां उन्होने मुझसे कुछ अजीब बातो का जिक्र किया था और साथ ही यह भी कहा था कि यह बात उन्होंने चाचाजी (भैयाराजा) से कही तो वे बोले कि इसका जिक्र अभी किसी से मत करना, इसमें जरूर कोई गूढ रहस्य है।

कामे०। ऐसा, खैर इस बात की तो मुझे खबर नही जो कुछ भी हो मगर मुख्तसर यह कि मैं भी उसी फेर मे पड़ा हुआ यहां तक आ पहुंचा। मैंने अपने कई आदमी उन बाबाजी की खोज में चारो तरफ लगा रक्खे थे जिनकी जुबानी मुझे पता लगा कि उनका रहना इसी जंगल की एक

पुरानी टूटी फूटी इमारत में होता है, अस्तु उन्ही से पुनः मिल कर कुछ खुलासा हाल जानने की नीयत से अपना घोड़ा यहां छोड मैं इस समय उनके स्थान पर गया था पर अफसोस उनसे भेंट न हो सकी और बैरंग वापस आना पड़ा।

श्याम०। अगर यह निश्चय हो चुका है कि उन बाबाजी का स्थान यही है तो हम लोग पुनः आ सकते है क्योंकि मुझे भी उनसे मिलने का बहुत कौतूहल है और मुझे विश्वास है कि वे कोई साधारण आदमी नही है।

कामे०। मेरा भी यही ख्याल है और इसी लिए मै उनकी फिराक में हूं।

श्याम०। तो फिर ऐसा करो कि इस समय चलो डेरे पर चलें, दोपहर स पहिले कुंअर साहब वहां आ जायेंगे और शाम होते होते महाराजा साहब के भी पहुंचने की खबर है बल्कि उनके साथ साथ चाचाजी (भैयाराजा) भी आवें तो ताज्जुब नही। वह जगह यहां से कुछ दूर नहीं है और हम लोग जब चाहे तब इधर आ सकते है।

कामे०। अच्छी बात है यही सही।

दोनो दोस्त घूमे, कामेश्वर ने अपना घोड़ा खोला और श्यामलाल पेड़ों को उस झुरमुट की तरफ बढ़े जिसकी आड़ मे उनका घोड़ा खड़ा था, मगर यकायक दोनों ही के पैर रुक गए। उनके कानो में दौड़ते आने वाले कई घोड़ो के टापो की आवाजें आईं और ऐसा जान पड़ा कि कई सवार इसी तरफ को चले आ रहे हैं। इसी समय तक चांदना बखूबी हो गया था अस्तु इधर उधर निगाह दौड़ाते ही हमारे दोनों नोजवान दोस्तों ने उन सवारो को देख लिया जो घने जंगल को चीरते हुए इसी तरफ को बढ़े चले आ रहे थे। सब से पहिले श्यामलाल की निगाह उन पर पड़ी और उन्होने पुकार कर कहा, "ये सवार फौजी जान पड़ते हैं, मालूम नही हमारे दोस्त हैं या दुश्मन, हमें अपने अपने घोड़ों

पर हो जाना चाहिए।" कामेश्वर ने जवाब दिया—"बेशक" और इसके साथ ही दोनो अपने अपने घोड़ो की तरफ झपटे। जब तक उनकी बाग-डोरें खोलें और सवारी कसें तब तक वे घुड़सवार भी सिर पर आ पहुंचे जिनके आगे आगे एक नौजवान था जो सूरत शक्ल और पौशाक से उन सभी का अफसर जान पड़ता था। इस नौजवान के एक इशारे के साथ ही उन सवारों ने इन दोनों दोस्तो को चारो तरफ से घेर लिया और उस नौजवान अफसर ने आवाज ऊँची करके कहा, "अपने मालिक के हुक्म से हम आप दोनो को गिरफ्तार करने के लिये आए है, मेहरबानी करके अपने अपने हथियार रख दीजिए।"

यह सुनते ही श्यामलाल ने गुस्से से आंखें लाल करके कहा, "यह क्या बेहूदगी है। तुम लोग कौन हो और किसके हुक्म से यहाँ आए हो? क्या तुम्हे मालूम है कि हम कौन है?" श्यामलाल की बात सुन कुछ हंस कर वह नौजवान बोला, "मैं आप लोगो को बखूबी जानता हूं और अगर कोई दूसरा मौका होता तो आप लोगो से कदर और इज्जत के साथ पेश आता, इस समय भी मैं यह नही चाहता कि आपके साथ किसी तरह की बेअदबी का बर्ताव हो, पर अफसोस यही है कि मुझे जो हुक्म मिला हुआ है उसकी पाबन्दी मुझे करनी ही होगी और आप लोगों को गिरफ्तार करके अपने साथ ले जाना ही पड़ेगा।"

कामे०। (अपने गुस्से को बड़ी मुश्किल से दबाते हुए) तुम्हारे मालिक का क्या नाम है?

नौज०। अफसोस कि मैं उनका नाम भी नही बता सकता और न ज्यादा देर ठहर ही सकता हूं।

श्याम०। तो हम लोग इस तरह अपने को कैदी भी नही बना सकते।

दोनो दोस्तो ने तलवारें खींच ली और उस नौजवान के एक इशारे के साथ ही उन सवारो ने भी अपने अपने हथियार निकाल कर इन पर

हमला कर दिया। देखते देखते घमासान लडाई होने लगी। यद्यपि वे सवार गिनती मे दस से कम किसी तरह न होगे और इधर हमारे दोस्त सिर्फ दो ही आदमी, फिर भी इन्होने हिम्मत न हारी और वडी दिलावरी और बहादुरी के साथ दुश्मनो का मुक़ावला किया। श्यामलाल और कामेश्वर दोनो ही तलवार चलाने के फन मे वहुत होशियार थे और दोनो का शरीर भी वहुत ही मजवूत और ताकतवर था अस्तु दोनों मे से किसी को भी यह डर न था कि वे वहुत सहज मे वेकावू कर लिए जायेंगे, और हुआ भी सचमुच वैसा ही। देखते देखते घेरने वाले सवारो मे से तीन जमीन पर दिखाई देने लगे और दो सख्त चुटीले होकर लड़ाई से अलग हो गए, मगर फिर भी वाकी के सवारो ने हिम्मत न हारी और उस नौजवान ने जो अब तक लडाई से अलग रह कर अपने साथियो को वढ़ावा दे रहा था बचे लोगो को ललकार कर खुद भी भयानक हमला इन दोनो पर किया, लड़ाई और गहरी हो पड़ी।

मगर यकायक दोस्त दुश्मन सभी के हाथ रुक गये। पास की एक झाड़ी मे शेर के गरजने की डरावनी आवाज सुनाई पड़ी जिसने सभो को चौका दिया और सब लोग घवड़ा कर उधर ही को देखने लगे। कुछ देर वाद पुनः गरज की आवाज सुनाई पड़ी और उसके वाद ही एक कद्दावर शेर झाड़ी मे से निकलता नजर आया। इस भयानक जानवर की खौफनाक सूरत देखते ही वे सवार ऐसा डरे कि लड़ना छोड़ अपने अपने को वचाने की फिक्र करने लगे और इसी कारण जैसे ही वह दहाड कर एक सवार की तरफ टूटा सब के सव भागते नजर आए।

हमारे कामेश्वर और श्यामलाल के घोड़े भी शेर को देख भागने लगे मगर इन लोगो ने उन पर कावू किया और कुछ ही दूर जाते जाते रोक कर उन्हे घुमाया। वडे ताज्जुव के साथ उस समय इन दोनों ने देखा कि उस जगह किसी शेर का कही नाम निशान भी नहीं है पर एक वृद्ध साधू महाराज खडे मन्द मन्द मुस्कुरा रहे है जिनकी सूरत देखते

ही कामेश्वर जोर से चिल्ला कर बोल पड़े, "अरे, ये तो वही महात्मा जी हैं जिनसे मिलने मैं इस तरफ आया था !!"

उन साधू महाराज ने भी कामेश्वर की बात सुनी और हाथ के इशारे से उन दोनो को अपनी तरफ बुलाते हुए कहा, "तुम्हारे आने की बात सुन कर ही मैं इस तरफ आया। घबड़ाओ नही, अब उन दुश्मनो का कोई डर नही है और हम लोग वेखटके बातचीत कर सकते है।"

कामेश्वर और उनका इशारा पाकर श्यामलाल महात्माजी के पास पहुँचे और घोड़ो से उतर पड़े। कामेश्वर ने श्यामलाल से कहा, "ये ही वे महात्मा हैं जिनसे उस रोज जगल मे मेरी और कुंअर गोपालसिह की मुलाकात हुई थी और आज जिनसे मिलने मै इस तरफ आया था।" इसके बाद महात्माजी की तरफ देख के बोले, "जमानिया के नामी रईस और महाराज गिरधरसिह की फौज के नायब सिपहसालार राय श्यामलालजी आप ही है।" महात्माजी ने हंस कर कहा—"मैं इनको खूब पहिचानता हूँ और तुम्हारी तरह इनसे भी मुझे जरूरी बात करनी है, लेकिन उसके लिये अगर तुम लोग मेरे स्थान पर चल सको तो ज्यादा अच्छा हो।" कामेश्वर ने कहा, "कोई हर्ज नही, चलिए। यद्यपि मै वही से लौटा चला आ रहा हूं पर फिर भी चलने को तैयार हूँ।" श्यामलाल ने कहा, "मैं भी चल सकता हूँ, मगर इन जख्मियो का क्या होगा जो यहाँ पड़े है?" महात्माजी बोले, "इन्हे इनके साथी आकर उठा ले जायेंगे, तुम इनकी फिक्र छोड़ दो।" श्यामलाल ने ताज्जुब से पूछा, "क्या आप पहिचानते हैं कि ये लोग कौन है जिन्होने इस तरह बेसबब और बेमौके हम पर हमला किया?" महात्माजी ने जवाब दिया— "हाँ" और तब इस तरह घूम पडे कि श्यामलाल को और कुछ पूछने का मौका न मिला, पर अपने दिल मे उन्होने जरूर सोच लिया कि मौका मिलते ही महात्माजी से पूछेगे कि ये लोग कौन या किसके आदमी थे। आगे आगे साधू बाबा और उनके पीछे पीछे ये दोनो दोस्त जाने लगे।

धीरे से श्यामलाल के कान के पास मुंह करके कामेश्वर ने कहा, "महात्माजी में जरूर कोई सिद्धि है! उस दिन भालू के रूप में हम लोगों को दिखाई पड़े थे, आज शेर बने नजर आये!" श्यामलाल ने हंस कर कहा, "पागल भये हो क्या? भला आदमी भी कभी शेर और भालू हो सकता है? जरूर इन्हें ऐयारी आती है और उसी की मदद से ये ऐसे ऐसे काम करते हैं, अथवा फिर किसी और तरह की कारीगरी।" कामेश्वर ने जवाब दिया, "थोड़ा साथ होगा तब समझोगे!" और तब दोनों चुपचाप महात्माजी के पीछे पीछे जाने लगे।

आठवां बयान

वह सुहावना जंगल संध्या का समय देख अपने अपने घोसलों को लौटने वाली चिड़ियों की चहचह से गूँज रहा है जिसके भीतर से होते हुए तीन नौजवान बेधड़क चले जा रहे हैं।

ये तीनों ही घोड़ों पर हैं और यद्यपि इनके चेहरे नकाबों से ढंके हुए हैं फिर भी इनकी पौशाकें बता रही हैं कि ये किसी बहुत ही अमीर खानदान के होनहार हैं, खास कर वह जवान जिसका घोड़ा सरदारी के ढंग पर बाकी दोनो से कुछ आगे बढ़ा हुआ है बहुत ही भड़कीली और कीमती पौशाक पहिने हुआ है और उसको देख यकायक किसी राजा या राजकुमार का भ्रम होता है। बाकी के दोनो सवारो को देख कर भी किसी राजा के दर्बारी या मुसाहब होने का ही खयाल हो सकता है मगर ताज्जुब की बात अगर कुछ है तो यही कि ये लोग इस बढ़ती हुई संध्या के समय ऐसे घनघोर जगल मे इस तरह बेसरोसामान क्यो दिखलाई दे रहे हैं जहां किसी भी तरफ कोसों तक आबादी का नाम निशान नहीं है, क्योंकि इसमे जरा भी सन्देह नहीं कि यही जंगल जो इस समय सुहावना जान पडता है कुछ ही देर बाद भयावना हो जायगा और खूबसूरत

चिड़ियों की चहचहाहट के बदले चारो तरफ से दरिन्दे जानवरो की आवाजें सुनाई देने लगेंगी।

मालूम होता है कि अगले सवार को भी इस बात का खयाल हुआ क्योंकि उसने पीछे की तरफ देख अपने साथियों से कुछ कहा और तब घोड़े की चाल तेज की। उसके दोनों साथियों ने भी घोड़े तेज किए और अब वे लोग बहुत तेजी से जाने लगे, यहाँ तक कि वह जंगल एक बगल छूट गया और सामने एक पहाडी की तलहटी दिखाई देने लगी जिसको छूती हुई एक छोटी नदी वह रही थी। अंधकार बहुत बढ़ गया था फिर भी दूर पर किसी छोटे मकान या इमारत की सफेदी नजर आई जिधर हाथ उठा कर अगले सवार ने कहा—"मालूम होता है वही जगह है।" पीछे वाला एक आदमी बोला, "बेशक वही है।" तीनो मे कुछ सलाह हुई और तब होशियारी के साथ चारो तरफ देखते हुए वे लोग उधर ही को बढे।

जो दूर से किसी मकान या कोठडी की तरह नजर आया था पास पहुंचने पर वह एक बहुत ऊँचे चबूतरे सा दिखाई पड़ा जिसके ऊपर एक बड़ी समाधि सी बनी हुई थी, लेकिन चारो तरफ घूम आने पर भी किसी तरफ से ऊपर चढ़ने को सीढ़ियाँ नजर न आईं। अगले सवार ने यह देख कुछ ताज्जुब से कहा, "इस पर चढने का रास्ता तो कोई दिखाई ही नही पड़ता!" उसके साथियो मे से एक बोला, "फिर भी ऊपर चढ़ना कुछ मुश्किल नही है। घोड़े की पीठ पर से मैं सहज ही मे ऊपर पहुँच सकता हू। अगर कहिये तो जाके देखू ऊपर क्या है?" जवाब मे पहिले ने कहा, "अच्छी बात है, यही करो।"

यह सुनते ही वह सवार अपना घोड़ा उस चबूतरे के पास ले गया और तब जानवर को पुचकार कर दीवार का सहारा लेता हुआ उसकी पीठ पर खड़ा हो गया। सधा हुआ जानवर सीधे खड़ा रहा और सवार उचक कर उस चबूतरे के ऊपर हो लिया। पहिले उसने अपने चारो

तरफ निगाह की। करीब बीस हाथ लम्बा और इससे कुछ ही कम चौड़ा चबूतरा पत्थर के चौकोर टुकड़ों से पटा हुआ था। बीचोबीच में करीब तीन हाथ के घेरे की एक गोल समाधि जैसा कुछ बना हुआ था जो लाल रंग से रंगा था और इस समाधि के सामने की तरफ एक छोटा सा कुण्ड बना हुआ था। बस इसके सिवाय ऊपर कुछ भी न था और नीचे की तरफ झांक कर उसने यही बात अपने साथियों से कही।

नीचे वाले दोनों सवारों ने आपुस में कुछ सलाह की और तब जिस तरह यह पहिला जवान ऊपर चढ़ा था उसी तरह एक के बाद एक करके वे दोनों भी चबूतरे के ऊपर चढ़ आए पर घोड़ों की लगामें सभों ही ने अपने काबू में रक्खीं। उस सरदार ने गौर से अपने चारों तरफ देखा और तब बोला, "क्यों श्यामजी, जगह तो यही मालूम होती है?" उस आदमी ने जवाब दिया, "जी हाँ कुमार, मगर तरद्दुद इतना ही है कि वे बाबाजी यहाँ कहीं दिखाई नहीं पड़ते जिनके मौजूद रहने की बात थी!"

अब हमारा शक दूर हो गया। इन तीनों सवारों में से एक तो जमानिया के राजकुमार गोपालसिंह थे, दूसरे उनके खास दोस्त श्यामलाल। बाकी रहा वह तीसरा आदमी मगर उसे भी हमारे पाठक पहिचानते हैं क्योंकि वे गोपालसिंह के दोस्त और हमारे पाठकों के सुपरिचित कामेश्वरसिंह हैं। इस जगह ऐसे विकट स्थान में सिर्फ अपने इन्हीं दोनों दोस्तों के साथ कुंअर गोपालसिंह को देख हमारे पाठकों को जरूर आश्चर्य होता होगा और बेशक यह आश्चर्य की बात है भी। देखा चाहिये इन लोगों की आगे की कार्रवाई क्या होती है।

श्यामलाल की बात सुन कुंअर गोपालसिंह ने कहा, "बेशक वे यहाँ मौजूद नहीं हैं, पर मेरी राय में इस सबब से रुक जाना या अपना काम न करना मुनासिब नहीं। उन्होंने इस जगह के बारे में जो कुछ बताया है वह मुझे बखूबी याद है और मैं समझता हूँ कि तुम लोगों को

भी उस विषय मे कोई सन्देह नही होगा इसलिए अब आगे की कार्रवाई करनी चाहिए ।"

इतना कह कुअर गोपालसिंह आगे बढ़े और उस कुण्ड के पास पहुंचे जो समाधि के सामने बना हुआ था। तीनो घोड़ो की लगामे एक कड़े मे फंसा दी गई थी जो चबूतरे के कोने पर लगा था फिर भी हिफाजत के ख्याल से कामेश्वर उसी जगह रुक गए और श्यामलाल कुमार के साथ साथ आगे बढ़े ।

वह कुण्ड बहुत ही छोटा—मुश्किल से तीन हाथ के करीब लम्बा दो हाथ चौड़ा और लगभग इतना ही गहरा था, मगर उसका यहाँ होना जरूर ताज्जुब की बात थी, क्योंकि इतने ऊंचे पर जहाँ चढ़ने की कोई सीढ़ी तक न थी और इसी कारण जहाँ किसी का आना जाना भी सहज नही था, इस तरह का कुण्ड बनाने की कोई जरूरत नजर न आती थी। मगर कुंअर गोपालसिंह या श्यामलाल को इस बात पर कोई आश्चर्य न हुआ, सम्भव है वे इनका सबब जानते रहे हो या और कोई बात हो। इस समय कुमार तो उस कुण्ड के पास पहुँच कर बैठ गए और उनका इशारा पा श्यामलाल ने अपना हाथ कुण्ड के पेंदे मे डाल उसके अन्दर कुछ तलाश करना शुरू किया। जिस चीज को वे खोज रहे थे मालूम होता है वह सहज ही मे मिल गई क्योंकि श्यामलाल के मुंह से प्रसन्नता की आवाज निकली और दूसरे ही क्षण मे उन्होने झुक कर उसके पेंदे में लगी एक कड़ी पकड़ कर जोर से खींची जिसके साथ साथ एक चौकोर सिल्ली भी उठ आई और नीचे उतरने के लिये पतली पतली सीढ़ियाँ नजर आने लगी। श्यामलाल ने अपने पास से सामान निकाल रोशनी की और दोनो आदमी झुक कर गौर के साथ नीचे की तरफ देखने लगे मगर भीतर ऐसा गहरा अन्धकार था कि सिवाय उन सीढ़ियो के जो घूमती हुई नीचे को चली गई थी और कुछ भी नजर न आया।

लाचार श्यामलाल बोले, "अगर कहिए तो मैं भीतर उतर कर देखूं कि वहाँ क्या है?" गोपालसिंह ने कहा, "अच्छा उतरो, मगर बहुत होशियारी से जाना और कोई खतरे की बात दिखाई पड़े तो फौरन हम लोगो को बताना।

श्यामलाल ने एक हाथ मे बत्ती और दूसरे मे अपना नीमचा ले लिया और सीढ़ियों के रास्ते नीचे उतरना शुरू किया। उनका ख्याल था कि नीचे की हवा उन्हें गन्दी मिलेगी और साथ ही गर्द गुब्बार और कीड़े-मकोड़ो से वह जगह भरी होगी मगर इसके खिलाफ नीचे एक दम सफाई पाई, गर्द का कहीं नाम निशान न था और न हवा ही बन्द जान पड़ती थी, हाँ अन्धकार इस कदर गहरा था कि अभी तक वे किसी भी चीज पर निगाह न डाल सके थे। एक एक करके वे सोलह डण्डा नीचे उतर गये और तब उनका पैर फर्श पर पड़ा जो समान और एक दम साफ था। उन्होंने रोशनी वाला हाथ ऊँचा किया और गौर से चारो तरफ देखने लगे।

एक कोठरी जो नीचे से ऊपर तक साफ चिकने पत्थरो की बनी हुई थी और जिसकी लम्बाई चौड़ाई उससे बहुत कम थी जितना कि वह ऊपर वाला चबूतरा था, श्यामलाल को दिखाई पड़ी और वे चारो तरफ घूम घूम कर देखने लगे कि उसमें क्या है? पूरब तरफ के कोने में पहुंचे तो छत के साथ लटकती एक जंजीर दिखलाई दी जिसके साथ लाल कपड़े मे बंधी एक गठरी लटक रही थी, उत्तर की तरफ दो काठ के बड़े बड़े बक्स रक्खे दिखाई दिये, पश्चिम तरफ के कोने में कोठड़ी की सतह मे कुंए की तरह का एक गढ़ा सा नजर आया जिसके ऊपर जाल पड़ा हुआ था, और दक्खिन तरफ घूमे तो दीवार के साथ सफेद पत्थर का एक सिंहासन नजर आया जिस पर बैठी आदमकद मूर्ति को गौर से देखने के लिए श्यामलाल अपना रोशनी वाला हाथ ऊँचा करके आगे बढ़े और साथ ही चौंक पड़े क्योंकि जिसे उन्होंने कोई मूर्ति समझा

था वह मूरत नहीं बल्कि एक जीती जागती नाजुक औरत थी जो अपनी बड़ी बड़ी आँखें एक टक उनके चेहरे पर गड़ाए हुए थी। ऐसी सूनसान और सब तरह से बन्द जगह मे एक औरत को देखने की आशा कभी भी न हो सकती थी परन्तु श्यामलाल उसे देखते ही चौंक पड़े और उनके मुंह मे यकायक निकल पड़ा, "है, तुम कौन ?"

एक गमगीन हंसी उसके पतले होठों पर दौड़ गई मगर उसने श्यामलाल के सवाल का कोई जवाब न दे सिर्फ इतना ही कहा, "कहिये श्यामजी, क्या आपको मुझसे कुछ कहना है ?"

श्यामलाल और भी चकरा गये। इस विचित्र जगह मे वे किसी औरत को देखेंगे पहिले तो यही आशा नहीं हो सकती थी, ऊपर से वह उनकी जानी पहिचानी होगी या उनका नाम लेकर पुकारेगी यह और भी अचम्भे की बात थी, कुछ देर तक श्यामलाल इतने ताज्जुब मे डूबे रहे कि उनके मुंह से कोई आवाज न निकल सकी, आखिर किसी तरह अपने को सम्हाल उन्होने कहा, "तुम कौन हो, किस लिए यहाँ बैठी हो, और तुमने मेरा नाम क्योकर जाना ?"

पुन: पहिले ही की सी एक सूखी हंसी हंस कर वह औरत बोली, "मैं चाहे कोई भी हूं, मेरी फिक्र छोड़ दीजिए और आप लोगो को यहाँ जो कुछ काम है उसे जल्दी ही पूरा कर डालिए क्योंकि अगर देर करेंगे तो वह काम न हो सकेगा जिसके लिए आप लोग यहाँ आए हैं।"

श्यामलाल ने पहिले से भी ज्यादा ताज्जुब से पूछा, "क्या तुम जानती हो कि हम लोग किस काम के लिए आये हैं ?" औरत ने जवाब दिया, "हाँ बहुत अच्छी तरह।" और तब इस तरह ऊपर की तरफ देखने लगी मानों उसे ऊपर से किसी तरह की आहट मिली हो, और सचमुच ही उसी समय श्यामलाल को भी ऊपर से आती हुई किसी

तरह की आवाज सुनाई पड़ी। अन्दाज से उन्हे ऐसा मालूम हुआ मानो बाहर कई आदमी पहुंचे और बातचीत कर रहे है। उन्हे आश्चर्य हुआ और वे पीछे हट कर सीढ़ी के पास जा ऊपर की तरफ देखने लगे, मगर सिवाय कुछ आदमियो के चलने फिरने की आहट के और कुछ सुनाई न दिया। श्यामलाल का आश्चर्य और भी बढ़ा और साथ ही उन्हें कुछ आशंका भी हुई जिससे उस औरत की फिक्र छोड वे सीढ़ियो पर चढ़ ऊपर की तरफ बढ़े।

जिस समय आखिरी सीढ़ी तय कर श्यामलाल ने कुण्ड के बाहर अपना सिर निकाला तो यह देख उन्हे आश्चर्य हुआ कि वहां पर कोई भी नही है, न तो कुंअर गोपालसिह ही है और न कामेश्वर ही। वे आश्चर्य करते हुए कुण्ड के बाहर निकल आए और चबूतरे पर चारो तरफ घूम घूम कर देखने लगे। कुमार और कामेश्वर का कही पता न था और न उनके घोड़े ही दिखाई पड़ रहे थे पर उनका अपना घोड़ा जिसकी बागडोर कड़ी के साथ बंधी हुई थी, अभी तक ज्यो का त्यों खड़ा टापो से जमीन खोद रहा था।

यह क्या हो गया? जिनकी आहट उन्हे लगी थी वे कौन थे? और कुमार तथा कामेश्वर कहां चले गये? इन सब बातों को सोचते हुए श्यामलाल बहुत ही व्याकुल हो गये। चारो तरफ का जंगल एक दम सूनसान और सन्नाटा जान पड़ता था, कहीं से किसी तरह की आहट न आती थी, और न उस चबूतरे पर ही कोई ऐसा सामान या निशान दिखाई पडता था जिससे किसी तरह का शक किया जा सकता, अस्तु श्यामलाल के मन मे तरह तरह के खयाल उठने लगे और वे परेशानी मे पड़ कर कुछ भी निश्चय न कर पाये कि कहां जायं या क्या करें। एक दफे उनका इरादा हुआ कि चबूतरे पर से उतर के अपने घोड़े पर सवार हो और कुमार तथा कामेश्वर की तलाश करें, पर फिर न जाने क्या सोच उन्होंने यह इरादा छोड़ दिया और पुन. उसी कुंड के पास

वापस आये। सीढ़ियाँ उतर पहिले की तरह नीचे पहुंचे और उस सिंहा-सन के पास गये जिस पर बैठी औरत ने उन्हे ताज्जुब मे डाल दिया था, मगर यहाँ आ के उनका आश्चर्य और भी बढ़ गया। उन्होंने देखा कि वह सिंहासन खाली है और उस औरत का वहाँ नाम निशान भी नहीं है। यह और भी ताज्जुब की बात थी और वे कुछ घबडाहट और परेशानी के साथ सोचने लगे कि इस चारो तरफ से बन्द जगह से कोई आदमी किस तरह और कहाँ गायब हो सकता है। तुरत ही उन्हे किसी छिपी सुरंग या रास्ते का गुमान हुआ और वे चारो तरफ निगाह दौड़ा दौडा कर देखने लगे कि कही कोई ऐसी गुप्त राह तो नही है जिससे वह औरत भाग गई हो।

और उनका खयाल ठीक भी निकला। ध्यान से देखने पर उस सिंहासन की बगली दीवार मे श्यामजी को एक बहुत ही छोटी सुरंग का नीचा सा मुहाना नजर आया जो इस तरह पर बना हुआ था कि सिंहासन पर बैठने वाला व्यक्ति सहज ही इस रास्ते में उतर जा सकता था। पत्थर की एक सिल्ली अपनी जगह से हट कर नीचे की तरफ झूली हुई थी और वहाँ एक तंग रास्ता दिखाई पड़ रहा था। श्यामजी का खयाल हुआ कि इस सुरंग में घुस कर देखा चाहिये कि भीतर क्या तमाशा दिखाई पड़ता है पर वे यह सोच कर रुक गये कि बिना कुमार का पता लगाये या उनकी इजाजत लिए ऐसा करना मुनासिब न होगा, कौन ठिकाना सुरंग के अन्दर जाने पर किसी मुसीबत का सामना करना पड़ जाय?

इसी तरह की बाते सोचते विचारते श्यामजी घूमे और सीढ़ियाँ चढ़ते हुए ऊपर की तरफ चले, मगर आखिरी सीढ़ी पर पहुँचने के पहिले ही उन्हे पुनः रुक जाना पड़ा। किसी की छाया ऊपर वाले कुण्ड पर पड़ी थी जो वहां से झुक नीचे को देख रहा था। श्यामजी को गोपालसिंह का खयाल हुआ और उन्होने रोशनी वाला हाथ आगे बढा

गौर से देखा, मगर यह देख उनका ताज्जुब और भी बढ़ गया कि वह एक बाबाजी हैं जो ऊपर से झांक रहे हैं और जिनकी लम्बी सुफेद दाढ़ी मोमबत्ती की रोशनी में चमक रही है। जरूर इन बाबाजी को श्यामजी पहिचानते थे क्योंकि इनको देखते ही उनके मुंह से संतोष की एक साँस निकली और उन्होंने पुकार कर कहा, "महात्माजी, आप हैं? बारे आपके दर्शन तो हुए! मैं तो यहाँ की ताज्जुब भरी बातों को देख एक दम घबड़ा गया था!"

कुण्ड के अन्दर उतर बाबाजी ने सीढ़ियों पर पैर रक्खा और श्यामलाल के पीछे पीछे नीचे उतर आये। यहाँ तो अब हम भी इन बाबाजी को पहिचान गये क्योंकि ये वे ही हैं जिन्हें हमारे पाठक पहिले कितनी ही बार देख चुके हैं।

नीचे पहुंच बाबाजी ने चारो तरफ देखा और कहा, "राजकुमार कहाँ हैं?" श्यामलाल ने कहा, "यही बात तो मैं आपसे पूछना चाहता हूं! मैं उनकी इच्छा से उन्हें ऊपर ही छोड़ यहाँ का हाल चाल देखने आया और यहाँ एक औरत को देख उससे बातें करने लगा मगर इसी बीच में कुमार तथा उनके साथ साथ हमारे कामेश्वर भी न जाने कहाँ गायब हो गये, आपने तो उन्हें कहीं नहीं देखा?" बाबाजी ने यह सुन कहा, "नहीं तो, बाहर एक घोड़ा देख और इस जगह रोशनी पा मैंने समझा कि वे यहां भीतर होंगे, बाहर तो कहीं किसी को मैंने देखा नहीं, मगर यह तो कहो कि यहाँ किसी औरत के होने की क्या बात तुमने कही? क्या इस जगह तुमको कोई औरत दिखाई पड़ी थी?"

श्याम०। जी हाँ, जब मैं इस तहखाने में उतरा तो मैंने (हाथ से बता कर) उस सिंहासन पर एक कमसिन औरत को बैठे हुए पाया जिसे मैं पहिचानता न था पर जो मुझे देखते ही पहिचान गई और मुझसे बातें करने लगी। उसी समय मुझे बाहर कई आदमियों की आहट सुन पड़ी। जब पता लगाने ऊपर पहुँचा तो कुंअर साहब और कामेश्वर को गायब

पाया और जब भीतर आया तो वह औरत भी दुबारा नजर न आई, ताज्जुब करता हुआ लौट रहा था कि आप दिखाई पड़े। अब आप ही बतलाइये कि यह सब क्या तमाशा है ?"

बाबाजी यह सुन कुछ ताज्जुब से बोले, "भला यह तुम क्या कह रहे हो ! इस जगह और औरत ? यह कैसे सम्भव हो सकता है ? तुमको धोखा हुआ होगा !" श्यामलाल बोले, "मुझे धोखा नहीं हो सकता महात्माजी, वह सुरंग अभी तक मौजूद है जिसकी राह वह गायब हो गई।" कहते हुए श्यामलाल सिंहासन के पास गये और उसके बगल की दीवार वाली सुरंग जिसका मुहाना अभी तक खुला था दिखा कर बोले, "देखिये इसी सुरंग की राह वह औरत भाग गई।"

बाबाजी ने उस सुरंग को भी गौर से देखा और तब और भी बेचैनी के साथ आप ही आप कहने लगे, "यह सुरंग तो......तब क्या वह ......? मगर ऐसा तो......!!" यकायक उनकी निगाह कोठडी के एक कोने की तरफ उठ गई और वे कुछ देख आश्चर्य से चमक के बोल उठे, "अरे यह क्या ? वह पिटारा कहाँ गायब हो गया, क्या तुमने उसे उठाया या कहीं रक्खा है ?" श्यामलाल ने ताज्जुब के साथ पूछा, "पिटारा कैसा ? मैंने तो कोई पिटारा नहीं उठाया ? क्या आप यहाँ कोई पिटारा छोड़ गये थे ?"

बाबाजी कोने से लटकती जंजीर को दिखा कर बोले, "इसी जंजीर के साथ मैं उसे लटकता छोड़ गया था।" अब श्यामलाल को भी खयाल आया और वे बोल उठे, "हाँ ठीक है, जब मैं इस जगह पहुँचा था तो इस जंजीर के साथ लाल कपड़े में बंधी कोई चीज मैंने लटकती देखी थी पर इस समय वह नहीं दिखाई देती। तो क्या इससे यह समझा जाय कि वह औरत ही .....?"

बाबाजी बेचैनी के साथ बोले, "बेशक यही बात हो सकती है। वह औरत चाहे जो कोई भी हो, पर जरूर उसी पिटारे को लेने के लिए यहाँ

आई और उसे ले के चल भी दी। वह चीज जिसकी तुमको या तुम्हारे कुमार को जरूरत थी और भी बहुतो के काम की थी और अन्य भी कितने ही आदमी उसकी फिराक मे पडे हुए थे अस्तु उनके चले जाने का तो मुझे ताज्जुब नही, हाँ अगर ताज्जुब है तो इस बात का कि वह औरत एक ऐसे रास्ते से यहा पहुँची जो तिलिस्मी है और जिसके बारे मे अब तक मुझे यही खयाल था कि किसी गैर को उसकी खबर नही है। उस रास्ते का पता रखने वाला कोई मामूली आदमी नहीं हो सकता क्योंकि ..."

कहते कहते बाबाजी रुक गये और गौर के साथ कुछ सोचने लगे। यकायक उन्हे कोई बात ख्याल आ गई। उन्होने हाथ पर मुक्का मार कर कहा, "बेशक यही बात है, यह जरूर उसी कम्बख्त की कार्रवाई है, निश्चय वही होगी, और अगर वही है तो उसका पता लगाना मुश्किल न होगा!"

श्यामलाल की तरफ देख बाबाजी बोले, "जिस चीज को मैंने इतनी कठिनता से पाया था उसे इस तरह सहज मे जाने नही दे सकता। जैसे भी होगा उसे पुनः अपने काबू मे करूंगा ही। मगर मुझे अफसोस है इसी बात का कि आज का तुम लोगों का यहाँ आना व्यर्थ गया।"
श्यामलाल यह सुन बोले, "जब तक मैं यह न जान लूं कि वह कौन सी चीज थी जो गायब हो गई इस विषय मे कुछ कह नही सकता, पर....!"
बाबाजी बोले, "लाल कपड़े मे बंधी जो चीज तुमने इस जंजीर से लटकती देखी थी वह वही पिटारा था जो देवीरानी के कब्जे में था और जिसे बड़ी बड़ी मुश्किलो के बाद भूतनाथ की मदद से मैंने पाया था। तुम लोगो को यहाँ भेजती समय मैंने कहा था कि इस तहखाने मे मैं तुम्हे एक चीज दूगा जिसकी मदद से तिलिस्म तोड़ने का काम शुरू किया जा सकेगा। वह चीज एक ताम्रपत्र था जो और कई जरूरी चीजो के साथ उसी पिटारे मे था, मगर अफसोस कि अब वह पिटारा ही हाथ से जाता रहा!!"

श्याम० । मगर आपने तो कहा था कि यहाँ एक पुतली मिलेगी जिससे हम लोगों को तिलिस्म का हाल मालूम होगा ।

बाबा० । वेशक कहा था, मगर वह पुतली तो और आगे जाने पर इसी तहखाने के नीचे वाली एक कोठरी मे मिलती । यहाँ उस पिटारे से मैं वह चीज निकाल कर तुम लोगो को देने वाला था जिसकी मदद से तुम लोग उस पुतली तक पहुँचते और तब उसके जरिये आगे का हाल जानते ।

श्याम० । (कुछ रुक कर) अगर यह वही पिटारा था जिसके पाने मे होने वाली झंझटों का हाल आपने हम लोगो से कहा था तो मुझे कुछ दूसरा ही खयाल होता है । मै समझता हूं कि इस वक्त की कार्रवाई भी जरूर उसी आदमी की है जिसने उस वक्त जोगी बाबा की समाधि मे से उसे चुरा ले जाने की कोशिश की थी । किसी तरह उसे पता लग गया कि वह पिटारा आपने यहाँ रक्खा है अस्तु वह यहाँ पहुँचा और उसे ले गया ।

बाबा० । वह बात भी मै सोचता हूं मगर इसके साथ फिर यह खयाल आता है कि जो कोई भी उस पिटारे को ले गया जरूर वह तिलिस्म के अन्दर ही गया होगा और वही जाने से उसका पता लग सकेगा ।

श्याम० । तो क्या आप तिलिस्म मे जा सकते हैं ?

बाबा० । हाँ कम से कम उसके कुछ बाहरी हिस्सों में तो जरूर जा सकता हूँ और इसी से यह विचार करता हूँ कि अन्दर जाऊं और उस दुष्ट को खोजूं ।

श्याम० । तब तो आप फौरन जायें और उस चोर को खोजें तथा मै भी जाता और देखता हूँ कि कुंअर गोपालसिंह और कामेश्वर कहाँ चले गये । अफसोस यहाँ की आज की हम लोगों की मेहनत बिल्कुल बेकार गई !

बाबाजी और श्यामलाल मे कुछ देर तक और भी बातें होती रही। बाबाजी ने उन्हे कुछ समझाया और तब उसी सुरंग के अन्दर घुस कर गायब हो गये जो सिंहासन के बगल मे दिखाई पड़ रहा था या जिसके अन्दर श्यामलाल का खयाल था कि वह औरत चली गई है। उनके जाते ही वह रास्ता बन्द हो गया और तब तरह तरह की बातें सोचते हुए श्यामलाल भी धीरे धीरे सीढ़ियाँ चढ़ तहखाने के ऊपर आ गये। ऊपर पहुंच कर उन्होने उस कुण्ड के अन्दर से निकली हुई सिल्ली को ज्यों का त्यो रख दिया और तब कुण्ड के अन्दर हाथ डाल कोई तरकीब ऐसी कर दी जिससे वह रास्ता मजबूती से बन्द हो गया। श्यामलाल को गोपालसिंह और कामेश्वर की चिन्ता लगी हुई थी और वे यह जानने को व्याकुल हो रहे थे कि दोनो यकायक कहाँ गायब हो गये, अस्तु वे चबूतरे के किनारे पहुंचे, कड़े मे से अपने घोड़े की लगाम खोली और उस पर सवार हो सोचने लगे कि किधर जायँ या क्या करें, मगर उन्हे ज्यादा तरद्दुद करने की जरूरत न पड़ी। अचानक जंगल के भीतर से एक सीटी की आवाज आई जो किसी खास इशारे के साथ बजाई जा रही थी और जिस पर कुछ गौर करते ही उनके मुंह से खुशी के साथ निकला, "बेशक यह कामेश्वर का इशारा है!" उन्होने घोड़े की बाग मोड़ी और उसी आवाज की सीध पर जाने लगे।

नवाँ बयान

रोहतासगढ़ के किले मे जो स्थान शेरसिंह को रहने के लिए मिला है वह यद्यपि कुछ सूनसान और एकान्त तो है लेकिन वहाँ से दूर दूर तक के पहाड़ो और मैदानो को कुछ ऐसी शोभा दिखाई पड़ती है कि देखने वाला अगर अकेला भी बैठा रहे तो घटो उसका मन न घबड़ाए।

अपने कमरे की एक खिड़की के सामने खड़े शेरसिंह उगते हुए

सूरज की तरफ देख रहे हैं जिसका आधा भाग एक पहाड़ी की आड़ मे से अभी अभी निकला है। इस कमरे मे जरूरत का मुख्तसर सभी सामान मौजूद है और उसके अलावे एक तरफ एक पलङ्ग भी बिछा हुआ है, तथा दूसरी तरफ की चौकी पर फैले कागज पत्र और वहीं एक तरफ बलता हुआ शमादान यह भी बना रहा है कि शेरसिंह की यह सारी रात निद्रादेवी की गोद में नहीं बीती है बल्कि वे बहुत देर से जाग कर कुछ कर रहे थे और इस समय सूर्योदय होता हुआ देख खिडकी के सामने जा खडे हुए हैं।

मगर निगाहे उठते हुए सूर्यदेव की तरफ होने पर भी शेरसिंह का मन कहीं दूर ही कुचाल मार रहा है और वे न जाने क्या सोच रहे है कि उनके मुंह से रह रह कर कुछ अस्पष्ट बातें निकल पडती है। सूर्यदेव ने पहाडी की ओट से निकल कर अपनी सुनहली किरणें रोहतासगढ़ के किले की तरफ फेंकना शुरू किया ही था कि शेरसिंह खिडकी के पास से यह कहते हुए हटे, "बेशक अब यही करना होगा, बिना उसकी मदद लिए काम हो ही नही सकता।" अपनी चौकी पर जाके उन्होंने कलम दावात और कागज उठाया और जल्दी जल्दी कुछ लिखने लगे।

यकायक दर्वाजे पर किसी की आहट पा शेरसिंह ने सिर उठाया। देखा तो भूतनाथ। उसे देखते ही वे ताज्जुब और प्रसन्नता के साथ उठ खड़े हुए और उसको गले से लगाते हुए बोले, "ओ हो भूतनाथ तुम! इस समय मैं किसी अलभ्य वस्तु की इच्छा करता तो शायद वह भी मिल जाती! मैं तुमसे मिलने को व्याकुल हो रहा था और यह चिट्ठी तुम्हारे ही पास भेजने के लिए लिख रहा था।" भूतनाथ यह सुन हंसता हुआ बोला, "इसी लिए मैं खुद ही आ मौजूद हुआ। मगर यह तो कहिये कि आपको किस चिन्ता ने आ घेरा है जो आपने समूची रात जागने और फिक्र करने में बिता दी है।"

शेरसिंह ने ताज्जुब से भूतनाथ की तरफ देखा। उसने एक निगाह उनके पलंग की तरफ फेरी जिसकी चादर पर एक भी शिकन न पड़ी

थी और तब बलते हुए शमादान की तरफ इशारा किया जिसका तेल अब समाप्तप्राय हो रहा था। शेरसिंह कुछ हंस कर बोले, "बेशक तुम्हारा अनुमान ठीक है। मै इतनी भारी चिन्ता मे पड़ा हूं कि रात को एक पल के लिये भी नींद मेरे सामने न फटकी। मगर आओ बैठो और बताओ कि तुम्हारे लिए क्या सामान मंगवाऊं।"

भूतनाथ०। मुझे किसी सामान की जरूरत नही है। मैं खुद आपसे मिलने के लिये व्याकुल था, कल रात ही का यहां पहुंचा हुआ हूं मगर आपके आराम मे खलल पहुंचने के खयाल से यहा आया न था। अगर जानता कि आप सो नही रहे हैं तो अब से कही पहिले आ मौजूद होता। बतलाइये मामला क्या है?

दोनो आदमी बिछावन पर आ कर बैठ गये और तब शेरसिंह ने कहा, "मुझे एक ऐसी फिक्र ने आ घेरा है कि कुछ अक्ल काम नही कर रही है।"

भूत०। सो क्या?

शेर०। बड़े महाराज की बहिन देवीरानी को तुम जानते ही होगे?

भूत०। बहुत अच्छी तरह, मैंने सुना इधर वे कुछ बीमार थी, अब कैसी हैं?

शेर०। बीच में तो अच्छी हो चली थी पर इधर कुछ बात ऐसी हो गई जिसने उनके मन पर बड़ा भारी धक्का लगाया है और मुझे सन्देह है कि बीमारी बढ़ न जाय!

भूत०। सो क्या?

शेर०। लुटिया पहाड़ी के पास जो एक महात्माजी रहते हैं उनको भी तुम जानते ही हो?

भूत०। खूब अच्छी तरह।

शेर०। मगर यह बात शायद तुम्हें न मालूम हो कि वे हमारी देवीरानी के गुरु भी हैं।

भूत०। जी हां यह बात भी एक दफे उन्ही के मुंह से मैं सुन चुका हूं।

शेर० । देवीरानी के पास उनकी मां की दी हुई एक गठरी थी जिसे वे बहुत दिनों से बड़ी हिफाजत से रखती आई थी मगर जिसके बारे में उन्हे सिर्फ इतनी ही खबर थी कि उसमे कोई बड़ी अद्भुत और डरावनी चीज बंधी है । अब तक कभी उसे खोल कर देखने की नौबत शायद न आई थी और ज्यादा हिफाजत के खयाल से उसे उन्होंने एक बहुत ही गुप्त और निराली जगह में रखवा दिया था जहा वह बरसो से पड़ी थी, मगर परसों कोई बदमाश न जाने कहां से उन्ही बाबाजी की सूरत बन कर आया और वह चीज उठा ले गया ।

भूत० । ठीक है, यह बात भी मुझे मालूम है ।

शेर० । (ताज्जुब से) तुम्हें मालूम है !!

भूत० । (मुस्कुराता हुआ) जी हा, आपका मतलब उसी चीज से तो है जिसे देवीरानी 'भानुमति का पिटारा' कहती है !

शेर० । (और भी ताज्जुब से) हां, मगर तुम्हे उसका हाल कैसे मालूम ?

भूत० । उस पिटारे का हाल जितना मुझे मालूम है उतना शायद आपको भी न मालूम होगा ।

शेर० । तुम्हारी बात सुन कर मुझे अचम्भा होता है !

भूत० । अचम्भे की जरूरत नही और न अब आपको उसके लिए चिन्ता या फिक्र ही करनी चाहिए । वह जिसकी चीज थी उसके पास पहुंच गई ।

शेर० । (ताज्जुब से भूतनाथ का हाथ पकड़ के) क्या तुम्हे मालूम है कि वह पिटारा इस वक्त कहा है ! तुम मुझसे दिल्लगी तो नही कर रहे हो !!

भूत० । नही नही, मै दिल्लगी नही करता बिल्कुल सही कहता हूं । वह पिटारा इस समय उन्ही बाबाजी के पास है । मै खुद अपने हाथ से उन्हे वह चीज सौंप के इधर आ रहा हूं । अब आप उसके लिए बिल्कुल चिन्ता न करें ।

शेरसिंह भूतनाथ की बात सुन चौंचक से हो के उसका मुंह देखने लगे जिस पर वह खिलखिला कर हंस पड़ा और बोला, "यह कोई उतने ताज्जुब की बात नही जितना कि आप समझ रहे हैं। लीजिये मैं आपको सब हाल बताये देता हूं। जब आप महात्माजी के साथ साथ जोगीबाबा की समाधि की तरफ गए थे तो वहां किसी साबजी को आपने देखा था?"

शेर०। हां हां, तो क्या तुम ही उस शकल मे वहां मौजूद थे?"

भूत०। नहीं मैं साबजी तो नहीं था पर उस जगह मौजूद जरूर था और जो आदमी साबजी बना वहां पर था वह भी उसी पिटारे की ही फिक्र मे लगा हुआ था। भाग्यवश मुझे उस पर सन्देह हो गया और मै वहीं रुक गया यह जानने के लिए कि वह आदमी वहां क्यों आया है। इतने मे आप महात्माजी के साथ उस जगह पहुंचे। दोनो महात्माओं मे जब युद्ध होने लगा तो साबजी के एक नौकर ने यह पिटारा उठा लिया और बाहर ले जा के अपने एक सधे हुए घोड़े के पेट के साथ बांध घोड़े को भगा दिया। मेरे कान खड़े हुए। मैंने अपने एक शागिर्द को इशारा किया जिसने उस घोड़े का पीछा किया और आखिर बहुत तरद्दुद के बाद किसी तरह गठरी पर काबू कर ही लिया।

शेर०। वाह वाह, यह तो बड़ा काम हुआ, अच्छा तो अब वह पिटारा कहां है?

भूत०। उन्ही बाबाजी के पास, जैसा कि मैंने कहा।

शेर०। (खुशी खुशी भूतनाथ की पीठ पर हाथ मार कर) वाह वाह, इस समय तो तुमने मुझे ऐसी खबर सुनाई कि मेरी तबीयत खुश हो गई। जब से वह पिटारा हम लोगो के हाथ से निकल गया है परेशानी के मारे मेरी बुरी हालत हो रही है खास कर यह सोच के कि देवीरानी पर उसके जाने का गम न जाने क्या असर करे।

भूत०। खैर तो अब उस बारे में आपको या देवीरानी को कोई चिन्ता करने की जरूरत नही। आप अगर चाहे तो बाबाजी से मिल कर इस बात की पुष्टि भी कर सकते हैं कि वह चीज उन्हे मिल गई या नही।

शेर० । जब तुम मुझे विश्वास दिलाते हो तो पुष्टि की आवश्यकता नही, फिर भी देवीरानी के और अपने सन्तोष के लिए मैं एक बार महात्माजी के पास जाकर उसके बारे मे खबर जरूर लूंगा । तुम फिलहाल यह बताओ कि यह कार्रवाई किसकी थी, वह नकली महात्मा बना हुआ कौन आदमी था, और वह बनिया कौन था जिसके बारे मे तुम कहते हो कि वह उसी पिटारे की धुन मे था ।

भूत० । इन बातों को जानने की आप कोशिश न करे, इन्हे जानने से आपका तरद्दुद बहुत बढ़ जायगा ।

शेर० । (आश्चर्य से) सो क्यों ?

भूत० । क्योंकि य लोग मामूली आदमी नही है जो उस पिटारे पर कब्जा करने की कोशिश मे है, बल्कि मुझे तो रह रह के यह सन्देह होता है कि कही महात्माजी के पास से फिर भी वह पिटारा गायब न हो जाय या उन्हे उसके कारण कोई जोखिम न उठानी पडे ।

शेर० । ऐसा ! तब तो तुम जरूर बता दो कि वे लोग कौन है ताकि मै उनकी कार्रवाइयों पर निगाह रख सकूं ।

भूत० । (इधर उधर देख के) एक तो जमानिया के दारोगा साहब ।

शेर० । जमानिया के दारोगा साहब !

भूत० । हां !

शेर० । उन्हे इस चीज से क्या मतलब ?

भूत० । सो तो वे ही जानें, मगर बाबाजी की सूरत बन कर देवीरानी के पास आने वाले या उस जोगी बाबा की समाधि पर उसके बारे में दुंद मचाने वाले वे ही हजरत थे ।

शेर० । ताज्जुब की बात है ! अच्छा दूसरा कौन था जो सावजी की सूरत में अपना दांव घात लगा रहा था ?

भूत० । उसको भी बतला दूं ? अच्छी बात है, सुन लीजिए ।

शेरसिंह के पास मुंह ले जाकर भूतनाथ ने कोई नाम ऐसा लिया कि जिसे सुनते ही शेरसिंह उछल पडे । उनके ताज्जुब का कोई हद

न रहा, वे एकटक भूतनाथ का मुंह देखने लगे और बड़ी मुश्किल से बहुत देर के बाद उनके मुंह से निकला, "भूतनाथ, क्या तुम सही कह रहे हो!"

भूतनाथ गम्भीरता से बोला, "मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूं, इस बात की सचाई मे आप जरा भी शक न करें।"

शेरसिंह ने यह सुन चिन्ता के साथ अपने माथे पर हाथ रख लिया और देर तक न जाने क्या सोचते रहे। इस बीच भूतनाथ भी चुपचाप तरह तरह की बातें सोचता रहा पर अन्त मे उसने वहां के सन्नाटे को यह कह कर तोड़ा, "आपकी चिन्ता उस आदमी का परिचय जान के बहुत बढ़ जायगी यही सोच के मैं उसका नाम आपको बताना नही चाहता था।"

शेरसिंह ने यह सुन कर कहा, "फिर भी तुमने अच्छा ही किया जो बता दिया, लेकिन भूतनाथ, मैं फिर पूछता हूँ कि क्या तुम्हे सही खबर लगी है, क्या वह उसी आदमी का काम था जिसका नाम तुमने लिया? क्या तुम्हे कोई धोखा तो नही हो गया?"

भूत०। अब मैं कैसे आपको विश्वास दिलाऊं कि मेरी खबर गलत नही, ज्यादा से ज्यादा मैं यही कह सकता हू कि आप खुद कोशिश कीजिये और पता लगाइये।

शेर०। बेशक मुझे ऐसा ही करना पड़ेगा, और अगर यह बात ऐसी ही है जैसी तुमने कहा तो मुझे महाराज से इस बारे मे कहना पड़ेगा। मगर सब से पहिले मैं चाहता हू कि बाबाजी के पास जाऊं और उनसे भेंट करके यह निश्चय कर लूं कि वह पिटारा हिफाजत से उनके पास है न ताकि देवीरानी की चिन्ता दूर हो?

भूत०। बेशक आप ऐसा ही करें, बल्कि मैं तो यह कहूंगा कि अगर अभी उनके पास जाना हो तो मेरे साथ ही चलें क्योकि मुझे भी उसी तरफ जाना है।

शेर०। मै अभी चलने को तैयार हूं।

भूत० । ठीक है, तो मै भी चलने को प्रस्तुत हूं, मगर चलने से पहिले मेरा एक काम आपको करना होगा जिसके लिए ही मैं आपके पास आया हूं।

शेर० । हां हां, कहो कहो, तुम्हारे लिए मैं सब कुछ करने को तैयार हूं।

भूतनाथ शेरसिंह के पास खसक गया और धीरे से उनसे कुछ कहने लगा।

इन दोनों की बातचीत कुछ देर तक होती रही। भूतनाथ ने क्या कहा और शेरसिंह ने क्या जवाब दिया यह तो हम नही कह सकते पर अन्त मे बातों के सिलसिले को शेरसिंह ने यह कह के तोड़ा, "खैर तुम जानो, इस बात का भला बुरा सोच लो !" भूतनाथ ने कहा, "मैं सब कुछ सोच चुका हूं, कोई अनुचित या बुरी बात होने न पावेगी। मैं बहुत सम्हल कर काम करूंगा और सब तरफ से होशियार रहूगा।" शेरसिंह ने यह सुन बगल की आलमारी खोली और उसमे से कोई चीज निकाल कर भूतनाथ को दी जिसको उसने गौर से देखा और तब खुशी खुशी अपने कपड़ों में छिपा लिया। इसके बाद दोनों आदमी उठे और बातें करते हुए कमरे के बाहर निकल गये।

दसवां बयान

श्यामलाल के देखते देखते बाबाजी उसी सुरंग मे उतर गये जो सिंहासन के बगल में दिखाई पड़ रही थी और उनके जाते ही सुरंग का मुहाना इस तरह से बन्द हो गया कि उसका नाम निशान भी रह न गया। अब इस वक्त हम उन्ही बाबाजी के साथ चलते और देखते है कि वे किधर जाते या क्या करते हैं।

वह सुरंग जिसके अन्दर से इस समय बाबाजी जा रहे है कितनी लम्बी चौड़ी है या कितनी दूर तक गई हुई है इसका कुछ भी पता नही लग सकता था क्योंकि उसके अन्दर घोर अन्धकार था मगर इसका कुछ भी खयाल न कर बाबाजी बेधडक बढते चले जा रहे थे। जगह जगह उस सुरंग मे मोड़ पड़ते थे और वह इस तरह से घूमती फिरती हुई जा रही

थी मानों किसी पहाड़ी के अन्दर घुस रही हो, साथ ही जगह जगह उसमें सीढ़िया भी पड़ती थी जो जाने वाले को बराबर नीचे की ओर उतारती ले जा रही थी और जिन पर कोई अनजान आदमी जाता तो बिना रोशनी के जरूर गिर कर हाथ पैर तुड़वा डालता, पर बाबाजी उन पर से उतरते हुए इस तरह चले जा रहे थे मानो वे बीसों बार इस जगह से आ जा चुके हों और यह रास्ता उन्हे अच्छी तरह मालूम हो। बीच बीच मे कई जगह उनके पाव के नीचे काई और नमी मिली तथा कही कहीं ऊपर से टपकती हुई बूंदें भी गिरी जो बताती थी कि इस जगह रास्ता किसी पहाड़ी नदी या सोते के नीचे से होकर जा रहा है पर बाबाजी को कही भी रुकने की जरूरत न पड़ी और वे बराबर चले ही गए यहां तक कि रास्ते का उतार बन्द हो गया और अब सुरंग ऊपर को चढ़ने लगी अर्थात् उसकी जो ढाल तथा सीढ़ियां चलने वाले को अभी तक बराबर नीचे की तरफ उतारती ले जा रही थी वह अब ऊपर को उठने लगी। बहुत दूर तक इस तरह जाने के बाद लगभग आठ या दस डण्डे के पतली पतली सीढ़ियां चढ़नी पडी और तब एक बन्द दर्वाजे पर बाबाजी का हाथ पड़ा जिसे उन्होंने किसी तर्कीब से खोला।

यह शायद कोई कोठडी थी जिसमे घनघोर अन्धकार था और यहा रुक कर बाबाजी न जाने क्या करने लगे मगर यकायक वे चौंक गये क्योंकि उनके कानो में किसी तरह की आवाज पड़ी। आहट से ऐसा जान पड़ा जैसे सामने की तरफ कही कोई दूसरा दर्वाजा हो और कोई उसको खोलने को चेष्टा कर रहा हो। बाबाजी के मुंह से निकला, "है, यह कौन है ?" और साथ ही वे जरा सा हट के एक बगल हो गये।

किसी दर्वाजे के खुलने की आहट मिली और साथ ही अन्दाज से यह भी पता लगा कि कोई नया आदमी इस कोठड़ी में आ गया है मगर बाबाजी की तरह यह आदमी भी बिल्कुल अंधेरे मे ही काम कर रहा था और इसके हाथ में भी कोई रोशनी न थी। आहट से पता लगा कि कोठड़ी में पहुच इस नये आदमी ने उस दर्वाजे को बन्द किया जिससे

आया था और तब सीधा उधर को बढ़ा जिधर से अभी अभी हमारे बाबाजी निकल कर इस कोठड़ी में पहुंचे और अब एक बगल खड़े न जाने क्या सोच या कर रहे थे।

मगर इस दर्वाजे के पास पहुंचते ही वह नया आदमी रुक गया। उसका हाथ दर्वाजे पर पड़ा और मामूल के खिलाफ उसे खुला हुआ पा कर उसके मुंह से निकला, "है, यह रास्ता खुला हुआ क्यों है?" जरा देर के लिये रुक कर वह भी कुछ सोचने और आहट लेने लगा और मालूम होता है कि उसको भी किसी बात का शक हुआ क्योंकि उसका हाथ कपड़ों के अन्दर गया और उसने कोई चीज निकाली ही थी कि इसी समय वह कोठड़ी रोशनी से जगमगा उठी। यह रोशनी एक अद्भुत और विचित्र तरह की लालटेन में से निकल रही थी जिसे हमारे बाबाजी ने अभी अभी कहीं से निकाल कर बाला था और जिसकी रोशनी इतनी साफ और तेज थी कि उस पर आंख नहीं ठहरती थी।

रोशनी होते ही एक ने दूसरे को देखा। आगन्तुक के मुंह से निकला, "है, पुजारीजी, आप!" और बाबाजी बोल पड़े, "भैयाराजा, तुम यहां कहां?" सचमुच ये आने वाले भैयाराजा ही थे जिनका रोबीला चेहरा बाबाजी के हाथ वाली रोशनी में चमक रहा था।

वह खंजर जो अभी अभी निकाल कर हाथ में ले लिया था पुनः अपने ठिकाने रखते हुए भैयाराजा बाबाजी की तरफ बढ़े जिन्होंने कहा, "भैयाराजा तुमसे मिल कर मैं इतना प्रसन्न हुआ कि जिसका ठिकाना नहीं। सच तो यह है कि इस समय मैं तुमसे ही मिलने की फिराक में था।" भैयाराजा बोले, "और मैं भी आप ही से मिलने के लिये आ रहा था क्योंकि गोपाल ने जब से अपना विचित्र हाल मुझसे कहा तब से मैं न जाने कितनी तरह की बातें सोच के परेशान हो रहा था।"

बाबाजी ने कहा, "मुझे स्वयं तुमसे बहुत तरह की बातें करनी हैं और मैं चाहता हूं कि इसी समय अपने दिल का बोझ हलका करूं क्योंकि हमारे बहुत सी बातें ऐसी हो रही हैं जिन्होंने मेरी अक्ल परेशान कर दी

है।" भैयाराजा यह सुन वोले, "मै इसी जगह उन्हें सुनने को तैयार हूं या जहा आप कहे वहां आपके साथ चलने को भी प्रस्तुत हूं, पर आप पहिले यह वता दीजिये कि इस समय कहां से आ रहे हैं और वह औरत कौन थी जो अभी अभी मुझे मिली ?"

वावाजी ने चौंक के पूछा, "क्या कोई औरत भी तुम्हे मिली है ?" भैयाराजा ने जवाब दिया, "हां हां यहां से कुछ ही आगे एक कमसिन औरत मुझे मिली जो वेतहाशा भागी जा रही थी। उसके हाथ मे एक गठरी भो थी। मैने उसे रोक कर पूछा कि 'तू कौन है ?' तो उसने कोई जवाब न दिया मगर मालूम होता है कि वह मुझे पहिचानती थी क्योंकि मुझे देखते ही इस कदर डरी और घबड़ाई कि वेहोश हो गयी। मैंने उसे होश मे लाने की कोशिश की मगर जब वह किसी तरह चैतन्य न हुई तो यह जानने के लिए आगे बढ़ रहा था कि वह कहां से या क्या करके भागी आ रही है।"

वावाजी खुश होकर वोले, "क्या उसके पास कोई गठरी भी थी ? भैयाराजा ने कहा, "जी हां, एक गठरी थी जिसे मैंने अपने कब्जे में कर लिया, यह देखिए !" भैयाराजा ने अपना बांया हाथ कपड़े के अन्दर डाला और लाल कपड़े मे बंधी एक गठरी निकाली जिसे देखते ही वावाजी खुश होकर वोल पड़े, "वाह वाह, इसी चीज के लिए तो मैं परेशान हो गया था ! इसी गठरी मे की कुछ चीजें गोपाल को देने के लिए मैंने उसे यहा बुलाया था और इसी के गायव हो जाने से परेशान होकर चोर को खोजने वढ़ा जा रहा था। यह बहुत अच्छा हुआ कि वह गठड़ी हम लोगो को वापस मिल गई नही तो न जाने क्या गजब हो जाता ?"

भैयाराजा०। गजब हो जाता ! जान पड़ता है इसमें कोई अद्भुत चीज वन्द है ?

वावाजी०। हां तुम ऐसा ही समझो।

भैयाराजा०। (हंस कर) वह कौन सी ऐसी चीज है। क्या मैं

कुछ जान सकता हूं ?

बाबाजी० । हां हां, तुमको बताने में मुझे क्या परहेज हो सकता है क्योंकि यह तुम्ही लोगों के काम की चीज है, बल्कि तुम्हें इसका हाल मालूम भी हो तो ताज्जुब नही ।

भैयाराजा० । आखिर है क्या इस गठरी में ?

बाबाजी० । (झुक कर धीरे से) भानुमति का पिटारा ।

भैया० । (चौंक कर ताज्जुब से) है, क्या चीज ? भानुमति का पिटारा ! जो रोहतासगढ़ की रानी के कब्जे मे था और जिसके अन्दर.......?

बाबाजी० । हां वही । गोपालसिंह से अगर तुम्हारी बातें हो चुकी हैं तो जरूर उसने तुमसे यह भी कहा होगा कि मैंने उसे एक तिलिस्म किताब देना चाहा था जिसकी मदद से जमानिया वाला तिलिस्म टूट कर उसे अगाध दौलत मिलती, पर ऐन मौके पर न जाने कौन कम्बख्त आकर उसको मेरे कब्जे से चुरा ले गया ।

भैया० । हां ये बातें गोपाल ने मुझसे कही थी और इन्हे सुन कर बहुत तरफ से घूमता फिरता मेरा खयाल आप ही के ऊपर आकर रुका था क्योंकि सिवाय आपके और किसी में मैं यह ताकत न देखता था कि तिलिस्म का भेद बता सके । मगर गोपाल की बातें सुन कर मै यह ताज्जुब कर रहा था बल्कि आप से मिल कर यही पूछने वाला था कि आपका असली अभिप्राय क्या था ? क्या आपकी समझ मे उस तिलिस्म के टूटने का वक्त आ गया जिसके ऊपर आज सैकड़ो बरसो से हम और हमारे पूर्वज हुकूमत करते चले आ रहे है ?

बाबाजी० । हां मुझे अचानक इस बात का पता लगा और इसीलिए मैंने वह किताब जो परम्परा से हमारे पास चली आ रही थी गोपाल को देनी चाही पर अफसोस कि कोई दूसरा ही उसे मार ले गया । तब मुझे इस पिटारे का खयाल आया और चूंकि मुझे मालूम था कि इसके अन्दर भी एक ऐसी चीज है जिसकी मदद से तिलिस्म टूट सकता है, मैंने इस

पर काबू किया। कम्बख्त दुश्मन ने इसके लेने के लिए भी कई कई दफा वार किया पर खुशकिस्मती से हर दफे यह चीज मुझे वापस मिलती गई जिससे मैं ख्याल करता हूं कि शायद इस वार जरूर मेरी अभिलाषा पूरी होगी और जमानिया का तिलिस्म गोपालसिंह के हाथ से टूटेगा।

बाबाजी की बात सुन कर भैयाराजा इस कदर खुश हुए कि उनके मुंह से आवाज निकलना कठिन हो गया। गद्‌गद् कंठ से उन्होंने कहा, "पुजारीजी, मेरे खानदान से आपका सम्बन्ध बहुत पुराना है और आज से पहिले भी न जाने कितनी बार आप हम लोगों पर उपकार कर चुके हैं पर इस वक्त आपने ऐसी बात मुझसे कही कि सुन कर मेरा हृदय प्रफुल्लित हो गया। यह तो मुझे भी मालूम हो चुका है कि जमानिया के तिलिस्म की आयु समाप्त हो चकी है और बहुत जल्द उसके हिस्सों का टूटना शुरू होगा मगर उसका श्रीगणेश मेरे ही खानदान से होगा इसकी मुझे आशा न थी। सच तो यह है जब गोपाल ने इन बातों का जिक्र मुझसे किया तो बरसों से आपसे देखामाली न होने के कारण आपकी तरफ मेरा गुमान ही न गया, पर बाद में मुझे आपकी याद आई और तब मेरा बहुत कुछ शक दूर हो गया, बल्कि आज मैं इसी बात की जांच करने निकला था कि मेरा खयाल कहां तक ठीक है और वास्तव में वह कौन सा व्यक्ति है जिसने लड़के के मन में इतनी ऊंची ऊंची आकांक्षाएं जगा दी हैं, पर अब आपको देख और आपकी बातें सुन मुझे विश्वास हो गया कि हमारे भाग्य सचमुच जग गये हैं। अब आप सिर्फ इतना बता दीजिए कि गोपाल इस समय कहां है और कब आप उससे इस काम को शुरू करा रहे हैं।"

बाबाजी हंस कर बोले, "अच्छे काम में बड़े विघ्न आते हैं। पहिली बार वह किताब ऐन मौके पर कोई दूसरा ले गया। दूसरी दफे यह गठरी गायब हो गई। गोपालसिंह को उसके दोनों दोस्तों कामेश्वर और श्यामलाल के साथ तिलिस्म के मुहाने पर भेज कर दूसरे रास्ते से मैं उधर ही जा रहा था जब इस पिटारे के गायब होने की खबर मुझे मिली।

खैर अब भी कोई हर्ज नही, वे लोग पास ही कहीं होगे। मेरे साथ चलो तो उन लोगो को ढूंढ कर तुम्हारे सामने ही इस चीज को उनके हवाले करूं और वह काम भी जारी करा दू, नहीं देर होने से न जाने पुनः कौन सा विघ्न आ पड़े !"

भैयाराजा बोले, "आप जहां चलें मै आपके साथ चलने को तैयार हू। दोनो ही तरफ से हम लोग बाहर हो सकते है, जिधर से मैं आया उधर से भी और जिधर से आप आये उधर से भी। जिधर आपकी आज्ञा हो चलूं।"

बाबाजी ने कहा, "जिधर से तुम आये उधर ही मै चलना चाहता हू क्योंकि मुझे यह जानने का बड़ा ही कौतूहल हो रहा है कि वह औरत कौन थी जिसने इस पिटारे को चुराने की कोशिश की !"

इतना कह हाथ बढ़ा कर बाबाजी ने वह दर्वाजा बन्द कर दिया जिसके पास खड़े इन दोनो में बातें हो रही थी अथवा जिसकी राह वे वहां तक आये थे और इसके बाद दोनो आदमी आगे को बढ़े। जिस रास्ते से भैयाराजा इस कोठडी में आये थे वह दर्वाजा बाबाजी ने खोला और लालटेन हाथ मे लिए उस सुरग मे घुसे जो यहां से आगे को जाती थी। यह सुरंग पीछे वाली सुरग से ज्यादा लम्बी चौड़ी और कुशादा थी और इस लायक थी कि इसमे दो तीन आदमी बराबर एक साथ मिल कर चल सकें मगर इसकी भी ढाल ऊपर की तरफ थी अर्थात् यह रास्ता भी बराबर ऊपर ही को चला जा रहा था।

लगभग चौथाई घड़ी के चले जाने के बाद एक और दर्वाजा मिला और एक दूसरी कोठरी नजर आई जो उस पहिली कोठरी से कुछ बड़ी ही होगी। भैयाराजा ने दर्वाजा खोलते हुए कहा, "इसी कोठरी मे मैं उस औरत को हाथ पैर बांध के छोड़ गया था !" मगर जब दर्वाजा खुला और कोठड़ी नजर आई तो अच्छी तरह देखने पर भी बाबाजी को उस कोठरी में किसी की सूरत दिखाई न पड़ी जिससे उन्होने कहा, "यहा तो कोई दिखाई नहीं पड़ता !" भैयाराजा ने भी आगे बढ़ कर गौर से सब

तरफ देखा और बाबाजी की बात सही पा कर ताज्जुब से कहा, "बेशक कोठड़ी तो खाली है! मगर मैं ठीक कहता हूं कि उस औरत को इसी जगह बेहोश और हाथ पांव बंधी हुई छोड़ आया था।"

बाबाजी बोले, "तब मालूम होता है उसके साथी आकर उसे ले गए या वह खुद होश मे आकर भाग निकली। खैर अब उसका अफसोस जाने दो, सुरंग के बाहर निकलो और गोपालसिंह को ढूढ़ो।"

दोनो आदमी कोठड़ी के बाहर निकले। एक और सुरग मिली जिसमें तीस चालीस कदम जाने के बाद कई डंडा सीढ़ियां नजर आईं। उनको तय करने पर एक संगीन दीवार सामने पडी जिसके अन्दर किसी तरकीब से बाबाजी ने एक रास्ता पैदा किया। दोनों आदमी इस रास्ते के बाहर हुए जो उनके निकलते ही पुनः इस तौर पर बन्द हो गया कि साफ दीवार पर उसका कहीं नाम निशान भी न रह गया।

यह एक बहुत पुराना और न जाने किस जमाने का बना हुआ मन्दिर था जिसके अन्दर से बाबाजी और भैयाराजा निकले थे। रात के अंधकार के कारण इस बात का पता लगाना कठिन था कि मन्दिर के आस पास क्या है अथवा वह कैसे स्थान पर बना हुआ है, फिर भी इतना पता लगता था कि इसके चारो तरफ भी कोई इमारत है जो जमाने की ठोकरें खाकर न जाने कब की टूट चुकी है।

भैयाराजा ने पूछा, "अब किस तरफ चलने का विचार है?" बाबाजी बोले, "श्यामलाल को मैं........" पर अपनी बात पूरी न कर सके। बाहर मगर नजदीक ही कही से, जफील की आवाज आई और साथ ही कुछ आदमियो के बोलने की भी आहट मिली जिससे ये लोग ताज्जुब में पड़ कर उधर ही देखने लगे। दोनो ही को दुश्मन के होने का खयाल हुआ और तुरत बाबाजी ने अपने हाथ की लालटेन बुझा दी जिससे उस जगह पूरी तरह अंधेरा छा गया। मगर ऐसा करने की कोई जरूरत न थी क्योकि यह जफील किसी गैर की नही बल्कि गोपालसिंह और उनके दोस्तो की ही बजाई हुई थी जो इस इमारत से कुछ दूर पर एक पेड़

के नीचे खड़े होकर आपुस में बातें कर रहे थे। चलिए पाठक, बाबाजी और भैयाराजा के पहिले ही हम लोग आगे बढ़ कर देखें कि यहां क्या हो रहा है अथवा ये लोग किस फिक्र में पड़े हैं।

गोपालसिंह की किसी बात के जवाब में श्यामलाल ने कहा, "बाबाजी ने अपने साथ किसी भी गैर को लाने को मनाही कर दी थी, फिर भी हिफाजत के खयाल से मैंने अपने कुछ आदमियों को इधर उधर फैला दिया था। मुझे आशा है कि कोई हमारी जफील सुन कर जरूर आवेगा।"

कामेश्वर यह सुन कर बोले, "मगर मेरी राय तो यह है कि नौकरों या सिपाहियों के आने की राह न देखी जाय और हम लोग स्वयं ही इसे उठाकर चल पड़ें। इस जगह घनघोर जंगल में देर तक रहना ठीक नहीं। शायद और कोई आदमी आ पहुंचे या इसके दुश्मन ही कुछ उपद्रव करना चाहें।"

गोपालसिंह यह सुन बोले, "दो चार आदमी पहुंच कर तो हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते फिर भी मैं आप लोगों की राय से सहमत हूं और इसे उठा कर ले जाने को तैयार हूं। उठाइये फिर, हाथ लगाइये, देर करने की जरूरत ही क्या है।"

तीनों आदमी जमीन की तरफ झुके और वहां पड़ी हुई किसी चीज को हाथ लगाना ही चाहते थे कि पीछे से आवाज आई, "जरा ठहरो और हमें भी आ जाने दो।" सब लोग चौंक कर रुक गए और गोपालसिंह के मुंह से निकला, "हैं, यह तो बाबाजी की आवाज है!" इसके साथ ही वे दो तीन कदम उस तरफ को बढ़े जिधर से अन्धकार को भेद कर दो आदमी आते हुए दिखाई पड़ रहे थे।

ये आने वाले बाबाजी और भैयाराजा थे जो आहट पर गौर करते हुए इन लोगों के पास आ पहुंचे थे और बातचीत से इन सभों को पहिचान भी चुके थे। बाबाजी ने कोई खटका दबा कर अपने हाथ वाली लालटेन पुनः बाली जिससे वहां पूरा चांदना हो गया और तब इन दोनों ने देखा कि उस जगह जमीन पर कोई औरत बेहोश पड़ी हुई है। भैया-

राजा ने पूछा, "यह औरत कौन है और तुम लोग यहा क्या कर रहे हो ?" जिसके जवाब मे प्रणाम कर गोपालसिंह बोले, "चाचाजी ! वाह आप भी आ पहुचे, और बाबाजी भी हैं ! लीजिये अब सब रहस्य खुल जायगा। हम लोग देर से यहा खडे तरह तरह की बातें सोच रहे हैं। (बाबाजी से) महात्माजी, जरा आप कृपा कर इधर बढ आइये और देखिये कि हम लोगों का खयाल गलत है या सचमुच यह......?"

गोपालसिंह की बात खतम होने के पहिले ही बाबाजी आगे बढ़ गये थे और अब अपने हाथ वाली लालटेन की मदद से जमीन पर पड़ी उस औरत को देख रहे थे। एक निगाह उसके चेहरे पर डालते ही उनके मुंह से आश्चर्य के साथ निकला, "हैं, यह तो नन्हो है ! यह यहा कहां से आई !"

गोपाल०। ठीक है, यही शक हम लोगो को भी हुआ था और इसलिए हम लोग इस फिराक मे थे कि इन्हे किसी तरह उठा कर आप के आश्रम तक ले चलते।

बाबाजी०। सो तो ठीक है मगर पहिले बताओ कि यह तुम लोगों को मिली कहां और बेहोश क्यों है ?

गोपाल०। सुनिये मैं सब बताता हूं। आपकी आज्ञानुसार हम लोग ठीक समय से उस समाधि पर पहुंच गये पर वहां आपको न पाया। तब यह राय हुई कि जो कुछ बातें आप बता चुके हैं वहां तक तो काम कर हं डाला जाय। इस इरादे से हम लोगो ने इन श्यामजी को तो कुण्ड के रास्ते भीतर भेज दिया और खुद बाहर खड़े आपका इन्तजार करने लगे। उसी समय हमे जंगल मे कुछ मार पीट या हाथापाई की आहट मिली जिस पर हमे ताज्जुब हुआ। हम लोग उधर देख ही रहे थे कि दो आदमी दौडते हुए वहा पहुंचे और बड़ी घबड़ाहट के साथ बोले, "बचाइये बचाइये, बेचारी की जान बचाइये, नहीं कम्बख्त उसको मार डालेंगे ?" मैंने ताज्जुब से पूछा, "क्या बात है, तुम दोनों कौन हो, और तुम्हारा क्या मतलब है ?" वे बोले, "ज्यादा बात करने का वक्त नही है, उस जगह पास ही नाले के किनारे एक औरत को कई

आदमी मार रहे हैं।" उसकी बात सुन हम लोगों को बहुत ताज्जुब और परेशानी हुई और चूंकि उसके ढंग से मालूम होता था कि यह घटना कहीं बिलकुल पास ही की है इससे हम लोग उस चबूतरे से उतर उन दोनों के साथ हुए। मगर वे पूरे शैतान निकले, हमे घुमाते फिराते और तरह तरह की बातें करते हुए वे हमे उस समाधि से बहुत दूर निकाल ले गये और तब उस औरत को खोजने का बहाना करते हुए खुद भी कहीं गायब हो गए। हम जोग अंधेरे में भटक रहे थे कि यकायक किसी औरत की चीख की आवाज सुनाई पड़ी। इधर उधर खोजा तो यहाँ यह बेहोश पड़ी हुई दिखाई दी, होश मे लाने की बहुत कोशिश की पर कुछ काम न चला, लाचार जफील बजाई जिसकी मदद से ये श्यामजी हमारे पास पहुँचे मगर इन्होने और ताज्जुब की बात कही।

बाबाजी०। इन्होंने क्या कहा?

गोपाल०। अब इन्हीं से पूछिये।

बाबाजी०। अच्छा श्यामलाल तुम्हीं बताओ?

श्याम०। महाराज, उस समाधि वाली कोठरी के अन्दर आपसे जब मेरी बात हुई तो मैंने कहा न था कि यहा सिंहासन पर बैठी हुई एक औरत मुझे दिखाई दी जिसने कुछ विचित्र ढंग की बातें मुझसे की और फिर कहीं गायब हो गई।

बाबा०। हा हां, यह बात तुमने मुझसे कही थी।

श्याम०। तो वह यही औरत थी!

बाबा०। है, वह यही नन्हो थी! नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। इसे भला तिलिस्मी बातों की क्या खबर, और यह वहां पहुचेगी ही कैसे!

श्याम०। सो सब तो मैं नहीं जानता पर इसमें कोई शक नहीं कि यही वहा मुझसे मिली थी और इसी ने मुझसे बातें की थी।

बाबाजी को फिर भी विश्वास न हुआ और उन्होने पुनः कहा, "नहीं नहीं, तुम्हे भ्रम हुआ होगा!" पर इसी समय भैयाराजा बोल पड़े, "बेशक ऐसा ही हुआ होगा, क्योकि मैं भी जोर देकर कह सकता हू कि

यही लड़की मुझसे वहां उस सुरंग के अन्दर मिली थी और इसी के हाथ से मैंने वह गठरी छीनी थी !"

भैयाराजा की बात सुन बाबाजी को और भी ताज्जुब हुआ और वे किसी गहरे सोच मे पड गए। बाकी के लोग भी कुछ परेशानी के साथ उनका मुंह देखने लगे।

कुछ देर बाद बाबाजी ने एक लम्बी सास खींची और भैयाराजा की तरफ देख के बोले, "आप लोगों की बात सुन कर मुझे इतना ताज्जुब हुआ है कि मैं बयान नही कर सकता। अगर मेरी यह नन्हो ही वहां आप लोगो से मिली थी तो मुझे अपने ख्याल बहुत कुछ बदलने पड़ेंगे। मुझे सन्देह होने लगा है कि शायद इस कम्बख्त के मन में कुछ पाप है और यह कोई शैतानी करना चाहती है। अगर यह बात ठीक है तो कोई ताज्जुब नही कि वह तिलिस्मी किताब भी जो मैं गोपालसिंह को देना चाहता था इसी की कार्रवाई से गायब हुई हो। मैं अब इसे होश में लाकर इससे यह दरियाफ्त करना चाहता हूँ कि यहा कैसे पहुंची, इसे तिलिस्म का कितना हाल मालूम हो चुका है, और वह किताब अभी तक इसके कब्जे में हैं या नही। इस समय अब सुबह होने में भी कुछ विशेष विलम्ब नही है, इसलिए मैं यही उचित समझता हूं कि इस वक्त आप लोग अपने लश्कर में जायं जो यहा से बहुत दूर नही है और आज का दिन मुझे इससे निपटने को छोड़ दें, तब कल सुबह को मुझसे उसी मामूली ठिकाने पर मिलें। उस समय तक मैं सब कुछ भेद इस कम्बख्त के पेट से निकाले रहूँगा और आगे की कार्रवाई भी सोचे रहूगा।"

भैयाराजा बोले, "जैसी आपकी इच्छा, हम लोगों का कोई उज्र नही। अगर कहिए तो इसे उठा कर आपके आश्रम तक पहुंचा दें !" पर बाबाजी ने जवाब दिया, 'उसकी जरूरत नही, मैं सब इन्तजाम कर लूंगा, अब आप लोग जाएं। मगर कल सुबह मुझसे अवश्य मिलें आप चारो ही आदमी।"

दण्ड प्रणाम के बाद भैयाराजा गोपालसिंह कामेश्वर और श्यामलाल

बाबाजी के पास से हटे और अपने लश्कर की तरफ रवाना हुए। बाबाजी ने जब अपने को निराले में पाया तो हाथ की लालटेन बुझा दी और तब एक लात नन्हों को मार कर कहा, "कम्बख्त! शैतान की बच्ची! अब नखरा करके पड़ी मत रह! उठ और मुझे बता कि तेरे मन में क्या है और तू किस लिए तिलिस्म में घुसी थी?"

ग्यारहवां बयान

दिन लगभग दो पहर के ढल चुका था जब रोहतासगढ़ से चले शेरसिंह और भूतनाथ उस मकान मे पहुंचे जो रोहतासमठ के नाम से मशहूर था या जहां बाबाजी रहा करते थे।

भूतनाथ का खयाल था कि बाबाजी भोजन करके इस समय आराम कर रहे होंगे पर इसके खिलाफ इन दोनों ऐयारों ने उन्हे मठ के बाहर ही एक चबूतरे पर गाल हथेली पर धरे चिन्ता के साथ कुछ सोचते पाया। भूतनाथ को ताज्जुब हुआ और उसने आगे बढ कर पूछा, "यह क्या बाबाजी, आप इस वक्त यहां क्यो बैठे है।" एक लम्बी सांस फेंक कर बाबाज बोले, "क्या बताऊं, बहुत बडी फिक्र मे पड़ गया हूँ!" भूतनाथ ने पूछा, "सो क्या?" बाबाजी ने कहा, "अब आ गए हो तो सब कुछ सुनोगे ही, पर यह बताओ कि इस समय इस बेवक्त तुम कहा से आ निकले? तुम्हारे साथ शेरसिंह को देख कर मुझे गुमान होता है कि शायद तुम लोग रोहतासगढ़ से आ रहे हो?"

शेरसिह ने जवाब दिया, "जी हा, हम लोग वहा से ही आ रहे हैं। भूतनाथ ने खुशी की एक खबर मुझे सुनाई थी और मैं सोच रहा था कि आपको बहुत प्रसन्न और प्रफुल्लित देखूंगा मगर इसके विपरीत आपको चिन्तित देख मुझे सन्देह होता है कि शायद कोई नई बात हुई है।" बाबाजी बोले, "बेशक यही बात है। खैर भीतर चलो, हाथ मुंह धो कर ठण्ढे हो, और कुछ पानी वानी पी कर बैठो तो बातें होंगी।"

शेर०। जी हम लोग सब तरह से निश्चिन्त हो के यहां पहुंचे हैं। पास वाले नाले पर स्नान आदि कर कुछ जलपान भी कर चुके हैं, अस्तु अब

किसी चीज की जरूरत नही हैं। अगर बताने में कोई हर्ज न हो तो आप तुरन्त बतलावें कि क्या तरद्दुद आपको परेशान किए हुए है।

बाबाजी०। अच्छा तो फिर यहां बैठ जाओ और सुनो, मगर पहिले यह बता दो कि भूतनाथ ने कौन सी खुशखबरी तुम्हे सुनाई थी।

शेर०। इन्होने कहा था कि वह देवीरानी वाला पिटारा जो गायब हो गया था फिर से आपके कब्जे मे आ गया, क्या यह बात सही है?

बाबाजी०। हा बिल्कुल सही है। इन्होने दुश्मन के हाथ से छीन के उसे मेरे पास पहुंचा दिया और अब भी वह मेरे ही कब्जे मे है मगर इस बीच में कई बातें हो गयी और सच तो यह है इस समय उसी पिटारे ने ही मुझे एक फिक्र और तरद्दुद में डाल रक्खा है।

शेर०। वह क्या?

बाबाजी०। तुम दोनो ही को मै बराबर अपने लड़के की तरह बल्कि उससे भी बढ़ कर मानता चला आया हूं और कभी किसी तरह का परहेज तुमसे नही रक्खा है, इसलिए इस बात को बता देने में भी मुझे कुछ आपत्ति नही है क्योकि शायद तुम लोग इस मामले में मेरी कुछ मदद ही कर सको, अस्तु मैं साफ साफ तुमसे कहता हूं, मगर इतना खयाल रहे कि तुम दोनो के सिवाय किसी तीसरे के कान में बातें न जानी चाहिए नही तो बहुत बड़ा हर्ज पड़ सकता है।

भूतनाथ और शेरसिंह०। आप विश्वास रखिए कि जो कुछ आप कहेंगे वह कदापि किसी गैर तक न जायगा और हम लोग जो कुछ भी मदद इस बारे में कर सकते है करने से कभी बाज न आयेंगे।

बाबा०। अच्छा तो सुनो, यह शायद तुम दोनों को मालूम ही होगा कि मुझे तिलिस्मी मामलों से कुछ सरोकार है, मगर यह बात आज पहिले पहल तुमको मालूम होगी कि मै एक तिलिस्म का दारोगा भी हूं जिसके तोडने की तर्कीब एक किताब पर लिखी बहुत जमाने से मेरे पास चली आ रही है। मुझे पता लगा कि उस तिलिस्म के टूटने का समय आ गया है और वह जमानिया के राजकुमार गोपालसिंह के हाथ से

टूटेगा। मैंने किसी तरकीब से उन्हे अपने पास बुलाया और उन्हे तिलिस्म का कुछ हाल बता कर वह किताब देना चाहा मगर ऐन मौके पर आश्चर्य-जनक रीति से वह किताब मेरे हाथ से निकल गई (भूतनाथ से) जिसका जिक्र मै तुमसे कर भी चुका हूँ। उस किताब के चले जाने से मुझे बहुत चिन्ता हुई क्योंकि यद्यपि ऐसा तो नही है कि सिर्फ किताब की मदद से ऐरा गैरा जो भी चाहे जाकर तिलिस्म खोल ले और वहां की दौलत निकाल ले, क्योंकि तिलिस्म तो जिसके नाम पर बंधा है वही उसे तोड़ सकता है, मगर फिर भी इतना जरूर है कि बिना किताब के तिलिस्म खुल नही सकता और जिसके पास किताब हो वह तिलिस्म मे घुस कर बहुत कुछ उत्पात मचा सकता और वहां की दौलत तथा सामान भी बरबाद कर सकता है। इसके विपरीत मुझे इसलिए भी फिक्र पैदा हुई कि अगर यह वक्त टल गया तो फिर बरसों तक गोपालसिंह उस तिलिस्म को तोड न सकेंगे और शायद उन पर कोई मुसीबत भी आ पडे तो ताज्जुब नही। अस्तु सोचते सोचते मुझे उस चीज का खयाल आया जो देवीरानी के पास थी, अर्थात् भानुमति का पिटारा। उसके अन्दर कुछ ऐसा सामान है जिसको और एक दूसरी किताब की मदद से जो मेरे पास है तिलिस्म तोड़ा जा सकता है, अतएव मैंने वह पिटारा देवीरानी से ले लेना चाहा। किस तरह मुझसे पहिले ही एक दुष्ट ने वहा पहुंच पिटारे को गायब करना चाहा और किस तरह भूतनाथ ने उसे पुनः मेरे पास पहुचा दिया यह सब तुम जान ही गए हो। मैंने उस पिटारे को एक हिफाजत की जगह मे रख दिया क्योंकि मुझे दुश्मनों का बडा डर था, और तब गोपालसिंह को बुला कर वह चीज उन्हें सौप देना चाहा पर इस बार पुनः ठीक मौके पर वह पिटारा फिर गायब हो गया।

भूत०। है, उसे फिर कोई ले गया !!

बाबा०। हा ले गया था मगर घबड़ाओ नही, खुशकिस्मती से वह पुनः मेरे पास लौट आया और इस समय भीतर मेरी कोठड़ी मे मौजूद है। मगर तरद्दुद मुझे जो हुआ सो उस पिटारे का नही बल्कि इस बात

का कि इस वार उसको गायव करने वाली मेरी लड़की नन्हों थी ।

भूतनाथ और शेरसिंह दोनों के मुंह से निकला, "नन्हो !" वावाजी वोले, "हां नन्हो ।" और तव उन्होंने वह सव हाल कह सुनाया जो हम ऊपर के वयानों मे पढ़ चुके है ।

पूरा हाल कह कर वावाजी वोले, "मैंने नन्हो की वहुत कुछ लानत मलामत की और मारा पीटा भी मगर वह कुछ वताती ही नही ।"

भूत० । आखिर वह कहती क्या है ?

वावाजी० । वह कहती है कि 'मुझे इस वारे मे कुछ भी मालूम नही, मै अपने विछौने पर सोई थी, होश मे आने पर अपने को उस जगह जंगल मे पाया ।' मगर मैं खूव जानता हू कि वह शैतान झूठ वोल रही है ।

भूत० । यह आप कैसे जानते हैं ? शायद वह ठीक ही कहती हो !

वावाजी० । नही, मेरा खयाल वहुत ठीक है और उसके एक नही कई कारण हैं । सव से मुख्य वात यह है कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उस कम्वख्त के मन में तिलिस्म की सैर करने का खयाल वहुत दिनों से घूम रहा है और इसके पहिले भी वह दो एक वार ऐसी ही कार्रवाइया कर चुकी है ।

भूत० । आप कहते है तो वात ठीक ही होगी मगर मै तो समझता हू कि मुमकिन है इस मामले में किसी तरह की ऐयारी की गई हो और नन्हो वेचारी एक दम वेकसूर हो ।

वावाजी० । ऐसा नही हो सकता, लेकिन अगर तुम्हारा यही खयाल है तो तुम इसकी जांच कर देखो । तुम ऐयार हो और इस मामले मे अगर किसी तरह की चालाकी की गई होगी तो उसका पता वहुत जल्द लगा सकते हो ।

भूत० । वेशक ऐसा ही है, मगर उसके लिए जरूरी है कि मै नन्हों से अच्छी तरह वातें करूं ।

वावाजी० । तुम खुशी से उससे वात कर सकते हो । इस समय तो

मैं गुस्से के मारे उसे पूरब वाली कोठड़ी मे बन्द कर आया हूं जहां वह पड़ी रो रही होगी, मगर तुम चाहो तो वहां जाकर उससे बातें करो। तुमसे उसका दिल खुला हुआ है और मुमकिन है कि इस मामले मे कोई ऐसा रहस्य हो जिसे वह मुझसे न कहती हो पर तुमसे कहने को तैयार हो जाय।

भूत०। मैं जरूर उसमे बाते करूंगा और मुझे विश्वास है कि मुझसे वह कोई बात छिपावेगी नही। लेकिन मुझे इसी समय चुनारगढ के लिए रवाना हो जाना है, अस्तु मै चाहता हू कि अभी उससे बातें कर लूं, तब से (शेरसिंह की तरफ देख कर) आप महात्माजी से उस बारे में बातें कर लें जिसका आपसे मैने जिक्र किया था।

इतना कह भूतनाथ उठ खडा हुआ और मकान के अन्दर घुसा। इमारत का कोना कोना उसका देखा हुआ था अस्तु उसे किसी तरह का तरद्दुद न हुआ और बहुत जल्द उस जगह जा पहुचा जहा नन्हों जमीन पर पड़ी सिसक रही थी।

नन्हों ने भूतनाथ को देखते ही सिर उठाया और भूतनाथ ने उसके पास बैठ उसका सिर अपनी गोद मे लेते हुए कहा, "कर न गईं जल्दी-बाजी! मैने कहा था कि इस मामले मे कोई भूंडी कार्रवाई न करना नही बाबाजी को अगर जरा सा भी शक हो गया तो सब चौपट हो जायगा। आखिर तो मैंने रोहतासगढ़ से लौट कर आने का वादा किया ही था, फिर ऐसा घबड़ा क्यो गई!"

इधर उधर देख इस बात का निश्चय कर लेनेबाद कि बाबाजी वहां नहीं है और न कोई गैर आदमी ही मौजूद है, नन्हों उठ कर बैठ गई। उसका रोना धोना सब न जाने कहां काफूर हो गया और वह भूतनाथ से बोली, "तुम्हे कुछ बसन्त की खबर भो है कि यों ही बकने लग गए!"

भूत०। तो क्या कोई नई बात हुई?

नन्हों०। जरूर! तुम जिस समय वह पिटारा बाबूजी को दे के गए उसके कुछ ही देर बाद बाबूजी से श्यामलाल और कामेश्वर मिलने आए और इन लोगों के जरिए उन्होने गोपालसिंह को कहला भेजा कि आज रात

वारह वजे फलां जगह मिलना, वहां वे उन लोगों को एक चीज देंगे और तिलिस्म तोड़ने का काम भी शुरू करा देंगे।

भूत०। अच्छा!

नन्हों०। इसी पर मुझे फिक्र पैदा हुई। अगर गोपालसिंह तिलिस्म तोड़ कर सव दौलत निकाल लेंगे तो हम लोग लंडूरे हीं रह जायंगे, यही सोच कर मैंने तुम्हारे लौटने की राह देखना मुनासिव न समझा और अपनी कार्रवाई शुरू कर दी। मुझे वह जगह मालूम थी जहां वावूजी वह पिटारा रख आए थे या जहां उन्होंने गोपालसिंह को वुलाया था, अस्तु मैं वहीं पहुंची और पिटारे पर कब्जा कर लेना चाहा। उसी किताव के जरिये जिसे तुम भी पढ़ चुके हो, मुझे उस जगह और वहा के रास्ते का पता लगा था पर अफसोस कि वहां पहुंच कर वहां से वाहर निकलने का रास्ता खोलने में मुझसे कुछ भूल हो गई और मुझे उस जगह जरूरत से ज्यादा देर लग गई। नतीजा यह निकला कि गोपालसिंह वगैरह उस जगह पहुंच गए और सव भण्डा फूट गया, लेकिन अव भी कुछ वहुत विगड़ा नहीं है। तिलिस्म तोड़ने की कार्रवाई वावूजी ने कल तक के लिए रोक दी है और आज इस समय वह किताव भी उनके पास मोजूद है और वह पिटारा भी। अगर हम लोग अव भी हिम्मत कर जायं तो अपना काम वना सकते हैं।

भूत०। (चिन्ता के साथ) तुम्हारा क्या मतलव है सो मेरी समझ मे ठीक न आया। उस पिटारे और किताव को ले के हम लोग क्या कर सक्ते हैं?

नन्हों०। (धीरे से एक चपत भूतनाथ के गाल पर मार कर) हो तुम निरे वुद्धू हो! अरे तुमको मालूम नहीं कि उस पिटारे में क्या है? उसके अन्दर एक ताम्रपत्र है जिसमे तिलिस्म तोड़ने की तरकीव लिखी हुई है और कुछ तिलिस्मी हथियार और सामान भी है जिनसे इस काम मे मदद मिलगी। वावूजी वाली उस किताव और पिटारे की इन चीजों की मदद से हम लोग और कुछ नहीं तो तिलिस्म के भीतर तक तो

पहुंच ही सकते हैं, बस तो क्यों न हम लोग तिलिस्म मे घुस चलें और वहां की दौलत और सामानों का मजा लें !

भूत० । पागल भई हो ! तिलिस्म तोडना क्या हर एक ऐरे गैरे का काम है । उसे वही तोड़ सकता है जिसके नाम पर वह बांधा गया हो । हम लोगों की ऐसी किस्मत कहां ? बाबाजी ने खुद मुझसे कहा है कि वह तिलिस्म कुंअर गोपालसिंह के नाम पर बंधा हुआ है और ये ही उसके मालिक होगे ।

नन्हो० । तो तिलिस्म तोड़ने को मै कहती ही कब हू ! मै तो उसकी सैर करने और उसके अन्दर भरी दौलत में से कुछ निकल लेने को कह रही हूं । उसके अन्दर तो करोडों और अरबों को रकम भरी हुई है जिसमें से दस बीस लाख निकाल लेना कुछ मुश्किल न होगा । हम लोग तिलिस्म की सैर कर और अपने हाथ भी गर्म कर बाहर हो जायेंगे फिर जिसके मन में आवे तिलिस्म में घुसे और उसको तोडे या जो चाहे करे !

नन्हों ने तिलिस्म की दौलत और वहां के तमाशे का कुछ ऐसा सब्जबाग दिखाया कि भूतनाथ की भी नीयत आखिर डोल हो गई और वह भी लालच में पड हो गया । बहुत देर तक नन्हो उससे तरह तरह की बातें करती रही और अन्त में उसको बिल्कुल अपने मत का कर ही डाला । भूतनाथ भी तिलिस्म की सैर करने और वहां भरी दौलत से अपने हाथ रंगने का स्वप्न देखने लगा ।

आखिर कुछ देर बाद नन्हों की आखिरी बात सुन कर भूतनाथ ने जवाब दिया—

भूत० । खैर जो तुम कहती हो वही सही मगर इस बात को सोच लो कि ऐसा करने में कोई मुसीबत न आ जाये !

नन्हो० । मैं सब कुछ सोच चुकी हूं । कही से किसी तरह का खतरा हम लोगों पर नही आ सकता । तुम्हारी बताई तरकीब की बदौलत कई बार बाबूजी को बेहोश कर मैंने उस किताब को उनके झोले से निकाल अच्छी तरह पढ़ डाला है और उसकी सब बातें दिल पर नक्श कर ली

हैं। अब मैं जब चाहूं तिलिस्म मे जा और आ सकती हूं, और उस पिटारे मे की चीजें अगर कब्जे मे आ जांय तब तो फिर हम लोगों के रास्ते मे किसी तरह की रुकावट रह ही नही सकती। तुम अपना दिल पक्का कर लो और साफ साफ मुझसे बोलो, तुम्हारी हिम्मत अगर पड़ती हो तो ठीक ही है नही साफ जवाब दो, मैं दूसरी तरकीब देखूं और किसी दूसरे को इस काम मे अपना मददगार बनाऊं?

भूत०। (ताज्जुब से) किसी दूसरे को?

नन्हों०। हां, ईश्वर ने दया कर के मेरे पास कुछ ऐसे लोग भेज दिए हैं जिनकी मदद से अगर मैं चाहूँ तो इस काम को सहज मे ही कर सकती हूं।

भूत०। वह कौन?

नन्हो०। खैर मैं उनका हाल पीछे कहूगी, तुम पहिले अपने बारे मै बताओ। तुम अगर इस काम मे मेरे साथी बनते हो तो ठीक हो है नही तो साफ जवाब दो मै दूसरा घर देखूं।

भूतनाथ नन्हों की चलती फिरती बातें सुन चक्कर मे पड़ गया। सच तो यह है कि खुद उसके मन मे भी तिलिस्म की सैर करने और वहा की दौलत से मालामाल बनने की लालच बहुत दिनो से लगी हुई थी। कुछ देर तक वह बहुत तरह की बातें सोचता रहा, इसके बाद एक लम्बी सांस लेकर उसने कहा—

भूत०। खैर जो तुम कहती हो वही सही, मै तुम्हारा साथी बनने को तैयार हू मगर इतना जरूर कहूँगा कि काम ऐसे ढंग से होना चाहिए कि किसी को और खास कर बाबाजी को कोई शक न हो।

नन्हों०। इस बारे मे तुम्ही अच्छी तरह सोच समझ लो। तुम मर्द आदमी ऊपर से ऐयार हो, काम करने का ढंग जैसा तुम सोच सकते हो मैं नही सोच सकती। मै अपनी तरफ से सिर्फ इतना कह सकती हू कि हम लोगो के पास वक्त बहुत थोड़ा है। कल सुबह गोपालसिंह अपने दोस्तो के साथ आ मौजूद होंगे और बाबूजी उन्हे ले के उस मुहिम पर

रवाना हो जायगे, वस फिर कुछ करते धरते न वन पड़ेगा ।

भूत० । तो इसके माने तो यह हुए कि हम लोगों को अगर कुछ करना है तो आज ही करना पड़ेगा ।

नन्हों० । वेशक !

भूत० । (कुछ सोचता हुआ) वड़ी मुश्किल है, मैं........

नन्हो० । अगर तुम डरते हो या किसी तरह का खौफ तुम्हारे मन में घुसा हुआ है तो अभी ही कह डालो । कम से कम मै अब इस काम में रुक नही सकती । जैसे होगा वैसे अपनी कार्रवाई जारी करूंगी ही ।

भूत० । (तन कर) नहीं, मेरे मन में न कोई भय है न सन्देह, मैं वैसा डरपोक भी नही हू जैसा तुम समझती हो । किसी तरह का खौफ मुझे.......

नन्हों० । तो फिर अपने बेखौफ होने का सबूत दो और मेरे हाथ पर हाथ मारो । वहुत सोच विचार न करो और काम कैसे शुरू किया जाय इसका वहुत जल्दी निश्चय करो ।

कुछ देर सोच विचार कर भूतनाथ बोला, "अच्छी बात है, मैं तुम्हारे साथ हू, जैसा कहो वैसा करूं । मगर और बातें तय करने के पहिले यह सोच लो कि बाबाजी को अपने वहां होने का कारण क्या बताती हो । वे तुमसे बहुत सख्त नाराज है और उनको कोई न कोई अच्छा वहाना बताना ही पडेगा ।

नन्हों यह सुन भूतनाथ की बगल मे हो गई और उसके गले में हाथ डाल कर खुशी खुशी बातें करने लगी ।

इन दोनों की बातें बहुत देर तक होती रही और तभी खतम हुई जब इनके कानों मे खड़ाऊं की आवाज गई । नन्हों बोली, "बाबूजी आते हैं, अब तुम जाओ । बस जो तुमने सोचा है वही बात उनसे कहना और मै भी पूछने पर वही कहूँगी । और आज रात का ख्याल रखना, मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगी ।"

भूत० । (उठता हुआ) मैं ठीक वक्त पर आ मौजूद हूंगा ।

भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और नन्हों उसी तरह जमीन पर गिर पुनः सिसकने लग गई। नीचे झुक कर धीरे से उसके कान में कुछ कह भूतनाथ कोठरी से निकला और देखा कि शेरसिंह को साथ लिये बाबाजी चले आ रहे हैं। उसको देखते ही बाबाजी ने पूछा, "क्यों जी, कम्बख्त ने कुछ बताया?" भूतनाथ बोला, "जी हाँ, मुझे सब रहस्य मालूम हो गया, यद्यपि इस मामले में कुछ बेवकूफी नन्हो की भी है पर समूची शैतानी जमानिया के दारोगा साहब की है। (शेरसिंह की तरफ देख कर) आपसे मैंने कहा न था कि जोगी बाबा की समाधि पर हमारे बाबाजी का रूप बना कर इनसे पिटारे के लिए झगड़ा मचाने वाले वे ही हजरत थे?"

शेर०। हां हां, तुमने कहा था, तो क्या.....?

भूत०। हां तो अपनी किसी धुन मे हमारे बाबाजी का ही भेष धरे हुए वे यहां आ पहुँचे और बेचारी नन्हों को धोखे में डाल उन्होंने इसके जरिये अपना काम बनाना चाहा। सुनिये मैं सब हाल कहता हूं पर (महात्माजी की तरफ देख कर) बाबाजी आपसे मेरी प्रार्थना है कि इसके लिए अब नन्हो से और कुछ न कहे सुनें, उस बेचारी की जो कुछ दुर्गति आपने कर डाली वही बहुत है।

भूतनाथ ने कुछ मनगढन्त बातें ऐसी बाबाजी को सुना दी कि वे उसके जाल मे पड़ गये। भूतनाथ न पूरी तरह उनकी दिलजमयी करा दी और अन्त में यह कहा, "मै चुनारगढ़ से लौटता हूँ तो जमनिया जाता हूं और वहां पहुंच कर कम्बख्त दरोगा से इसका जवाब तलब करता हूं कि क्यों उसने हमारे बाबाजी को इस तरह धोखे में डाल कर तकलीफ पहुंचाई?"

भूतनाथ और शेरसिंह कुछ देर तक वहाँ रहे, इसके बाद दोनों ही विदा हो रोहतासमठ के बाहर निकले। शेरसिंह ने रोहतासगढ़ का रास्ता लिया और भूतनाथ ने चुनार की सड़क नापी।

× × ×

रात लगभग आधी के जा चुकी है। डराबना जंगल सांय सांय कर रहा है। चारो तरफ घोर अंधेरा छाया हुआ है।

मगर ऐसे समय मे भी कम्बख्त नन्हो को चैन नही है और वह अपनी कोठरी में वैठी न जाने क्या कर रही है। उसके सामने एक गठड़ी है और हाथ में एक छोटी सी किताब जिसके पन्ने दीये की रोशनी में पलटती हुई वह जगह जगह से उसे देख रही है।

यकायक वाहर की तरफ पड़ने वाली खिड़की के पल्ले पर खटके की आवाज आई। नन्हो चौंकी और किताब बन्द कर उठ के खिड़की के पास आ गई। पुनः खटके की आवाज हुई, और इस बार बहुत आहिस्ते से साकल हटा नन्हो ने खिडकी का पल्ला खोल दिया। सामने एक काली सूरत नजर पडी जिसने धीरे से पूछा, "क्या हाल चाल है?" नन्हो ने जवाब दिया, "सब ठीक है।" काली शकल ने फिर पूछा, "वे चीजें तुमने कब्जे में कर ली?" नन्हो बोली, "हां।" पुनः सवाल हुआ, "वावाजी?" नन्हो बोली, "वे तुम्हारी दवा के असर से गाफिल पडे हुए है। मगर जल्दी करो, देर होने से मुमकिन है उनकी बेहोशी दूर हो जाय!" काली शक्ल ने कहा, "वस मुझे कोई देर नही है, जरा इस जगह का रूपक ठीक कर लूं?" नन्हों ने पूछा, "तुम अपना सब सांमान लेते आये हो?" जवाब मिला, "हां सब जरूरी चीजें मेरे पास मौजूद है।"

यह बोलने वाला भूतनाथ था। इसकी पीठ पर कुछ सामान था जिसे इसने उतार कर एक बगल में रख दिया था और अब खिड़की के छडो के साथ कुछ कर रहा था। अपने हाथ के एक औजार की मदद से कुछ ही कोशिश में उसने खिड़की के कई छड टेढ़े करके निकाल डाले और तब उसी रास्ते कोठड़ी के भीतर आकर बोला, "तुमने यहा का इन्तजाम सब ठीक कर रक्खा है?" नन्हो बोली, "हा सब ठीक है, देख लो और अगर कुछ कसर हो तो ठीक कर डालो।"

भूतनाथ ने कोठड़ी के चारो तरफ निगाह की जिसकी इस समय कुछ विचित्र हालत हो रही थी। बगल में बिछी हुई खाट का बिस्तरा इस तरह बेतरतीब हो गया था जैसे वहा किसी ने हाथपाई की हो। फटे चिथे

कपड़े इधर उधर पडे थे, कई वरतन इधर उधर जमीन पर गिरे और लुढके पडे थे, एक बडा सा चिमटा बीच में पड़ा हुआ था, गरज कि साधारण रीति से देखने से यही गुमान होता था कि यहां जरूर बहुत कुछ हाथापाई हो चुकी है। भूतनाथ सब कुछ देख कर बोला, "ठीक है, बस इतनी कसर है।" उसने अपने सामान में से चमडे की एक बोतल निकाली जिसमें किसी तरह का लाल अर्क भरा हुआ था और उसको चारो तरफ छिड़कता हुआ बोला, "तुम कोई दूसरी धोती पहिन लो और इसको उतार फाड़ कर यही फेंक दो।"

नन्हों ने ऐसा ही किया और उसकी दी हुई धोती को भी भूतनाथ ने बोतल के रंग से जगह जगह से तर करके एक तरफ फेंक दिया। इसके बाद अपनी कमर से एक भुजाली खोल उसी रग से तर कर दूसरी तरफ डाल दिया। कुछ रंग इधर उधर दीवारों और फर्श पर और कुछ खिड़की के पास तया उसके रास्ते बाहर भी गिरा दिया और तब अपनी कार्रवाई पर आप ही खुश होकर बोला, "बस अब ठीक है, सुबह बाबाजी जब उठ कर इधर आवेंगे तो समझेंगे कि कोई खिड़की का छड़ तोड़ कर इधर से घुसा और तुम्हे मार पीट उनकी चीजें और साथ साथ तुम्हे भी लेता गया!"

नन्हो हंस कर बोली, "जरूर यही समझेंगे और बड़ा चकरायेंगे। अगर समझें कि यह जमानिया के दारोगा साहब का ही काम है तो भी ताज्जुब नही।"

भूतनाथ बोला, "बेशक उनका ख्याल उधर ही जायगा। खैर अब देर करने की जरूरत नही, चलना चाहिए। (नन्हों वाली गठरी की तरफ बता कर) यही गठरी है?" नन्हों बोली, "इसी में वह पिटारी और बाकी सामान बंधा हुआ है और किताब देखो यह है।" भूतनाथ ने जवाब दिया, "तो बस ठीक है, तुम बाहर निकलो तो मैं यह गठरी तुम्हें पकड़ाता हू इसे सम्हालो, और तब मैं भी आया।"

जल्दी जल्दी नन्हों कोठड़ी के बाहर निकली और उसका ...

उसके हवाले करने बाद भूतनाथ ने उस गठरी को भी बाहर कर दिया, एक निगाह कोठडी में चारो तरफ डाली और सब कुछ अपनी मर्जी के मुताबिक पा खुशी की आवाज में बोला, "बस ठीक है, अब किसी को कोई शक नही हो सकता !" एक लात मार कर वह दिया भी उसने गिरा दिया जो एक तरफ बल रहा था और तब खिड़की की राह बाहर निकल गया। दोनों आदमियों ने मिल कर सब सामान उठा लिया और तब तेजी के साथ एक तरफ को बढ़े।

मगर इन दोनों के मन की पूरी न हुई। दस ही बीस कदम गये होंगे कि पीछे से किसी के दौड़ते हुए आने की आहट मिली और यह आवाज आई—'ठहर तो जा कम्बख्त, जाती कहां है !"

सुनते ही नन्हों डर के मारे कांप गई क्योंकि यह आवाज उसके पिता की थी, मगर भूतनाथ ने उसका कन्धा दबा कर उसे ढाढस दिया और अपने कपड़ों के अन्दर से कोई चीज निकालता हुआ पीछे को पलटा। बाबाजी क्रोध से कापते और लम्बे लम्बे डग मारते हुए उसकी तरफ बढ़े चले आ रहे थे। उन्होने उसको पलटते देख कहा, "अरे कम्बख्त तू ? तेरी ही यह करतूत है ! अच्छा तो ठहर जा, देख मैं तेरी क्या गत करता हूं !!"

भूतनाथ ने देखा कि बाबाजो ने अपने कपड़ों के अन्दर हाथ किया और न जाने क्या चीज बाहर निकाली। उसे डर हुआ कि कही ये कोई तिलिस्मी हथियार न लिए हो जिसके सामने उसकी कोई भी ऐयारी काम न देगी, अस्तु इसके पहिले कि बाबाजी अपने हाथ की चीज से कुछ भी काम ले सकें भूतनाथ आगे को झपट पडा और उसने अपने हाथ की चीज बाबाजी की नाक पर खीच के मारी। वह बेहोशी का कुमकुमा था जो लगते ही टूटा और उसके अन्दर भरी हुई बेहोशी की बुकनी ने इतनी तेजी से अपना काम किया बाबाजी को कुछ भी करने की मोहलत न मिली। उन्हे तड़ातड दो तीन छींकें आईं और तुरन्त ही वे बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े।

उनके गिरते ही नन्हो ने आगे बढ़ कर डरी आवाज मे पूछा, "क्या

हुआ ? मर गये क्या ?" भूतनाथ हंस कर बोला, "नही नहीं, मरे नही सिर्फ बेहोश हो गए हैं, मगर जान पड़ता है कि इन्होने मुझे पहिचान लिया है। यह वहुत मुश्किल हुई। अब हम लोग अपना काम उस खूबी से नही कर सकते जैसा सोचा था।"

नन्हो जल्दी से बोली, "नही, सब ठीक होगा, तुम इनके हाथ पैर बांध दो और चलो। उस समाधि तक हम लोग पहुच जांय तो फिर ये हमारा कुछ नही बिगाड़ सकेंगे।"

यद्यपि भूतनाथ का इरादा तो नहीं था पर नन्हों एक ही शैतान की खाला थी जिसने भूतनाथ की कुछ भी चलने न दी। लाचार उसने बाबाजी के हाथ पैर अपनी कमन्द से बाध दिया और उन्हें एक ऊंची चट्टान पर रख दिया, मगर नन्हों बोली, "यहां मत छोड़ो, जंगली जानवर खा जायेंगे या अगर होश में आ गये तो फिर हम लोगों का पीछा करेंगे। वह देखो एक सूखा कूआं है। उसमें पानी बिल्कुल नही है और अन्दर इस कदर घास फूस और कतवार भरा है कि उसमें गिरे हुए आदमी को जरा भी चोट नही लग सकती, इन्हे उसी में डाल दो सुबह तक फुरसत हो जायगी।"

नन्हो के जाल में फंसे हुए और तिलिस्म की दौलत हथियाने की धुन में अन्धे भूतनाथ ने ऐसा ही किया। उस बेचारे साधू को बेहोश और हाथ पाव बंधे हुए उस अन्धे कूएं में डाल दिया और तब इस बात की कुछ भी खोज खबर न लेकर कि उसकी क्या गति हुई, दोनो प्रेमी अपना अपना सामान उठा पुनः आगे को रवाना हुए। कुछ ही देर बाद घनघोर जंगल ने दोनो को अपनी गोद में छिपा लिया।

।। पहिला भाग समाप्त ।।

१२ वां संस्करण] १९७४ ई० [१२०० प्रति

॥ श्रीः ॥

रोहतासमठ

दूसरा भाग

पहिला बयान

"यह क्या, तुम लोग लौट क्यों रहे हो ? पुजारीजी कहाँ हैं ? नही मिले क्या, या तुम लोगों को वे ही कही भेज रहे हैं ?"

"जी नहीं चाचाजी, हम लोग तो निराश होकर लौट रहे हैं। बाबाजी का कही पता नही है और हमें तो वहां कोई भयंकर दुर्घटना हो गई सी जान पड़ती है।"

"दुर्घटना ! दुर्घटना कैसी ?"

कहने वाले भैयाराजा थे जो गोपालसिंह की बात सुन घोडे पर से उतर पडे। गोपालसिंह कामेश्वर और श्यामलाल ने उन्हे घेर लिया और बोले, "अब आप आ गये हैं तो खुद देख ही लीजिए।"

बातचीत रोहतासमठ के पास ही हुई थी जिधर से ये तीनों वापस आ रहे थे जब भैयाराजा ने उन्हे देखा। वे बोले, "खैर मैं तो चलता ही हूं पर हुआ क्या सो तो कुछ बोलो।" गोपालसिंह ने जवाब दिया—

गोपाल०। आपके आज्ञानुसार हम तीनों सूर्योदय से बहुत पहिले ही बाबाजी के मठ पर पहुंच गए। उन्होंने कहा था कि दर्वाजा खुला मिलेगा पर उसे बन्द पाकर हमलोग समझे कि शायद वे अभी उठे नहीं इससे बाहर ही रुक गये, पर जब देर हुई, सूर्य उगने को आ गए और फाटक न खुला तो लाचार आवाजें देने लगे, पर कोई जवाब नही मिला, बहुत देर तक चिल्लाने और खटखटाने पर भी जब भीतर से कोई न बोला तो शक हुआ। पता लगाने के लिए इधर उधर घूमने लगे। मठ के पिछले हिस्से की तरफ गए तो भण्डा फूटा। उधर की एक खिड़की खुली हुई थी, उसके

छड़ खींच कर अलग किए हुए थे, और भीतर भयंकर खूनखराबा मचा हुआ था।

भैया०। खूनखराबा!

गोपाल०। जी हां, चारो तरफ दीवार बिछावन जमीन सभी पर खून के छींटे पड़े हुए थे और खून से तर कपड़ों को देखने से पता लगता था कि किसी ने खिड़की की राह घुस बाबाजी की लड़की नन्हों को मार डाला है और वही शायद बाबाजी को और उनका सब सामान भी उठा ले गया है क्योंकि उस राह से मठ के भीतर जाकर कोना कोना तलाश कर आने पर भी न तो हमें बाबाजी ही दिखाई पड़े और न वह चीज ही दिखी जो उन्होंने हमे देने को कही थी, लाचार वापस लौटे जा रहे थे।

भैया०। यह बड़े ताज्जुब की बात तुम सुनाते हो, भला बाबाजी का कौन ऐसा दुश्मन आवेगा जो इस तरह खूनखराबा मचा जाय!

गोपाल०। अब आप खुद ही देख कर निर्णय करें, हम लोगों की समझ में कोई मामला आ नहीं रहा है! मुझे तो ऐसा मालूम होता है चाचाजी कि मेरी किस्मत मे तिलिस्म तोड़ना बदा नही है, कारण तीन तीन दफे.....

भैया०। नही नही, तुम ऐसे निराश न हो, जब महात्माजी ने वह बात कही है तो बिना वैसा हुए तो रहेगा नही पर देर जो कुछ भी हो। यद्यपि इसमे शक नही कि किसी बाहरी आदमी को इस बात की खबर लग गई है और वह हमारे रास्ते में कांटे डाल रहा है पर इसके यह माने नही होते कि तिलिस्म बनाने वालों का सोचा और किया धरा नष्ट करके ऐरा गैरा कोई अपने मन वाली कर जाय। तिलिस्म जिसके नाम पर बंधा है वही उसे तोड सकता है कोई दूसरा नही, हां यह जरूर है कि जब कार्य के प्रारम्भ ही मे इतने विघ्न आ रहे हैं तो समझना पड़ेगा कि अभी ठीक मौका नही आया है।

आपस मे इसी तरह की बातें करते हुए सब कोई बाबाजी के मठ के पास पहुचे जहाँ गोपालसिंह ने नन्हों वाली कोठड़ी भैयाराजा को दिखाई। पाठको को याद होगा कि इस जगह की यह गत स्वयम् भूतनाथ और नन्हो ने ही की थी मगर वे ऐसे कच्चे खिलाड़ी न थे कि कोई दूसरा सहज मे वह भेद पाता या समझ सकता कि इस जगह कोई भयंकर दुर्घटना नही हुई है बल्कि किसी तरह की चालाकी की गई है अस्तु बेचारे भैयाराजा भी ठीक ठाक कुछ समझ न सके कि यहां क्या हो गया। हमारे तीनों दोस्तों की तरह उन्हें भी मठ भर की अच्छी तरह तलाशी लेने के बाद यही तय करना पड़ा कि जरूर दुश्मनों ने छापा मार कर बाबाजी को मय सब सामान के गायब कर दिया है और उनकी लड़की को तो शायद जान से ही

मार डाला। अन्त में सुस्त और उदास मठ के बाहर निकल कर वे बोले, "तुम लोगों का खयाल ठीक जान पड़ता है और जरूर पुजारीजो किसी मुसीबत में पड़ गये है, पर अब यहां रुकना व्यर्थ है अस्तु तुम लोग चलो डेरे पर मैं भी बहुत जल्द आता हूं।"

गोपालसिंह ने कहा, "तो क्या आप हमारे साथ न चलेंगे ?" जिस पर वे बोले, "नही, मैं एक जरूरी काम निपटा कर दोपहर तक आऊंगा। महाराज अगर पूछें तो बचा जाना क्योंकि मेरी राय मे इन बातों का जिक्र अभी उनसे करना मुनासिब नही।"

भैयाराजा ने कुछ और भी बातें गोपालसिंह वगैरह को समझाईं और तब उन्हे विदा किया। जब तक ये लोग आंखों की ओट न हो गये उसी जगह खड़े रहे मगर उनके जाते ही घूमे और फिर उसी इमारत के अन्दर चले गये।

भैयाराजा सीधे उस कोठरी मे पहुंचे जिसमे बाबाजी रहते थे। यहां इस समय भी एक चौकी पर बाबाजी का आसन लगा हुआ और इधर उधर उनका कुछ सामान भी पड़ा हुआ था जो बहुत कुछ अस्त व्यस्त हो रहा था लेकिन भैयाराजा उधर कोई ध्यान न दे सीधे उस आलमारी की तरफ बढ़े जो पूरब तरफ की दीवार में नजर आ रही थी। वह आलमारी बहुत बडी और इस लायक थी कि इसके अन्दर दो तीन आदमी अच्छी तरह खड़े हो सकते थे। भैयाराजा इसके अन्दर चले गये और पल्ला बन्द कर लिया।

यहां पहुंच कर भैयाराजा ने न जाने क्या तरकीब की कि उस आलमारी की बगली दीवार में एक छोटी सुरंग का मुहाना दिखाई देने लगा। भैयाराजा इस सुरंग में उतर गये और उनके जाने के साथ ही न केवल सुरंग का मुहाना ही बन्द हो गया बल्कि उस आलमारी के पल्ले भी आप से आप खुल गये, पर खैर इधर का खयाल छोड़ हम उनके साथ चलते और देखते है कि वे अब किधर जाते या क्या करते हैं।

पतली पतली दस बारह डंडा सीढ़ियां उतरने के बाद भैयाराजा ने अपने को एक छोटी सी कोठड़ी मे पाया जो यद्यपि चारो तरफ से बन्द और अंधेरी थी फिर भी यहां की हवा ऐसी खराब न थी कि सांस लेने मे कोई तकलीफ होती। कोठडी की पूरब तरफ दीवार के साथ कोई मूरत बैठाई हुई थी अंधेरे के कारण जिसकी सूरत शक्ल के बारे में कुछ भी कहना हमारे लिए कठिन है, मगर भैयाराजा सीधे इसी मूरत के पास पहुंचे और उसके साथ कुछ करने लगे। अंधेरे के कारण कुछ पता न लगा मगर कुछ ही देर बाद खटके की आवाज आई और मूरत के पीछे वाली दीवार में एक रास्ता पैदा हो गया जिसके अन्दर वे घुस गये।

यह एक लम्बी और पतली सुरंग थी जो कुछ कुछ ढालवी होती हुई सीधी

सामने की तरफ चली गई थी। इस सुरंग मे थोड़ी थोड़ी दूर पर सूराख बने हुए थे जिनकी राह साफ हवा और कही कही रोशनी भी आ रही थी। भैयाराजा तेजी के साथ इसी सुरंग मे जाने लगे।

लगभग एक घड़ी के चले जाने के बाद यह सुरंग भी खतम हुई और अब एक दूसरी कोठरी नजर आई जो पहली कोठरी से कुछ छोटी ही होगी। इसमें किसी तरह का सामान न था मगर चारो तरफ की दीवारों में कई खूटियां लगी हुई जरूर दिखाई पड़ रही थी। भैयाराजा इनमें से एक खूंटी के पास गये और उसे किसी क्रम से उमेठने के बाद बगल हट के खड़े हो गये। जरा देर के बाद ही कुछ आवाज हुई और एक दर्वाजा उसी खूंटी के नीचे दिखाई पड़ने लगा जिसके अन्दर सीढियां नजर आ रही थी। भैयाराजा ने इन सीढियों पर पैर रक्खा ही था कि इस कोठरी का दर्वाजा आपसे आप ही बन्द हो गया मगर उन्होंने कुछ ख्याल न किया और ऊपर चढ़ने लगे।

न जाने वे सीढ़ियां किसी बुर्ज पर जाती थी या किसी पहाड़ी की चोटी पर पहुंचती थी कि उनका सिलसिला खतम ही होने को न आता था, मगर जगह जगह पर रुकते और सुस्ताते हुए भैयाराजा भी बराबर चढ़ते ही चले गये यहां तक कि सीढ़ियां समाप्त हो गईं और एक छोटी सी कोठरी मिली। पहिले ही की तर-कीब से रास्ता पैदा करके इस कोठरी के बाहर हुए और अब उन्होंने अपने को एक अजीब जगह में पाया।

एक बड़ा समथर मैदान था जो पत्थर के बड़े बड़े चौखूटे टुकड़ों से पाटे होने के कारण किसी मकान के आंगन की याद दिलाता था, खास कर इसलिए कि उसके चारो तरफ बहुत बड़े बड़े दालान और ऊंची ऊंची इमारतें नजर आ रही थी जिनमें से एक में इस समय भैयाराजा खड़े थे, मगर ये सभी टूटी फूटी हालत में ही थी और इनमें से शायद ही कुछ इमारतें अच्छी हालत में या रहने लायक होंगी। कही कहीं पर निगाहें गिरी हुई दीवारों के दूसरी तरफ जाकर यह भी बताती थी कि यह स्थान किसी पहाड़ी की चोटी पर है क्योकि आस पास और भी पहाड़ी चोटियां नजर आ रही थीं।

मगर इन दालानो या इमारतो की हालत चाहे जितनी भी खराब क्यों न हो गई हो, उस बीच वाले मन्दिर पर जमाने ने अपना सगदिल हाथ नहीं फेरा था जो उस बड़े आंगन के बीचोबीच में बना हुआ था और जिसका शिखर जरूर नीचे स दिखता होगा। किसी तरह के खाकी रंग के पत्थर से बने हुए इस मन्दिर की हालत बिल्कुल दुरुस्त थी और इसके आस पास की सफाई देखने से ख्याल होता

था कि इसकी जरूर कुछ देख रेख भी की जाती है। भैयाराजा दालान से उतरे और इसी मन्दिर की तरफ बढ़े।

इस मन्दिर की दीवारों में बहुत अच्छा पच्चीकारी का काम बना हुआ था और ऊपरी हिस्सों में तरह तरह की मूर्तिया बनी हुई थी जिनके बनाने में कारीगरों ने जरूर बरसों लगाये होंगे और बनवाने वाले ने दौलत खर्च की होगी, पर भैयाराजा की निगाह इधर न थी, वे सीधे मन्दिर के सभामंडप पर चढ़ गये और तब भिड़के हुए दर्वाजे को खोल भीतर घुसे।

मन्दिर का भीतरा हिस्सा भी कुछ विचित्र और अनूठा था। अन्य मन्दिरों की तरह इसमें किसी देवी या देवता की मूरत बैठी न थी और न कोई शिवलिंग या प्रतिमा ही नजर आती थी, पर इसके बदले एक बहुत ही भयानक आकृति की मूर्ति बैठाई हुई थी जो ऐसी डरावनी थी कि अचानक देख कर डर लग सकता था, लाल पत्थर की उस विकराल मूरत का भयानक चेहरा, लाल आखें तथा शेरोंके से दात और पंजे देखकर दूर ही से खौफ मालूम होता था, फिर भी भैयाराजा बेखटके उसके पास चले गये। यह हमारा शक था या वास्तव में उस विकराल दैत्य ने इनको देख अपनी लम्बी जुबान हिला कर अपने होठोंको इस तरह चाटा मानों कोई खूंखार जानवर अपनी खूराक सामने देख अपने होंठ चाट रहा हो। मगर भैयाराजा ने किसी बात का कुछ ख्याल न किया और गौर से उस मूरत को देखने लगे।

इस मूर्ति की जो शायद महाकाल की कल्पना करके बनाई गई थो जान पड़ता है कि अकसर पूजा भी हुआ करती थी क्योंकि इसके गले में फूलों की मालायें पडी हुई और बदन में लाल चन्दन पुता हुआ था, पुष्प और बेलपत्र तथा धूपदीप नैवेद्य आदि के पात्र तथा पूजा के अन्य सामान भी इधर उधर पडा था, पर अवश्य ही इस समय न तो उस भूरत की पूजा करने वाला ही चाहे वह जो कोई भी हो, यहां दिखाई पड़ता था और न यही समझ में आता था कि कौन किस नियत से इस भयंकर दैत्य प्रतिमा का पूजन ही करता होगा। खैर वह सब जो कुछ भी हो, भैयाराजा के काम में मालूम होता है कि इस पूजा अर्चना से विघ्न पड़ता था क्योंकि कुछ देर देखने के बाद उन्होंने उसी जगह पडी बेलपत्र की एक टहनी उठा ली और उसकी मदद से मूर्ति के गले में पड़ी हुई मालाएं हटाने के बाद गौर से और भी पास होकर कुछ देखने लगे फिर भी इतने पास नही गए कि उनका कोई अंग प्रत्यंग या कपड़ा मूरत से छू जाय। बेल की टहनी से हटाने का भी शायद कोई तात्पर्य रहा हो, पर इस बारे मे हम कुछ कह नही सकते।

मूरत के गले में पत्थर ही की नक्काशी के काम से बनी हुई एक माला दिख-लाई दी जिसके फूल कुछ विचित्र ढंग के थे। इस समय भैयाराजा इसी माला को गौर से देख रहे थे और उन्होने देखा कि इन फूलों में से बाकी के फूल तो मुंदे हुए यानी कलियों के आकार के हैं मगर तीन फूल खिले हुए हैं। कुछ देर तक इस बात को लक्ष्य करते रहने के बाद यह कहते हुए भैयाराजा वहां से हटे—"तीन आदमी तिलिस्म में घुसे हैं, वे चाहे जो कोई भी हों मगर हो न हो उन्हीं की वह कार्रवाई है जो मैं नीचे देखता आया हूं।"

मूर्ति के पास से हट कर थोड़ी देर तक भैयाराजा कुछेक अनिश्चित से भाव के साथ खड़े सोचते रहे इसके बाद बोले, "बहुत सम्भव तो यही है कि इन लोगों ने तिलिस्मी रास्ता बन्द कर रक्खा होगा, फिर भी एक बार कोशिश करके तो देख ही लेना चाहिए।" वे मन्दिर के बाहर हो पुनः सभामण्डप मे पहुंचे और एक खम्भे के पास जा खड़े हुए। इस खम्भे पर भी खुदाई का काम बना हुआ था जिसमे कई छोटी बड़ी पुतलियां भी जगह जगह दिखाई गई थीं। भैयाराजा ने इनमे से एक पुतली पर हाथ रक्खा और उसे किसी खास ढंग से दबाया। मूरत एक तरफ को हट गई, मगर नतीजा कुछ भी न हुआ। भैयाराजा ने अपने पैर के पास वाले पत्थर को दो एक दफे लात से ठोकरें भी मारी मगर कुछ न हुआ, लाचार यह कहते हुए वहां से हटे, "कम्बख्तों ने रास्ता बन्द कर रक्खा है।"

मन्दिर के पीछे वाली दीवार के पास जाकर भैयाराजा खड़े हो गए। यहां एक छोटा सा षट्कोण यन्त्र पच्चीकारी के काम का बना हुआ था जिसके बीच में उंगली रख कर उन्होने दबाया। पत्थर का एक छोटा टुकड़ा भीतर को धंस गया, मगर नतीजा फिर भी कुछ न निकला। "बेशक वही बात है" कहते हुए भैया-राजा एक लम्बी सांस के साथ यहां से भी हटे और कितनी ही तरह की बातें सोचते हुए बाहर की तरफ लौटे।

जिस राह से यहां तक आए थे उसी राह से लौटते हुए भैयाराजा सीढ़ियों पर से होते पहाड़ी के नीचे उतरे और तब उस सुरंग मे होकर जाने लगे जिसने उन्हें रोहतासमठ से इस पहाड़ी की जड़ तक पहुंचाया था। यहां तक तो वे बेधड़क आ पहुंचे पर जब उस कोठरी मे पहुंचे जहां से सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर बाबाजी के रहने के स्थान मे पहुंचते तो उन्हें रुक जाना पड़ा कारण इस जगह उन्हें किसी तरह की आवाज सुनाई पड़ी जो दीवार के दूसरी तरफ से आ रही थी। ऊपर मठ में पहुंचाने वाला रास्ता खोलने के लिए उन्होंने दीवार पर हाथ रक्खा ही था कि

वह दर्वाजा आप से आप खुल गया और अंधेरे में किसी के वहां पहुंचने की आहट लगी। भैयाराजा ने चाहा कि आगे बढ़ कर उस व्यक्ति को पकड़ लें मगर शायद वह भी किसी तरह की आहट पाकर होशियार हो चुका था क्योंकि एक बगल हट कर उसने अपने को बचा लिया और साथ ही उसके हाथ में किसी तरह की तेज रोशनी दिखाई पड़ी जिसने उस जगह में एकदम चांदना कर दिया।

एक नकाबपोश भैयाराजा के सामने खड़ा था जिसकी सूरत देखना उनके लिए कठिन था। मगर उस नकाबपोश पर भैयाराजा की शकल का अजीब असर हुआ। उन्हें देखते ही उसके मुंह से एक हलकी सी चीख निकल गई जिसे उसने तुरत ही रोका और तब पलट कर पिछले पांव भागा। यद्यपि भैयाराजा ने भी पीछा किया मगर वह इनकी बनिस्बत बहुत फुर्तीला था इसलिए हाथ न आ सका। भैयाराजा ने इसके लिये कुछ विशेष तरद्दुद भी नहीं किया मगर उसकी चीख की आवाज पर गौर करके इतना जरूर कहा, "यह आवाज तो मुझे कुछ कुछ पहिचानी हुई सी लगती है! कहीं यह...!" कुछ देर ये यहीं खड़े न जाने क्या सोचते रहे, तब आगे बढ़े और मामूली रास्ते से ऊपर पहुंच मठ के बाहर निकले। उनका घोड़ा उसी जगह खड़ा था जहां वे उसे बांध गये थे, उस पर सवार हुए और अपने लश्कर की तरफ चले।

दूसरा बयान

एक बहुत बड़ा कमरा जो संगमर्मर का बना हुआ है पूरब तरफ की कई खुली खिड़कियों की राह आने वाली रोशनी में चमक रहा है।

इस कमरे के बीचोबीच एक जड़ाऊ सिंहासन रक्खा हुआ है जो इतना बड़ा है कि उस पर तीन चार आदमी आराम से बैठ सकते हैं। इस सिंहासन पर हम इस समय भूतनाथ को कुछ घबराहट और परेशानी की हालत में बैठा देख रहे हैं जो अपने बगल में पड़ी बेहोश नन्हों को होश में लाने की कोशिश कर रहा है मगर वह बेहोशी न जाने किस तरह की है कि दूर ही नहीं हो रही है।

आखिर बहुत कोशिश के बाद किसी तरह नन्हों की बदहवासी दूर हुई और उसने आंखें खोल कर एक अंगड़ाई ली, इसके बाद डरी हुई निगाहों से अपने चारों तरफ देखा। सामने ही भूतनाथ को देख वह चमक कर उठी मगर कमजोरी के कारण फिर गिरने लगी। भूतनाथ ने उसे सहारा देकर बैठाया और तब कहा, "क्यों, खा न गई धोखा! मैं मना करता था कि यह तिलिस्म है, यहां अपने मन की कार्रवाई मत करो, पर तुमने न माना, नतीजा देखा?"

चारों तरफ देखती हुई नन्हों बोली, "मैं क्या जानती थी कि जरा सा एक

सन्दूक को हाथ लगाने से इतनी नौवत आ जायगी।" कुछ रुक कर फिर उसने कहा, "मगर अफसोस इतनी दौलत यहां मौजूद रहे और हम लोग किसी चीज को उंगली भी न लगा पाएं।"

अब हमने भी देखा कि इस बड़े कमरे मे चारा तरफ लोहे के बड़े बड़े कितने ही सन्दूक पड़े हुए हैं जिनमें से कुछ के ढकने खुले हुए और कुछ के बन्द हैं। इन सन्दूकों में क्या भरा है यह तो हम यहां से देख नहीं सकते मगर नन्हों की बात सुन भूतनाथ ने जरूर यह कहा, "यह दौलत उसके लिए है जो तिलिस्म तोड़ यहां का मालिक बनेगा। हम लोगों को इसके छूने का कोई हक नहीं है।" नन्हों यह सुन मुंह बना कर बोली, "बस तुम्हारे मन में तो वही एक बात बैठ गई है, जब देखो यही कहते रहते हो, अगर ऐसा ही है, तो तुम्ही तिलिस्म तोड़ डालो।" भूतनाथ ने लम्बी सास खीच कर कहा, "ऐसी किस्मत हर एक की नही होती और न तिलिस्म को ऐरा गैरा जो कोई भी चाहे तोड़ ही सकता है। वह तो जिसके नाम पर बांधा गया हो उसी के हाथों टूट सकता है और यहाँ का दौलत का भी वही मालिक हो सकता है।" नन्हों गरदन घुमा कर बोली, "यह सब फजूल की बातें हैं। इस वक्त मेरे पास तिलिस्मी चाभी नही नही है, तो मैं दिखला देती कि इन संदूकों की दौलत कैसे नही मेरे पास आती है!!"

एक लम्बी सांस लेकर भूतनाथ बोला, "यह तिलिस्मी चाभी भी न जाने क्या बला है कि जिसका हर जगह जिक्र आया और काम दिखाया गया है। क्या तुम उसके बारे में कुछ जानती हो?" नन्हों ने जवाब में कुछ न कह केवल गरदन हिलाई, मगर उसकी आंखों में जिस तरह की चमक आ गई उसे देख कर जरूर यह गुमान होता था कि वह इस बारे में कुछ न कुछ अवश्य जानती है। हम नही कह सकते कि भूतनाथ ने भी इस बात को लक्ष्य किया या नहीं, पर कुछ देर चुप रह कर वह बोला, "खैर अब क्या इरादा है बोलो, आज हम लोगों को आठ दिन यहाँ आए हो गए, अब चलना चाहिये। जो कुछ देखने लायक था वह तो देख ही चुके, अब रुकना बेकार है।"

नन्हों ने जवाब दिया, "बस एक वही 'रत्न-मण्डप' देखने की इच्छा थी मगर वहां का तो दर्वाजा ही नही खुलता।" भूतनाथ बोला, "और 'आनन्द-बाग' भी नही देख सके, मगर इन दोनो जगहों मे जाने के लिए तिलिस्मी चाभी की दरकार पड़ती है। खैर जितना देखा उतने ही को बहुत समझो और जो कुछ थोड़ा बहुत

अपनी कमर में बंधी एक छोटी पोटली पर उंगली रख और दूसरे हाथ से कमरे में पड़े सन्दूकों को दिखा कर नन्हों बोली, "इतनी दौलत के आगे यह जरा सी रकम समुद्र में एक बूंद भी तो नहीं है !" जवाब में भूतनाथ ने एक ठंढी सांस ली और तब कुछ देर के लिए दोनों चुप हो रहे।

आखिर इस सन्नाटे को भूतनाथ ने यह कह कर तोड़ा, "तो बोलो फिर, अब क्या इरादा है? लौटना है या अभी और कुछ घूमने फिरने का विचार है?" कुछ देर बाद नन्हों बोली, "चलो तब, जब आगे और कहीं जा ही नहीं सकते तो यहाँ रुकना बेकार है।"

मगर इतना कहते कहते नन्हो की आंखें डबडबा आईं और दो बड़ी बड़ी बूंदें उसके गुलाबी गालों पर लुढ़क पड़ी जिन्हे देख भूतनाथ का भी दिल भर आया। उसने अपने दुपट्टे से उसकी आंखें पोंछी और कहा, "तुम इतनी उदास मत हो नन्हों, आखिर मैंने यह वादा तो किया ही है कि चाहे जैसे भी हो उस किताब का पता लगाऊंगा जिसे तुम्हारे पिता गोपालसिंह को देना चाहते थे पर जो बीच ही में आश्चर्यजनक रीति से गायब हो गई। उसको ले जाने वाला चाहे जमीन के अन्दर धंस गया हो या आसमान में उड़ गया हो मैं उसका पता लगाऊंगा ही और जिस तरह भी होगा उस किताब को कब्जे में करूंगा ही। तुम निराश न हो और मुझ पर भरोसा करके कुछ दिन सब्र करो। यह किताब मेरे कब्जे में आने दो फिर तुम्हे कोई शिकायत न रह जायगी।"

नन्हों के आंसू न जाने कहाँ गायब हो गए। उसने भूतनाथ के गले में हाथ डाल दिया और कहा, "क्या तुम कसम खाते हो कि वह किताब खोज निकालोगे और उसको लाकर मेरे हाथ में दोगे?" भूतनाथ जनेऊ हाथ में लेकर बोला, "मैं कसम खाकर प्रतिज्ञा करता हूं कि जैसे भी बनेगा वह किताब कब्जे में करूंगा और तुमको पुनः यहा लाकर इस तिलिस्म की पूरी पूरी सैर कराऊंगा।" नन्हो बोली, "यही नही तुम यह भी कसम खाओ कि उस तिलिस्मी चाभी का भी पता लगाओगे।" भूतनाथ बोला, "मैं उसको पाने की भी कोशिश करूंगा यह प्रतिज्ञा करता हूं।" नन्हों खुशी खुशी भूतनाथ के बदन से चिपक गई और तब बोली, "देखो अपनी प्रतिज्ञा भूल मत जाना।" भूतनाथ ने जवाब दिया, "मैं क्षत्रिय हूं, क्या क्षत्रिय लोग भी प्रतिज्ञा भूलते हैं!"

नन्हो कुछ देर तक और भी न जाने कितनी तरह के वादे और प्रतिज्ञाएं भूतनाथ से कराती रही और जब सब तरह उसने इसकी दिलजमई कर दी तब बोली,

"अच्छा तो फिर चलो, अब यहां रुकना बेकार है मगर इतना बता दो कि बाहर चल कर मुझको कहां रक्खोगे ? उस मठ में तो जाने का नाम मत लेना अब मुझसे।" भूतनाथ बोला, "नही नही, वहां जाने की तुमको कोई जरूरत नहीं, तुम्हारे लिए उससे बहुत अच्छी जगह सोच चुका हूं, वहां तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न होगी।" भूतनाथ ने झुक कर नन्हों के कान में कुछ कहा जिसे सुन उसने प्यारे से एक चपत उसके गाल पर जमा दी।

दोनों में कुछ देर तक और भी बातें होती रहीं इसके बाद भूतनाथ बोला, "अच्छा अब सम्हल कर बैठ जाओ, मैं चलता हू।" नन्हों जम कर बैठ गई भूतनाथ ने अपने झोले से एक किताब निकाली और कुछ देर तक उसे पढ़ता रहा, तब उसे फिर झोले के हवाले कर वह भी सम्हल कर बैठ गया और सिंहासन की बगली पर झुक उसने न जाने क्या तरकीब की कि तुरत ही वह सिंहासन एक दफे हिला और तब जमीन के अन्दर धंस गया।

जिस समय वह सिंहासन रुका इन दोनों ने अपने को एक विचित्र ही जगह में पाया। लाल पत्थर का बना हुआ एक गोल कमरा था जिसकी दीवारों में कहीं भी कोई खिड़की या दरवाजे की तो बात ही क्या एक मोखा तक दिखाई न पड़ता था। कमरे के बीचोबीच काले पत्थर का चबूतरा बना हुआ था और उसके ऊपर एक पुतली खड़ी थी जिसने अपने दोनों हाथों में दो तलवारें पकड़ी हुई थी। भूतनाथ और नन्हों सिंहासन से उतर कर इसी चबूतरे की तरफ बढ़े और इनके उतरते ही वह सिंहासन फिर ऊपर की तरफ उठ गया जहां से उतर कर वह इस कमरे की सतह से आ लगा था। भूतनाथ ने सहारा देकर नन्हों को भी उस चबूतरे पर चढ़ा लिया और तब उस पुतली के पास जा उसने उसके हाथ की दोनों तलवारों की नोकों को जोर करके एक में मिला दिया। इसके साथ ही चबूतरे के कोने पर एक छोटा सा रास्ता दिखाई पड़ने लगा जिसके अन्दर सीढ़ियां नजर आ रही थी। नन्हों और भूतनाथ इन्हो सीढ़ियों की राह नीचे उतरे और एक लम्बी पतली सुरंग में पहुंचे जिसके अन्दर एकदम अंधेरा था।

टटोलता और नन्हो को सहारा देता हुआ भूतनाथ इस सुरंग में काफी देर तक चलता रहा और इस बीच में गरमी और अंधेरे के सबब से इन दोनों को बहुत तकलीफ हुई, पर किसी तरह उस सुरंग का खातमा हुआ और भूतनाथ का हाथ सामने की चिकनी दीवार पर पड़ा जिसमें किसी तरकीब से उसने रास्ता पैदा किया। सामने एक हरा भरा बाग नजर आया जिधर से आती हुई रोशनी और

ठंढी हवा ने इन दोनों के हवास ठिकाने किये और ये दोनों सुरंग के बाहर निकल एक साफ पत्थर पर बैठ गए जो उसी जगह पड़ा था। इनके बाहर निकलते ही उस सुरंग का दर्वाजा बेमालूम तौर पर बन्द हो गया।

आसमान की तरफ देख के भूतनाथ बोला, "अब बहुत दिन चढ़ आया है बेहतर यही होगा कि हम लोग उस नहर मे जो इस बाग मे से जाती है नहा धोकर निश्चिन्त हो लें और कुछ फल इत्यादि खाकर पेट की भूख भी मिटा लें क्योंकि आगे का रास्ता बीहड़ और लम्बा है।" नन्हों ने कहा, "यही मेरी भी राय है।" अस्तु दोनों आदमी उठ कर उस बाग मे चले गये जो काफी लम्बा चौड़ा था और जिस में फलों के पेड़ भी बहुतायत से थे, इस बाग मे एक नहर भी थी जिसमे नहाने धोने का सुभीता था और जो यहां के पेड़ों को तरी पहुंचाती थी। भूतनाथ तो इस नहर की तरफ बढ़ गया और नन्हों पेड़ की झुरमुट की तरफ चली।

स्नान संध्या आदि से निवृत्त हो भूतनाथ कपड़े पहिन रहा था कि यकायक चौंक पड़ा। उसके कानो मे नन्हों के चीखने की आवाज पड़ी थी जो उससे कुछ ही दूर पर एक बड़े ढोंके की आड़ में बैठी अपने बाल सुखा रही थी। उसने जोर से पुकार कर पूछा, "क्या है नन्हों, तुम चिल्लाई क्यों?" और तब घूम कर उधर ही को बढ़ने लगा मगर यकायक रुक गया क्योकि उसकी आंखों ने भी उस डरावनी चीज को देख लिया जिसने नन्हों को डरा दिया था। उसके ठीक सामने ही और ढोंके के दूसरी बगल एक डरावनी मूरत खड़ी थी। लम्बा चौड़ा हड्डियो का एक ढांचा जिसके बदन मे मांस या चमडे का नाम निशान भी न था अपना भयानक जबड़ा खोले हुए इस तरह खड़ा था मानों साक्षात् मृत्यु सामने खड़ी हो। भूतनाथ डर और घबड़ाहट के साथ इस आसेब को देख ही रहा था कि नन्हो बदहवास दौड़ती हुई आकर उसके बदन से चिमट गई और कांपती हुई बोली, "बचाओ बचाओ, इस भूत से मुझे बचाओ!"

यद्यपि भूतनाथ का कलेजा खुद भी इस भयानक नर-पिशाच को देख के कांप उठा था फिर भी उसने हिम्मत न छोड़ी और नन्हों को अपनी आड़ में करते हुए दिलेरी के साथ कहा, "तुम घबड़ाओ नही, यह चाहे कोई भी हो पर मेरे रहते तुम्हारा कोई नुकसान नहीं कर सकता। मगर यह तो बताओ क्या यही तो वह शय नही है जिसका तुमने मुझसे जिक्र किया था और जो उस रोज नजर आई थी जब तुम्हारे पिता के पास से उनकी वह तिलिस्मी किताब गायब हुई थी?"

डर के मारे नन्हों के मुंह से आवाज नही निकल रही थी फिर भी उसने कांपते

हुए कहा, "हां यही है, और जरूर यही वह किताब भी ले गया है, मगर बचाओ बचाओ, देखो वह इधर ही आ रहा है !"

सचमुच वह भयानक आसेब अब घूम कर उधर ही को आ रहा था जिधर ये दोनों खड़े थे। भूतनाथ ने यह देख नन्हों को तो एक ढोंके की आड़ में कर दिया और खुद अपना खंजर हाथ में ले दो कदम उस तरफ को बढ़ा। यद्यपि डर ने उसका भी कलेजा हिला दिया था मगर उसकी हिम्मत और दिलेरी ने इस वक्त भी उसका साथ न छोड़ा और वह बड़ी बहादुरी के साथ इस नर-पिशाच से एक टक्कर लेने को तैयार हो गया।

भूतनाथ का ऐयारी का बटुआ इस समय उसकी कमर में बंधा हुआ था। आगे को बढ़ते हुए उसने टटोल कर उसके अन्दर से कोई चीज निकाल ली जिसे अपने हाथ मे ले वह कुछ और हिम्मत के साथ आगे बढ़ा। उधर वह आसेब भी, जो कोई भी वह हो, इस बीच मे उसके पास आ पहुंचा था और अब उससे सिर्फ दस कदम के फासले पर खड़ा हो खौफनाक हंसी हंस रहा था। भूतनाथ को दाहिने हाथ मे खञ्जर और बाए हाथ में कोई गोल चीज लिए पैंतरे के साथ अपने सामने आकर खडे होते देख उस आसेब के मुंह से एक डरावनी हंसी निकली और तब वह खौफनाक आवाज में बोला, "डरो मत भूतनाथ, मै तुमसे लड़ने नहीं आया हूं बल्कि दो बातें करना चाहता हूं !"

भूतनाथ ने बड़े गौर से उस आसेब की तरफ देखा और तब अपने धड़कते हुए कलेजे को शान्त करने की कोशिश करते हुए कहा, "डरता तो मैं साक्षात् यमराज से भी नहीं, मगर तुम कहो क्या कहना चाहते हो, हां पहिले यह तो बता दो कि तुम हो कौन ?"

वह आसेब हंस कर बोला, "सिवाय इसके और क्या कहूं कि मैं तिलिस्मी भूत हूं और इस तिलिस्म की हिफाजत करने के लिए मुकर्रर किया गया हूं।"

भूत०। (ताज्जुब से) इस तिलिस्म की हिफाजत करने के लिए ! किसने तुम्हें मुकर्रर किया है ?

आसेब०। तिलिस्म बनाने वालो ने और किसने ?

भूत०। (और भी ताज्जुब से) तो क्या तुम तब से अब तक इस जगह मौजूद हो !

आसेब०। (खिलखिला कर) सो तुम देख ही सकते हो !

भूत०। (कुछ और बात ख्याल आ जाने से) क्या तुम तिलिस्म के अन्दर सब जगह आ जा सकते हो ?

आसेब०। सिर्फ आ जा ही नहीं सकता बल्कि कोई जबर्दस्ती अगर आ घुसे तो उसे निकाल बाहर भी कर सकता हूं। इस समय मैं तुमसे यही पूछने आया हूं कि तुम किसके हुक्म से इस तिलिस्म में आये ?

भूत०। (उसकी बात सुनी अनसुनी करके) और तुम किसी का कोई काम भी कर सकते हो ?

आसेब०। जो मुझे खुश करे उसका कौन सा काम है जो मैं नहीं कर सकता ?

भूत०। मेरा कोई काम कर सकोगे ?

आसेब०। तुम मुझे खुश कर सकोगे ?

भूत०। (छाती पर हाथ रख के) जो तुम कहोगे सो मैं करूंगा।

आसेब०। ठीक कहते हो ?

भूत०। पक्की जुबान देता हूं।

आसेब०। तो मैं भी जरूर तुम्हारा काम कर सकता हूं। बताओ क्या काम तुम कराया चाहते हो ?

भूत०। सो मैं किसी मौके से बताऊंगा, इस वक्त सिर्फ इतना बता दो कि तुम्हारा अड्डा कहां है और कहां पहुंचने से तुमसे मुलाकात हो सकती है, मैं खुद वहीं मिल कर तुमसे बातें करूंगा।

आसेब०। यहां आते वक्त रास्ते में तुम्हें महाकाल का एक मन्दिर मिला था?

भूत०। हां मिला तो था।

आसेब०। बस वही मन्दिर मेरा अड्डा है, मैं उसी मूरत में रहता हूं। वहां आने पर तुम मुझसे मुलाकात कर सकते हो।

भूत०। क्या तुम हमेशा उसी मूरत म रहा करते हो ?

आसेब०। अकसर मुझे तिलिस्म की देख रेख और हिफाजत के लिए इधर उधर घूमते रहना पड़ता है, मगर प्रत्येक अमावस के दिन आधी रात को वहां का पुजारी मेरी खास तौर पर पूजा करता है, इसलिए उस मौके पर मुझे वहां रहना ही पड़ता है।

भूत०। तो अगर मैं अमावस की रात को वहां पहुंचूं तो तुमसे बात हो सकती है ?

आसेब०। हां जरूर ! (हंस कर) मगर यह तो कहो, मेरे पुजारी को तो तुमने मार डाला, अब मेरी पूजा कौन करेगा ?

भूत०। (छाती ठोंक कर) मैं करूंगा ! प्रत्येक अमावस को उस मन्दिर में पहुंच कर मैं तुम्हारी पूजा करने को तैयार हूं बशर्ते कि तुम मेरा काम कर दो।

आसेव० । मैंने कह न दिया कि जो मुझे खुश कर सके उसका सब काम करने को मैं हमेशा तैयार रहता हूं।

भूत० । और मैंने भी तो कहा न कि मैं तुम्हें अच्छी तरह से खुश करने को तैयार हूं ! तो फिर पक्की रही, अमावस को तैयार रहना मैं आऊंगा, अच्छा अब बताओ तुम मुझसे क्या पूछना चाहते थे ?

उस आसेब के मुंह से एक डरावनी हंसी निकली और दूसरे ही क्षण वह गायब हो गया। भूतनाथ आंखें मल मल कर देखने लगा मगर न तो उसकी बात का जवाब मिला और न फिर वहां कुछ नजर ही आया । न जाने वह भूत आसमान में चला गया या जमीन में समा गया।

तरह तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ नन्हों के पास पहुंचा जो एक चट्टान की आड़ में खड़ी डर के साथ मगर गौर से इन दोनों को बातें सुन रही थी । इसके पहुंचते ही वह बोली, "तुम किस तरह उससे बातें कर रहे थे, मेरा तो खड़े खड़े भी उसकी डरावनी बोली सुन कर कलेजा कांपता था !" भूतनाथ हंसा तब बोला, "मगर भूतनाथ का कलेजा तो औरतों का कलेजा नहीं है।" नन्हों ने फिर पूछा, "तो क्या तुम सचमुच इससे कोई काम लेना चाहते हो ?" उसने जवाब दिया, "और नहीं तो क्या ?" नन्हों ने पूछा, "क्या काम ?" उसने कहा, "तुम्ही ने न कहा था कि तुम्हारे पिता वाली तिलिस्मी किताब जरूर यही शैतान ले गया है। अगर यह बात सही है तो जैसे बनेगा इसे खुश करके मैं वह किताब इससे लूंगा और तब तिलिस्मी खजाना निकालूंगा।" नन्हों ने इसका कोई जवाब न दिया मगर इस बात को सुन उसकी आंखें जिस तरह पर चमक उठीं और जिस प्रकार वह उससे चिमट गई वही भूतनाथ की बात का काफी जवाब था।

थोड़ी देर तक भूतनाथ न जाने क्या सोचता रहा इसके बाद बोला, "अच्छा अब तैयार हो जाओ, चलना चाहिए । आगे का सफर लम्बा और खतरनाक है, देर करना मुनासिब नहीं।" नन्हों बोली, "मैं सब तरह से तैयार हूं" जिसे सुन भूतनाथ ने उसका हाथ पकड़ा और बाग की पूरबी चारदीवारी की तरफ बढ़ा। इस जगह दीवार के बीचोबीच में एक छोटा मगर बन्द दर्वाजा दिखाई पड़ रहा था जिसे किसी तर्कीब से भूतनाथ ने खोला और दोनों आदमी अन्दर घुस गये।

बाद का सफर भूतनाथ और नन्हों का किस तरह हुआ इसे यहां पर बताने की हम कोई जरूरत नहीं देखते, किसी दूसरे मौके पर पाठकों को मालूम हो जायगा, हां इतना कह सकते हैं कि जिस समय भूतनाथ उस जगह पहुंचा जहां वह महाकाल

का मन्दिर था या जहां पर पाठक भैयाराजा के साथ एक बार पहिले भी आ चुके है तो संध्या होने को आ गई थी और नन्हों तथा भूतनाथ दोनों ही के चेहरे से थकावट और परेशानी जाहिर हो रही थी। भूतनाथने चाहा कि इस जगह बैठ कर कुछ सुस्ता ले मगर उसी समय नन्हों को उस भयानक आसेब की याद आ गई और वह डर कर बोली, "नही नही, इसी मन्दिर में वह कम्बख्त तिलिस्मी भूत रहता है, मैं यहां न बैठूंगी। चलो एक दम यहांसे बाहर ही निकल कर दम लूंगी।'

यद्यपि भूतनाथ भी कीतरी इच्छा यही थी कि एक बार उस मन्दिर में जाएं और उस भूत की टोह लें मगर नन्हों की मर्जी न देख वह लाचार उधर से हट आया और वहां से बाहर निकलने को तरकीब करने लगा। जिस रास्ते से भैया-राजा यहां पहुँचे थे वह इसने नही पकड़ा या शायद इसे वह मालूम ही न हो, और एक दूसरे ही रास्ते से बाहर निकलने की कोशिश करने लगा। इस मन्दिर के चारो तरफ जो टूटी फूटी बहुत सी इमारतें दिखाई पड़ रही थी उनमें से एक की तरफ वह बढ़ा और नन्हों भी उसके साथ साथ रवाना हुई।

एक छोटी कोठड़ी में भूतनाथ पहुंचा जो उस मन्दिर के ठीक सामने पड़ती थी और जिसमे चौखट तो थी पर पल्ला लगा हुआ न था। इस जगह कोठड़ी के बीचोबीच में पत्थर का एक बड़ा सा नन्दी बना हुआ था जिसके सींगो के साथ एक सांप लटका हुआ था। इस नन्दी के सिवाय इस कोठड़ी में और कोई चीज न थी और इसके चारो तरफ की दीवारें एक दम साफ और चिकनी थी। भूत-नाथ नन्दी के पास गया और उस साप के फन को जोर से पकड़ कर अपनी तरफ खीचने लगा। नन्दी ने मुंह खोल दिया जिसके अन्दर हाथ डाल भूतनाथ ने कोई पेंच घुमाया। कुछ खटके सी आवाज हुई और सामने वाली दीवार में एक छोटा दर्वाजा नजर आने लगा। भूतनाथ और नन्हों ने इस दर्वाजे में पैर रक्खा और उनके भीतर जाते ही यह दर्वाजा आप से आप बेमालूम तौर पर बन्द हो गया।

एक लम्बी सुरंग थी जिसमें कुछ दूर जाने के बाद छोटी छोटी सीढ़ियों का घूमघुमौवा सिलसिला मिलता था जो एक दम नीचे की तरफ चली गई थी। भूत-नाथ और नन्हों इस रास्ते से आ चुके थे इसलिए दर्वाजा बन्द होने के कारण अंधकार फैल जाने पर भी इन लोगो ने रोशनी न की और बेधड़क उन्ही सीढ़ियों की राह नीचे उतरने लगे।

वे सीढ़िया इतनी नीचे चली गई थी कि बहुत देर के बाद किसी तरह उनका सिलसिला खतम हुआ, साथ ही उनके घुमावदार होने के कारण नन्हो के सिर में

चक्कर भी आने लगा, मगर फिर भी इन दोनों ने रुकना मुनासिब न समझा। सीढ़ियों का सिलसिला खतम होते ही भूतनाथ ने अपने बटुए में से रोशनी का सामान निकाला और उसकी मदद से हमने देखा कि इस जगह सामने ही एक बड़ा सा लोहे का दरवाजा बना हुआ है जिसमें सैकड़ों कांटियों जड़ी हुई हैं। इन कांटियों में से बहुतों पर तरह तरह के अक्षर और अंक खुदे हुए थे जिनको भूतनाथ गौर के साथ उसी रोशनी की मदद से देखने लगा। उसने कुछ कांटियों को किसी खास क्रम से दबाया और तुरत ही वह दर्वाजा एक हलकी आवाज देता हुआ खुल गया। भूतनाथ ने हाथ की रोशनी बुझा कर बटुए में रक्खी और नन्हों को साथ आने को कह दर्वाजे के दूसरी तरफ पैर बढ़ाया।

भूतनाथ चौखट लांघ कर दो कदम आगे बढ़ गया था और नन्हों दर्वाजा पार ही कर रही थी कि यकायक चमक गई। उसके बदन के साथ कोई ठंडी चीज—बर्फ की तरह—लगी थी, और ऐसा मालूम हुआ था कि मानों कोई उसकी बगल से होता दर्वाजे के दूसरी तरफ यानी बाहर से भीतर की तरफ चला गया हो। उसके मुंह से यकायक निकल गया, "कौन है!" कोई जवाब तो न मिला मगर उसकी आवाज सुन भूतनाथ ठमक गया और बोला, "क्या है नन्हों, मैं ही तो हूं!" नन्हों बोली, "तुमको नहीं कहती, अभी अभी न जाने कौन मेरी बगल से होता हुआ ऊपर सीढ़ियां चढ़ गया है।" भूतनाथ बोला, "वाह, तुम्हें धोखा हुआ होगा, यहां भला कौन हो सकता है?" नन्हों बोली, "नहो, मुझे शक नहीं हुआ, ठीक बात है और उसके पास कोई हथियार भी है।"

नन्हों की बात सुन ताज्जुब करता हुआ भूतनाथ रुक गया और अपने बटुए मे तलाश कर पुनः रोशनी का सामान निकालने लगा, मगर इसी समय दर्वाजा बन्द होने की आहट लगी। रोशनी की मदद से दोनों ने देखा कि अभी अभी जिस रास्ते से ये दोनों निकले थे वह मजबूती से बन्द हो गया है। नन्हों बोली, "देखो देखो, उसने दर्वाजा भी बन्द कर लिया।" भूतनाथ सिर हिला कर बोला, "नहीं नहीं, तुमने किताब में पढ़ा नहीं कि यह दर्वाजा आप से आप बन्द हो जाता है! जरूर तुम्हारे मन में कोई शक बैठ गया है। मुमकिन है दीवार से तुम्हारा हाथ लग गया हो, यह देखो कितनी चिकनी और सर्द है।"

सचमुच ही इस सुरंग की दीवार जिसमें ये दोनों इस वक्त थे, बहुत ही चिकनी और ठंढी थी बल्कि किसी किसी जगह पर तो पानी की बूंदें तक दिखाई पड़ रही थी। हो न हो यह स्थान जमीन की सतह से बहुत नीचा था। भूतनाथ की बातें

से यद्यपि नन्हों की पूरी दिलजमई तो न हुई फिर भी उसने ज्यादा कुछ कहा नहीं और इतना बोली, "मुझे विश्वास तो नहीं होता कि धोखा हुआ हो, पर खैर चलो आगे बढ़ो।" आगे आगे भूतनाथ और पीछे पीछे नन्हो तेजी के साथ रवाना हुए। नन्हों के दिल में डर समा चुका था और वह कोशिश करके बराबर भूतनाथ के साथ ही चल रही थी जो खुद भी न जाने किस फिक्र मे डूबा हुआ सिर झुकाए तेजी के साथ चला जा रहा था, मगर नन्हो का डर दूर करने के ख्याल से उसने अपने हाथ वाली रोशनी बुझाई न थी।

फिर रास्ते मे किसी तरह का तरद्दुद न हुआ और ये लोग तेजी से चल कर इस सुरंग को तय कर गए जो एक दम सीधी चली गई थी मगर फिर भी इतनी लम्बी थी कि इन लोगों को उसे पार करने में घण्टे भर से ऊपर लग गया। सुरंग के दूसरे सिरे पर एक बन्द दर्वाजा मिला जो सिर्फ धक्का देने से खुल गया और तब एक गोल कमरा नजर आया जिसके एक तरफ ऊपर चढ़ने के लिए छोटी छोटी घुमावदार सीढ़ियां नजर आ रही थी। यह कमरा तरह तरह के सामान से भरा हुआ था जिनमें से कुछ गौर और ताज्जुब पैदा करने वाला था मगर मालूम होता है कि भूतनाथ इन चीजों को पहिले भी अच्छी तरह देख चुका था क्योंकि वह यहां जरा भी न रुका और सीधा उन सीढ़ियों की तरफ बढ़ा जो गिनती में दस बारह से ज्यादा न होगी। इस कमरे की छत बहुत ऊंची थी और सीढ़ियां उससे कुछ पहिले ही एक ऐसी जगह पहुंच कर रुक जाती थी जहां एक छोटा सा स्थान छज्जे की तरह पर बना हुआ था। यहां पहुंच भूतनाथ रुका और साथ ही अपनी बगल वाली दीवार में कुछ देख चौंक कर बोला, "हैं, यह क्या बात है!" नन्हों ने भी सिर उठा कर ऊपर की तरफ देखा और तुरत ही बोल उठी, "अरे यह रास्ता खुला हुआ क्यों है?" भूतनाथ बोला, "इसी पर तो मुझे ताज्जुब हो रहा है क्योंकि मैं इसे किताब में बताई तरकीब से अच्छी तरह बन्द करके गया था।" नन्हो चट बोल उठी, "तब फिर मेरा शक ठीक था और वह जरूर कोई आदमी ही था जो उस जगह गढ़ो की सीढ़ियां उतरती समय मुझे मिला था। मालूम होता है वह इस रास्ते को बन्द करने की तरकीब नहीं जानता था और इससे इसे खुला ही छोड़ गया।" भूतनाथ ने सब तरफ गौर से देखने के बाद कहा, "मगर इस रास्ते का खोलना जानता था?" नन्हो बोली, "सम्भव है कि इतना उसे किसी तरह से मालूम हो गया हो, मगर था वह इन मामलों में कोई अनजान ही, क्योंकि उस जगह भी वह उस दर्वाजे को खोल न सकने के कारण इसी पार दबका हुआ बैठा था,

जब तुमने दर्वाजा खोला तो मौका पाकर दूसरी तरफ निकल गया !" "खैर जो कुछ हो" कहते हुए भूतनाथ ने आगे कदम रक्खा और नन्हों भी उसके साथ हुई।

एक छोटी कोठरी थी जिसके अन्दर इन दोनो ने अपने को पाया। भूतनाथ ने हाथ की रोशनी की मदद से अपने दाहिने और बाएं दोनों तरफ देखा। इस जगह के घने अंधकार को भेद कर रोशनी बहुत दूर जा न सकती थी जिससे वह बहुत अच्छी तरह तो न देख सका फिर भी अन्दाज से पता लगता था कि इस वक्त यहां कोई नही है। नन्हों ने भी यह देख संतोष की सांस ली और तब भूतनाथ ने घूम कर कोई तर्कीब ऐसीकी जिससे वह रास्ता जिसके जरिए दोनों अभी अभी यहां पहुंचे थे बन्द हो गया। भूतनाथ बाईं तरफ घूमा। दो तीन डंडा सीढ़िया दिखाई पड़ीं जिनके ऊपर एक पतली सुरंग नजर आ रही थी और इन्हें देखते ही भूतनाथ पुनः चमक कर नन्हों से बोला, "देखती हो ? यह रास्ता भी खुला है ? जरूर कोई इधर से गया है, अब इसमें कोई शक नही रहा।" नन्हों कुछ बोली नहीं और न फिर भूतनाथ ने ही कुछ कहा। दोनों सीढ़ियां चढ़ उस रास्ते से बाहर हुए। अब जिस जगह इन दोनों ने अपने को पाया उसे तो हमारे पाठक भी अगर देखें तो बखूबी पहिचान लेंगे क्योंकि यह वही समाधि के नीचे वाली कोठरी है जिसमे वे एक बार पहिले भी श्यामजी के साथ आ चुके हैं* और जिस राह से ये लोग इस कोठरी मे निकले वह वही सिंहासन के बगल वाली थी जिसका हाल उस जगह लिखा जा चुका है। भूतनाथ ने सिंहासन का एक पावा पकड़ कर जोर से ऐंठा जिसके साथ ही वह रास्ता इस बेमालूम तौर पर बन्द हो गया कि अब कोई गौर से देख कर भी शक नही कर सकता था कि इस जगह किसी गुप्त सुरंग का मुहाना है। भूतनाथ नन्हो की तरफ देख कर बोला, "अच्छा अब कहो तुम्हारा क्या इरादा है और कहां चलना पसन्द करती हो ? अपने मठ में जाना तो शायद तुम्हें मंजूर न होगा ?" नन्हों जोर से सिर हिला कर बोली, "कभी नही !" भूतनाथ ने कहा, "मगर वहां एक दफे हम लोगों को चलना जरूर पड़ेगा।" नन्हों ने पूछा, "क्यों ?" उसने जवाब दिया, "जरा देखना चाहिए तुम्हारे पिता की क्या हालत है, कूएं में पड़े हैं या बाहर निकले या क्या हुए ?" नन्हों बोली, "ओह तुम्हारी भी क्या अक्ल है ! क्या आठ रोज तक वे वहीं पड़े होंगे ? निकल कर हमलोगों की आगवानी का बन्दोबस्त न कर रहे होंगे !"

भूतनाथ ने बहुत कहा पर नन्हों किसी तरह भी राजी न हुई। लाचार उसका मन रखने के लिए भूतनाथ बोला, "खैर मैं उस तरफ न जाऊंगा, मगर तुम फिर

* देखिए रोहतासमठ पहिला भाग, आठवां बयान।

क्या करोगी ? क्या अब अपने पिता के पास कभी जाओगी ही नही ?" नन्हों मुंह बना कर बोली, "मैं उनकी सूरत नही देखना चाहती।" उसने कहा, "तो फिर कहां चलने का इरादा है तुम्हारा ?" नन्हों ने झुक कर भूतनाथ के कान मे कुछ कहा जिसे सुन वह जोर से हंस पड़ा और झुक कर धीरे से उसने भी कोई बात नन्हों से कह दी जिसे सुन उसने भवें टेढ़ी कर उसकी तरफ देखा।

दोनों में कुछ देर धीरे धीरे बातें होती रही इसके बाद भूतनाथ उस कोठरी से बाहर होने के लिए मुडा और नन्हों भी उसके साथ हुई।

तीसरा बयान

रोहतासमठ के पास वाले उसी कूएं पर जिस पर पाठक एक बार पहिले भी हमारे साथ आ चुके हैं आज हम भूतनाथ को किसी चिन्ता में निमग्न सिर झुकाए अकेले बैठे देखते हैं।

सूरज काफी ऊंचे उठ आए हैं, जंगल तरह तरह की आवाजों से गूंज रहा है और दूर दूर पर इक्के दुक्के मुसाफिर भी आते जाते दिखाई पड़ रहे हैं मगर इस कूएं की तरफ आने वाला कोई नजर नहीं पड़ता।

हम नहीं कह सकते कि भूतनाथ कब का इस जगह बैठा हुआ है या किस तरह की बातें उसके मन मे घूम रही हैं, हां यह जरूर कह सकते है कि वह किसी गहरे सोच में डूबा हुआ है क्योंकि इस बात को उसके माथे पर पडी हुई चिन्ता की रेखाएं स्पष्ट प्रकट कर रही हैं।

आखिर बहुत देर क बाद एक लम्बी सांस लेकर उसने आप ही आप कहा, "इसमे तो कोई शक नही कि वह आई जरूर मगर किस इरादे से या किस उम्मीद पर अथवा किसकी मदद से यह कहना मुश्किल है। ताज्जुब नही कि इसमे..."

इसी समय किसी तरह की आहट पाकर उसने गरदन घुमाई और साथ ही एक नकाबपोश सवार को अपनी तरफ आते देख कुछ आग्रह और उत्कंठा के साथ उठ खड़ा हुआ। सवार भी आकर घोड़े से उतर पड़ा और उसकी लगाम एक डाल से अटकाने बाद तेजी से भूतनाथ की तरफ चला जो खुद भी उसकी तरफ बढ़ रहा था। पास पहुंचते ही भूतनाथ ने उसे गले लगा लिया और कहा, "आपने तो हद से ज्यादा देर कर दी दारोगा साहब, मैं तो समझ चुका था कि अब आप न आवेंगे और इसी लिए लौट जाने की सोच रहा था।"

अपनी नकाब पीछे उलट कर उस आदमी ने कहा, "बेशक मुझे बहुत देर हो

गई। चलते चलते महाराज साहब का एक नया फरमान पहुंच गया जिससे मज॰ बूरन रुकना पड़ा, मगर ताज्जुब है भूतनाथ कि तुमने नकाब पड़े रहने पर भी मुझे पहिचान लिया और सो भी खास कर इस पोशाक में।"

भूतनाथ हंस कर बोला, "आप कपड़े भले ही बहुरुपियों के से पहिन लें और चेहरा भी ढाक लें, मगर अपनी चाल को कैसे बदल सकते हैं!" जिसके जवाब में दारोगा साहब ने (क्योंकि वे वास्तव मे दारोगा साहब ही थे) कहा, "बेशक तुम्हारी चालाकी और होशियारी तारीफ के लायक है, और यही सबब है कि तुम जिस काम को हाथ मे लेते हो उसको जरूर पूरा करते हो, (एक लंबी सांस खींच कर) मगर देखा चाहिए मेरा काम कहां तक कर पाते हो।"

भूतनाथ बोला, "अपने सरसक आपकी खिदमत करने को मैं तैयार हूं, काम होना न होना ईश्वर के हाथ में है।" जिस पर दारोगा ने कहा, "अच्छा तो आओ और इस तरफ बैठ कर गौर से मेरी बात सुनो।"

दोनों आदमी जगत के एक कोने पर बैठ गए और दारोगा ने धीरे धीरे कुछ कहना शुरू किया जिसे भूतनाथ ध्यान लगा कर सुनने लगा।

दारोगा साहब की बातें बहुत देर तक चलती रही मगर बीच में भूतनाथ ने एक दफे भी न तो रोका न टोका, हां जब वे सब कुछ कहके चुप हो गए तो वह बोला, "दारोगा साहब, आपने जो कुछ कहा उसे आप शायद नई या अनूठी बात समझते हों मगर मुझे बहुत दिन पहिले से इन बातो की खबर है और इस॰ लिए आपके मुंह से इसको सुन मुझे कोई भी ताज्जुब नही हुआ, हां इतना....."

दारोगा०। (चौंक कर) शायद नन्हो......!

भूत०। नहीं नही, नन्हों ने इस बारे में मुझसे कभी कुछ नही कहा और न इधर कितने ही दिनो से मेरी उसकी मुलाकात ही हुई है। मुझे आपकी और चंचल सेठ की इस लाग डाट का हाल दूसरे ही जरिये से मालूम हुआ जिसे बताने की जरूरत नही और किसी दूसरे ही जरिये से मैं यह भी जान गया हूं कि महारानी साहिबा की इस तरीके की खफगी का सबब क्या है।

दारोगा०। मुमकिन है कि मेरे ही किसी आदमी....

भूत०। (हस कर) नहीं आपके किसी आदमी ने भी इसका जिक्र कभी मुझसे नहीं किया, पर आप इस बात की फिक्र छोड़ कर कि कैसे मुझे यह बात मालूम हुई यह बतावें कि अगर मैं आपके खातिरखाह सब काम ठीक कर दूं और कामेश्वर तथा इसकी स्त्री को ठिकाने लगा दूं....

दारोगा० । चुप चुप, नाम मत लो किसी का, कौन जाने....

भूत० । ऊंह, यहा कौन हमारी बात सुनने वाला बैठा है लेकिन खैर अगर आपको इतना डर ही लगता है तो लीजिए मैं किसी का नाम अब न लूंगा और सिर्फ इतना आपसे पूछूंगा कि अगर मैं आपका काम पूरी तरह से अंजाम कर दूं तो मुझे क्या इनाम मिलेगा ?

दारोगा० । एक लाख रुपया ।

भूत० । (जोर से हंस कर) दारोगा साहब, आपने भूतनाथ को निरा बुद्धू ही समझ लिया है क्या ? मुझे मालूम नही है कि इन लोगों की, जिन्हे मौत के घाट सुला देने की बात आप कह रहे हैं, जमानियाके दर्बारमे क्या इज्जत है और महाराज या कुंअर साहब इनको किन निगाहोंसे देखते हैं ? क्या मझे अपनी जान भारी पड़ी है जो मैं इस थोड़ी सी रकम के लिए इतनी बड़ी जोखिम का काम सिर पर उठा लूंगा

दारोगा० । थोड़ी सी रकम ! एक लाख रुपया आप छोटी रकम समझते है ?

भूत० । तो क्या यह बहुत है ? ऐसी ऐसी दो चार रकमे तो भूतनाथ के बटुए मे हरदम पड़ी रहा करती है, आपको विश्वास न हो तो यह देखिये ।

भूतनाथ ने अपना ऐयारी का बटुआ खोला और उसमे से एक कागज निकाल कर दारोगा के सामने रख दिया । यह सवा लाख रुपये की एक हुण्डी थी जो जमानिया के किसी सेठ पर की गई थी । दारोगा इसे देख ही रहा था कि भूतनाथ ने एक छोटी सी डिबिया निकाली और उसे खोल दारोगा की आखों के सामने किया । दारोगा की निगाह ही चौंधिया उठी—कबूतर के अण्डे से छोटा मगर वैसा ही सुफेद एक मोती रूई की पहली मे दबा उसके अन्दर रक्खा हुआ था जिसकी कीमत का अन्दाजा लगाना मुश्किल था । दारोगा की आवाज बंद हो गई ।

भूतनाथ ने मुस्कुराते हुए दोनों चीजें उठा कर फिर ठिकाने रक्खी और तब कहा, "देखा आपने ? अगर आप भूतनाथ की अक्ल और भूतनाथ की चालाकी का फायदा उठाना चाहते हैं तो आपको भूतनाथ ही के योग्य कोई रकम भी देने के लिए तैयार हो जाना चाहिये, नहीं तो मेरी आपको दूर से बन्दगी है । दुनिया में बहुत ऐयार पड़े है जो आपका काम करने को खुशी से तैयार हो जायंगे ।"

दारोगा० । (जिसका चेहरा कुछ उतर गया था) तब फिर आप ही बताइये कि आप क्या...

भूत० । हां सो मैं बताने को तैयार हू । एक चीज पर मेरी निगाह बहुत दिनों से है । उसे अगर आप मुझे दिला देने का वादा करें तो मै खुशी से आपकी

मदद ही न करूंगा बल्कि वादा करता हू कि आपके काम को इस खूबसूरती से अंजाम दूंगा कि आप भी खुश हो जाइएगा।

दारोगा०। वह कौन सी चीज है ?

भूत०। आपकी महारानी साहिबा के पास वह चीज है और उन्हें शादी के वक्त अपने नैहरसे दहेजमें मिली थी, शायद आपको उसका हाल मुझसे भी ज्यादा मालूम होगा, मगर खैर वह चीज अगर आप मझे दिला दें तो मैं आपका काम कर सकता हूं।

दारोगा०। आखिर वह क्या चीज है ?

भूत०। (दारोगा की तरफ झुक कर) सोने का उल्लू !

दारोगा०। सोने का उल्लू !!

भूत०। जी हां।

दारोगा साहब एक बार चिहुंक उठे और इसके बाद न जाने किस सोच मे पड़ कर उन्होंने अपना सिर नीचा कर लिया। भूतनाथ गौर से उनका मुंह देखता रहा। थोड़ी देर बाद दारोगा साहब बोले—

दारोगा०। भूतनाथ, तुमने एक ऐसी चीज का नाम लिया है जिसको याद से कलेजा कांप उठता है। मै नही जानता कि तुम उसके बारे में कुछ असलियत भी जानते हो या सिर्फ इधर उधर से उडती फिरती किसी बात को लेकर उसका जिक्र इस तरह पर कर रहे हो मानो वह कोई मामूली चीज हो और सहज ही मे हासिल की जा सकती हो।

भूत०। (मुस्कुरा कर) मुझे उस चीज की असलियत पूरी तरह से मालूम है और मैं यह भी जानता हूं कि वह क्या शय है या किस काम में आती या लाई जा सकती है। इतना ही नही मुझे यह भी मालूम है कि आपके मन मे उस चीज को पाने की इच्छा एक नही कई दफे उठ चुकी है और जब किसी तरह वह आपके हाथ न आ पाई तभी आपने भानुमती का पिटारा....

दारोगा०। (घबरा कर) क्या कहा, क्या कहा ?

भूत०। मुझे अपनी बात तो पूरी कर लेने दीजिए—हां, तो मैं कह रहा था कि जब वह चीज किसी तरह आपके हाथ न आ सकी तब आपने भानुमती का पिटारा कब्जे मे करने की बात सोची और अन्त मे देवीरानी और रोहतासमठ के पुजारी को धोखा दे उस पर काबू कर ही लिया।

भूतनाथ की यह बात सुन दारोगा साहब की ऐसी हालत हो गई कि काटो तो लहू न निकले। उनके मुंह से कोई आवाज तक निकलना मुश्किल हो गया। बड़ी

कठिनता से उन्होंने किसी तरह अपने को सम्हाला और बहुत देर बाद कहा, "सच-मुच भूतनाथ तुम्हारे बारे में जो कुछ मैं सुनता था तुम उससे कही बढ़ कर हो। अवश्य ही तुम्हें बहुत से ऐसे भेद मालूम हैं जिनके प्रकट होने की कभी मैं सोच भी न सकता था, अस्तु अब मै भी तुम्हे बातों में टालने की कोशिश न करूगा, लो सुनो और सुन कर साफ साफ बताओ—(धीरे से) अगर वह सोने का उल्लू मैं तुम्हें दिला दू तो क्या तुम उस काम को कर सकोगे ?

भूत० । (छाती पर हाथ रख कर) बखुशी ! पूरा पूरा !! दिलोजान से !!!

दारोगा० । फिर तो कोई मीन मेख न लगाओगे ?

भूत० । हरगिज नही ।

दारोगा० । अच्छा तो फिर मैं उसी चीज को तुम्हें दिलाने की कोशिश करूगा, मगर उसमें तुम्हें मेरा भी कुछ ख्याल रखना होगा

भूत०। (दारोगा का मतलब समझ कर) मैं आपको पूरा पूरा हिस्सा देने को तैयार हूं और बराबर रहूंगा ।

दारोगा० । (गरदन टेढ़ी करके) उसके जरिए जो कुछ रकम तुम्हें मिले उसमें से चौथाई मेरा होगा ।

भूत० । चौथाई नही आधा ।

दारोगा० । सही कहते हो ?

भूत० । कसम खाता हूं ।

दारोगा० । तो फिर मै भी कसम खाता हूं कि जैसे होगा वह चीज तुम्हे दिला के ही छोड़ूंगा ।

इस बात पर दोनो ने कसमें खाई और तब इसी विषय पर कुछ ऐसे धीरे धीरे इन दोनों में बातें होने लगीं कि हम भी सुन न सके ।

बातो का यह लम्बा सिलसिला दारोगा ने आखिर यह कह कर तोड़ा, "अच्छा तो फिर सब तय हो गया । अब मैं चलता हू,तुम बताओ किस दिन मुझसे मिलोगे ?"

भूत० । अगले सोमवार को मैं आपके घर पर हाजिर हूगा ।

दारोगा० । ठीक, मैं तैयार रहूंगा और हो सका तो उसी दिन तुम्हे महा-रानी साहिबा के सामने पेश करूगा, मगर तुम फिर से सोच लो क्या महारानी से मिलना जरूरी है ?

भूत० । निहायत जरूरी ! जब तक वे खुद न कहेंगी मैं इस मामले में हाथ न डालूंगा । फिर आप यह भी तो सोचिए दारोगा साहब कि उनको बीच में डाले

रखने से आपका बोझ कितना हलका हो जाता है। अगर ईश्वर न करे कहीं भण्डा फूटा, महाराज को खबर हो गई, या राज....

दारोगा०।(कांप कर) तुम ठीक कहते हो,बेशक ऐसा ही करना मुनासिब होगा।

दो एक बातें और हुईं और तब दारोगा साहब उठ खड़े हुए। भूतनाथ भी खड़ा हो गया और खातिरन उनके साथ उनके घोड़े तक आया। घोड़े पर बैठते हुए दारोगा साहब मुस्कुरा कर बोले, "एक बात तुमसे पूछ सकता हूं?"

भूत०। हाँ हाँ पूछिए।

दारोगा०। शिवदत्त से सवा लाख रुपया तुमने किस बात का पाया?

भूत०। (हंस कर) उस हुण्डी की बाद करते है। हो: ही: हो: आपकी निगाहें भी बड़ी तेज हैं दारोगा साहब। मालूम होता है उसकी लिखावट आपने पहिचान ली। खैर बता दूंगा कभी कि किस बात का पाया, अभी कहने का मौका नहीं है। मगर हां, ठीक याद आया, नन्हों का कुछ हाल तो बताते जाइए, वह कैसी है?

दारोगा०। (मुस्कुरा कर)मजे ही मे है। महारानी साहेबा की खास लौंडियों में। मैंने उसे भरती करा दिया है और वह उनकी बहुत विश्वासपात्र भी हो गई है क्योंकि आखिर है तो वह एक ही धूर्त और छटी हुई, मगर तुमसे मिली नहीं शायद इधर

भूत०। नहीं, उसे महल से छुट्टी तो मिल सकती होगी?

दारोगा०। हां हां, क्यों नहीं, क्या भेज दूं?

भूत०। अगर कभी सम्भव हो तो।

दारोगा०। जरूर, बल्कि मैं खुद किसी दिन उसे लिए हुए हाजिर होऊंगा उसी पुराने अड्डे पर तो?

भूत०। जी हां वहीं तो मैं अकसर रहा ही करता हूं। मगर वह बात खयाल है न आपको जो नन्हों को आपके सुपुर्द करती वक्त मैंने कही थी?

दारोगा०। भला उसे कभी भूल सकता हूं, मैं उस पर बहुत कड़ी नजर रखता हूं। महल की लौंडियां यों ही गैरों से मिलने नहीं पाती फिर उसका तो खास तौर पर खयाल रखता हूं। तुम किसी बात का अन्देशा न करो।

भूत०। फिर भी मुझे पता लगा है कि वह कभी कभी महल से गायब हो जाती है और इधर उधर घूमा करती है।

दारोगा०। (सिर हिला कर) कभी नहीं, यह मुमकिन नहीं हो सकता, अगर ऐसा होता तो कम से कम मुझे जरूर इस बात की खबर लगी होती। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि जब से तुम उसको मेरे सुपुर्द करके गये हो तब से उसने महल

के बाहर पैर नहीं निकाला।

भूत०। ताज्जुब की बात है, मैं आपको गलत मान नहीं सकता पर साथ ही अपनी आंखों को झूठा भी नही कह सकता।

दारोगा०। तो क्या इसके खिलाफ कोई सबूत तुम्हे मिला है? क्या तुम्हारा खयाल है कि वह अकसर इधर उधर घूमा फिरा करती है?

भूत०। खयाल नही यह मेरा विश्वास है और मैं जोर देकर कह सकता हूं कि वह जरूर बाहर निकली है। यह मुमकिन है कि आपको इस बात की खबर न हो लेकिन...

दारोगा०। आप कहते हैं तो सही ही होगा लेकिन मुझे विश्वास तो नही होता।

भूत०। तो सबूत लीजिए, (अपने बटुए में से कोई चीज निकाल और दारोगा के सामने करके) इसे आप पहिचानते है?

वह कान में पहिनने का एक गहना था जिसमें खशरंग मानिक जड़ा हुआ था। दारोगा उसे गौर से कुछ देर तक देखता रहा, तब गर्दन हिलाकर बोला, "इस चीज को मैने देखा तो है जरूर कही पर ठीक याद नही आता कि कहां या किस जगह।"

भूत०। मै आपकी याददाश्त की मदद करता हूं। यह नन्हो के कान का है और इसे वह बराबर पहिने रहा करती थी। इसे पहिने हुए ही उसको मैने आपके हवाले किया था।

दारोगा०। ठीक है, मुझे याद आ गया, बेशक यह नन्हो का ही है, मगर इसे तुमने कब और कहां पाया?

भूत०। यहां से कुछ ही दूर पर और आज ही।

दारोगा०। ताज्जुब की बात है।

भूत०। बेशक ताज्जुब की बात है और इसी से पुनः आपसे ताकीद करता हूं कि आप उस पर खूब नजर रखिएगा और उसे किसी तरह महल के बाहर होने की आजादी न दीजिएगा।

दारोगा०। जरूर, और अब तो ऐसा खास तौर पर करना पड़ेगा। मै उस पर खूब गहरी नजर रक्खूंगा बल्कि इस बात का भी पता लगाने की कोशिश करूंगा कि क्या वह आज कल मे कभी बाहर निकली थी? इतना मैं विश्वास दिलाता हूं कि अब तक चाहे जो कुछ भी हुआ या होता रहा हो, अब वह बाहर निकलने न पावेगी और हां, यह भी मुमकिन है कि उसने यह चीज किसी गैर को दे दी हो जिसने इसे गिरा दिया हो मै इसका भी पता लगाने की कोशिश करूंगा।

दोनो ही धूर्त थे। चालाक भूतनाथ ने यह न बताया कि इस चीज को उसने

ऐसी जगह पाया था जहां किसी गैर का पहुँचना बहुत ही मुश्किल था अर्थात् तिलिस्म के अन्दर, और धूर्त दारोगा ने भी यह न प्रकट किया कि वह खुद नन्हों को लेकर किसी मतलब से तिलिस्म के अन्दर घुसा था।

दोनों मे कुछ बातें और हुईं और तब दोनों दो तरफ हो गए। दारोगा साहब ने जमानिया का रास्ता पकड़ा और भूतनाथ ने रोहतासगढ़ की तरफ कदम उठाया।

चौथा बयान

कहने के लिए तो जमानिया की महारानी, मगर वास्तव में दारोगा की धूर्तता बदमाशी और फरेब के कारण कामेश्वर और भुवनमोहिनी पर जो जो आफतें आईं और उनमें भूतनाथ ने जो कुछ हिस्सा लिया इसका खुलासा हाल भूतनाथ की जीवनी मे लिखा जा चुका है अस्तु वह जिक्र इस उपन्यास मे न तो करने की जरूरत ही है और न हम करेंगे ही, हां किस्से का सिलसिला ठीक रखने के लिये थोड़ा बहुत कही कही लिख जाना पड़े तो दूसरी बात है। हमें तो मुख्यतः उन्हीं बातों को लेकर आगे बढ़ना है जिनसे कुंअर गोपालसिंह का सम्बन्ध है और उन्हीं बातों को बयान करना है जिनका जिक्र चन्द्रकान्ता सन्तति अथवा भूतनाथ में आने से रह गया है। अस्तु बीच बीच मे अगर महीनों और बरसों का फासला डालते हुए भी हमें आगे बढ़ना पडे तो आपको ताज्जुब नही करना चाहिए, क्योंकि वास्तव में तो हमारा यह किस्सा उन घटनाओ से सम्बन्ध रखता है जो गोपालसिंह के राजा बन जाने और मुन्दर से उनकी शादी हो जाने बाद घटित हुईं। यह जो हमने पिछला थोड़ा बहुत हाल लिखा है या आगे कही कही लिखेंगे, वह केवल घटनाक्रम को ठीक रखने और किस्से का सिलसिला दुरुस्त करने के लिए ही है। पाठकों को ध्यान रखना चाहिये कि हमारा असल किस्सा अभी शुरू नही हुआ और न वह उस जमाने से सम्बन्ध ही रखता है जब का हाल हम ऊपर लिख आए हैं। मगर अब वह शीघ्र ही आरम्भ हो जायगा, पाठको को सिर्फ थोड़ा धैर्य और रखना होगा, अस्तु—

रात पहर भर से कुछ अधिक जा चुकी है। एक छोटे से कमरे मे जो राजमहल के पिछले निराले और एकांत हिस्से में पड़ता है और जिधर लोगों की आवाजाही बहुत ही कम होती है, हम पाठको को लेकर चलते हैं। इस कमरे में एक तरफ फर्श लगा हुआ है जिसके बाद एक पलंग बिछा है, दूसरी तरफ कुछ सन्दूक बर्तन आदि पडे हुए हैं, और तीसरी तरफ एक पर्दा डाल कर थोड़ी जमीन अलग कर दी गई है। चौथी तरफ चूल्हा पानी आदि का इन्तजाम देख कर विश्वास होता

है कि जो कोई भी इस कमरे मे रहता है उसे अपनी पूरी गृहस्थी इतनी ही जगह मे रह कर सम्हालनी पड़ती है। कमरे का दर्वाजा इस समय भिड़का हुआ है और सिर्फ एक शमादान की रोशनी हो रही है जो एक तरफ की दीवार के साथ छोटी चौकी पर रखा जल रहा है। कमरे के अन्दर कोई भी नहीं है और इसी बात को वह आदमी भी बड़े गौर से देख रहा है जो कमरे के ऊपर की तरफ बने हुए रोशनदान में से झांक कर नीचे का हाल जानने की कोशिश कर रहा है मगर जिसका सूरत शकल का कोई भी अन्दाज उस ऊंचाई पर का अंधकार हमें लगने नही देता।

यकायक कमरे के बाहर की तरफ कुछ आवाज हुई और तब ताला खोले जाने की आहट लगी। किसी ने फुर्ती से दर्वाजा खोला और भीतर आकर बन्द भी कर लिया, साथ ही हाथ बढ़ा कर उस शमादान को भी बुझा दिया जो बगल ही मे जल रहा था, मगर इतना बहुत जल्दी जल्दी करने पर भी उस ऊपर वाले व्यक्ति ने देख ही लिया कि आगन्तुक एक औरत है और वह भी और कोई नही खास नन्हो।

शमादान बुझाने से कमरे में घनघोर अंधकार छा गया मगर आवाज से पता लगा कि नन्हों ने बाग की तरफ वाली खिड़की खोली है और अब उसके बाहर की तरफ झुक कर कुछ कर रही है। जब निगाह जमी और खिड़की की राह आने वाले मद्धिम प्रकाश ने भी कुछ मदद करी तो पता लगा कि नन्हों उस कमन्द को छड़ के साथ बांध रही है जो खिड़की खुलते ही नीचे से किसी ने फेंकी है। यह काम बहुत जल्द खतम हो गया और तब कमन्द पर बढ़ने वाले तनाव ने सूचना दी कि कोई आदमी उसके सहारे ऊपर चढ़ा आ रहा है।

ऊपर रोशनदान से झाकने वाली शकल वहा से हट गई और कुछ ही देर बाद कमरे के बाईं तरफ वाले दर्वाजे का एक पल्ला जरा सा हिलने से पता लगा कि वह अब उस जगह आ खड़ी हुई है। हम नही कह सकते कि वह व्यक्ति कौन है या इस तरह ताक झांक लगाने से उसका क्या मतलब हो सकता है, पर इतना जरूर है कि इस दर्वाजे के दो एक बहुत ही छोटे छोटे छेदों की राह इस तरफ का केवल हाल ही नही देखा जा सकता बल्कि यहा बैठने वालो की बातें भी थोड़ा बहुत सुनी जा सकती हैं। अवश्य ही इसी नीयत से यह व्यक्ति ऊपर से हट कर यहा आ गया है, और यह भी सम्भव है कि इस तरह पर पहले भी इस कमरे में रहने या यहा आने वालो की खोज खबर रक्खी गई हो, खैर—

खिड़की के आगे अंधेरा हुआ और एक व्यक्ति उधर से भीतर आ गया। कमन्द खींच ली गई और आहट ने बताया कि नन्हो आने वाले को लेकर पलंग की तरफ

चली गई है जहां दोनों बैठ गये हैं। दर्वाजे के दूसरी तरफ वाले व्यक्ति को इसका हाल कहां तक मालूम होता है, इसकी फिक्र छोड हम इधर ही का हाल लिखते हैं।

यह आने वाला व्यक्ति दारोगा था जिसने बैठते ही अपने हाथ का कोई सामान नन्हों के सामने रख दिया और कहा, "यह लो तुम्हारी फर्माइश हाजिर है, मगर अब तुमको भी अपने काम में जल्दी करनी चाहिए। अगर शीघ्र ही यह काम नही हो जायगा जिसका तुमने जिम्मा लिया है तो मुझे वेहद तकलीफ उठानी पड़ेगी।"

नन्हों बोली, "मैं केवल आपके आने की राह देख रही थी, सिर्फ इस चीज के लिए ही नही वल्कि इसलिए भी कि मुझे आपसे उस संबंध में दो चार जरूरी बातें पूछनी थी।"

दारोगा०। जो कुछ तुम्हे पूछना हो खुशी से पूछ सकती हो मगर यह ख्याल रक्खो कि मैं यहां ज्यादा देर तक रुक नही सकता। रात का वक्त होने पर भी नीचे वाग में लोगों को आवाजाही बिलकुल वन्द कभी नही होती यह भी तुम अच्छी तरह जानती हो, अस्तु मेरा जल्दी से जल्दी विदा हो जाना ही उचित है।

नन्हो०। आप तो व्यर्थ ही इतनी परेशानी उठाते हैं दारोगा साहव, मैंने तो आपसे कहा कि मैं महल के भीतर ही भीतर आपको ऐसे ढंग से यहां तक ले आ सकती हूं किसी को कानोकान खवर न हो।

दारोगा०। नही नही, तुम जानती नही कि गोपालसिंह को शक हो गया है, केवल मेरे ही ऊपर नही वल्कि तुम्हारे ऊपर भी और इसी से खुले आम जनाने महल में तुमसे मिलने आने का साहस मैं किसी तरह नही कर सकता। खैर इन बातो को जाने दो और मतलव की वात पर आओ।

नन्हो०। मुझ पर शक हो गया है! सो किस लिए और किस बात का? क्या मेरी सूरत वदली रहने पर भी उन्होंने मुझे पहिचान लिया है?

दारोगा०। पहिचान लिया है या नही सो तो ठीक ठीक नही कह सकता पर उन्हें किसी न किसी तरह का शक जरूर हो गया है क्योंकि एक दिन वे अपने दोस्त श्यामलाल से तुम्हारे बारे में कुछ कह रहे थे, मैंने छिप कर सुनना चाहा पर ठीक जान न सका।

नन्हों०। यह श्यामलाल कम्वख्त वड़ा ही चांगला है, मैं तो अगर कभी इसकी सूरत देख पाती हू तो मुझे डर लगने लगता है, ऐसी निगाह से देखता है...

दारो०। क्या कभी तुम्हारा उसका सामना हो चुका है! ऐसा कभी मत करना, उसकी आंख बहुत तेज है और वह तुम्हे जरूर पहिचान लेगा।

नन्हों० । क्या बताऊं, महारानी की आज्ञा से मुझे एक बार बाहर जाना पड़ा और तभी उसका सामना हो गया, नहीं तो आप जानते ही हैं कि मैं जनाने महल के फाटक तक भी कभी नहीं जाती । खैर सो सब जाने दीजिए और यह कहिए कि भूतनाथ से आपकी भेंट हुई ? वह आज कल कहां है और क्या कर रहा है ?

दारोगा० । उस दिन महारानी से मिल के जो वह गया तो फिर मेरी उसकी देखाभाली न हुई, न जाने कहां है या क्या कर रहा है । मैंने उसे लालच तो बहुत तरह की दिला दिया है और महारानी ने भी उसकी मुंहमांगी चीज उसे देने का वादा कर दिया है पर वह अपने काम में कहां तक सफल होगा कुछ कहा नहीं जा सकता । वादे तो जरूर वह तरह तरह के कर गया है ।

नन्हों० । जरूर किसी फिराक में होगा ।

दारोगा० । उम्मीद तो मुझे यही होती है पर मैं सिर्फ उसीके ऊपर सब दारो-मदार छोड़ कर बैठ रहना नहीं चाहता और इसीलिए तुम्हारी मदद मांगता हूं ।

नन्हों० । तो मैं भी दिलोजान से आपकी खिदमत करने को तैयार हूं ।

दारोगा० । यह उम्मीद तो मुझे हुई है और इसी उम्मीद पर तो मैंने तुम्हें वह चीज ला दी है जो बड़ी मुश्किल और परेशानी के बाद हाथ आई थी और जिसे मैं जान रहते कभी किसी को न देता पर तुम्हारी उस दिन की बात मुझे लग गई और मैंने उसे तुम्हारे सामने लाकर हाजिर कर ही दिया । लेकिन अब तुम्हें यही मुनासिब है कि इस चीज को ज्यादा समय तक अपने पास न रख कर जहां तक जल्दी हो मुझे वापस कर दो ।

नन्हों० । आप विश्वास रखिए दारोगा साहब कि मैं बहुत जल्दी ही इसे आपको वापस कर दूंगी और जब तक रखना पड़ेगा अपनी जान से बढ़ कर हिफा-जत से रक्खूंगी । आप उधर से एक दम बेफिक्र रहिए और यह बताइये कि अब मुझे क्या करना चाहिए ।

दारोगा० । हां अब मैं वही बताता हूं, सुनो खूब गौर से ।

दारोगा और नन्हो में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगी जिनका सिलसिला लगभग घड़ी भर के जारी रहा और इसके बाद दारोगा साहब उठ खड़े हुए । खड़े ही खड़े उन्होंने कुछ बातें नन्हों को और भी बताईं और तब उसी कमन्द के जरिए जिस प्रकार आए थे वहां से बाहर हो गए । इस समय रात ज्यादा हो जाने के कारण नीचे के नजरबाग मे सन्नाटा हो चला था मगर फिर भी इधर उधर पहरेदार लोग घूमते फिरते दिखाई पड़ रहे थे जिनकी नजर बचाते हुए ये एक तरफ

को चल दिए। इधर नन्हों उनके जाने के बाद भी देर तक खिड़की पर ही खड़ी रही। यद्यपि रात का पहिला अंधेरा कुछ विशेष देखने की इजाजत नही देता था तो भी जब उसको निश्चय हो गया कि दारोगा साहब बाग के बाहर हो गए तो उसने खिडकी बन्द कर दी और शमादान के पास जा उसको बालने बाद वह चीज लिए हुए जो दारोगा साहब ने उसे दी थी रोशनी के पास बैठ गई। वह और कुछ नही कपडे की एक छोटी गठरी थी जिसके भीतर कुछ बंधा हुआ था।

इस समय अगर कोई नन्हों की सूरत देखता तो जरूर समझ जाता कि वह उस चीज को पाकर बेतरह खुश है जो दारोगा ने उसे दी है। उसकी बाछें खिली जा रही थी और उत्कण्ठा तथा उत्तेजना के मारे उसके हाथ बल्कि समूचा बदन कांप रहा था जब वह उस गठडी को खोल रही थी।

उस गठडी के अन्दर जो बहुत बडी न थी कुछ कपडे निकले जिन्हें सरसरी निगाह से देख नन्हों ने एक तरफ रख दिया। तब एक कागज का मुट्ठा निकला पर इसे भी सिर्फ एक निगाह देख उसने रख दिया। तब तीन चार चिट्ठियां निकलीं जिन्हें उसने कुछ गौर से आदि से अन्त तक पढ डाला, पर सबके अन्त मे जो चीज मिली और जिसे देखते ही खुशी से उसका कलेजा धड़क उठा वह एक छोटा सुनहला डिब्बा था जो रेशमी कपडे मे लपेटा हुआ था। कपड़ा हटा कर ज्यों ही नन्हो ने इसे देखा उसके मुंह से प्रसन्नता की आवाज निकल पड़ी जिसे उसने बड़ी मुश्किल से दबाया और तब बड़े गौर से उलट पुलट कर उस डिब्बे को देखने लगी।

हमारे पाठक भी अगर इस डिब्बे को देखेगे तो जरूर पहिचान जायेंगे क्योंकि वे इसे पहिले देख चुके हैं, वे ही नहो कुंअर गोपालसिंह या कामेश्वर भी अगर इसे देखते तो जरूर पहिचान लेते, क्योंकि यह वही जड़ाऊ डिब्बा था जिसे बाबाजी गोपालसिंह को देना चाहते थे मगर जो उनके सामने से अद्भुत रीति से गायब हो गया था*। अगर इस बारे में कोई शक रहे भी तो उसे वह पन्ने का टुकड़ा दूर कर रहा था जो डिब्बे के ऊपरी हिस्से पर किसी तर्कीब से जड़ा हुआ था और जिसको इस समय नन्हों बडे गौर से देख रही थी। न जाने यह डिब्बा कैसे गायब हो गया और अब तक कहा था अथवा दारोगा साहब के हाथ में क्योंकर आया? इसमें भी शक नहीं कि वे इसके बारे में पूरा पूरा हाल जानते होंगे अस्तु वे इसे नन्हों को क्यो दे गए यह सोचने की बात हो सकती है, पर और हमें इसके बारे में कोई भी खबर नही है और इस विषय में हम अपने पाठकों का कौतूहल दूर करने में बिल्कुल ही असमर्थ हैं।

---

* देखिए रोहतासमठ पहिला भाग, पहिला बयान।

कुछ देर तक नन्हों इस डिब्बे को उलट पुलट कर देखती रही, इसके बाद उसने इसे जमीन पर रख दिया और उसके सामने वाले हिस्से के एक बडे मोती को किसी खास तर्कीब से दबाया जिसके साथ ही उसका ढकना खुल गया और भीतर एक छोटी पुस्तक नजर आई जो भोजपत्र पर लिखी हुई थी और जिसके बारीक बारीक अक्षर बहुत मुश्किल से पढ़े जाते थे। कांपते हाथों से नन्हों ने इस पुस्तक को निकाल कर माथे से लगाया और तब शमादान के पास कर उसे पढ़ना शुरू किया।

एक तो उस किताब के अक्षर बहुत महीन थे, दूसरे उसकी भाषा भी कुछ ऐसी थी कि साफ साफ समझ मे न आती थी, इससे नन्हो को उसके पढ़ने में बहुत तक़लीफ हुई, फिर भी उत धूर्ता ने जगह जगह से उलट पुलट कर बहुत कुछ मतलब निकाल ही लिया और उस पर देर तक गौर भी करती रही। इसके बाद उसने किताब बन्द कर डिब्बे के अन्दर रक्खी और ढकना बन्द कर दिया, तब उस पन्ने की तरफ झुकी जो ढकने के ऊपर जड़ा हुआ था। नन्हों ने देखा कि काट तराश कर वह कुछ कुछ एक चाभी की सी शक्ल का कर दिया गया था। नन्हों ने उस मोती को उलटी तरफ घुमाया जिससे यह विचित्र पन्ने वाली ताली डिब्बे से अलग होकर उसके हाथ मे आ रही। वह कुछ देर तक उलट पुलट कर इसको बडे गौर से देखती रही और तब न जाने क्या सोच उसने एक लम्बी सांस खीची।

थोड़ी देर तक आंखें बन्द किये नन्हों कुछ सोचती रही, तब उसने वह चाभी पुनः उसी ठिकाने लगा दी और वह सुनहला डिब्बा तथा और सब चीजें उसी तरह गठरी में बांधा जिस तरह कि बंधी थी, उस गठरी को किसी हिफाजत की जगह में रख दिया, और तब जाकर पलंग पर पड़ गई। कुछ ही देर बाद उसकी नाक बजने लगी।

* * *

आधी रात के घोर सन्नाटे में हम नन्हों को एक काली चादर से अपना तमाम बदन ढांके इस महल के आंगन में उतरते हुए देखते हैं। इसके हाथ में वही छोटी सी गठरी है जिसे यह बहुत मजबूत पकड़े हुए है। नीचे पहुँच एक मोटे खम्भे की आड़ में वह खड़ी हो गई और आहट लेने लगी।

हम कह आये हैं कि महल का यह भाग एकदम सूनसान और सन्नाटा पड़ता था, साथ ही इस तरफ अंधेरा भी बहुत रहता था पर नन्हों ने खूब अच्छी तरह गौर करके जब समझ लिया कि यहां पर कोई भी मौजूद नही है तो हाथ की गठड़ी कमर से बांध ली और तब अंधेरे का कुछ भी ख्याल किये बिना ही टटोलती हुई

आगे को बढ़ने लगी। न जाने कितने कमरे दालान बारामदे और सीढ़ियां इसने तय की और तब एक मजबूत दर्वाजे के सामने जा खड़ी हुई जो महल के सबसे नीचे की मंजिल और पिछवाड़े वाले हिस्से मे पड़ता था। इस दर्वाजे मे एक बड़ा सा ताला बन्द था जिसे नन्हो ने अपने आंचल मे बधी एक ताली की मदद से खोला और तब दर्वाजा खोल अपने को भीतर कर पुनः बन्द कर लिया।

यह कैसी या किस तरह की जगह थी जहां अब नन्हो पहुँची, इसको जानने को वहां का अंधकार हमे बिलकुल इजाजत नही देता और न नन्हो ने ही अपनी मदद के लिए वहाँ पहुच किसी तरह की रोशनी की इस लिए हम इस बारे मे कुछ भी नहीं कह सकते सिवाय इसके कि टटोलती हुई नन्हो इस जगह के भी पार हुई और जब तक दूसरे दर्वाजे को भी खोल उसके दूसरी तरफ होकर उसे बन्द न कर लिया तब तक उसने सांस न ली। मगर इस जगह पहुंच अब उसने अपनी चादर उतार दी और कमर से सामान निकाल रोशनी की जिससे यहां की हालत नजर आने लगी।

ऐसा मालूम होता था मानो यह किसी तरह का तोशाखाना हो क्योंकि यहाँ चारो तरफ दीवारों के साथ और बीच बीच में भी कितनी ही आलमारियां टाड़ और बकस रक्खे हुए थे। उन आलमारियों और बकसो के भीतर क्या था यह तो जाना नही जा सकता था पर टाड़ो की तरफ देखने से उस तरह की सैकड़ों ही चीजें नजर आती थी जो राजा महाराजाओं के यहां बड़े शौक से खरीदी मगर थोडे ही दिन बाद लापरवाही के साथ अलग कर दी जाती हैं। तरह तरह के छोटे और बड़े बर्तन खिलौने कपड़े शीशे और संगमर्मर हाथी दांत तथा चन्दन और गंगा-जमुनी आदि काम की चीजों का सब तरफ अम्बार लगा हुआ था। इस जगह की हवा ऐसी थी कि जिसके नाक मे जाने से ही पता लगता था कि इस जगह को बरसों मे एक बार भी खोले जाने का मौका नही मिलता है।

पर नन्हो का ध्यान इन चीजो की तरफ न था जिसने रोशनी होते ही एक गहरी निगाह चारो तरफ डाली और तब उस बड़ी आलमारी की तरफ बढ़ी जो दाहिनी तरफ की दीवार मे जड़ी हुई थी और जिसका पल्ला लोहे का था। इसमें ताला बन्द दिखाई नही पड़ता था और न यही पता लगता था कि यह किस तरह से खोली या बन्द की जाती है पर शायद नन्हों को इसका भेद मालूम था क्योंकि इसके पास पहुच और इस पर हाथ रख उसने कुछ तर्कीब ऐसी की कि एक खटके की आवाज के साथ वह मजबूत पल्ला खुल गया।

अब मालूम हुआ कि यह कोई आलमारी नही थी बल्कि एक दर्वाजा था जो

किसी दूसरी जगह जाने का रास्ता था, क्योंकि उसके भीतर काफी जगह और सामने घना अंधकार नजर आता था। नन्हो ने हाथ की रोशनी आगे की और इस आलमारी के अन्दर ही इसके पल्लों को सावधानी के साथ बन्द करने के बाद कदम बढ़ाती हुई दूसरी कोठरी मे पहुंची जो उस पहिली कोठडी की बनिस्बत बडी आर साफ थी मगर जिसमे केवल कुछ मुख्तसर सा ही सामान नजर आ रहा था, फिर भी जो कुछ था वह अवश्य ही विचित्र ढंग का था।

सामने की दीवार के साथ संगमर्मर का एक छोटा मगर बहुत ही खूबसूरत मंदिर सा बना हुआ था जिसमे चांदी की बनी हुई लक्ष्मीजी की एक मूरत बैठाई हुई थी। मन्दिर के दोनों तरफ दो छोटे छोटे ताक बने हुए थे जिसमे से एक पर सोने का छोटा सा कलश रक्खा था और दूसरे पर लक्ष्मीजी का वाहन अर्थात् उल्लू बैठाया हुआ था।

यह सोने का बना हुआ उल्लू बालिश्त भर से कुछ ऊपर ही होगा और इसके बदन मे जगह जगह बेशकीमत जवाहिरात जडे हुए थे जो नन्हों के हाथ वाली रोशनी की चमक पड़ने से जगमगा उठे। नन्हो की ललचौंही निगाह एकदम सीधा इस चीज पर पड़ी मगर साथ हो उसने एक डरी हुई निगाह अपने बाईं तरफ भी घुमाई। अब हमने देखा कि इस जगह से पतली सीढ़िया ऊपर की ओर उठ गई है जिनके सिरे पर एक दर्वाजा नजर आ रहा है। जब नन्हो ने बहुत गौर से देख यह निश्चय कर लिया कि वह ऊपर वाला दर्वाजा बन्द है तभी उसकी जान में जान आई और तब वह कुछ आगे बढ़ी। उसकी निगाह पुनः उसी सोने के उल्लू की तरफ उठी और वह एकदम उसी को देखने लगी, इस तरह मानों उसे तनो-बदन की सुध ही न रह गई हो।

मगर नन्हो ने बहुत जल्द ही अपने को चैतन्य किया। उसने पुनः एक निगाह उस ऊपर वाले दर्वाजे की तरफ डाली और तब आगे बढ़ उस आले के पास पहुंची जिस पर वह सोने का उल्लू बैठाया हुआ था। कुछ देर तक गौर से इसे देखती रही, तब डरते हाथो उसे उठा लिया और इधर उधर उलट पुलट कर देखने लगी। उसके चमकीले बदन पर जड़े बेशकीमत जवाहिरातो ने नन्हों की आंखो में चमक पैदा कर दी और यह देर तक घुमा फिरा कर उसको तरह तरह से देखती रही, तब कुछ सोच उसे हाथ से रख दिया और फुर्ती फुर्ती अपने कमर से खोल वह गठरी निकाली जिसे लिये हुए वह अपनी कोठडी से उतरी थी या जिसे कुछ ही देर पहिले उसने अपनी कमर मे बांध लिया था। हमारे पाठक तो समझ ही

गए होंगे कि यह वही गठड़ी थी जो दारोगा साहब उसे दे गये थे। इसको जमीन पर रख उसने खोला और इसमें बंधे कागजों में से एक को सरसरी निगाह से पढ़ा, तब उसे रख वह जड़ाऊ डिब्बा बाहर किया। इस पर जडी हुई पन्ने वाली तिलिस्मी चामी को उसने पहिले की तर्कीब से अलग किया और तब इस चामी को लिए उस जड़ाऊ उल्लू के पास पहुंची।

इस उल्लू की गर्दन के पास नीचे की तरफ एक बड़ा सा मानिक जड़ा हुआ था जिसे पहिली ही निगाह में नन्हों ने गौर से देख लिया था। अपने हाथ वाली जवाहिरात की तालो की नोक से उसने इस मानिक को दबाया। वह भीतर घुस गया और उस जगह एक छोटा सूराख नजर आने लगा। पन्ने वाली तालो का सिरा नन्हों ने इसी छेद मे डाल दिया और किसी खास ढंग से घुमाने बाद उस उल्लू के दोनों पैरो को दबाया। ताज्जुब की बात थी कि पैरों के दबने के साथ ही उल्लू ने अपने पंख खोल दिये और उसकी पीठ के अन्दर एक छोटा सा गढ़ा बना हुआ नजर आने लगा जिसके अन्दर कोई चमकदार चीज दिखाई पड़ रही थी। नन्हों ने अपना कांपता हुआ हाथ आगे बढ़ाया और उस चीज को निकाल लेना चाहा। इस समय उसका समूचा बदन किसी गुप्त उत्तेजना के कारण कांप रहा था और आंखो के सामने बार बार चकाचौंध आ रही थी क्योंकि वह एक ऐसी चीज अपने सामने देख रही थी जिसकी मुद्दत से उसे खोज थी और जिसको पाने के लिए अपनी जान पर खेल जाना भी वह कुछ नहीं समझती थी।

मगर नन्हों के दिल की दिल ही में रह गई। उल्लू के पेट को तरफ बढ़ने वाला उसका हाथ रुक गया, कलेजा जोर से धडक उठा, बदन डर से कांपने लगा। उसके कानों में ऊपर की तरफ स आने वाली किसी तरह की आवाज गई थी। उसने डरी हुई निगाह उन सीढियों की तरफ फेरी और तुरत समझ लिया कि कोई उस दर्वाजे को खोलने की कोशिश कर रहा है जो सीढ़ियों के सिरे पर बना हुआ था।

कुछ देर तक तो नन्हों की यह हालत रही मानो उसके समूचे शरीर को लकवा मार गया हो। उसका बदन सुस्त हो गया और हाथ पावो ने उसकी आज्ञा मानने से मानो इन्कार कर दिया। मगर वह भी गजब की औरत थी। बड़ी कोशिश कर उसने अपने को काबू में किया और इतनी फुर्ती फुर्ती काम करने लगी कि जिसका नाम। उल्लू की गर्दन में डाली हुई चामी उसने निकाल ली जिसके साथ ही उसने अपने पंख समेट लिए, उसको जिस प्रकार रक्खा हुआ था ठीक उसी तरह उस आले पर रक्खा और तब जमीन पर पड़ी गठरी का सामान समेट हाथ की रोशनी

चुभाता हुई इस फुर्ती और चुप्पी के साथ उस आलमारी वाले दर्वाजे के अन्दर घुस गई जिसमें से आई थी कि उस ऊपर वाले व्यक्ति को, जो कोई भी वह हो, दर्वाजा खोलने तक का मौका न मिला और कोठड़ी मे सन्नाटा हो गया। बाहर पहुंच कर नन्हों ने इस आलमारी के लोहे वाले पल्ले भिड़का दिए मगर इसका ताला बन्द करने का मौका न मिला क्योंकि उसी समय वह सीढी पर वाला दर्वाजा खुल गया और कोई आदमी सीढ़ियों पर आ पहुँचा जिसके हाथ मे रोशनी थी, क्योंकि दर्वाजे की दरार से रोशनी की एक पतली लकीर ने यहां तक पहुंच कर इस जगह भी हलकी रोशनी फैला दी थी।

नन्हों का समूचा बदन कांप गया, क्योंकि वह समझ गई कि यह आने वाला कौन होगा। उसने चाहा कि लोहे वाले पल्लों को पक्का बन्द कर दे मगर अब इसका मौका न था, कारण खटका बन्द करने से कुछ न कुछ आवाज जरूर होती जिससे आने वाला होशियार हो सकता था। तब उसने इस कोठड़ी के बाहर जाने का इरादा किया मगर वह भी ठीक न जंचा क्योंकि अंधेरे मे वहां तक जाने और दर्वाजों को बन्द करने की कोशिश मे कुछ न कुछ आवाज होने का डर था जिसकी जोखिम वह उठा न सकती थी, अस्तु नन्हों से सिवाय इसके और कुछ बन न पड़ा कि उसी जगह उन लोहे वाले पल्लों के पास चूहे की तरह दबकी खड़ी रहे और ईश्वर से प्रार्थना करती रहे कि वह आने वाला उसी जगह से अपना काम करके लौट जाय, इस तरफ आने का इरादा न करे।

दोनों पल्लों के बीच मे पड़ने वाली पतली दरार मे जिसके जरिए रोशनी की आभा इस तरफ तक आ रही थी धड़कते कलेजे के साथ नन्हों ने आंख लगाई और जो कुछ देखा उससे चौंक गई। उधर उसने एक नहीं बल्कि दो व्यक्तियों को खडे देखा जिन दोनों ही को वह अच्छी तरह पहिचानती थी क्योंकि उनमे से एक तो उसकी मालकिन अर्थात् जमानिया की बड़ी महारानी थी और दूसरा था—भूतनाथ !

महारानी के साथ साथ भूतनाथ को ऐसी जगह में देख नन्हों के ताज्जुब का ठिकाना न रहा। यद्यपि डर के मारे उसके हवास दुरुस्त न थे फिर भी उसने अपने उछलते हुए कलेजे को दबाया और दरार में आंख लगा कर देखने लगी। फासला ज्यादा न होने के कारण उन दोनों में होने वाली बातें भी कुछ कुछ सुनाई पड़ रही थी। भूतनाथ कह रहा था—

भूत०। मैंने जो सबूत दिया उससे ही नहीं बल्कि अभी घड़ी ही भर में दूसरे जरिये से भी महारानी को मालूम हो जायगा कि जो कुछ मैं कह रहा हूं वह बिलकुल सही है।

महा० । नही नहीं भूतनाथ, जो चीज तुमने मुझे दिखाई उससे मुझे पक्का यकीन हो गया कि तुमने मेरा काम पूरा लगाया । मुझे और किसी सबूत की जरूरत नही है । अगर मुझे विश्वास न होता तो क्या मै तुम्हे यहा तक लाती या वह चीज देने को तैयार हो जाती जिसे तुम माग रहे हो !

भूत० । महारानी जी को मुझ पर असीम दया है यह मै जानता हूं !

महा०। भूतनाथ, वह देखो तुम्हारी चीज रक्खी है । इसी को तुम मांग रहे थे और इसी को देने का मैंने तुमसे वादा किया था ।मै सच कहती हू कि किसी गैर को देने की बात ही क्या मैं इस चीज को दिखाती तक नही, पर तुमने मेरा वह काम किया है कि मैं किसी तरह इन्कार कर नही सकती, लो यह सोने का उल्लू तुम लो ।

ताक पर से उठा कर वह जड़ाऊ उल्लू महारानी ने भूतनाथ को तरफ बढ़ाया जिसने एक बार अपना सिर उस लक्ष्मीजी की मूर्ति के चरणो पर रक्खा और तब दोनों हाथ महारानी की तरफ बढा दिए । महारानी बोली—

महा० । यद्यपि मुझे नही मालूम कि इसको खोलने की क्या तर्कीब है पर इतना जानती हू कि इसके भीतर वह चीज है जो इस दुनिया मे......हैं, यह क्या ! यह क्या !!

अनजाने में ही भूतनाथ का हाथ उल्लू के पैरों पर चला गया था जिनके दबते ही उसके पंख खुल गए और भीतर की चीज दिखाई पड़ने लगी । भूतनाथ और साथ ही साथ महारानी के भी ताज्जुब का ठिकाना न रहा, जिन्होंने भर्राए गले से कहा, "भूतनाथ, मालूम होता है यह चीज तुम्हारे ही लिए थी ! आज तक बीसों दफे मैंने यह जानने की कोशिश की कि इसके अन्दर क्या है पर किसी तरह इसका रहस्य मुझे मालूम न हो सका पर आज तुम्हारे हाथ से जाते ही वह भेद खुल गया । मालूम होता है इसके पैरो पर किसी खास ढंग का दबाव पड़ने से इसके पंख खुल जाते हैं और भीतर जो कुछ है नजर आने लगता है । सचमुच यह तुम्हारे ही लिए थी, लो तुम अपनी चीज सम्हालो ।"

भूतनाथ ने जिसका कलेजा जोर से धड़क रहा था उस उल्लू को लेकर माथे लगाया और तब कौतूहल के साथ उसके भीतर की चीज को देखने लगा, मगर यहां से कुछ ही दूर पर दर्वाजे के दूसरी तरफ खड़ी नन्हो महारानी की बात सुन गमगीन तौर पर मुस्कुराई । वह खूब जानती थी कि उस उल्लू के पेट के अन्दर छिपा भेद खुला है उस तिलिस्मी चाभी की बदौलत, जिसे उसने उल्लू की गरदन में डाल कर घुमाया था और जिसको मागने की जल्दी मे उल्टा घुमा कर बन्द कर देने का मौका

वह पा न सकी। अगर वह चाभी न होती तो उल्लू के पंख भी न खुलते और न उसके अन्दर की चीज ही सहज मे पाई जा सकती। मगर साथ साथ नन्हों का कलेजा इस बात के खयाल से बैठ भी गया कि जिस चीज को उसने इतनी कोशिशों के बाद पाया था और जिससे बहुत बड़ा काम निकलने की उम्मीद की थी उसे उसके सामने ही भूतनाथ लिए जा रहा है। पर अब अफसोस करना व्यर्थ था, नन्हो ने दोनों हाथों से कलेजे को जोर से दबाया और फिर सुनने लगी। महारानी कह रही थी—

महा०। भूतनाथ, अब ऊपर चलो और वही जो कुछ पूछना हो सो पूछो, इस जगह की बन्द हवा मे मेरी तबीयत कैसी कुछ घबडाने सी लगी है।

"जो आज्ञा महारानीजी की।" कह कर भूतनाथ ने उस उल्लू के पंख बन्द कर दिए और तब उसे होशियारी से अपने कपड़ो के अन्दर छिपा पलट पड़ा। आगे आगे महारानी और पीछे पीछे भूतनाथ पुन. उन सीढियो पर चढ़ ऊपर चले गए जहा से आए थे और नन्हो को उस दर्वाजे के बन्द होने की आवाज सुनाई पड़ी जो सीढियों पर पड़ता था। उसके दम मे दम आया। यह आशंका कि महारानी कही इस तरफ न चली आवें, यहा अगर उसे पावेंगी तो उसी समय कत्ल कर देने की आज्ञा देंगी—मन से दूर हुई, मगर साथ ही साथ उसके दिल मे भयानक निराशा ने भी जगह बना ली। जिस चीज के लिए वह अपनी जान पर खेल गई थी, जिसके लिए कितनी ही रातें बिना नीद के और दिन बेचैनी में काटे थे, वह उसके हाथ में आकर भी निकल गई इससे बढ़ कर अभाग्य और क्या हो सकता था? वह उसी जगह जमीन पर बैठ गई और आंखों से गरम गरम आंसू बहाने लगी।

मगर यह अवस्था भी देर तक न रही। वह ऐसी औरत न थी जिसका दिल इस तरह सहज ही में पस्त हो जाय। कुछ ही देर बाद उसने आंसू बहाना बन्द कर कुछ सोचना शुरू किया और थोड़ी ही देर के सोच विचार के बाद कुछ खुशी के साथ बोल उठी, "हा यह भी तो ठीक है। बिना इस तिलिस्मी चाभी के जो मेरे पास वाले इस डिब्बे के साथ चिपकी हुई है भूतनाथ किसी तरह भी तिलिस्म खोल नही सकता, भले ही तिलिस्मी किताब उसके हाथ में क्यो न आ जाय। अगर मैं इस समय ये चीजें जो दारोगा साहब ने अपना मतलब निकालने के लिए मुझे दी हैं उन्हे वापस न करू बल्कि सब कुछ लिए भूतनाथ के पास चली जाऊं तो वह झख मार के मेरी खुशामद करेगा और मुझे तिलिस्म की दौलत पाने में अपना साझीदार बनाने को मजबूर होगा। ठीक है, बेशक ऐसा ही करना मुनासिब है।"

नन्हो के चेहरे पर कुछ खुशी दिखाई पड़ी और वह थोड़ी देर तक इसी तरह

की बातें सोचती रही, इसके बाद उसका ख्याल फिर पलटा। वह आप ही आप सोचने लगी—

"मगर महारानी ने यह चीज भूतनाथ को क्यों दे दी? यह सच है कि उन्होंने भूतनाथ से वादा किया हुआ था कि अगर मेरा काम कर दोगे तो मैं तुम्हें मुंह मागा इनाम दूगी, मगर तब क्या भूतनाथ ने भुवनमोहिनी का काम तमाम कर डाला? ऐसी कोई खबर तो सुनने में नही आई। दारोगा साहब ने भी तो ऐसी कोई बात नही कही। तब क्या सचमुच ऐसी कोई घटना हुई या भूतनाथ महारानी को किसी तरह का धोखा दे करके इस चीज को लिए जा रहा है? नही नही, भूतनाथ ने धोखा न दिया होगा, बहुत सम्भव तो यही जान पड़ता है कि वह उस काम को कर गुजरा जिसके करने का महारानी से वादा कर गया था। मालूम होता है जरूर ही बेचारी भुवनमोहनी इसके क्रूर पंजों का शिकार हुई। खैर जो कुछ होगा मालूम ही हो जायगा, अब यहा रुकना व्यर्थ है।"

जो सब सामान भागने की जल्दी में वह लपेट कर ले आई थी वहां बैठ कर उस रोशनी की मदद से जो आलमारी के पल्ले बन्द कर उसने बाली थी अब नन्हो ने दुरुस्त किया। वह तिलिस्मी चाभी जिसने उस उल्लू के पंख खोले थे उसी जड़ाऊ डिब्बे के साथ चिपका दी, बाकी सामान गठड़ी में डाल उस डिब्बे को भी उसमें रख कमर में बांधा और तब इस कोठड़ी के बाहर हुई। आखिरी कोठड़ी का दर्वाजा खोलने के पहिले कुछ देर तक वहां खड़ी आहट लेती रही, जब कोई शक की बात दिखाई न पड़ी तो उसे खोल बाहर निकली और उसे फिर ज्यों का त्यों बन्द कर ताला उसी तरह लगा दिया जैसे लगा था। इसके बाद जाने क्या सोचती हुई अपनी कोठरी की तरफ चली, वही जिसमें बैठ कर दारोगा ने उससे बातें की थीं।

मगर दस बीस कदम से ज्यादा बढ न सकी। जिस दालान के भीतर वाली कोठड़ी से वह अभी निकली थी उसी के खंभे की आड़ में काला पोशाक में अपने को छिपाए एक आदमी न जाने कब से खड़ा था जो घूम कर सामने आ गया और उसका हाथ पकड़ कर बोला, "ठहर जा कम्बख्त जाती कहां है? मैंने तेरी सब कार्रवाई देख ली और खूब समझ गया कि तू कौन है!"

डर के मारे नन्हों की यह हालत हो गई कि काटो तो लहू न निकले। यहां के अंधकार में वह सूरत शक्ल तो देख न सकती थी मगर आवाज से ही इस आदमी को बखूबी पहिचान गई।

उस आदमी ने अपने हाथ का रूमाल इसकी नाक पर रख दिया और जोर से दबाया जिसके साथ ही वह बेहोश होकर गिर गई।

जिस काली चादर में नन्हों ने अपने को छिपाया हुआ था उसी में इस व्यक्ति ने नन्हों को लपेट उसकी गठरी बनाई, तब उसे कंधे पर उठा लिया और पीछे को तरफ लौटा। कुछ रास्ता पार कर वह एक बड़े और मजबूत दर्वाजे पर पहुँचा जो बाहर की तरफ से बन्द था। हाथ से दो एक थपकी मारते ही किसी ने वह दर्वाजा खोल दिया, यह शख्स बाहर निकल गया और उसके बाहर वाले साथी ने दर्वाजे को फिर पहिले की तरह बन्द कर दिया। दोनों में कुछ बातें हुईं और इसके बाद दोनों तेजी से बाग के बाहर की तरफ निकल गए।

पांचवां बयान

रात पहर भर से कुछ ज्यादा जा चुकी होगी। अपने बड़े मकान के ऊपर की मंजिल वाले एक कमरे में दारोगा साहब ऊंची गद्दी पर गावतकिए के सहारे उठंगे पड़े हैं और उनसे कुछ ही हट कर उनके प्यारे दोस्त जैपालसिंह बैठे हुए हैं।

उस मोमी शमादान की रोशनी जो सामने चंदन की चौकी पर बल रहा है इस बड़े कमरे को यद्यपि पूरी तरह से रोशन करने के लिए काफी नहीं है तो भी दारोगा के गमगीन चेहरे को दिखाने को बहुत है जो इस तरह सिर झुकाए और हथेली पर गाल जमाए बैठा है मानों किसी बहुत बड़ी चिन्ता में निमग्न हो। रह रह कर उसके मुंह से लंबी सांस निकलती है और कभी कभी तो वह इस तरह अपने चारो तरफ देखने लगता है जैसे यह कमरा उसे दबोच रहा हो। उसकी यह हालत देख जैपाल भी अफसोस में डूबा हुआ है और चुपचाप बैठा बार बार उसकी तरफ देखता हुआ न जाने क्या सोच रहा है।

आखिर जब एक ठंढी सांस खींच कर दारोगा बेचैनी के साथ तकिए पर माथा रख कर पड़ गया तो जैपाल से न रहा गया और उसने कहा—

जैपाल०। आखिर आप कुछ भी तो बताइए दारोगा साहब कि आपकी यह हालत क्यों हो रही है और इस समय जब कि आपको खुशी के जश्न मनाने चाहिएं आप ऐसे गमगीन क्यों हो रहे हैं? अपने लम्बे सफर से लौट कर जिस समय मैंने यह खबर सुनी कि भुवनमोहिनी मर गई और उसके गम में कामेश्वर ने दुनिया से नाता तोड़ जंगल में डेरा लगाया है तो मैं उसी हालत में थका मांदा, बिना नहाए धोये या सुस्ताए मुबारकबादी देने के लिए आपके पास दौड़ा दौड़ा आया,

मगर यहां पहुंच कर आपकी ऐसी हालत देख मेरे ताज्जुब का ठिकाना न रह गया है, आखिर आप कुछ भी तो कहिए कि आपने अपनी यह हालत क्यों बना रक्खी है?

दारोगा०। (लम्बी सांस खींच कर) किसी दूसरे समय तुमको इसका सबब मालूम हो जायगा मेरे दोस्त, मगर इस समय मुझमें कुछ भी बताने की ताकत नहीं है। तुम सफर से थके हुए चले आ रहे हो, जाओ नहाओ धोओ और मुस्ताओ किसी दूसरे वक्त आ जाना तो मैं अपना हाल सुनाऊंगा।

जैपाल०। (सिर हिला कर) क्या आप समझते हैं कि आपकी यह हालत देख के भी मुझे नहाना धोना या खाना पीना अच्छा लग सकता है? जब तक आप मुझे न बतावेंगे मैं हरगिज इस जगह से न जाऊंगा।

दारोगा०। यह तुम्हारी व्यर्थ की जिद्द है, मैं जिस अफसोस में पड़ा हुआ हूं उसका सबब तुम अगर जान भी लो तो कुछ कर नहीं सकते बल्कि शायद मेरी ही सी हालत तुम्हारी भी हो जाय, अस्तु क्यों बेकार मुझे तंग करते हो।

जैपाल०। आपका बार बार यह कहना ही तो मुझे और भी अफसोस में डालता है। क्या आपके रञ्ज और गम में हिस्सा बटाना मेरा काम नहीं है? और फिर यही आप कैसे कहते हैं कि मैं कुछ भी कर न सकूंगा? मुमकिन है आपके रञ्ज का सबब मालूम होने पर मैं कुछ खिदमत कर सकूं, क्या अब से पहिले कई दफे ऐसा ही नहीं हो चुका है।

दारोगा०। (सिर हिला कर) सम्भव है हुआ हो, पर इस मौके पर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। इस समय जिस दुर्घटना के चक्कर में मैं पड़ गया हूं वह ऐसी नहीं है कि उसमें कोई हिस्सा बटा सके या मेरी मदद ही कर सके।

जैपाल०। (झुंझला कर) आखिर आप कुछ बताइये भी तो सही कि वह कौन सी दुर्घटना है! कुछ पता भी तो लगे! यों नहीं बताना हो तो फिर साफ साफ कह दीजिए कि मैं तुम पर विश्वास नहीं करता और अपना यह गुप्त भेद तुमको बताने को तैयार नहीं हूं।

जैपाल की यह झुंझलाहट देख और उसकी आखिरी बात सुन इस हालत में भी दारोगा के होठों पर एक गमगीन हंसी दौड़ गई। वह कुछ देर तक न जाने क्या सोचता रहा तब उठ कर बैठ गया और जैपाल को अपने पास खसक आने का इशारा करता हुआ बोला, "यद्यपि मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इस मुसीबत में मेरे कुछ भी काम नहीं आ सकते फिर भी तुमने ऐसी बात कह दी कि मुझे अपने दिल का हाल तुमसे कह देने को मजबूर होना पड़ा। इधर बढ़ आओ और

सुनो कि किस घटना ने मुझे इस कदर गमगीन बना रक्खा है।"

जैपाल खसक कर दारोगा के पास हो गया जिसने अपना एक हाथ उसके कंधे पर रख कर यों कहा :—

दारोगा०। यद्यपि तुम मेरे दिली दोस्त हो और मेरे सब भेदों की तुम्हे पूरी पूरी खबर रहती है फिर भी इधर कुछ घटनाएं ऐसी हो गई हैं जिनका हाल तुम्हे कुछ भी मालूम नहीं है। कुछ तो इस सबब से कि इधर मेरे काम से तुमको प्रायः समूचा समय जमानिया के बाहर ही रह कर बिताना पडा है मगर खास कर इसलिए भी कि उन घटनाओं से एक ऐसे व्यक्ति का सम्बन्ध था जिससे आज कल तुम्हारी खटपट चल रही है। मेरी इच्छा भी नही थी कि अभी वह हाल तुमसे कहूं, मगर खैर जब तुम इस तरह पर जिद कर रहे हो तो सब भेद बताए देता हूं, हा यह ख्याल रहे कि जीते जी इसका हाल किसी दूसरे पर जाहिर न होना चाहिये।

जैपाल०। क्या आपको यह शक भी हो सकता है कि जान रहते आपका कोई भेद मेरी जुबान से बाहर होगा! आप विश्वास रखिये....

दारोगा०। (हाथ के इशारे रोक कर) सो मैं अच्छी तरह जानता हूं दोस्त, उसका विश्वास मुझे दिलाने की जरूरत नही। अच्छा सुनो, यह तो मै तुमसे कई बार कह चुका हू कि उस शिवगढ़ी के भीतर वाला भारी खजाना लेने की मेरी बहुत इच्छा है जो बड़ी महारानी के ब्याह के समय दहेज के तौर पर उन्हे मिला था और जिसकी ताली हमेशा उन्ही के पास रहती है।

जैपाल०। वही शिवगढ़ी न जो रोहतासमठ के पास लुटिया पहाड़ी पर है और जहां वाले मन्दिर के पुजारी के यहां अकसर आप आया जाया करते हैं।

दारोगा०। वही।

जैपाल०। मैं यह तो आपसे अकसर सुन चुका हूं कि वह एक छोटा मोटा तिलिस्म है मगर उसमे खजाना भी है यह बात मुझसे अभी तक आपने न कही थी।

दारोगा०। यों तो सभी तिलिस्मों मे खजाना रहता है या यों कहना चाहिये कि खजानों की हिफाजत के लिए ही तिलिस्म बनाए जाते हैं, मगर इस शिवगढ़ी के अन्दर अगाध दौलत भरी पडी है। यह भेद पहिले मुझे मालूम न था मगर एक दिन यकायक महाराज के मुंह से एक ऐसी बात निकल गई जिससे मुझे भी पता लग गया और उसी वक्त से मुझे यह फिक्र आ पड़ी कि किसी तरह उस जगह का असली भेद जानूं और उस दौलत को कब्जे मे करूं। इसी सबब से मैंने उस पुजारी के पास आना जाना बढ़ाया और इसी के लिए मैंने उसकी लड़की नन्हो से भी दोस्ती पैदा की।

जैपाल०। (कुछ मुस्कुरा कर) जो यहां तक बढ़ी कि अन्त में आपने उसे लाकर महारानी की खवास बना महल में रख दिया और अकसर रात बिरात उससे मुलाकात भी करने जाया आया करते हैं।

दारोगा०। तुम्हें यह खबर कैसे लगी मैं कह नहीं सकता पर यह काम मैंने अपनी इच्छा से नहीं किया बल्कि मजबूरन करना पड़ा क्योंकि उसके बाप की मौत के बाद बेचारी की देख रेख करने वाला अब कोई रह न गया।

जैपाल०। क्या उस पुजारी की मौत हो गई? सो कब? मुझे कुछ भी खबर नहीं।

दारोगा०। थोड़े दिन की बात है। खैर इतना तो मुझे मालूम ही था कि शिवगढ़ी के तिलिस्म की चाभी हमारी महारानी के पास है जिन्हें वह खजाना अपने मायके से दहेज के तौर पर मिला है मगर उस पुजारी की बातों से मुझे यह भी मालूम हुआ था, यों कहना चाहिए कि इस बात का मुझे शक हो गया, कि उस पुजारी को भी उस तिलिस्म से कुछ गहरा सम्बन्ध है। मैंने इस मामले का पता लगाना शुरू किया और अन्त में जान गया कि वह पुजारी कोई मामूली आदमी नहीं बल्कि उस तिलिस्म का दारोगा है और उसके पास एक ऐसी किताब है जिसमें उस तिलिस्म का पूरा हाल लिख कर उसको तोड़ने की तर्कीब बताई गई है।

जैपाल०। यह बात आपको कैसे मालूम हुई?

दारोगा०। (कुछ रुक कर) मुझे इसका पता रोहतासगढ़ के राजकुमार दिग्विजयसिंह से लगा जो तुम जानते ही हो कि मुझे बहुत मानता और गुरु की तरह इज्जत करता है।

जैपाल०। ठीक है, अच्छा तब? आपने उस पुजारी के कब्जे से वह तिलिस्मी किताब लेने की कोशिश नहीं की?

दारोगा०। सो कैसे कहते हो? मैंने तो वह काम किया कि जिसका नाम, पर आखिर किस्मत भी तो कोई चीज है। वह किताब मेरे हाथ में आकर निकल गई।

जैपाल०। हाथ में आकर निकल गई।

दारोगा०। हां और उसी के गम ने मेरी यह हालत कर रक्खी है।

जैपाल०। सो कैसे हुआ? आपके हाथ वह किताब कैसे लगी और फिर निकल भी कैसे गई? क्या आपने उसकी हिफाजत....?

दारोगा०। तुम पूरा हाल तो सुनो पहिले! किसी तरह मुझे मालूम हुआ कि उन पुजारीजी की राय में उस तिलिस्म के टूटने का वक्त आ गया है और वे चाहते हैं कि गोपालसिंह के हाथों उस तिलिस्म को तुड़वावें। यह सुन कर मैंने

सोचा कि अगर तिलिस्म के टूटने का वक्त आ ही गया है तो फिर क्यों न मैं ही उसे तोड़ वहां के खजाने का मालिक बनूं ? पुजारीजी से इस बारे में कुछ कहना व्यर्थ है यह अच्छी तरह जानता था अस्तु अपना काम निकालने के लिए मैंने दिग्विजयसिंह को जरिया बना कर उसे यह खबर सुनाई और उसे उभाड़ा कि वह उस तिलिस्म को तोड़े और वहां की दौलत का मालिक बने।

जैपाल०। मगर यह कैसे सम्भव था ? आप तो खुद ही कई बार मुझसे कह चुके हैं कि तिलिस्म जिसके नाम पर बंधा हो वही उसे तोड़ सकता है, और कोई आदमी ऐसा कदापि नही कर सकता।

दारोगा०। ठीक है, मगर इस जगह दो बातें थीं, एक तो शिवगढ़ी—मेंने सुना है कि, कोई बाकायदा तिलिस्म नही उसका सिर्फ एक बाहरी भाग मात्र है, दूसरे मैंने यह भी सोचा था कि कम से कम इस तरह की कोई कोशिश तो करनी ही चाहिए, और कुछ नहीं तो उस जगह का कुछ भेद हो मालूम हो जायगा।

जैपाल०। ठीक है, अच्छा तब ?

दारोगा०। दिग्विजयसिंह मेरी बातों मे आ गया और उसने पुजारी से अपनी इच्छा कही, मगर उसने साफ इन्कार करके कहा कि ऐसा होना असम्भव है, तिलिस्म जिसके नाम पर बंधा है वही उसे खोल कर उसकी दौलत का मालिक हो सकता है और कोई नही। तब उसने उससे तिलिस्म की सैर ही करा देने को कहा पर इससे भी पुजारी ने इन्कार कर दिया।

जैपाल०। करना ही था, वह ऐसा ही सिड़ी और जिद्दी आदमी था, अच्छा तब?

दारोगा०। दिग्विजयसिंह को भी क्रोध आ गया और जिद्द पैदा हुई—अवश्य ही इसमें मेरा भी हाथ था, पर जो कुछ हुआ वह यह कि आखिर एक दिन तिलिस्मी औजारों की मदद से, तुम जानते ही हो कि दिग्विजयसिंह एक बहुत बड़े तिलिस्म का मालिक है—उसने पुजारी को चकमा दे उससे वह तिलिस्मी किताब ले ली, और घटना ऐन उसी मौके पर हुई जब कि पुजारीजी गोपालसिंह को अपने यहां बुला कर वह किताब उन्हे दिया ही चाहते थे।

जैपाल०। अच्छा! तब तो गोपालसिंह को जरूर मालूम हो गया होगा कि....

दारोगा०। नही, न तो गोपालसिंह को और न पुजारी को ही पता चल पाया कि यह कारंवाई किसकी है—इसलिए कि जैसा मैंने कहा, दिग्विजयसिंह ने तिलिस्मी सामान से मदद ली और ऐसे ढंग से काम किया कि यद्यपि सभी के सामने उसने वह किताब ली पर कोई उसे यह कार्रवाई करते देख न सका।

जैपाल० । सो भला कैसे ?

दारोगा० । यह मुझे ठीक ठीक मालूम न हुआ, क्योंकि दिग्विजय ने बताया नही पर इतना मालूम है कि दोनों मे से कोई भी, न तो स्वयं वह पुजारी और न गोपालसिंह ही, जान सके कि किसने किस तरह पर वह तिलिस्मी किताब गायब कर दी।

जैपाल० । खैर तब क्या हुआ ?

दारोगा० । दिग्विजय ने उस किताब की मदद से तिलिस्म मे घुसना चाहा पर एक अंडस ऐसी आ पड़ी कि वह कुछ भी कर न सका । तब उसने मुझसे इस काम में मदद चाही । वह समझता है कि मुझे तिलिस्मी मामलो मे बहुत जानकारी है, और मै भी उसका यह विश्वास कायम रक्खे हुआ हूं क्योकि इसमें मेरी इज्जत बढ़ती है । मैने उसकी मदद करने का वादा किया और वह किताब पढने के लिए उससे माग ली । उसे पढ़ कर मुझे मालूम हुआ कि शिवगढ़ी के तिलिस्म का हाल एक नही बल्कि दो किताबो मे लिखा हुआ है और बिना दानो किताबें इकट्ठी हुए वह तिलिस्म टूट नही सकता । यह जान मुझे उस दूसरी किताब का पता लगाने की फिक्र पडी, मगर इसकी बिलकुल खबर न थी कि वह कहा है या कैसे मिलेगी ।

जैपाल० । दिग्विजयसिंह को भी यह बात मालूम न थी ?

दारोगा० । नही बिल्कुल नही, और इसी सबब से वह उस किताब को पाकर भी तिलिस्म तोड़ न सका और मेरी मदद उसे मागनी पड़ी ।

जैपाल० । यानी उसने आपसे यह कहा कि आप वह दूसरी किताब खोज कर उसे दें !

दारोगा० । हा, बिना दोनो किताबें साथ हुए तिलिस्म टूट नही सकता था ।

जैपाल० । ठीक है मै समझ गया, अच्छा तब क्या हुआ ? उस दूसरी किताब का कुछ पता लगा ?

दारोगा० । भाग्यवश उन्ही पुजारी के मुंह से यह बात भी मुझे मालूम हुई । उन्होने बात ही बात में जिक्र किया—मैं तो समझता हूं कि धोखे से यत बात मेरे सामने उनके मुंह से निकल गई—कि महाराज त्रिभुवनसिंह की बहिन अर्थात् दिग्विजयसिंह की बूआ के कब्जे में एक चीज है जिसे लेकर वे यह काम निकालेंगे अर्थात् गोपालसिंह के हाथों से शिवगढ़ी का तिलिस्म तुड़वावेंगे । सुनते ही मैं चौकन्ना हुआ और अपनी कार्रवाई में लगा । नतीजा यह हुआ कि आखिर उस बुढ़िया और पुजारी दोनो ही को धोखा दे मैंने वह सामान अपने कब्जे में कर लिया मगर कम्बख्त भूतनाथ की बदौलत हाथ में आकर भी वह चीज फिर निकल गई,

यानी उसने वह सब मुझसे छीन लिया।*

जैपाल०। (ताज्जुब से) उसे इस झगड़े से क्या मतलब था और उस किताब का उसने क्या किया?

दारोगा०। उसका तो कथन है कि उसने वह गठड़ी ले जाकर उसी पुजारी को दे दी, मगर मुझे जान पड़ता है कि वह झूठ बोलता है और वह चीज अभी तक उसी के पास है। वह भी तो तिलिस्म की दौलत से मालामाल बना चाहता है।

जैपाल०। हां यह बात मुझे मालूम है, अच्छा तब?

दारोगा०। भूतनाथ के कब्जे से किताब लेना असम्भव था, उधर पुजारी इस घटना के बाद ही एकदम लापता हो गए, सम्भवतः मर गये, अस्तु उस दूसरी किताब का आसरा देखना व्यर्थ था। तब क्या करता? बहुत रुकने से यह भी डर था कि गोपालसिंह किसी तर्कीब से उस तिलिस्म को तोड़ उसके खजाने का मालिक बन बैठते। अस्तु अन्त मे मैंने यही सोचा कि महारानी के कब्जे से उस असली ताली को गायब करूं जो उनके नैहर से उन्हे मिली है और जो एक जड़ाऊ सुनहले उल्लू के पेट में बन्द हमेशा उनके उस निजी तोशेखाने मे रक्खी रहती है जिसकी ताली वे कभी भी किसी गैर के हाथो मे नही देती, और इस काम के लिए मैंने नन्हों से मदद ली।

जैपाल०। ओह, तब शायद इसीलिए आपने नन्हों को महारानी साहिबा की खास खवासों मे डाल रखा था।

दारोगा०। नही, उसे मेरे पास पहुंचाने वाला तो भूतनाथ था जिसने मुझसे कहा कि उसके बाप अर्थात् रोहतासमठ के पुजारी की मृत्यु हो गई और उसकी कोई देख रेख करने वाला नही है, और इसी से मैंने उसे महल की लौंडियों मे रखवा दिया पर उसके आ जाने बाद उसी से यह काम लेने की सोची, कारण उसकी बातों से मुझे मालूम हुआ कि न केवल उसे तिलिस्मी मामलों मे दखल ही है बल्कि वह भूतनाथ के साथ एक दफे शिवगढ़ी के तिलिस्म की सैर भी कर आई है। मेरे कहने से उसने मुझे भी ले जाकर वह तिलिस्म दिखाया। सब जगह तो वह क्या कोई भी नही जा सकता मगर जहां जहां वह मुझे ले गई और जो कुछ मैंने देखा उसके बारे में क्या कहूँ दोस्त, देख के तबीयत लहालोट हो गई। ऐसी ऐसी नायाब चीजें उस तिलिस्म के भीतर हैं कि जिसका नाम मगर किसी को हाथ लगाना मुहाल है। सच तो यह है कि वहां की सैर करके उस दौलत को काबू में करने

* यह सब हाल पिछले बयानों में पाठक पढ़ चुके हैं।

की इच्छा हजार गुना बढ गई और तभी मैंने महारानी वाली ताली गायब करने की बात सोच नन्हों को इसमें अपना मददगार बनाया।

जैपाल०। मगर एक बात तो बताइए, भूतनाथ नन्हों को लेकर कैसे उस तिलिस्म में घुसा ? क्या उसको भी तिलिस्मी मामलों में कोई दखल है ?

दारोगा०। यद्यपि बहुत पछने पर भी नन्हों ने इस विषय में साफ साफ कुछ न बताया मगर जैसा कि मैने कहा, मुझे शक होता है कि भूतनाथ ने खुद ही वह दिग्विजयसिंह की बूआ वाली किताब हड़प कर ली वल्कि पुजारी को भी उसी ने मार डाला हो तो ताज्जुब नही। वह बडे काले दिल का आदमी है।

जैपाल०। बेशक ऐसा ही है, अच्छा तब ?

दारोगा०। नन्हों को मैंने इस काम के लिए राजी कर लिया। उसने मुझे बताया कि महारानी वाली ताली जिस सुनहरे उल्लू के पेट मे बन्द है उसका हाल उसे मालूम है और हम उल्लू का पेट खोल के अन्दर वाली चाभी को ऐसे ढंग से निकाल ला सकती है कि किसी को कानों कान खबर न लगे कि उल्लू के पेट का असल माल गायब हो गया और वह केवल एक खिलौना मात्र रह गया मगर इस काम के लिए मेरे पास जो चाभी है उसकी दरकार पड़ेगी।

जैपाल०। आपके पास वाली चाभी कौन !

दारोगा०। तिलिस्म का हाल बताने वाली किताबो को तिलिस्म की भाषा मे 'चाभी' कहते हैं।

जैपाल०। ठीक है, अच्छा फिर ?

दारोगा०। जब नन्हों ने मुझसे यह कहा कि जो तिलिस्मी किताब या चाभी दिग्विजयसिंह के जरिए मुझे मिली है वह अगर मैं उसे दूं तो उसकी मदद से वह उल्लू का पेट खोल के महारानी वाली चाभी इस ढंग से गायब कर सकती है कि महारानी को कानों कान खबर न हो और हम लोगों का भी काम बन जाय, तो मेरा दिल उछल पड़ा, मगर मैं वह किताब उसे देते डरता था, कारण मुझे यह खौफ था कि कही कम्बख्त उसे गायब न कर डाले, क्योंकि वह भी एक ही छटी हुई और शैतान की खाला है और उसे तिलिस्मी मामलों की बहुत कुछ खबर भी है, इसी से मै टालमटोल करता और उससे यही कहता रहा कि वह जैसे बने उस सोने के उल्लू को गायब करे और मेरे पास ले आवे मगर इतना करने की उसकी हिम्मत न पड़ती थी, आखिर अन्त मे एक घटना ऐसी हो गई कि मुझे उसका विश्वास करके वह किताब उसके हाथ मे दे देनी पड़ी। बस वह दे देना ही काल हो गया, उसके बाद फिर मैने न तो उस किताब की सूरत देखी और न कम्बख्त नन्हों की ही।

जैपाल० । वह घटना कौन सी थी ?

दारोगा० । भूतनाथ को महारानी ने किसी काम के बदले मुंहमांगा इनाम देने की प्रतिज्ञा की थी ।

जैपाल० । मुझे मालूम है, वही भुवनमोहिनी और कामेश्वर वाली बात तो !

दारोगा० । हां वही ! भूतनाथ महारानी का काम करके वही सोने वाला उल्लू लेना चाहता था और यह बात मुझे मालूम थी, मगर मैं समझता था कि भूतनाथ वह काम जल्दी न कर पायेगा और जब तक करेगा तब तक तो उस चीज को बीच मे से ही मैं उड़ा लूंगा, पर यकायक मुझे मालूम हुआ कि भूतनाथ वह काम कर गुजरा और अब जल्दी ही महारानी से अपना इनाम अर्थात् वह सोने का उल्लू लेने आने ही वाला है । महारानी अपने कौल की कितनी सच्ची है यह तो तुम जानते ही हो, अस्तु भूतनाथ के मांगते ही वे वह चीज उसे दे देंगी इसका मुझे निश्चय था, अतएव लाचार हो मुझे नन्हों की बात माननी और उसका विश्वास करना पड़ा, कारण मुझे यह डर था कि अगर इस बात में देर हुई तो वह सोने का उल्लू भूतनाथ के कब्जे मे चला जायगा और तब मैं लंडूरा ही रह जाऊंगा । मैंने वह तिलिस्मी किताब जो एक जड़ाऊ डिब्बे के अन्दर बन्द थी ले जाकर नन्हों को दी और उसे अपने काम मे जल्दी करने को कहा ।

जैपाल० । और वह उस किताब को लेकर गायब हो गई !

दारोगा० । सो मैं ठीक ठीक नही कह सकता, किताब उसको दे कर भी मैं गुप्त रीति से उस पर निगाह रक्खे रहता था, इससे जो कुछ हुआ वह थोड़ा बहुत मुझे मालूम है । नन्हों ने किसी तरह महारानी के तोशेखाने की एक नकली ताली बनाई जिसकी मदद से ताला खोल वह तोशेखाने मे घुसी । वहां उसने क्या किया सो तो मैं जान न सका मगर जब वह वहां से अपने ठिकाने लौट रही थी तभी रास्ते मे किसी ने उसे पकड लिया और उठा कर ले भागा ।

जैपाल० । वहां महल के अन्दर से !

दारोगा० । हां महल के अन्दर से ।

जैपाल० । भला ऐसा कौन आदमी हो सकता है जो खास जनाने महल के अन्दर घुस जाय और बेधड़क इस तरह का काम करके निकल भी जाय ! जरूर इसके भीतर नन्हों की कुछ साजिश रही होगी । आपने कुछ पता नही लगाया ?

दारोगा० । मैंने बहुत कोशिश की मगर कुछ भी पता नहीं और तभी से मेरी यह हालत हो रही है, क्योंकि महारानी वाली किताब मिलने की तो बात ही क्या

नन्हों के साथ साथ मेरी अपनी तिलिस्मी किताब भी हाथ से जाती रही।

इतना कह दारोगा ने सिर झुका लिया और गमगीन चेहरा बना कर बैठ गया, मगर जैपाल ने जल्दी जल्दी कोई बात सोची और दारोगा का पंजा पकड कर कहा—

जैपाल०। तिलिस्मी मामलों मे तो कोई दखल मुझे है नही दारोगा साहब, मगर इतना मैं कह सकता हू कि चाहे जैसे बनेगा वैसे मै इस बात का पता लगा ही लूंगा कि महल के अन्दर घुस कर नन्हो को गायब कर देने वाला आदमी कौन था और अब वह कहां है। इस बात को जान कर तब आप आगे की कार्रवाई सोचिएगा।

दारोगा०। (जिसकी आंखो में आशा की चमक दौड़ गई थी) क्या तुम यह कर सकोगे ?

जैपाल०। (कलेजे पर हाथ रख कर) मैं कसम खाकर वादा करता हू कि बहुत जल्दी इस बात का पता लगा कर आपको बताऊंगा।

दारोगा०। अगर मुझे अब भी यह मालूम हो जाय कि नन्हों कहां है और उसको उठा ले जाने वाला कौन था तो मैं बहुत कुछ कर सकता हूं। पर उसके साथ एक काम और भी करना होगा।

जैपाल०। वह क्या ?

दारोगा०। भूतनाथ ने महारानी से अपने इनाम की चीज अर्थात् वह सोने वाला उल्लू ले लिया है। हमे ऐसी तर्कीब भी करनी होगी जिसमें वह उस चीज से काम न ले सके अर्थात् शिवगढ़ी का तिलिस्म खोल उसके अन्दर का खजाना निकाल न सके।

जैपाल०। मगर ऐसा भला कैसे हो सकेगा ?

दारोगा०। वह मैं बताता हू, सुनो।

दारोगा जैपाल की तरफ झुक गया और धीरे धीरे उससे कुछ कहने लगा।

छठवां बयान

दोपहर का वक्त है। धूप खूब कड़ाके की पड रही है और लू के सबब उडी हुई धूल के बादल रह रह कर चारो तरफ उठ रहे हैं। मैदान और खेतों में कहीं कोई चलता फिरता नजर नही आता। इधर उधर अगर कही कहीं कोई इक्का दुक्का मुसाफिर दिखाई भी पडता है तो वह पेड़ों की आड़ ही तलाश करने की फिक्र में नजर आता है।

मगर ऐसे समय मे भी भूतनाथ को चैन नही है। न जाने किस फिराक में वह अकेला ही सिर पर भारी मुंड़ासा धरे और मुंह तथा गर्दन को कपडे से लपेटे उस जंगल की तरफ चला जा रहा है जो सामने दिखाई पड़ रहा है और जिसके बाद पहाडियों का वह लम्बा सिलसिला शुरू हो जाता है जो रोहतासगढ तक चला गया है। यह जानना भी कुछ मुश्किल नही है कि वह बहुत दूर से इसी तरह चला आ रहा है क्योंकि उसके पैरों और कपड़ों पर पड़ी हुई धूल इस बारे में कोई शक नहीं रहने देती।

लीजिए वह उस जंगल तक पहुंच गया मगर पेड़ों की छाया में आ कर भी वह सुस्ताने का नाम नही लेता बढ़ता ही चला जा रहा है। न जाने वह किस फिराक मे है। कि इस जगह की ठंढक और तरी भी उसे आकर्षित नही कर रही है और वह सीधा उन पहाडियो की तरफ जा रहा है जो इस जंगल के दूसरी तरफ दिखाई दे रही हैं

जल्दी जल्दी भूतनाथ ने इस जंगल को तै किया और अब उस पहाड़ी पर चढ़ने लगा जिसके अनगढ ढोकों और पत्थरो के आसपास से कोई ऐसा रास्ता या पगडण्डी नही नजर आती थी जिससे चलने मे सुभीता होता, और इसी सबब से यहां पहुंच कर भूतनाथ की चाल बहुत कम हो गई। मगर इतना जरूर पता लग गया कि भूतनाथ को इसी जगह तक आना या यही पहुंच कर कुछ काम करना है क्योंकि यहां पहुंच कर उसने जल्दी जल्दी चलना छोड़ दिया और अपने चारो तरफ खूब गौर से देखता भालता धीरे धीरे पहाड़ो के ऊपर चढ़ने लगा।

यकायक भूतनाथ चमका और रुक कर बडे ध्यान से कोई चीज देखने लगा। उसकी चलती फिरती निगाहे अनगढ़ पत्थरों और ढोकों के एक छोटे से ढेर पर पड़ी थी जो अवश्य ही स्वाभाविक रीति से नही बना था बल्कि जिसको देखने से शक हो सकता था कि यह मनुष्य के हाथो का बटोरा हुआ है। उसका शक पक्का हो गया जब इस ढेर से कुछ ही आगे उसे एक दूसरा ढेर उसी तरह का नजर आया और तब उसके भी आगे एक तीसरा। उसने अपना रुख बदल दिया और घूम कर उसी तरफ जाने लगा जिधर जाने का ये तीनों ढेर मानो इशारा कर रहे थे और उसको ज्यादा दूर जाना भी न पडा। पचीस तीस कदम गया होगा कि बाईं तरफ एक छोटी गुफा का तंग मुहाना नजर आया जो सरसरी निगाह देखने से किसी जानवर की मांद की तरह जान पड़ता था। सम्भव था कि भूतनाथ इस पर ज्यादा ध्यान न देता और आगे बढ़ जाता मगर यकायक उस गुफा के अन्दर से उसे कोई ऐसी आवाज आती सी जान पड़ी जिसने उसके कदम रोक दिए। उसे जान पड़ा [illegible] हो। भूतनाथ ने घूम कर अपने कान उसी

तरफ लगाए और फिर वैसी ही आवाज सुनी। अब उसने क्षण भर का भी विलम्ब न किया और बेधड़क उस गुफा के अन्दर घुस गया।

गुफा तंग अंधेरी और डरावनी थी मगर भूतनाथ ने कुछ खौफ न किया और आगे बढ़ता ही चला गया। कुछ दूर जाने के बाद ढालवी जमीन मिली और साथ ही गुफा कुछ प्रशस्त भी हो गई, यहां तक कि पन्द्रह बीस कदम और जाने के बाद उसने बढ कर एक छोटी कोठरी का सा रूप धारण कर लिया। इस जगह बहुत अधेरा था मगर भूतनाथ की तेज निगाहों ने उस शकल को खोज ही निकाला जो बेहोशी की हालत मे एक तरफ की अनगढ़ दीवार के साथ उठंगी पडी थी और अवश्य जिसके मुंह से ही वे कराहने की आवाजें निकली होंगी। हम नही कह सकते कि भूतनाथ इस शकल को पहिचानता था या उसके यहा होने का उसे पता लग चुका था क्योंकि अंधेरा यद्यपि उस बेहोश को सूरत शक्ल देखने की बिल्कुल इजाजत न देता था तो भी उसने कोई परवाह न की और उसे दोनो हाथों पर उठा बाहर की तरफ ले चलना चाहा। उस समय उसे मालूम हुआ कि वह बेहोश औरत (बदन पर हाथ लगाते ही मालूम हो गया कि वह कोई औरत है) स्वतन्त्र नही थी, उसके पैरों में लोहे की एक जंजीर पड़ी हुई थी जिसका दूसरा सिरा दीवार मे लगे एक कुण्डे के साथ मजबूत जडा हुआ था।

भूतनाथ ने बेहोश को जमीन पर रख दिया और तब अपने बटुए से सामान निकाल रोशनी की। अब हमने पहिचाना कि वह बेहोश औरत नन्हो थी मगर यह इस कदर कमजोर और गाफिल हो रही थी कि पहिचानना मुश्किल हो रहा था। उसका बदन पीला हो गया था, हाथ पाव सूख गए थे, चेहरा मुर्दों की तरह हो रहा था और सांस इतनी सुस्त चल रही थी कि जल्दी पता नहीं लगता था। भूतनाथ को उसकी यह हालत देख ताज्जुब और साथ ही साथ अफसोस भी हुआ मगर सब के पहिले उसने बटुए से टाकी और हथौडी निकाली और उस जंजीर को काटना शुरू किया जो नन्हों के पैरों मे पडी थी।

मालूम होता है जंजीर कटने के शब्द और झटकों ने नन्हों की बेहोशी कुछ दूर की। उसने बेचैनी के साथ अपनी गर्दन घुमाई और कमजोर आवाज मे कहा— "पानी।" भूतनाथ ने अपने बटुए मे से पानी की बोतल निकाली और नन्हो के मुह से लगा दिया। कंठ में पानी उतरते ही नन्हों की मानो जान में जान आ गई। उसने जोर से एक सास खीच और तब अपनी आंखें खोल दी। वह इतनी कमजोर हो गई थी कि थोड़ी देर तक तो कुछ भी देख या समझ न सकी और

केवल पागलों की तरह आंखें फाड़ फाड़ कर इधर उधर देखती रही, इसके बाद कमजोर आवाज मे उसने पूछा, "मैं कहां हूं ?"

भूत० । तुम उसी पहाड़ी गुफा मे हो जिसमे तुम्हारे दुश्मनों ने तुम्हे कैद कर रक्खा था, मगर अब डरने या घबडाने की कोई भी बात नहीं है, होश सम्हालो और देखो कौन तुम्हारे सामने है ?"

बातों से ज्यादा भूतनाथ की आवाज ने असर किया जिसके कान मे जाते ही नन्हो बोलने वाले को पहिचान गई । उसने भूतनाथ का हाथ पकड़ लिया और दुःख के स्वर में बोली, "आह मेरे दोस्त, तुम अब तक कहां थे ? मेरी यह हालत हो गई और तुम्हारा कहीं पता नही !"

परन्तु सचमुच ही नन्हों बहुत ही कमजोर हो रही थी । इतना कहते कहते उसकी आंखें बन्द हो गईं और वह भूतनाथ की तरफ लुढ़क पडी । भूतनाथ ने सहारा देकर उसे सम्हाला और तब अपने बटुए मे से कोई दवा की शीशी निकाल दो गोलियां उसके मुंह मे डाल ऊपर से थोडा पानी पिलाया, कुछ उसके मुंह पर भी छिडका और अपने दुपट्टे से हवा करने लगा । शीघ्र ही नन्हों पुनः होश में आ गई और भूतनाथ उससे बोला, "इस जगह की हवा बहुत गन्दी है, दूसरे दुश्मनों के आ पहुंचने का भी डर है । बाहर चलना अच्छा होगा, मगर तुममे कमजोरी इस कदर देखता हूं कि ताज्जुब होता है !"

नन्हो गुस्से के भाव से बोली, "ताज्जुब की कौन सी बात है ? आज चार दिनों से मेरे मुह मे एक दाना अन्न का नही पड़ा है और दो दिन से एक बूंद पानी नहीं गया है । इस पर भी यह हालत न हो !" भूतनाथ आश्चर्य से बोला, "क्या सच-मुच ? किस नरपिशाच के हाथो में तुम पड़ गई थी जिसने ऐसा बर्ताव तुम्हारे साथ किया !" नन्हों ने जवाब दिया, "क्या मालूम नही, जो पूछ रहे हो ?" भूतनाथ सिर हिला कर बोला, "बिल्कुल नही, मैं तो न जाने कब से तुम्हारी तलाश मे जगह जगह की खाक छान रहा हू और आज भी एक विचित्र घटनावश ही इधर आ निकला । मुझे कुछ भी खबर न थी कि तुम इस हालत में हो और न यही पता था कि इस जगह तुम्हें पाऊंगा, पर खैर बातें पीछे होंगी पहिले इस जगह के बाहर हो जाना जरूरी है ।"

नन्हों को सहारा देते हुए बल्कि एक तरह पर उसे उठाए हुए भूतनाथ उस गुफा के बाहर निकाल लाया, जहां उसको एक साफ पत्थर की चट्टान पर बैठा कर उसने पुनः अपना बटुआ खोला और उसमे से भोजन का कुछ सामान और पानी की बोतल निकाल कर उसके सामने रक्खा, इसके बाद बोला, "अफसोस

है कि मेरे पास यहां और कुछ सामान मौजूद नहीं है लेकिन अगर तुम इस पहाड़ी से उतर कर उस जंगल के पार हो सको तो मेरा कोई न कोई शागिर्द वहां जरूर मिलेगा और तब सब तरह का इन्तजाम किया जा सकेगा। तुम फिलहाल यह खाकर जल पियो।"

गुफा से बाहर की साफ हवा में आने से ही नन्हों के शरीर मे पहिले से कुछ ज्यादा ताकत आ रही थी। भूतनाथ की बात सुन उसने अपना हाथ बढाया मगर फिर तुरन्त ही पीछे करते हुए कहा, "मगर मैं तब तक कुछ न खाऊंगी जब तक तुम इस बात की प्रतिज्ञा न करोगे कि दुश्मन से पूरा बदला लोगे बल्कि उसे मेरे सामने ला खड़ा करोगे ताकि मैं अपने हाथों उसकी दुर्दशा कर सकूं!"

भूतनाथ बोला, "क्या तुम्हे इसमें भी कोई शक है! मैं उसे जरूर पकड़ कर तुम्हारे सामने खीच लाऊंगा, फकत उसका नाम तुम मुझे बता दो।"

नन्हों गुस्से से बोला, "मेरी यह दुर्दशा करने वाला कम्बख्त श्यामलाल है, जब तक मैं उससे बदला न ले लूंगी मेरी जान को चैन न मिलेगा।"

भूतनाथ ताज्जुब से बोला, "श्यामलाल! क्या उसी ने तुमको इस कन्दरा में बन्द किया था?" नन्हों ने जवाब दिया, "हां उसी कम्बख्त का यह काम है और चाहे जैसे भी हो तुम्हें उसे पकड़ कर मेरे सामने लाना ही होगा।" भूतनाथ सिर हिला कर बोला, "तुम ताज्जुब की बात कर रही हो, मगर अफसोस, अगर श्यामलाल ही तुम्हारा दुश्मन है तो मैं या तुम उसका अब कुछ भी बिगाड़ नही सकते। नन्हो गुस्से के भाव से बोली, "क्यों क्या तुम उसकी ताकत से डरते हो, या यह समझते हो कि उसके दोस्त कुंअर गोपालसिंह.....!"

भूतनाथ उदासी की हसी हंस कर बोला, "नही यह बात नही है बल्कि असल बात यह है कि वह ऐसे दर्बार में पहुंच गया जहा मेरी या तुम्हारी गुजर नही हो सकती।" नन्हों ने ताज्जुब से पूछा, "सो क्या?" भूतनाथ ने जवाब दिया, "आज चार दिन हुए शिकार के मौके पर एक घायल शेर के पंजो से सख्त जख्मी होकर श्यामलाल ने यह दुनिया छोड़ दी।" नन्हों चमक उठी। ताज्जुब के साथ उसके मुंह से निकला, "हैं, क्या श्यामलाल जीता नही रहा?" भूतनाथ बोला, "नही।"*

यह खबर ऐसी थी जिसने कुछ देर के लिए नन्हों को भी चुप कर दिया। इसके बाद उसने धीरे से कहा, "तभी, जब वह दुनिया ही मे न रह गया तो मेरे दाने

* श्यामलाल की इस नकली मौत का हाल भूतनाथ उपन्यास में लिखा जा चुका है।

पानी की कौन खबर रखता, मगर अफसोस !" उसने अपना हाथ मलते हुए कहा, "अगर जीता रहता तो मैं उससे ऐसा बदला लेती कि वह भी याद रखता !" भूतनाथ फीकी हंसी हंस कर बोला, "मौत पर गुस्सा करना बेकार है, तुम अब कुछ खाओ पीओ और तब मेरा सहारा लेकर पहाड़ी के नीचे उतरो।"

नन्हों ने भूतनाथ की दी हुई चीजों को खाने के लिए हाथ बढ़ाया मगर उसी समय चमक कर पुनः रुक गई। उसके कानों में किसी सीटी की आवाज पड़ी थी जो पहाड़ी के नीचे कहीं से बजाई गई थी। उसने भूतनाथ की तरफ देखा मगर वह सीटी सुनते ही उठ कर खड़ा हो गया था और अब एक चट्टान के ऊपर चढ़ हथेली से आंख पर छाया किए एक तरफ बड़े गौर से देख रहा था। कुछ देर बाद उसने भी एक सीटी निकाल कर किसी इशारे के साथ बजाई और तब फुर्ती से नन्हों के पास आकर बोला, "दुश्मन आ रहे है, यहां से निकल चलना चाहिए, क्या तुम मेरा सहारा लेकर पहाड़ी के नीचे उतर सकती हो या मैं तुम्हें उठा लूं?"

नन्हों ने जवाब दिया, "मैं तुम्हारा सहारा लेकर चली चलूंगी, मगर यह तो कहो यह सीटी कैसी थी और इस समय किस दुश्मन से तुम्हे डर है ?" भूतनाथ बोला, "सीटी मेरे एक शागिर्द ने मुझे होशियार करने को बजाई थी और दुश्मन देखो वह आ रहे है मगर कौन है यह बताना कठिन है।"

नन्हों ने उधर निगाह उठाई जिधर भूतनाथ ने उंगली का इशारा किया था। सचमुच ही बहुत दूर पर धूल उडती दिखाई पड़ रही थी जो कुछ आदमियों के आने की सूचना दे रही थी पर फासला अभी इतना ज्यादा था कि उन आने वालों के बारे में कुछ विशेष जानना कठिन था। उसने कुछ और पूछना चाहा मगर भूतनाथ ने मौका न दिया और उसको उठा कर पहाडी के नीचे ले चला। पहाड़ी के नीचे पहुंचते ही उसे उसका एक शागिर्द मिला जिससे ऐयारी भाषा में भूतनाथ ने कुछ बातें की और तब नन्हों से बोला, "तुम इस आदमी के साथ जाओ, यह तुम्हें हिफाजत की जगह पहुंचा देगा और मैं एक जरूरी काम निपटा कर जहां तक जल्द मुमकिन होता है तुम्हारे पास पहुंचता हूं।" नन्हों ने उससे कुछ पूछना चाहा मगर यह बात कहते कहते भूतनाथ कहीं गायब हो चुका था, लाचार वह उस आदमी की तरफ घूमी जिसके सुपुर्द भूतनाथ उसे कर गया था और बोली, "चलो किधर चलते हो !" उसने उंगली से एक तरफ इशारा किया और तब हाथ का सहारा देता हुआ उसको ले चला। कुछ ही देर बाद घने जंगल ने दोनों को अपनी आड़ मे छिपा लिया।

× × ×

संध्या का समय है। सूर्य डूबने में यद्यपि थोड़ी ही देर है फिर भी उसकी अन्तिम किरणें आसमान में रूई की पहलों की तरह फैले हुए बादलों पर पड़ कर उन्हें सुनहला बना रही हैं और उसकी चमक पड़ने से सामने का दृश्य बहुत ही मनोहर हो रहा है जिधर से एक पहाड़ी नाला ढोकों की ठोकरों से अपने शरीर के धुर्रे उड़वाता हुआ तेजी से गिर रहा है। अभी थोड़ी देर हुई एक हलकी सी बारिश हो गई है जिससे गर्मी बहुत कुछ कम हो गई और नाले के पानी में भी मामूली से ज्यादा तेजी आ गई है।

इसी नाले के किनारे पत्थर के एक चिकने ढोंके पर बैठी नन्हो गाल पर हाथ रक्खे न जाने क्या सोच रही है? यद्यपि उसकी आंखें खुली हुई हैं पर उसका मन न जाने किधर का चक्कर लगा रहा है और यही सबब है कि उसके कानो में उस व्यक्ति की कुछ भी आहट लग नही रही है जो तेजी से चलता हुआ उधर को ही बढ़ता आ रहा है। यह आने वाला भूतनाथ है और इसमे भी शक नही कि उसका लक्ष्य नन्हों ही है जिसे दूर से ही उसने इस जगह बैठा देख लिया है, मगर भूतनाथ की हालत क्या हो रही है। उसका चेहरा सूखा हुआ है, सूरत से परेशानी जाहिर हो रही है, बदन पर सेरो गर्द चढ़ी हुई है और हालत ऐसी हो रही है मानों महीनो का बीमार हो।

नन्हो का भूतनाथ के आने की आहट मिली और वह उसे देख प्रसन्नता से उठ खड़ी हुई, मगर भूतनाथ उसके बगल में पहुँच हताश की तरह चट्टान पर बैठ बल्कि गिर गया और तब सिर पर हाथ रख न जाने क्या सोचने लगा। उसकी यह हालत देख नन्हों को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह उसका हाथ पकड़ कर बोली, "यह क्या मामला है भूतनाथ, तुम्हारी ऐसी हालत क्यों हो रही है!"

नन्हों के बार बार पूछने पर भी भूतनाथ ने सिवाय लम्बी सांसें लेने के कोई जवाब न दिया, केवल एक बार गर्दन उठा नन्हों को तरफ देखा, तब फिर सिर झुका लिया। नन्हों के ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा। आज तक कभी भी उसने भूतनाथ को ऐसी हालत में न देखा था। वह समझ गई कि जरूर कोई न कोई ऐसी ही भयानक घटना हुई है जिसने भूतनाथ के कड़े कलेजे को भी हिला दिया है। उसने बेचैनी के साथ भूतनाथ को अपने पास खींच लिया और गले में हाथ डाल कर बोली, "क्या हुआ है मेरे दोस्त, आखिर कुछ तो बताओ कि तुम्हारी यह हालत क्यो हो रही है?"

बड़ी देर के बाद भूतनाथ कुछ शान्त हुआ। उसने एक लम्बी सांस लेकर

अपना सिर इस प्रकार हिलाया जैसे किसी बहुत बड़े बोझ को दूर फेंकना चाहता हो और तब एक लम्बी सांस लेकर नन्हों से कहा, "मैं कुछ बता नहीं सकता कि क्या हुआ। जो कुछ मुझ पर से गुजर गया है उसे याद करने से भा मेरा कलेजा कांप उठता है।"

सचमुच इतना ही कहते हुए भूतनाथ का बदन कांप उठा और उसके चेहरे पर डर की निशानी दौड गई, मगर नन्हों का आश्चर्य इस बात से और भी बढ़ गया और वह दूने आग्रह से बार बार पूछने लगी, "नही नही तुम जरूर बताओ कि क्या हुआ है, जब तक मैं जान न लूंगी मेरा जी घबड़ाता रहेगा।"

आखिर बड़ा मुश्किल से बहुत देर के बाद भूतनाथ के मुंह से निकला, "मैं तिलिस्म में घुसा था नन्हो, और वहा मेरे साथ एक ऐसी घटना घटी कि जिसे याद करने से रोंगटे खडे हो जाते हैं और अब तो इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि जब वैसी बात हुई तो उसी समय डर के मारे मेरे प्राण क्यो न निकल गए?"

धीरे धीरे, भूतनाथ को शान्त करते हुए, उसे फुसलाते और बहलाते हुए, नन्हो ने बहुत कुछ हाल जान ही लिया। थोड़ा थोड़ा, टुकडे टुकडे करके परन्तु अस्पष्ट ढंग से, भूतनाथ ने उसे बताया कि वह तिलिस्म के अन्दर घुस कर कैसे चक्कर मे पड़ गया था कि मुश्किल से अपनी जान बचा कर भाग सका। वह बोला—

भूत०। तुम्हे मालूम ही है कि जमानिया की महारानो से मैंने तिलिस्म की ताली पाई थी।

नन्हों०। हां मुझे बखूबी मालूम है कि तुमको उन्होने वह सोने का उल्लू दिया था जिसके पेट मे तिलिस्म की तालो बन्द थी।

भूत०। उसी किताब की मदद से तिलिस्म के अन्दर घुसने का मेरा इरादा था पर कुछ अडस ऐसी आ पड़ी कि जिससे मैं वह काम कर न पाया, पर वह अंडस भी उस दिन दूर हो गई जिस दिन मैंने तुमको उस गुफा से छुट्टी दिलाई जिसमें कम्बख्त श्यामलाल तुम्हे बन्द कर गया था। तुम्हे याद होगा कि जिस समय मैं तुम्हें उस गुफा के बाहर निकाल के लाया उसो समय कुछ सवारों को उस तरफ आते देखा था। मैंने उन्हे दुश्मन समझा था पर वे थे राजा शिवदत्त के आदमी।

नन्हो०। चुनार के राजा शिवदत्त?

भूत०। हां वही मगर उसे शिवदत्तगढ़ का राजा कहो, चुनार तो....

नन्हों०। हां हां सो सब मैं जानती हू, मुझे खूब मालूम है कि महाराज सुरेन्द्र-सिंह से हार कर अब चुनार छोड़ जंगल में भाग गया है बल्कि मुझे यह भी

मालूम है कि इधर हाल ही में तुमको उसका एक काम कर देने के लिये उससे एक खासी रकम इनाम में मिली है ।

भूत० । (नन्हो की बात पर अजीब तरह से मुंह बना कर) उन आदमियों के साथ मुझे उसी समय एक जगह जाना पड़ा और इसी सबब से तुमने पुनः भेंट न कर सका । खैर, वह काम हो जाने के बाद जिसके लिए वे लोग आए थे, मुझे तिलिस्म मे घुसने का मौका मिला । (किसी याद से काप कर) तुम्हें याद ही होगा—तुम्हारे साथ जब मैं एक बार तिलिस्म में घुसा था तो एक भयानक महाकाल की मूरत हम लोगों को मिली थी ...

नन्हों० । वही जिसकी मेरे पिता पूजा करते थे ?

भूत० । नही बल्कि वह जो एक बहुत बड़ी इमारत के आंगन के बीचोबीच में पडती थी और जहां तक पहुंच के हम लोगो को वापस लौट आना पड़ा था क्योंकि आगे जान के लिए 'ताली' हम लोगो के पास न थी ।

नन्हों० । (उस भयानक मूरत की याद से काप कर) ओह वही जिसकी भयानक आंखें खूंखार शेर की आंखो की तरह डरावनी थी और जो...

भूत० । (टूटी आवाज में) हां वही वही, महारानी से मिली तिलिस्मी ताली लिए मै उसी मूरत के पास पहुंचा, मगर उसने मुझे पकड लिया और खा जाना चाहा !

नन्हों० । खा जाना चाहा !

भूत० । हाँ और बहुत नजदीक था कि मेरा खातमा ही हो गया होता कि वह मूरत आप ही आप बोली—'मुझे आदमी का खून पिलाओ तो मै तुम्हे छोड दूं और तुम्हें तिलिस्मी खजाना भी दू !' आखिर जान के डर से मैने वह भी किया*।

नन्हो० । (काप कर) तुमने उस मूरत को मनुष्य का खून पिलाया !

भूत० । (आखें फेर कर) हां मगर फिर भी कुछ काम न निकला, यद्यपि जान बच गई मगर उस मूरत को कार्रवाइयो न इतना डराया कि मेरी रूह काप गई और अब कभी तिलिस्म के अन्दर न जाऊंगा यह कसम खा ली है ।

नन्हो० । (डरे हुए ढंग से) बडी भयानक बात तुम कह रहे हो ! रही तो वह मूरत जरूर बडी डरावनी मगर वह ऐसे भयानक कर्तब भी करती है यह मैं कभी सोच भी नही सकती थी । अगर मेरे सामने कही ऐसी घटना होती तो मेरी डर के मारे जरूर जान निकल जाती !

---

* भूतनाथ की जीवनी में 'भूतनाथ' की इस मूर्ति और इसके सामने भूतनाथ द्वारा नकली अहिल्या के बलि दिये जाने का पूरा पूरा हाल लिखा जा चुका है ।

भूत० । तो बस फिर समझ लो कि मेरी क्या हालत हुई होगी ? अभी तक जब उस बात का खयाल आता है कलेजा धड़क उठता है । मैं तो अब उम्र भर कभी तिलिस्म में जाने का नाम न लूंगा और इसी से वहां की ताली भी ऐसी जगह गाड़ आया हूं कि जहां से कभी किसी के हाथ न लगे ।

नन्हों० । यही ठीक है, मगर दोस्त तुमने बहुत थोड़े में सब हाल कहा है । मुझे खुलासा सब किस्सा सुनाओ कि कैसे कैसे क्या हुआ ?

भूत० । वह हिम्मत इस वक्त मेरी नहीं है । मेरी तो अभी तक उस घटना की याद से रूह कांपती है । और किसी वक्त पूरा हाल सुन लेना इस वक्त अब ज्यादा कुछ न कहूंगा । तुम अपनी कहो कि क्या हाल है, यहां कोई तकलीफ तो नही होती, तबीयत तो ठीक है ? चेहरा कुछ उतरा हुआ देखता हूं ?

नन्हों० । नही मैं बिल्कुल अच्छी तरह हूं, यहां कोई तकलीफ किसी बात की नहीं है और अगर कुछ हो भी तो अब तुम आ ही गये हो, सब दूर हो जायगी ।

भूत०। मगर मै तो यहां ज्यादा देर तक रुक न सकूंगा, थोड़ी देर में चला जाऊंगा।

नन्हों० । है, ऐसा ! मगर सो क्यों ? अब आए हो तो दो चार दिन तक रह कर सुस्ता के जाओ ।

भूत० । नही, मुझे रोहतासगढ़ मे बड़ा जरूरी काम है, वहां......

नन्हों० । (सिर हिला कर) सो सब मै नही सुनने की ! अब आज भर तो तुम किसी तरह यहा से जा ही नही सकते, सुबह को सुबह देखी जायगी । ऐसा भला क्या काम कि न दिन देखो न रात, न शरीर देखो न काया ! जरा अपनी हालत तो देखो क्या हो रही है ? बस बस, चलो मेरे डेरे पर, वही चल के और बातें होंगी ।

उस जगह से थोडी ही दूर पहाड़ी की तलहटी मे एक सुन्दर झोपड़ा बना हुआ था जो आजकल नन्हों का डेरा था क्योंकि इसी मे वह अपने दिन काट रही थी । भूतनाथ को बहुत आग्रह करके वह वहीं ले गई और उसके नहाने धोने और भोजन आदि के बन्दोबस्त मे लगी । उस दिन और रात क्या दूसरे दिन और दूसरी रात भी उसने भूतनाथ को रोक रक्खा और तब तीसरे दिन कहीं जाकर उसे अपनी आंखों की ओट किया ।

मगर नन्हों का यह काम, यह नकली मुहब्बत दिखाना और भूतनाथ को रोकना, मतलब से खाली न था । असल मे वह यह जानना चाहती थी कि भूतनाथ तिलस्म की चाभी कहा रख आया है । उसने भूतनाथ को भुलावे मे डाल कर बहुत कुछ

उसे इस बारे में भी कुछ मालूम हुआ या नहीं कि चामी यानी वह सोने वाला उल्लू तथा वह भानुमती का पिटारा कहां छिपा दिया गया है। खैर जो कुछ हुआ या होगा आगे चल कर मालूम हो ही जायगा।

सातवां बयान

कहना चाहिए कि एक प्रकार से नन्हो ने उस झोपड़े को अपना घर ही बना लिया है जिसमे पाठक ऊपर उसे देख चुके हैं, क्योंकि अब हम उसे बराबर इसी जगह देखते हैं और अगर वह कभी कही जाती भी है तो सिर्फ एकाध दिन के लिए ही। इसका क्या सबब है सो तो हम कह नही सकते पर नन्हों की कोई बात मतलब से खाली हो इसका भी हमें विश्वास नही होता अस्तु पाठकों को समझ रखना चाहिए कि इसमे भी कुछ न कुछ रहस्य जरूर है और यही सबब है कि आज इस आधी रात के समय जब हम उसे इस झोपडे से बाहर निकलते देखते हैं तो आश्चर्य होता है और हम चाहते हैं कि उसका पीछा करके देखें कि वह किधर जाती या क्या करती है।

इसमें कोई शक नही कि नन्हों का कलेजा बहुत ही मजबूत है। अगर और कोई औरत होती तो इस तरह आधी रात के समय इस भयानक निर्जन स्थान में जहा दरिन्दे जानवरो का भी डर कम नही है बाहर निकलने की कदापि हिम्मत न करती, पर नन्हों बेखटके और बगैर किसी डर के उस कंटीले बेडे के बाहर हुई जो हिफाजत के खयाल से उसके झोपडे को कुछ फासला दे के चारो तरफ से घेरे हुए था, और तब सीधी उस तरफ को रवाना हुई जिधर से वह पहाडी नाला बह कर आ रहा था जिसके किनारे पर यह स्थान था। थोड़ी दूर जाने के बाद ही मालूम हो गया कि नन्हों का लक्ष्य वह पहाड़ी है जो इस अंधकार में अपना सर ऊंचा किये बड़ी ही भयानक जान पडती है और इस जगह से कम से कम भी आध कोस के फासले पर होगी।

बीच में पड़ने वाले छोटे जंगल को नन्हो ने जहां तक बन पड़ा तेजी से तय किया और अब उस पहाड़ी पर चढने लगी जो उसका लक्ष्य थी और जिसका लम्बा सिलसिला जगल पार करते ही शुरू हो जाता था। इस जगह पहुँच नन्हो की चाल कम हो गई क्योंकि उसे उन अनगढ़ ढोकों और पथरीली चट्टानो के बीच में से अपना रास्ता निकालने में बहुत तकलीफ होने लगी फिर भी घूमती फिरती और चक्कर काटती हुई वह बहुत ज्यादे दूर तक चली गई और अन्त में एक गुफा के मुहाने तक पहुच कर रुकी जो इस समय के अंधकार में बिलकुल ही दिखाई

पड़ती थी पर फिर भी न जाने किस तरह, शायद कोई खास निशान देख कर, नन्हों ने उसे ढूंढ ही निकाला था। जरा देर के लिए वह उस जगह रुकी, शायद इस बात की आहट लेने के लिए कि गुफा के अन्दर कोई दरिन्दा जानवर तो नही बैठा है, और तब उसके भीतर घुसी। जब काफी अन्दर चली गई तो अपनी चाल रोकी और सब तरफ की अच्छी तरह आहट ले चुकने के बाद कमर से सामान निकाल कर रोशनी की।

अब तो हमें भी कोई सन्देह न रह गया। हम बराबर यही खयाल कर रहे थे कि हो न हो यह वही स्थान है जहा उस समय नन्हो कैद थी जब भूतनाथ ने उसे छुडाया, पर अब रोशनी मे इस गुफा की हालत देख निश्चय हो गया कि बेशक यही बात है क्योंकि सामने ही लोहे की वह जंजीर दीवार से लगी मौजूद थी जिसे काट कर भूतनाथ ने नन्हो को छुट्टी दी थी। इस समय हाथ वाली मोमबत्ती की रोशनी मे उस जंजीर को देख एक बार नन्हों कांप गई क्योंकि उसे अपनी उस भयानक अवस्था का ख्याल आ गया जब वह भूखी प्यासी और लाचार यहां कैद थी और मौत मुंह बाए सामने खड़ी नजर आती थी, पर फिर तुरन्त ही उसने अपने को काबू मे किया और इस तरफ से घूम कर बाईं तरफ को बढ़ी जिधर उस गुफा का लम्बा सिलसिला पेंच खाता हुआ दूर तक चला गया था।

ज्यादा जाना न पडा और लगभग पन्द्रह बीस हाथ जाने बाद गुफा यकायक समाप्त हो गई। सामने अनगढ़ पत्थरो की एक दीवार नजर आई जहां पहुंच नन्हों रुक गई और इधर उधर खूब गौर से कुछ देर देखने बाद एक बड़े पत्थर के पास पहुंच रोशनी की मदद से उस पर कुछ खोजने लगी। काले और नमी तथा काई से ढंके हुए अनगढ़ ढोंके पर न जाने किस चीज की तलाश नन्हो को थी कि उसने उसका एक एक अंगुल स्थान देख डाला और अन्त मे एक जगह उंगली रख खुशी की किलकारी मारी, तब फुर्ती से हाथ की मोमबत्ती जमीन पर रख दी और अपने कपड़ो के अन्दर हाथ डाल एक ताली निकाली जो लम्बी पतली और अजीब ढंग से टेढ़ी मेढ़ी बनी थी। इस ताली को उसने पत्थर पर उसी जगह रख कर दबाया जहा पर उंगली रक्खी थी और ताली उस पत्थर के अन्दर लगभग चार अंगुल के घुस गई। मुमकिन है कि उस जगह ताली लगाने का कोई सूराख हो अथवा और कोई बात हो, पर नन्हों ने ताली भीतर डाल जोर लगा कर दाहिने बाएं किसी क्रम के साथ कई बेर उमेठा और तब उस पत्थर को हाथ से धक्का दिया। ताज्जुब की बात थी कि वह भारी चट्टान किसी मामूली दर्वाजे या पल्ले की तरह घूम

गई और उसके पीछे एक रास्ता निकल आया जिसके भीतर धड़कते हुए कलेजे के साथ नन्हों ने पैर रक्खा।

एक छोटी कोठडी चार पांच हाथ लम्बी और इससे कमती ही चौडी नजर आई जिसके अन्दर की हवा बन्द और कुछ बदबूदार थी। इस कोठड़ी के दाहिने और बाएं दोनों तरफ की दीवारों के साथ पत्थर की पटियां टाड़ो की तरह लगी हुई थी और उन पर तरह तरह की चीजें रक्खी हुई थी पर उनकी तरफ नन्हों ने निगाह भी न उठाई और सीधी सामने की तरफ बढ़ी जिधर एक छोटी गठडी रक्खी दिखाई पड़ रही थी। हाथ लगाने के पहिले एक बार बड़े गौर से उसे देखा और तब झपट के उठा लिया और जमीन पर रख कर खोला।

ताज्जुब नही कि नन्हों की तरह हमारे पाठक भी इस गठरी को पहिचान गये हो क्योंकि यह वही थी जिसे आखिरी बार दारोगा साहब ने नन्हों के सुपुर्द किया था, जिसे ले वह महारानी के तोशेखाने मे घुसी थी, अथवा जिसके अन्दर वह नायाब चीज, तिलिस्म की चाभी, बन्द थी। नन्हों के उतावले हाथों ने ज़ल्दी जल्दी उस गठड़ी को खोला, वही छोटी जडाऊ सन्दूकड़ी नजर आई जिसके ऊपर तिलिस्मी चाभी जड़ी हुई थी। और चीजों को छोड़ नन्हों ने इस सन्दूकड़ी को हाथ मे लिया और उसी पहिली तरकीब से खोला। भीतर वही छोटी पुस्तक थी जिसे निकाल एकाध बार पन्ने उलट पुलट कर देखा तब सन्दूकड़ी मे रख कर बन्द करने बाद एक बार इज्जत के साथ माथे पर लगा जमीन पर रख दिया। अब उसने उस गठड़ी की अन्य चीजों को सरसरी निगाह से देखा पर फिर न जाने क्या सोच जोर से गर्दन हिलाई और तब गठड़ी पुनः ज्यों को त्यों बाध कर उसी जगह रख दी जहा वह पड़ी हुई थी। इसके बाद उसने वह सन्दूकड़ी बगल में दबाई और उस कोठरी के बाहर निकल आई। पत्थर के ढोके को अपनी जगह कर कोठड़ी का दर्वाजा बद करके वह ताली निकाल ली और उसको भी चोली के अदर छिपाने बाद तेजी से गुफा के बाहर हो गई।

मगर नन्हो की किस्मत मे वह नायाब चीज बदी हुई न थी जिसके पाने के लिए वह बार बार इस कदर जोर लगा रही थी। जितनी देर उसने उस गुप्त कोठरी में लगाई उसी के बीच मे बाहर की हालत बदल गई थी और कई गैर आदमी उस जगह आ पहुंचे थे जिन्होने उस गुफा के मुहाने को घेर लिया था। जैसे ही नन्हो गुफा के बाहर हुई इनमें से एक आदमी ने आगे बढ़ कर उसका हाथ पकड़ लिया। नन्हो ने चमक कर दूसरा हाथ कपड़े के अन्दर डाला मगर इसके पहिले कि वह कोई कार्रवाई कर सके इस आदमी ने बेहोशी की दवा से तर एक

रूमाल उसकी नाक पर रख दिया जिसकी हवा नाक मे जाते ही नन्हों त्योरा कर गिरी। उस आदमी ने उसे सम्हाला और तब कई लोग मिल कर उसको हाथो हाथ उठाए हुए पहाड़ी के दूसरी तरफ को चल पड़े।

फुर्ती फुर्ती इन आदमियों ने इस पहाड़ी को लांघा और इसके दूसरी तरफ उतर गए जिधर एक लम्बा चौडा सूनसान मैदान था। इस मैदान मे एक छोटी झोपड़ी नजर आ रही थी जिसके दर्वाजे ही पर एक नकाबपोश न जाने कब से खडा था। इन लोगों को आते देखते ही वह कई कदम आगे बढ़ आया और तब किसी विचित्र भाषा मे उसने इन लोगो से कुछ पूछा जिसका जवाब भी उसी ढंग पर इन लोगों ने दिया इसके बाद सब कोई मिल कर नन्हो को झोपडे के अन्दर ले गए जहां चिराग की रोशनी हो रही थी। नन्हों जमीन पर लिटा दी गई और नकाबपोश के हुक्म से सिर्फ एक आदमी का छोड़ बाकी सबके सब उस झोपड़े के बाहर हो गए।

उस नकाबपोश ने दिया उठा कर गौर से नन्हो की सूरत देखी, तब चिराग ठिकाने रख दिया और उस आदमी की तरफ देख कुछ इशारा किया जिसे समझ उसने नन्हों की तलाशी लेनी शुरू की। तुरत ही कमर में बंधी हुई वह सन्दूकड़ी निकल पड़ी जिसको देखते ही नकाबपोश के मुंह से प्रसन्नता की किलकारी निकल आई। उसने उलट पुलट कर उसको अच्छी तरह देखा और तब धीरे से यह कह कर कि—"बेशक वही है" वह चिराग की तरफ बढ़ गया। मगर अपने आदमी से यह कहता गया—"अच्छी तरह देख लो कोई और चीज तो कम्बख्त के पास नही है।"

थोड़ी देर बाद वह नकाबपोश चिराग के पास से हटा। इस बीच में उसने क्या किया और उस सन्दूकड़ी को खोला या नही यह तो हम नही कह सकते मगर इतना जरूर कह सकते हैं और अगर उसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई न होती तो आप भी जान जाते कि इस चीज को पाकर उसे बेहद खुशी हुई। पलटते ही उसने अपने साथी से पूछा, "और भी कुछ मिला कम्बख्त के पास?" जिसके जवाब में कोई चीज उसकी तरफ बढ़ाते हुए उसने कहा, "सिवाय इस कागज और इस ताली के और कुछ भी नही।"

नकाबपोश ने वह कागज ले लिया और रोशनी के पास ले जा कर पढा। टेढे मेढ़े अक्षरों में दो ही चार सतरे थी मगर उन्होंने नकाबपोश के ऊपर गहरा असर डाला। वह कुछ देर के लिए गंभीर चिन्ता में डूब गया और ठुड्डी पर हाथ रख न जाने क्या सोचता रहा, इसके बाद अपने साथी से बोला, 'यह कागज तो बड़े ताज्जुब की बात बताता है, लो तुम भी पढो और बताओ कि यह क्या बात है।"

उस आदमी ने नकाबपोश के हाथ से वह कागज ले लिया और चिराग की तरफ करके पढ़ा। इसमें कोई शक नही कि कागज में जरूर कोई ताज्जुब की बात लिखी थी क्योंकि पढ़ कर वह आदमी भी देर तक गौर में पड़ा रहा। अन्त में जब उस नकाबपोश ने उससे पूछा तो वह बोला, "ताज्जुब की बात है! अगर यह कागज सही कहता है तो कामेश्वर केवल इस कम्बख्त के पास आता ही नही है बल्कि जरूर उसे इधर के मामलों की खबर भी लग चुकी है।"

नकाबपोश बात पर जोर देकर बोला, "बेशक ऐसा ही है और ऐसी हालत में हम लोगों को बहुत जल्दी ही कामेश्वर को भी अपने काबू मे कर लेना चाहिए।" उस आदमी ने जवाब दिया, "मगर ऐसा होना मुश्किल है।" नकाबपोश ने जवाब दिया, "कुछ भी मुश्किल नहीं है। जो मैं कहता हूं सुनो और वैसा ही करो, ईश्वर चाहेगा तो हमें जरूर सफलता मिलेगी।"

उस आदमी का हाथ पकड़ नकाबपोश एक तरफ चला गया और देर तक न जाने क्या क्या बातें करता रहा। क्या राय पक्की हुई सो तो हम नही जानते पर इतना जरूर कह सकते हैं कि इस बात चीत में घड़ी भर से ऊपर का समय लग गया। इसके बाद वह नकाबपोश पुनः नन्हों के पास आया और उसकी नाक पर हाथ रख कर देखने के बाद बोला, "यह होश में आ रही है, थोड़ी बकनी और सुंघा दो और तब इसे उठा ले जाकर इसके डेरे पर छोड़ आओ। इसके बाद वही करो जो मैंने बताया है। वह ताली और कागज ज्यों का त्यों इसके कपड़ों में रख देना, यह सन्दूकड़ी मैं लिए जाता हूं, परसों उसी मामूली ठिकाने पर तुम लोगों से मिलूंगा।"

नकाबपोश झोपड़े के बाहर निकला जहा उसका एक आदमी घोड़े की लगाम पकड़े खड़ा था। वह कूद कर घोड़े की पीठ पर चढ़ गया और अपनी उसी विचित्र भाषा में कुछ कहने बाद घोड़े को एड़ लगा तेजी से एक तरफ को रवाना हो गया। इसी समय वह साथी भी झोपड़े के बाहर निकल आया और बाकी लोगों से बोला, "नन्हो को इसके डेरे पर पहुंचाने की आज्ञा हुई है, चार आदमी मिल कर इसे उठाओ और ले चलो।"

अब हम इन लोगो का साथ छोड़ देते हैं और उस तरफ चलते हैं जिधर नन्हों का डेरा अर्थात् वह स्थान है जहा से निकल कर वह इस तरफ आई और इस मुसीबत में गिरफ्तार हो गई थी।

सुबह होने मे अभी देर है फिर भी पूरब तरफ के आसमान पर से तारे तेजी

के साथ गायब होते जा रहे है और उनका स्थान वह सुफेदी ले रही है जो अरु-णोदय के बहुत पहिले ही आकर आसमान पर अपनी हुकूमत जमा लेती है। नन्हों अभी अभी अपने बिछावन पर से उठी है और आंखें मलती हुई अंगड़ाई ले रही है। उसके सिर में बेतरह चक्कर आ रहे हैं और बदन का बन्द बन्द ऐसा टूट रहा है कि उठ कर बैठना भारी जान पड़ता है।

बड़ी मुश्किल से किसी तरह अपने पर काबू कर वह उठ खड़ी हुई और तब झोपड़े की दीवार थाम एक झरोखे की राह बाहर देखती हुई बोली, ' बहुत देर हो गई, सुबह होना ही चाहती है। लेकिन यह मुझे हो क्या गया ? मेरा सिर और बदन इस कदर टूट क्यों रहा है और मैं यहा क्यों पडी हुई हूं ? मुझे खूब याद है कि मैं........"

यकायक उसे उस समय की बातें याद आ गईं जब वह उस पहाड़ी गुफा के बाहर निकल रही थी और किसी आदमी ने उसके मुंह और नाक पर बेहोशी की दवा से तर रूमाल रख दिया था, पर उसका दिमाग अभी ठीक से काम नही कर रहा था और समझ मे कुछ न आता था कि कैसे क्या हो गया। आखिर उसने अपनी कमर में हाथ डाला। उस सन्दूकड़ी को गायब पाते ही जो उसे गुफा से मिली थी उसके मुंह से एक चीख निकल पडी और वह यह कहती हुई जमीन पर बैठ गई—"ओफ गजब हो गया। वह सन्दूकड़ी गायब हो गई! जरूर यह उन्हीं कम्बख्तों का काम है जिन्होंने मुझे बेहोश किया था और बेशक इसी नीयत से उन्होने ऐसा काम किया भी, मगर फिर यहां क्यों पहुचा गए यहा ताज्जुब है!"

नन्हों कुछ देर तक गाल पर हाथ रख कर चिन्ता करती रही, मगर निराश हो जाना या व्यर्थ की चिन्ता करना उसकी प्रकृति मे न था। शीघ्र ही उसने अपने को चैतन्य किया और इधर उधर टटोल कर जांच करने बाद बोली, "वह ताली और चीठी तो मौजूद है! खैर यही कुशल है, मालूम होता है उन कम्बख्तों ने मेरी अच्छी तरह तलाशी नहीं ली नही तो शायद इन चीजो को भी छीन लिए होते। अच्छा अब देखा चाहिए उधर का क्या हाल है।"

नन्हों अपनी जगह से उठी और झोपड़ी के दाहिने तरफ वाली दीवार के पास पहुंची जिधर एक छोटा दर्वाजा था जिस पर मामूली पर्दा पड़ा हुआ था। इस पर्दे को हटा उसने दर्वाजे को खोला और एक दूसरी कोठरी में पहुची जो पहिली वाली से कुछ छोटी मगर साफ और हवादार थी। इसमें एक मामूली खाट बिछी थी जिस पर कोई व्यक्ति चादर ओढ़े सोया हुआ था। नन्हों ने इसके पास जा

मुंह पर से चादर हटाई और अब हमें खिड़की से आने वाले मद्धिम प्रकाश में यह देख ताज्जुब हुआ कि यह व्यक्ति कामेश्वर है। यह कामेश्वर यहां कैसे आ पहुंचे और इस तरह गाफिल पडे हुए क्यों हैं ? नन्हों कामेश्वर के ऊपर झुक गई और गौर से उनकी सूरत देख कर बोली, "शुक्र है कि इनकी बेहोशी अभी तक दूर नही हुई नही तो और भी गजब हो जाता। अब वह ताली और चीठो ठिकाने रख कर कम से कम इसकी निगाहों में तो सच्ची बनी ही रह सकती हूं।" अपने पास वाली चीठी निकाल कर उसी ताली पर लपेटी और तब उसे कामेश्वर की कमर मे खोंसने बाद एक आलमारी के पास पहुंची जिसमें बहुत तरह का सामान रक्खा हुआ था। इसमे की एक शीशी के अर्क से उसने अपने आंचल का कोना तर किया और उसे कामेश्वर की नाक के पास ले गई। मालूम होता है कि यह किसी तरह का तेज लखलखा था क्योकि इसकी दो चार सांसें अन्दर जाते ही कामेश्वर ने तड़ातड़ दो तीन छींकें मारी और तब घबड़ा कर उठ बैठे। इसके पहिले कि वह कुछ बोलें नन्हों कह उठी, "वाह वाह, आप इस तरह गाफिल पड़े हुए हैं और सुबह होने को आ गई, क्या अपने साथ मुझे भी बदनाम करने का इरादा है !"

कामेश्वर ने कुछ संकोच के साथ कहा, "क्या सवेरा हो रहा है ?" नन्हों खिड़की का पल्ला अच्छी तरह खोलती हुई बोली, "देखिए।" कामेश्वर एक निगाह बाहर की तरफ डालते ही चमक कर बोल उठे, "हैं, यह तो सूरज निकलना चाहते हैं ! न जाने मुझ पर कहा की नींद सवार हो गई जो मै इतनी देर सोता रह गया ! मेरे नौकर चाकर न जाने क्या सोचते होंगे ?"

इसके बाद ही कुछ रुक कर कामेश्वर बोले, "मगर सच तो कहो नन्हों, कल जो भोजन तुमने मुझे कराया था उसमे तो कोई ऐसा असर नही था ? उसको खाने के बाद से ही मुझे बड़ी सुस्ती और आलस्य मालूम होने लगा था ?" नन्हो ने एक ठहाका मार कर कहा, "वल्लाह, खूब कही, कल को कहियेगा कि मुझे बेहोश कर मेरी रकम गायब कर ली ! जरा यहां से जाया करिए तो अपनी जेबें टटोल लिया कीजिए। अजी हजरत, आप तो घोड़े पर सवार हो कर यहां से निकल न गए थे ! फिर कब वापस आकर यहां सो गए ? मुझे तो खबर तक नही। मैं तो अभी अभी अपने कामो से फारिग हुई हूं तो आपको यहा देख ताज्जुब कर रही हूं कि यह क्या मामला है और आप वापस क्यों लौट आए ?"

कामेश्वर ने चिन्ता के साथ माथे पर हाथ फेरते हुए कहा, "हां यह भी तो तुम ठीक कहती हो। तुम्हारे यहां से तो मैं अपने बाग के लिए चल पड़ा था।

मगर तब फिर यहां कैसे और कब लौट आया यह तो जरा ख्याल नही पडता।" कहते कहते बहुत छिपे तौर पर कामेश्वर ने अपनी कमर मे हाथ डाला और उस ताली और कागज को ज्यों का त्यों पाकर निश्चिन्ती की सांस ली जिस बात को धूर्ता नन्हो ने अच्छी तरह लक्ष्य किया पर कुछ जाहिर न होने दिया।

कामेश्वर से नन्हों ने दो चार बातें और की तब कहा, "खैर जो कुछ भी हो, अब आपको जल्दी से जल्दी यहां से चले जाना चाहिए क्योंकि कोई गैर आदमी अगर इस जगह आ पहुँचा और उसने हम लोगों को इस तरह देख लिया तो बड़ी बदनामी की बात हो जायगी।" कामेश्वर ने तुरत कहा, "हां यह तो तुम ठीक कहती हो, मैं अभी जाता हूं, मगर इतना बता दो कि तुम अपना वादा पूरा करोगी और मेरी स्त्री और बहिन के मामले मे मेरी मदद करोगी न?" नन्हो अपने कलेजे पर हाथ रख कर बोली, "जो कुछ मैंने कहा है उसे दिलोजान से पूरा करने को हरदम तैयार रहूंगी, आप उस बारे मे कोई फिक्र न करें, हा जो बात मैंने कही है वह काम अवश्य हो जाना चाहिए।" कामेश्वर ने जवाब दिया, "उसे तुम हो गया हुआ समझो। मैंने अपने कई काबिल आदमी छोड़ दिये हैं जो बिना उस काम को पूरा किए रहने के नही।" नन्हो बोली, "तो बस मुझे भी आप सब तरह से तैयार समझिये।"

दो चार बातें और हुईं तब कामेश्वर ने उस झोपड़े से बाहर कदम निकाला, मगर कुछ ही दूर जाकर उन्होने अपने माथे पर हाथ रक्खा और दबा कर कहा, "माथे मे भी चक्कर आ रहा है और सर बेतरह दर्द कर रहा है, ठीक वही हालत है जैसी बेहोशी से उठने पर होती है। कही यह कम्बख्त मेरे साथ दगा तो नही कर रही है? खैर सब से पहिले चल कर गोपालसिंह से मिलना और उनको इस मामले की खबर करना चाहिए।"

आठवां बयान

संध्या का समय है। अपने महल के पीछे वाले नजरबाग में कुंअर गोपालसिंह अकेले पीठ पीछे दोनो हाथ बांधे सिर झुकाए टहल रहे हैं। उनके चेहरे से उदासी प्रकट हो रही है और रह रह कर वे लम्बी सांस खींचते हैं। पाठकों को बताना नही होगा कि उनकी इस हालत का सबब वही दुर्घटना है जिसमे पड कर उनके दिली दोस्त श्यामजी को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है, बहुत कोशिश करने पर भी गोपालसिंह अपने दोस्त की दुःखदाई मृत्यु का गम भूल नही पाते हैं और इनकी अवस्था देख देख इनके सभी रिश्तेदार और प्रेमियों को अकथनीय

दु:ख हो रहा है, पर वे लाचार हैं कुछ कर नही पाते ।

यकायक किसी प्रकार की आहट पा गोपालसिंह ने सिर घुमाया और देखा कि उनके दोस्त कामेश्वरसिंह चले आ रहे हैं । गोपालसिंह रुक गये और उनके पास आ जाने पर बोले, "आओ भाई कामेश्वर, क्या इस मुसीबत मे तुमने भी मुझे छोड दिया जो आज कई रोज बाद सूरत दिखला रहे हो ।"

कामेश्वर ने जवाब दिया, "श्यामजी के मरने का गम जितना आपको है उतना ही मुझे भी है, पर आपने अपने दिल मे गम के साथ साथ मायूसी को जगह दे रक्खा है और मैने वैसा नही किया है बस फर्क सिर्फ इतना ही है । मै इसी फिराक मे पड़ा हुआ हू कि उनके दुश्मनों का पता लगाऊ और उनसे बदला लूं । इसीलिए मैं इधर से उधर मारा मारा फिर रहा हूं और आपके पास आने का मौका कम ही पाता हू ।'

गोपालसिंह अपने दोस्त कामेश्वर की यह बात सुन आश्चर्य से बोले, "यह तुमने क्या कहा मेरी समझ मे कुछ न आया । किस दुश्मन की किस कार्रवाई से तुम्हारा मतलब है और किस फिराक में तुम घूम रहे हो जो मेरे पास आ नही सकते ?"

कामेश्वर० । (गोपालसिंह के और पास आके तथा उनके कधे पर हाथ रख कर धीरे से) क्या आप समझते है कि श्यामजी की मौत बिना कारण के हुई ? या क्या आपको यही विश्वास है कि वे सचमुच जान से ही मारे गये ?

गोपाल० । आज तुम्हे क्या हो गया है दोस्त जो तुम इस तरह की उखड़ी पुखड़ी बातें कर रहे हो ! क्या हम लोगों ने अपनी आंखों से उनकी नुची कटी लाश नही देखी और क्या हमारे सामने ही उनकी देह जला कर खाक नही कर दी गई।

कामेश्वर० । बेशक हमलोगों ने एक लाश देखी, और बेशक वह जला दी गई, पर इसका क्या सबूत कि वह उन्ही की लाश थी ? सिवाय कपड लत्ते और हाथयारो के और कोई नही, क्योकि आपको भो याद होगा कि उस लाश का चेहरा एक दम ऐसा बिगड़ गया था कि पहिचाना नही जा सकता था ।

गोपाल० । (बढते हुए ताज्जुब से) तो क्या तुम्हे सन्देह है कि वह लाश श्यामजी की नही थी ?

कामेश्वर० । हां परसो तक तो सन्देह ही था मगर उसके बाद से वह सन्देह भी जाता रहा और इस बात का विश्वास पैदा हो गया है ।

गोपाल० । परसों क्या कोई नई बात मालूम हुई या कोई घटना हो गई जिससे ऐसा हुआ ?

कामेश्वर० । वेशक ऐसा ही है । (जेब से एक कागज निकाल और उन्हे दिखा कर) यह किसकी लिखावट है आप पहिचानते हैं ?

कागज पर एक निगाह डालते ही चमक कर गोपालसिंह ने उसे अपने हाथ मे लिया और यह कहते हुए कि 'क्या इस लिखावट को मैं कभी भूल सकता हू ।' उसे पढ़ने लग गए । जब तक वे उस कागज को पढते रहे कामेश्वर की कौतूहल भरी निगाहे गोपालसिंह के चेहरे पर पडती रही जो रह रह कर अपनी रंगत बदल रहा था । कुमार जब उसको पढ़ चुके तो ताज्जुब भरी आवाज मे बोले, "यह तो कुछ अजीब सी बात है । यह कागज कब तुम्हे मिला ? क्या मेरी आंखें मुझे धोखा दे रही हैं या यह सचमुच श्यामजी की ही लिखावट है !"

पाठकों की समझ मे यह जरूर ही आ गया होगा कि यह वही कागज है जिसे नन्हो ने कामेश्वर को वेहोश करके अपने कब्जे मे किया मगर फिर वापस कर दिया था जिसे उस नकाबपोश ने नन्हों के कब्जे से निकाल लेने पर भी फिर लौटा दिया था, मगर उनका कौतूहल दूर करने के लिए हम इस जगह उस कागज का मजमून भी लिखे देते हैं । उस कागज मे यह लिखा हुआ था :—

"प्यारे का०—

हम लोगों का शक ठीक था । उसी कम्बख्त की सब शैतानी है, मगर मैने भी मुनासिब कार्रवाई कर डाली है । साथ वाली ताली से शिकारगढ़ वाली मेरी गुफा खोल लो और जो कुछ मिले उस पर कब्जा करके वही कार्रवाई करो जो हम लोग तय कर चुके हैं । अगर ठीक ढंग से काम हुआ और ईश्वर ने चाहा तो कभी शायद फिर भी मिल सकें ।

तुम्हारा—
दोस्त ।"

गोपालसिंह ने इस कागज को कई बार पढ़ा और ताज्जुब में डूबी हुई अपनी आंखें कामेश्वर की तरफ उठाईं जिन्होंने कहा, "पत्र लिखने वाला कौन है यह तो आप लिखावट से ही समझ गए होंगे ?" गोपालसिंह ने जवाब दिया, "क्या इसमें भी कोई शक हो सकता है ?"

कामे० । तब क्या इसको पाने बाद भी उनकी मौत का विश्वास कायम रह सकता है !"

गोपाल० । (कुछ सोच कर) खयाल यह उठता है कि यह चीठी कब लिखी गई । तुम्हे किस दिन यह चीठी मिली ? क्या इसके साथ कोई ताली भी थी ?

कामे०। चीठी की आखिरी पंक्ति इस बारे में कोई शक नहीं रहने देती कि यह उनकी नकली मौत के बाद लिखी गई है। मुझे परसों यह चीठी और (जेब से ताली निकालते हुए) यह ताली मिली.......

गोपाल०। (अफसोस की मुद्रा से) और तुम आज इस बात की खबर मुझे दे रहे हो!

कामे०। इसलिए कि आप महाराजा साहब के साथ दौरे पर गए हुए थे।

गोपाल०। हां ठीक है, शायद मेरा मन बहलाने के ही इरादे से पिताजी मुझे अपने साथ ले गए थे, पर मेरा जी न लगा और मैं वापस आ गया, और यह भी अच्छा ही हुआ नहीं तो शायद यह खुशखबरी अभी और भी कुछ समय बाद मेरे कानों तक पहुंचती। खैर तो तुमने चीठी और ताली को पा के क्या किया?

कामे०। मैं फौरन उस गुफा की तरफ गया जिसका इसमें जिक्र किया गया है...

गोपाल०। वही न जो चितवाखोह के ऊपर पड़ती है?

कामे०। हां, और जिसे वे मजाक में अपना 'खजाना' कहा करते थे।

गोपाल०। तब? वहां क्या मिला?

कामे०। (अफसोस के साथ गर्दन हिला कर) कुछ भी नहीं? यद्यपि इस बात के निशान तो बहुत काफी पाए गए कि कोई कुछ समय पहिले तक उस गुफा में मौजूद था, पर न तो कोई आदमी और न कोई चीज ही वहां मुझे मिली और न इसी बात का पता लगा कि यह ताली किस ताले को खोलती है, कोई पेटी सन्दूक आलमारी या दर्वाजा वहां ऐसा न था जिसे मैं इस ताली से खोलता और लाचार मुझे बैरंग वापस आना पड़ा।

गोपाल०। (आश्चर्य से) तो तुमने वह भीतर वाली कोठरी नहीं खोली जो उस गुफा के एक दम अन्त में पड़ती है?

कामे०। (चौंक कर) क्या उसके अन्दर कोई कोठरी भी है? मुझे तो खबर नहीं, और न ऐसी कोई जगह ही वहां पर मुझे दिखी? श्यामजी भाई ने ऐसी कोई बात तो मुझसे नहीं कही थी कि उस गुफा के अन्दर कोई गुप्त कोठरी भी है।

गोपाल०। नहीं तुम भूलते हो, उन्होंने जरूर एक बार हम लोगों से कहा था कि उस गुफा के भीतर एक कोठरी है जिसका दर्वाजा ऐसा पोशीदा है कि गैर आदमी उसे देख या समझ भी नहीं सकता? मैंने यद्यपि वह जगह देखी नहीं पर इतना जरूर कह सकता हू कि यह ताली उसी कोठरी को खोलती होगी।

कामे०। अगर ऐसा है तो मुझसे बहुत बड़ी गलती हुई, और ताज्जुब नहीं कि...

किसी गहरे तरद्दुद में पड़ कर कामेश्वर ने अपनी गर्दन झुका ली और न जाने क्या सोचने लगे। गोपालसिंह कुछ देर तक उनका मुंह देखते रहे, तब उनका हाथ पकड कर बोले, "क्या इस सिलसिले में कोई ऐसी बात हुई है जिसने तुम्हे चिन्ता में डाल दिया है?" कामेश्वर ने जवाब दिया, "बेशक ऐसा ही है, और अब जो मै सोचता हूं तो यही जान पडता है कि उस कम्बख्त ने मुझे बहुत बडा धोखा दिया। (आप ही आप) बेशक यही बात है और वह शैतान की खाला मुझे बेवकूफ बना कर अपना कोई मतलब निकाला ही नहीं चाहती बल्कि निकाल चुकी सो हो तो ताज्जुब नही।।"

गोपालसिंह ने देखा कि किसी तरह के गहरे रंज और अफसोस की छाया कामेश्वर के चेहरे पर दौड गई जिसका कारण कुछ भो वे समझ न सकते थे। आखिर उनको पूछना ही पडा, "कुछ मुझे भी तो बताओ कि किस तरद्दुद ने तुम्हें परेशान कर रक्खा है मेरे दोस्त, क्या वह कोई ऐसा बात है जिसे तुम मुझसे नही कहना चाहते।"

कामेश्वर तुरन्त बोल उठे, "नही नही कोई ऐसी बात नही जिसे में आपसे छिपाऊं पर जान पड़ता है कि मै कुछ बेवकूफी कर गया हू जिसका पूरा फल हम सभी को भोगना पड़ेगा, अच्छा सुनिए मैं सब हाल सुनाता हूं।"

कामेश्वर गोपालसिंह के साथ एक संगमर्मर का चौकी पर बैठ गये जो उसी जगह पड़ी हुई थी और इस तरह कहने लगे :—

कामे०। उन बाबाजी की लड़की नन्हों की याद तो अवश्य ही आपको होगी जिन्होंने आपको तिलिस्मी किताब देना और आपके हाथो तिलिस्म तोडवाना चाहा था?

गोपाल०। (उदासी से) हां हां, भला उन्हे भी मै भूल सकता हूं।

कामे०। वे बाबाजी न जाने कहा गायब हो गए और साथ साथ वह नन्हों भी गायब हो गई।

गोपाल०। मुझे याद है।

कामे०। किसी तरह पर श्यामजी को पता लगा कि वह नन्हों आपके महल मे घुस आई और अपना कोई मतलब सिद्ध करने के इरादे से महारानी साहिबा की बहुत मुहलगी बन रही है।

गोपाल०। (आश्चर्य से) मेरे महल मे घुस आई है! सो कैसे और कब? मैंने तो कभी उसे देखा नही और न श्यामजी ने ही कभी ऐसी कोई बात मुझसे कही थी!

कामे०। जब तक इस बात का निश्चय न हो जाय उन्होने आपसे कहना मुनासिब न समझा।

गोपाल० । अच्छा खैर, तब ?

कामे० । पहिली दफे उस तिलिस्मी किताब के बारे में जो कुछ कार्रवाई वह कर चुकी थी उसको देखते हुए उन्हे मुनासिब जान पडा कि उस पर निगाह रक्खी जाय और इस बात का पूरा पूरा पता लगाया जाय कि वह किस इरादे से महल मे घुसी है ।

गोपाल० । वह कौन सी कार्रवाई ?

कामे० । क्या आप भूल गए कि जब हम लोग उन बाबाजी के दिए पते पर तिलिस्म में घुसने की कोशिश कर रहे थे तो वहां से इसे वह गठडी ले के भागते हुए चाचाजी ने पकडा था जिसमे भानुमती का पिटारा बंधा हुआ था* यहा तक कि इसकी कार्रवाई पर बाबाजी को खुद शक हो गया कि यह हम लोगों के काम मे बाधा डाला चाहती है और इसकी कुछ बुरी नीयत है ?

गोपाल० । हां हां ठीक है, मुझे अच्छी तरह याद आ गया, अच्छा तब ?

कामे० । श्यामजी ने अपनी कई खास लौंडियां महल में पहुंचा दी, और उनके सुपुर्द यह काम कर दिया कि बराबर उस पर निगाह रक्खें । यही नही बल्कि वे खुद भी कभी कभी रात बिरात वहा जाने और टोह लेने लगे । फौज के सेनापति और महल के अफसर पहरेदारी होने के कारण उन्हें सब तरह की सुविधा थी, अस्तु नतीजा यह निकला कि एक दिन आधी रात के समय जब कि वह नन्हों महारानी साहिबा के निजी तोशेखाने में से कोई चीज चुरा कर भाग रही थी श्यामजी की लौंडियों ने उसे गिरफ्तार कर लिया और महल से इस तरह निकाल ले गईं कि किसी को कानोंकान खबर न हुई ।

गोपाल० । उसने क्या चीज चुराई थी ?

कामे० । सो मैं कह नही सकता, हम लोग शिकारगाह में थे जब की यह बात है, मगर इस बात की खबर पा के श्यामजी उसकी जाच करने को निकले । और किसी से तो इस बारे में कुछ कह न सके पर मुझसे मिल कर इतना जरूर कह गए कि 'मेरे आदमी उसे एक गुप्त जगह में बन्द कर आए हैं और मैं यह देखने जा रहा हूँ कि वह क्या चीज चुरा के भाग रही थी, महाराज या कुंअर साहब मुझे पूछें तो कुछ बहाना कर देना ।' बस इतना कह के जो वे गये तो फिर उनकी सूरत दिखाई न पड़ी और दूसरे दिन जगल मे वह लाश मिली ।

गोपाल० । वे कहां गए, क्या किया, और नन्हो को कहां उन्होंने रक्खा था?

* देखिए पहिला भाग, दसवां बयान ।

यह सब कुछ मालूम न हुआ ?

कामे०। कुछ भी नहीं। परसों जब यह चीठी और ताली मुझे मिली उसके पहिले तक आपकी तरह मैं भी उन्हे मुर्दा समझे हुआ था और यद्यपि यह शक मुझे जरूर हुआ करता था कि हो न हो इसी घटना अर्थात् नन्हों द्वारा की गई चोरी से सम्बन्ध रखने वाले किसी कारण से ही उनकी जान गई है फिर भी यह सोचने की मैं हिम्मत न कर सकता था कि वे जीते होंगे, पर जैसा कि मैंने आपसे कहा इस चीठी को पा के मेरा विचार बदला और मुझे निश्चय हो गया कि वे जीते है।

गोपाल०। यही चीठी और ताली पा के तुम उस गुफा में गए और वहां खोज की पर कुछ न मिला ?

कामे०। हा मगर इस बीच मे कुछ और भी बातें हो गईं !

गोपाल०। वह क्या ?

कामे०। मेरी स्त्री के बारे में जो कुछ हुआ और जिस तरह उसकी मृत्यु हुई वह सब तो आपको मालूम ही है।

गोपाल०। (नीची गर्दन करके) इस बारे में जो कुछ षड्यन्त्र हुए और मेरी मां ने इस सम्बन्ध में जो बुरा रुख अख्तियार किया वह सब मैं जानता हू क्योंकि इस सम्बन्ध मे पहिले पहिले श्यामजी ने मुझे ही वह कागज दिखा कर आगाह किया था जो उन्होने गौहर के घर पर पाया था*। मुझे बहुत अफसोस होता है जब मैं सोचता हूं कि मेरी मां......

कामे०। खैर वह सब बातें जाने दीजिए, होनहार किसी तरह टल नहीं सकता, जो किस्मत में बदा है वह होके ही रहेगा, हम लोगो ने कुछ कम कोशिश उस मुसीबत से बचने के लिए नही की मगर......

गोपाल०। कुछ नही, मेने तुम्हे बाहर भेज दिया था पर तुम पुनः लौट आए, अगर न लौटे होते तो कभी यह न होता।

कामे०। (रूखी हंसी हंस कर) और तब उसे सांप न काटता! वह जहां रहती वही ऐसा होता। जब उसकी मौत इस तरह पर बदी थी तो हम या आप कर ही क्या सकते थे। खैर उस बात को जाने दीजिए और जो कुछ मैं कहता हूँ सुनिए। मेरी स्त्री की मौत के पहिले किसने क्या किया यह सोचने की मेरी अब

* देखिए पहिला भाग दूसरा बयान। कामेश्वर और भुवनमोहिनी के बारे में पूरा पूरा हाल भूतनाथ उपन्यास में लिखा जा चुका है इस लिए इस उपन्यास में उसका जिक्र बिलकुल नहीं किया गया।

कुछ भी इच्छा नही रह गई थी मगर उसकी मौत मे कोई रहस्य तो नही छिपा है यह जानने की इच्छा अवश्य थी और अब तक बनी हुई है।

गोपाल०। तो क्या इसीलिए तुमने शहर मे रहना छोड़ जगल और पहाड़ों की शरण ली थी ?

कामे०। पहिले तो रञ्ज और अफसोस ने वैसा मुझसे कराया था पर बाद मे कुछ और भी सबब पड़ गए जिनमे से एक यह श्यामजी वाली वारदात भी है। मैं अपने उसी बाग मे रहा करता था जब मुझे पता लगा कि नन्हों सभो की निगाहों से बहुत छिप कर एक पहाड़ी नदी के किनारे छोटे से झोपड़े मे इस तरह रहती है कि वहां उसके पास सहज में कोई पहुच नही सकता। मुझे बहुत ताज्जुब मालूम हुआ कि यह क्या बात है और मैं उसके पास पहुंचा पर वह शैतान की खाला क्या सहज ही में कुछ बताने वाली थी! उसने बडे बड़े सब्जबाग मुझे दिखाए मगर मतलब की कोई बात न बताई।

गोपाल०। जब तुम्हे मालूम ही हो चुका था कि वह मेरी मां के तोशेखाने से कुछ चुरा के भागी है तो उसे सीधे पकड़ के सरकारी नौकरों के हवाले करना था, वे मारपीट कर सब कुछ दरियाफ्त कर लेते।

कामे०। हां ऐसा भी कर सकता था मगर एक भारी सबब से वैसा करना मैने मुनासिब न समझा जिसके बारे में अभी आपसे कहूगा। फिलहाल श्यामजी वाला किस्सा मुझे खत्म कर लेने दीजिए क्योंकि जिस घटना का हाल मैं कहने वाला हूं उसके बाद से मेरा शक उस कम्बख्त पर बहुत बढ़ गया है।

गोपाल०। अच्छी बात है, वही कहो।

कामे०। उसके यहां दो ही चार दफे आने जाने पर पता लग गया कि कुछ दाल में काला जरूर है क्योंकि उसकी बातों से कुछ ऐसा जाहिर होता था मानों मेरी स्त्री अपनी मौत से नही मरी है बल्कि उस दुर्घटना के साथ दारोगा भूतनाथ और शिवदत्त का भी कुछ सम्बन्ध है, यही नही उसकी बातों से कुछ इस तरह का भी आभास मिला कि मेरी स्त्री मरी नही जीती है और इसलिए......

गोपाल०। (चौंक कर) है!

कामे०। जी हां, यही बात, पर मुझे अभी तक भी विश्वास नहीं होता कि वह सच कहती होगी। खैर जो कुछ भी हो मगर उसकी इस ढंग की बातें सुनने बाद मुझे यही मुनासिब जान पड़ा कि उससे रफ्त जप्त बढ़ाऊं और यह जानने की कोशिश करूं कि ठीक ठीक क्या मामला है या उसकी बातों में कहां तक सच्चाई

है। मैं उसके यहां अकसर आने जाने लगा और कभी कभी तो घंटों बल्कि पहरों तक उसके पास उसी झोपड़े में बैठने लगा बल्कि मैंने यह भी कोशिश की कि वह उस स्थान को छोड़ मेरे बाग या घर में आ जाय पर सो उसने मंजूर न किया। वह किस नियत से शहर और आबादी को छोड़ उस वीरान बियाबान में रहती है यह भी मुझ पर ठीक ठीक जाहिर न हुआ यद्यपि ऊपर से वह यही प्रकट करती थी कि अपने पिता के गम में वह ऐसा कर रही है जो न जाने कहां गायब हो गए है। खैर वह सब जो कुछ भी हो, पर जिस दिन मुझे श्यामजी की चीठी मिली...

गोपाल०। हां यह चीठी कैसे तुम्हारे पास पहुंची ?

कामे०। अपने बाग से जमानिया की तरफ आपसे मिलने के लिए आ रहा था जब रास्ते में एक कूएं पर सुस्ताने के लिए जरा देर ठहर गया। उस जगह एक मुसाफिर पहिले से लेटा हुआ था जो मुझे देख उठ बैठा और यह ताली तथा चीठी मुझे दिखा कर बोला, "अगर आपका नाम कामेश्वरसिंह है तो यह आपके लिए है।" मै उससे कुछ पूछता मगर चीठी के अक्षर पहिचानते ही चौंक पड़ा और उसको पढ़ने में ऐसा लीन हुआ कि उसी बीच वह आदमी न जाने किधर गायब हो गया, सिर उठाया तो उसका कही पता न था।

गोपाल०। खैर तब तुमने क्या किया ?

कामे०। इधर आने का विचार छोड़ मैं पुनः अपने बाग को लौट गया क्योंकि इस चीठी ने मेरे मन में तरह तरह के ख्याल पैदा कर दिए थे। जिस गुफा का इसमें जिक्र किया गया है उसका हाल मुझे मालूम था अस्तु मुनासिब इन्तजाम कर मैं उसी वक्त उस तरफ को रवाना हो गया, पर जैसा कि मैंने कहा, उस जगह यद्यपि इस बात का सबूत तो जरूर मिला कि कोई वहां रहता था, पर कोई चीज मेरे हाथ न आई, अब आपकी जुबानी मालूम हुआ कि वहा कोई गुप्त कोठरी भी है।

गोपाल०। बेशक ऐसा ही है, मैं तुम्हारे साथ चलूंगा और उस जगह की अच्छी तरह तलाशी लूंगा, जरूर कोई न कोई मतलब की चीज दिखाई पड़ेगी।

कामे०। बेशक ऐसा ही करना पडेगा। खैर तो उस गुफा से जब मै निराश वापस लौट रहा था तो उस समय संध्या हो चुकी थी, बल्कि कुछ रात जा चुकी थी। थका हारा और उदास तो था ही, ऊपर से कुछ शामत की मार थी कि मेरे मन मे ख्याल हुआ कि नन्हो की तरफ से होता हुआ चलूं जिसकी झोपड़ी उस पहाड़ी से थोड़ी ही दूर पर पड़ती थी। मेरी सूरत देख वह धूर्ता शायद समझ गई कि कुछ न कुछ मामला जरूर है। उसने कई तरह के सवाल मुझसे किए और

यद्यपि मैंने असल बात को बहुत छिपाया तब भी मुझे जान पड़ता है कि उसको जरूर किसी तरह का शक हो गया क्योंकि उसने मुझे कोई चीज मिला कर बदहवास कर दिया।

गोपाल०। बदहवास कर दिया!

कामे०। हां और इसका पता मुझे इस तरह लगा कि मुझे बेतौर नींद आने लगी और यद्यपि मैं वहां से अपने घर के लिए रवाना जरूर हुआ पर न जाने कैसे क्या हो गया कि जब आंख खुली तो देखता क्या हूं कि सवेरा हो चुका है और मैं उसके झोपड़े मे ही एक खाट पर पड़ा हूं। यद्यपि मेरा कोई नुकसान न हुआ, न कोई चीज गायब हुई थी और न वह चीठी या ताली ही मेरे पास से गई थी फिर भी मेरा शक बढ़ता ही गया और धीरे धीरे यह विश्वास हो गया कि कोई रहस्य इस मामले मे जरूर है। मैं नन्हो के यहां से बिदा हो गया पर मेरा मन न माना और मैं सीधा आपके पास आया पर यहां आने पर मालूम हुआ कि आप हैं नहीं महाराजा साहब के साथ गए हुए हैं, लाचार वापस लौट गया, अब आज आपके आ पहुंचने की खबर पा के पुनः आया हूं। सारा किस्सा तो आपने सुन ही लिया, अब जो मुनासिब समझिए सो कीजिए।

गोपाल०। मुनासिब गैरमुनासिब क्या, सब से पहिले तो उस गुफा मे पहुचना और उसके अन्दर वाली कोठड़ी खोल कर देखना चाहिए कि वहां कोई चीज पाई जाती है या नहीं।

कामे०। ठीक है, ऐसा ही कीजिए, मगर इसके लिए बिना महाराज साहब की इजाजत लिए जाना तो ठीक न होगा।

गोपाल०। वे तो हैं नहीं पर चाचाजी (भैयाराजा) मौजूद हैं और भाग्यवश वह देखो वे इधर ही को आ भी रहे हैं, अस्तु उनसे सब हाल कहके मैं अभी इजाजत लिए लेता हूं, चलो तुम भी मेरे साथ।

गोपालसिंह कामेश्वर को साथ लिए उस तरफ को बढ़े जिधर से भैयाराजा आते हुए दिखाई पड़ रहे थे।

नौवां बयान

कैलाश-भवन के एक एकान्त कमरे मे कुंअर गोपालसिंह और इन्द्रदेव बैठे आपस मे बातें कर रहे हैं। गोपालसिंह के चेहरे से फिक्र और तरद्दुद जाहिर हो रहा है और इन्द्रदेव भी चिन्ता से खाली नहीं जान पड़ते।

गोपालसिंह कह रहे हैं :—

गोपाल० । श्यामजी की मौत ने तो मुझको घायल कर ही दिया था ऊपर से कामेश्वर के इस प्रकार गायब हो जाने से तो मेरी कमर ही टूट गई है । उनके रहने से मुझे बहुत कुछ ढाढ़स बंधी हुई थी, खास कर उनकी यह आखिरी बात श्यामजी के बारे में सुन कर तो मै तरह तरह की आशाएं करने लगा था, पर अब तो ऐसा जान पड़ता है कि मेरी किस्मत ने बिल्कुल ही जवाब दे दिया है । बची खुची उम्मीद चाचाजी से थी पर उनके बारे मे भी जो कुछ आप कह रहे हैं उससे जान पड़ता है कि अब बहुत दिनों तक उनकी सूरत देखने की भी उम्मीद नही की जा सकती ...

इन्द्र० । हां बात तो कुछ ऐसी ही है । यद्यपि उनके इस निश्चय का मैं समर्थक नहीं हूं पर दारोगा साहब का पक्ष लेकर महाराज साहब ने उन्हे कुछ इस तरह नाराज कर दिया है कि अब वे आप लोगो से मिलने का तो जिक्र ही क्या जमानिया का नाम तक लेना पसन्द नहीं करते और कहते है कि जब तक दारोगा की किस्मत का फैसला नही हो जाता वे राजधानी के अन्दर पैर नहीं रखेंगे ।

गोपाल० । ठीक है, मगर उनकी जो कुछ नाराजगी हो सकती है वह पिताजी से हो सकती है, मैंने कम से कम अपने जानते मे तो उन्हे कोई भी ऐसा मौका नही दिया है कि वे मुझसे बुरा मानें या मुझे भी नफरत की निगाह से देखें ।

इन्द्र० । राम राम राम, यह भी भला क्या बात आप कहते है ! आपको और नफरत की निगाह से वे देखें ? यह गैरमुमकिन हैं । वे आपसे बहुत ज्यादा मुहब्बत करते हैं और आपकी ओर से उनका खयाल बिल्कुल नही बदला है, बस आपके पिताजी से ही वे न जाने क्यों कुछ ऐसे कुरुख से हो गए है ।*

गोपाल० । यह सब उसी कम्बख्त दारोगा की शैतानी है, वह पिताजी को न जाने क्या क्या पाठ पढ़ाया करता है कि वे उसके आगे अपने धर्म और ईमान तक को भूल बैठे है । न जाने उसने क्या जादू उन पर कर दिया है । क्या कहूं, आप मुझे बार बार रोक देते है, नही तो मेरा तो मन करता है कि उस कम्बख्त का सर काट कर फेंक दूं !

---

* भैयाराजा और दारोगा की तनातनी और इस सबब से अपने भाई अर्थात् जमानिया के महाराज गिरधरसिंह से नाराज होकर उनके चले जाने का हाल भूतनाथ उपन्यास में खुलासा तौर पर लिखा जा चुका है । पाठकों को याद रखना चाहिये कि जमाना तेजी से बीत रहा है और अब वह वक्त पहुंचा ही चाहता है जिसका हाल भूतनाथ उपन्यास के आखिरी हिस्सों में लिखा गया है ।

इन्द्र० । नहीं नहीं नहीं, ऐसा खयाल भी न कीजियेगा ! जब वह वक्त आवेगा उसके कर्म आपसे आप उसको मटियामेट कर देंगे, मगर अभी वह मौका नहीं आया।

गोपाल० । मगर वह मौका जाने कब आवेगा और उसके पहिले ही वह हम सभों को मटियामेट कर डालेगा ! न जाने आप उस कम्बख्त का पक्ष इतना ज्यादा क्यों लेते रहते है ? आखिर दोस्ती और मुरौवत का कहीं अन्त भी तो होना चाहिए।

इन्द्र० । (हंस कर) आप लोगों का यह खयाल बिलकुल गलत है कि मैं अपना गुरुभाई या दोस्त होने के नाते दारोगा के साथ इस कदर रिआयत करता आ रहा हूं । गो कि इस बात का कुछ लिहाज मुझे जरूर ही है लेकिन यह बात मुझे इस हद तक मजबूर नहीं कर सकती है कि वह आप लोगो पर सफाई का हाथ फेरता रहे और मैं चुपचाप बैठा देखा करूं । इसका कुछ दूसरा ही सबब है जिसे अफ-सोस है कि मैं अभी बयान करने की हिम्मत नहीं कर सकता । खैर इन बातों को जाने दीजिए और यह बताइये कि नन्हों का कुछ पता लगा ।

गोपाल० । कुछ भी पता नहीं ! न जाने वह कम्बख्त कहां गायब हो गई है कि कई आदमी इस काम पर तैनात करने पर भी उसका कुछ पता नहीं लग रहा । कल ही मैंने कुछ आदमियो को....

इन्द्र० । (बात काट कर) खैर अब आप उसकी फिक्र जाने दीजिये । मुझे उसका पता लग गया है और मैंने अपने आदमी उसके पीछे लगा दिये हैं जो जैसे भी बनेगा उसे गिरफ्तार करके ही छोड़ेंगे ।

गोपाल० । (ताज्जुब से) आपको उसका पता लग गया ! कहां छिपी हुई है वह कम्बख्त ?

इन्द्रदेव० । (गोपालसिंह की तरफ झुक कर धीरे से) रोहतासगढ में दिग्विजयसिंह के खास महल मे आज कल वह विराज रही है ?

गोपाल० । रोहतासगढ़ मे, दिग्विजयसिंह के यहां ! इसका क्या मतलब ? उनसे इसका क्या सम्बन्ध ?

इन्द्र० । (मुस्कुरा कर) बहुत ज्यादा सम्बन्ध है, मैं तो यहां तक कहूंगा कि बहुत सी बातों के जो इधर हुई या हो रही है मुख्य कारण वे ही है । उनसे और राजा शिवदत्त से भी आज कल बहुत गठ रही है और ऐसा जान पड़ता है कि इन दोनों की बदौलत हम लोगो को तकलीफ उठानी पड़ेगी । खैर जो कुछ होगा देखा जायेगा, आखिर हम लोगो के सिर पर एक परमात्मा तो हई है, वह हमारी रक्षा करेगा ।

गोपाल० । (बढ़ते हुए ताज्जुब से) आपकी बातों से तो कुछ ऐसा जाहिर हो

रहा है मानों उन लोगों से हमे बहुत अन्देशा हो।

इन्द्र०। हां कुछ ऐसी ही बात है।

गोपाल०। तो मुझे भी तो कुछ बताइए कि क्या मामला है। दिग्विजयसिंह हम लोगो से दुश्मनी करेंगे इस बात की तरफ तो अभी तक मेरा खयाल भी न गया था।

इन्द्र०। और मेरा भी न जाता अगर एक दोस्त ने मुझे सावधान न कर दिया होता।

गोपाल०। वह कौन ?

इन्द्र०। आप उसे नही जानते और उसने बहुत बड़ी कसम देकर मेरा मुंह बन्द कर दिया है इसलिए अभी तो मैं उसका परिचय आपको दे नही सकता मगर उसने जो कुछ मुझे बताया है उसका सारांश मै आपको बताए देता हूं ताकि आप होशियार हो जायं।

इतना कह इन्द्रदेव गोपालसिंह की तरफ झुक गए और धीरे धीरे उनसे कुछ बातें करने लगे। बातों का यह सिलसिला बहुत देर तक कायम रहा और सन्ध्या होने को आ गई थी जब गोपालसिंह जमानिया जाने के लिए तैयार होकर मकान के बाहर निकले। इन्द्रदेव उनके साथ साथ फाटक तक आए और जब वे अपने साथ के आदमियों सहित वहा से रवाना हुए तो खुद भी घोड़े पर सवार होकर कुछ दूर तक उनके साथ साथ गए और उनके विशेष आग्रह पर वापस लौटे। उस समय उन्होंने देखा कि उनकी थोड़ी देर की गैरहाजिरी मे एक नकाबपोश उनके दर्वाजे पर आ पहुँचा है जो घर के भीतर न जा बाहर फाटक पर ही इधर से उधर टहल रहा है। इन्द्रदेव उस नकाबपोश को देखते ही चौंक पड़े और तेजी से पास पहुच कर उससे बोले, "है, आप इस वक्त किस तरह आ पहुंचे !!" वह जवाब मे बोला, "एक बड़े जरूरी सबब से मुझे आना पड़ा। मै और भी जल्दी पहुंचता मगर कुंअर साहब आए हुए थे इससे उनके चले जाने तक दूर ही रुकना पड़ा।"

इन्द्रदेव ने यह कहते हुए उस नकाबपोश का हाथ पकड़ लिया, "मुझे भी आपसे बहुत कुछ कहना है अस्तु भीतर चलिए तो बातें हों ! मगर आजकल का जमाना बड़ा नाजुक है इसलिए पहिले वह गुप्त इशारा कर दीजिए ताकि मुझे विश्वास हो जाय कि आप सचमुच आप ही हैं।"

नकाबपोश यह सुन हंस पड़ा और तब उसने इन्द्रदेव की एक उंगली पकड़ कोई विचित्र ढंग का इशारा किया। इन्द्रदेव ने उसे गले से लगा लिया और तब

साथ लिए उसी कमरे मे पहुचे जिसमें अभी कुछ ही देर पहिले कुंअर साहव के साथ बैठे हुए थे।

हमे उम्मीद थी कि यहां पहुंच कर यह नकावपोश अपनी नकाव उतार देगा और तब हमे इसके पहिचानने का मौका मिलेगा मगर उसने ऐसा न किया और न इन्द्रदेव ने ही ऐसा करने का कोई आग्रह किया, इससे हम इसकी शकल देख न सके और यही कारण है कि इसका कोई परिचय अपने पाठकों को वता नही सकते फिर भी यह आदमी रहस्यमय अवश्य है और इसकी बातें भी मतलव से खाली नही हैं जो कि पाठकों को इन दोनों की बातचीत से ही मालूम हो जायगा।

इन्द्रदेव ने इस नकाबपोश को लाकर गद्दी पर बैठाया और आप भी उसके पास ही बैठते हुए पूछा, "अच्छा तो बताइए कि वह जरूरी सबब कौन सा है जिससे आपको यहां आना पड़ा क्योंकि आखिरी दफे आखिरी बातचीत से जाहिर हुआ था कि अब बहुत दिनों तक आपसे भेंट न हो सकेगी।"

नकाव०। हां मैं सुनाता हूं, मगर इसके पहले आप इतना वता दीजिए कि कुंअर साहब पर आपने मेरा भेद प्रकट तो नही कर दिया?

इन्द्र०। नहीं नहीं, तो मैं कैसे कर सकता था? जब आपने मना कर दिया है तब फिर मैं किसी को आपका परिचय कैसे दे सकता हूं?

नकाब०। हा ठीक है, और मेरी प्रार्थना है कि आप तब तक मेरा रहस्य किसी पर प्रकट न करें जब तक कि वह सारी काम हो न जाय जिसका इशारा मैं कर चुका हूँ। आप जानते ही हैं कि मेरा सम्वन्ध उन लोगो से किस प्रकार का है जिन्होने इस मामले मे कुंअर साहब या जमानिया राज्य से बैर बांधा है अस्तु जब तक मैं छिपा रह सकता हूँ तभी तक कुछ काम भी कर सकता हूं, प्रकट रूप से कुछ भी करने मे मै बिल्कुल असमर्थ हू।

इन्द्र०। सो क्या मैं समझता नही हूँ! आप इस बारे मे बिल्कुल निश्चिन्त रहिए, जब तक आपकी आज्ञा न पाऊंगा मैं आपका भेद किसी पर भी प्रकट न करूंगा!

नकाव०। ठीक है, अच्छा अब सुनिए कि मैं किस लिए आया हूं। मुझे निश्चित रूप से मालूम हो गया कि पुजारीजी तिलिस्म मे फंस गए हैं जहां से बिना तिलिस्म टूटे उनका निकलना नही हो सकता, अस्तु जो काम हम लोग करना चाहते है उसमे उनसे मदद पाने की आशा करना अब बिल्कुल व्यर्थ है।

इन्द्र०। पुजारीजी और तिलिस्म में फंस गए! सो कैसे हो सकता है। तिलिस्म के बारेमें इतनी जानकारी रखते हुए भी वे धोखा खा जांय यह तो बड़े आश्चर्यकी बात है।

नकाब०। उनको धोखा देने वाले ये ही कम्बख्त नन्हों और भूतनाथ है जिन्होंने उनके हाथ पैर बाध के उन्हे एक अंधे कूएं में इसलिए फेंक दिया था कि वे उसी के भीतर मर खप जांय। किसी तरह उनकी जान बच गई इसलिए कि वह कूआं तिलिस्मी था, मगर फिर भी जैसा कि मैंने कहा, वे तिलिस्म में फंस गए और अब विना तिलिस्म टूटे बाहर नही हो सकते और न हमारी कोई मदद ही कर सकते हैं।

इन्द्र०। (ताज्जुब से) अगर भूतनाथ और नन्हों की यह कार्रवाई है तो क्या ताज्जुब कि पुजारीजी के कब्जे से तिलिस्मी किताब और भानुमति का पिटारा भी उन्ही दोनो ने गायब किया हो?

नकाब०। बेशक ऐसा ही है। उन कम्बख्तों को तिलिस्म की सैर करने और उसका खजाना निकालने का शौक चर्राया और इसलिए उन्होंने यह कार्रवाई की। जब वैसा न हो सका तब उन्होंने दूसरा चक्र रचा और महारानी के पास जो तिलिस्मी किताब है, वही जो सोने वाले उल्लू के पेट में बन्द है—उसको लेने की कोशिश की। आपको शायद मालूम होगा कि भूतनाथ ने जमानिया की महारानी को अपने कामों से खुश किया और इनाम में वह सोने वाला उल्लू ले लिया!

इन्द्र०। मुझे इस सम्बन्ध में कुछ कुछ हाल मालूम हुआ है। भूतनाथ ने क्या क्या कार्रवाई की और किस काम के बदले में कैसे वह जड़ाऊ तोहफा पाया इसकी कुछ खबर मेरे ऐयार और शागिर्द मुझे दे चुके हैं बल्कि मुझसे ही सुन कर गोपालसिंह और कामेश्वर भी इस मामले से थोड़ा बहुत परिचित हो चुके थे जब कामेश्वर यकायक गायब हो गए और हम लोगों को श्यामजी के साथ साथ कामेश्वर की भी मौत......

नकाब०। नही नही नही, आपके मन से वही ख्याल दूर करने मुझे आना पड़ा है क्योंकि मुझे ठीक तौर से पता लग चुका है कि वे मरे नहीं बल्कि अभी तक जीते है मगर अपने दुश्मनों के फेर मे इस तरह पड़ गए हैं कि जल्दी निस्तार पाना मुश्किल है।

इन्द्र०। (खुश होकर) हैं, क्या आप ठीक कहते हैं कि वे जीते हैं!

नकाब०। मैं बिल्कुल ठीक कहता हूं। अभी यह कहना तो मेरे लिए सम्भव नही है कि वे किस जगह कैद हैं पर इतना जरूर कह सकता हूँ कि वे मरे नही जाते हैं।

इन्द्र०। (जोश के साथ) आप मुझे बस बतला भर दीजिये कि वे किसकी कैद मे हैं, फिर देखिए चौबीस घण्टे के अन्दर मैं उन्हे छुड़ा लाता हू कि नही!

नकाब०। आपकी सामर्थ्य का हाल मुझे बखूबी मालूम है मगर मैं उस आदमी का परिचय देते डरता हूं जिसकी कैद मे वे हैं। न जाने आप....

इन्द्रदेव ने इतना सुनते ही आग्रह के साथ उस ग्रजनवीं का हाथ पकड़ लिया और कहा, "नही नही, आप मुझे जरूर बतला दीजिए कि वे किसके कब्जे में हैं। अभी अभी गोपालसिंह और मैं यही इसी कमरे में बैठे हुए उनके बारे में कितना कितना तरह के अफसोस कर चुके और तूमार बाध चुके हैं। अगर आप गोपालसिंह के सच्चे हितू और प्रेमी हैं तो यह रहस्य खोल ही दीजिए।"

नकाब०। (कुछ हिचकिचाहट के बाद इन्द्रदेव की तरफ झुक कर) वे और किसी की नही खास महाराज दिग्विजयसिंह का कैद मे है।

इन्द्र०। दिग्विजयसिंह की कैद में! यह आप क्या कहते है? उनको कामेश्वर से भला क्या दुश्मनी हो सकती है?

नकाब०। (मुस्कुरा कर) शायद आप वे बातें भूल गए जो मैं पहिली दफे आपसे कह गया था। नन्हों ने उनको कुछ इस तरह अपने बस में कर रक्खा है कि उसके लिए वे सब कुछ करने को तैयार है।

इन्द्र०। ओह हाँ ठीक है, अब मैं सब समझ गया। और वह कम्बख्त मेरे दोस्त पर मरती है तथा उसे अपने जाल में फसाने के लिए सब तरह की कार्रवाई करने को तैयार है। मगर इसके लिए वह उनके साथ दुश्मनी भी करेगी यह तो विश्वास नही होता।

नकाब०। दिग्वजयसिंह को भुलावा दे उसने कामेश्वर को अपने कब्जे मे कर लिया है और इस तरह अपना मतलब निकालना चाहती है। मगर उसका असली अभिप्राय तो तिलिस्म की दौलत हथियाना ही है और इसके लिए वह सब कुछ करने को तैयार है। वह अपने काम मे सफल हो भी गई होती पर वह तो कहिए कि तिलिस्म की ताली उसके हाथ मे आकर भी निकल गई और वह लंडूरी ही रह गई।

इन्द्र०। इसका क्या मतलब?

नकाब०। यह बहुत लम्बा चौड़ा किस्सा है मगर मैं मुख्तसर मे बयान करता हू क्योंकि आपके लिए इसे जान रखना आवश्यक है। नन्हों के मन मे तिलिस्म की सैर करने और वहा की दौलत हथियाने का ख्याल बहुत दिनों से जोश मार रहा था। इसके लिए उसने भूतनाथ को अपना साथी बनाया और दोनों ने मिल कर बाबाजी को धोखा दे बल्कि यो कहना चाहिए कि उन्हे तिलिस्म में झोंक के

उनके पास वाली किताव तथा उस भानुमति के पिटारे पर कब्जा किया, जिसे बावाजी आपके दोस्त कुंअर गोपालसिंह को मदद पहुंचाने के इरादे से देवीरानी से मांग लाए थे, यही नही उस सामान की मदद से दोनों तिलिस्म के अन्दर घुसे भी मगर सिवाय कुछ जगहो की सैर कर लेने के और कुछ कर न पाए, न वहां की ज्यादा कुछ दौलत ही हथिया सके, मगर हा यह जरूर हुआ कि इससे दोनो की भूख आर भी वढ़ गई और वे उस असली ताली को हथियाने की फिक्र मे पड़े जिसके विना जैसा कि आप अच्छी तरह जानते है, तिलिस्म खोला नही जा सकता न वहां की दौलत ही निकाली जा सकती है।

इन्द्र०। अच्छा! खैर तव क्या हुआ?

नकाब०। कुछ तो यह कि पुजारीजी शायद जीते न रह गए हों और निकल कर वदला न लें और कुछ अन्य खयालो से भी, नन्हों को भूतनाथ ने दारोगा के सुपुर्द कर दिया और उसने जमानिया के महल मे और महारानी की खास खवासो मे भरती करा दिया, फिर भी शायद भूतनाथ उसके पास आता जाता रहता था—खैर उस विषय में जो कुछ भी हो। उस तिलिस्मी ताली की खोज में दोनों दो तरह से काम करने लगे। भूतनाथ तो जमानिया की रानी को प्रसन्न करके उनसे वह तिलिस्मी सौगात, जडाऊ उल्लू—ले लेने की तर्कीव में लगा और इधर नन्हों ने दारोगा को अपने जाल में फंसा कर उससे वह तिलिस्मी कलमदान झटक लिया जिसके अन्दर ताली थी।

इन्द्र०। कौन कलमदान?

नकाब०। वही जिसे पुजारीजी कुंअर गोपालसिंह को देना चाहते थे और जिसके वारे में मैं आपको खबर दे चुका हूं कि दारोगा साहव ने दिग्विजयसिंह को उभाड कर ठीक उस मौके पर गायब करा दिया जब कि ये गोपालसिंह को उसे दे ही रहे थे तथा इसके बाद चकमा देकर खुद अपने कब्जे में कर लिया।

इन्द्र०। हां ठीक है, यह आपने कहा था, मगर क्या वह कलमदान दारोगा के कब्जे में अब नहीं रह गया? उसी के लिए तो मै दारोगा को बराबर छोड़ता चला आ रहा था क्योंकि वह न जाने कहां छिपा कर उस चीज को रक्खे हुए था कि कई बार उसके घर और तोशेखाने की पूरी तलाशी ले चुकने पर भी मुझे उसका जरा भी पता न लगा। मुझे यही विश्वास हो गया था कि वह चीज कहीं गाड़ दी गई है और इसलिये यही सोच कर कि वह कलमदान कहीं गडा ही रह गया तो गोपालसिंह के तोड़े तिलिस्म भी कदापि टूट न सकेगा तरह तरह के पाप करते

रहने पर भी उस दुष्ट को मैं बराबर छोडता आ रहा था ! आज ही कुंअर साहब उसकी कुछ बदमाशियों का फिक्र करके कह रहे थे कि 'मन करता है कम्बख्त का सर काट कर फेंक दूं !' मगर मैने समझा बुझा कर ठढा किया। यद्यपि उनसे कहा तो नही मगर खयाल मेरा यही बना हुआ है कि दारोगा अगर मर गया और वह कलमदान न मिला तो तिलिस्म भी बिना टूटे ही रह जायगा।

नकाब। नही तो यह ख्याल आपका गलत भी नही है। वह चीज यद्यपि दारोगा के हाथ से निकल कर नन्हों के कब्जे में चली गई थी मगर उसके पास से हट कर अब पुन: दारोगा साहब ही के हाथ मे पहुच गई है।

इन्द्र०। सो कैसे ?

नकाब। नन्हो का ठीक ठीक इरादा उस कलमदान को लेने से क्या था या उसके बारे मे क्या कुछ पट्टी उसने दारोगा को पढ़ाई यह तो मुझे मालूम न हो सका पर इतना मालूम है कि किसी तरह मय उस कलमदान तथा कुछ और भी जरूरी कागजों के वह आपके श्यामलालजी के कब्जे में आ फंसी जिन्होन उसे अपनी एक गुप्त गुफा में कैद कर दिया।

इन्द्र०। अच्छा ! तब तो वह कलमदान भी उनके हाथ लग गया होगा ?

नकाब०। हां, और वे उसे गोपालसिंह के पास पहुंचाते, मगर ऐन मौके पर दुश्मनो ने धोखा दे के उन्हे गायब करा दिया और आप लोगों में वे मरे मशहूर हो गए, तो भी किसी तरह उन्होने एक चीठी कामेश्वर के पास भेजवाई और उन्हे यह खबर दी कि नन्हों और उसके साथ मिला हुआ सामान किस तरह किस जगह बन्द किया गया है। कामेश्वर वहा गए, पर अफसोस उनके उस गुफा मे पहुँचने के पहिले भूतनाथ नन्हों को छुडा ले गया और जहा पर वह कलमदान श्यामजी ने छिपाया था उस जगह का पता कामेश्वर लगा न सके जिससे उन्हे बैरग लौटना पडा। लौटते समय रास्ते में ही वे नन्हों के फन्दे में पड गये जिसने उन्हे धोखा देकर वह चीठी पढ़ ली और तब खुद उस गुफा मे घुस कर वह कलमदान निकाल लिया।

इन्द्र०। तो वह उसी के पास होगा भी अभी ?

अज०। नही, उसी मौके पर न जाने कैसे सुराग पा कर दारोगा वहा पहुंच गया जिसने कलमदान पुन: अपने कब्जे मे कर लिया, पर नन्हों के साथ कुछ खुटाई न करके उसे यो ही छोड दिया।

इन्द्र०। अच्छा तो यही सबब है कि कामेश्वर जब कुंअर गोपालसिंह को लेकर उस गुफा में गये तो वहा कुछ और चीजे तो मिली मगर वह कलमदान कही न दिखा।

अज० । बेशक ऐसा ही है, और इसी के बाद नन्हों भी अपना वह अड्डा छोड रोहतासगढ़ पहुंच गई जहा उसने राजा दिग्विजयसिंह पर अपना मोहिनी अस्त्र चला कर उन्हे जाल में फंसाया और कामेश्वर को गिरफ्तार करा लिया !

इन्द्र० । मगर इस काम में क्या चालाकी की गई कि हम लोगो को कुछ भी असली भेद मालूम न हो पाया और हम यही समझते है कि उनका देहान्त हो गया ?

अज० । यह महाराज दिग्विजयसिंह के ऐयारो की बदौलत हुआ । आप लोगों की तो बात ही क्या, कई दिनों तक तो मैं भी यही सोचता रह गया कि वे सचमुच अब इस दुनिया में नही रहे, पर यकायक मुझे कुछ शक हो गया और जब मैंने सुराग लगाया तो यह भेद मालूम हुआ । बस मैं फौरन ही आपको इसकी खबर देने के लिए निकल पडा क्योंकि मै समझता था कि आप लोग उनके कारण जरूर चिन्तित हो रहे होगे !

इन्द्र० । बेशक ऐसा ही था । चिन्ता तो क्या उनकी मौत के गम मे सब कोई पड़े हुए थे, चिन्ता तो तब होती जब यह खबर होती कि वे अभी जीते और दुश्मन की कैद में हैं । मगर अब जरूर चिन्ता हो गई क्योंकि उनको छुडाए बिना कब चैन मिलेगा ! अच्छा आप कुछ बता सकते हैं कि वे किस जगह बन्द किए गए है ।

अज० । सो अभी तो मैं नही बता सकता मगर दो ही एक दिन के अन्दर मालूम हो जायगा क्योकि मैने अपने जासूस लगा छोडे हैं ।

इन्द्र० । ठीक है, इस बीच में मैं भी अपनी कार्रवाई शुरू करता हू, मगर आपको जब भी पता लगे मुझे फौरन खबर दीजिएगा ।

नकाब० । भला इसमें भी कोई शक है । खबर क्या, सब से पहिले मै ही उनको छुड़ाने का उद्योग करूंगा पर अवश्य ही अपने को बचाते हुए अगर ऐसा कर सकूंगा तभी नही तो नही, क्योंकि मेरा भेद अगर खुल गया तो फिर कुछ भी करते धरते न बनेगा ।

इन्द्र० । नही नही नही, आप ऐसा तो कोई काम ही न कीजियेगा कि जिसमें आपका रहस्य दुश्मन पर जाहिर हो ! सब तरह से बच कर काम करना ही आपके लिए उचित है, नही तो आप ही को तकलीफ नहीं उठानी पडेगी बल्कि आपके साथ साथ हम सभों के भी हाथ पांव बंध जायेंगे और कुछ करते धरते न बन पड़ेगा ! अच्छा हां यह तो कहिये, आपको श्यामजी की भी कुछ खबर है कि वे कहा हैं या किसके कब्जे में है ?

नकाब०। पहिले तो जरूर ही वे दारोगा की कैद में थे जिसने उनके कब्जे से

वह तिलिस्मी कलमदान निकालने के लिये जो नन्हों के साथ साथ उनके पास चला गया था उनको हद दर्जे की तकलीफ दी, मगर अब जब कि वह कलमदान उसको मिल गया तो जान पड़ता है कि उसने उन्हे तिलिस्म में डाल दिया है। अवश्य ही यह मेरा अनुमान है, लेकिन....

इन्द्र०। नही आपका सोचना जरूर ही ठीक होगा। खैर कोई हर्ज नही, वे जहा भी होंगे मैं उनका पता लगा ही लूंगा मगर अफसोस यही है कि हम लोग तब तक कोई कड़ी कार्रवाई कम्बख्त दारोगा के साथ नही कर सकते जब तक कि वह कलमदान उसके कब्जे से न निकाल लें। वह कम्बख्त भी उसको न जाने किस जगह छिपा कर रखता है कि कुछ पता ही नही लगता और यह मेरी इच्छा नहीं है कि दारोगा को हम लोग मार डालें और वह काम यानी तिलिस्म तोड़ना अधूरा ही रह जाय ?

नकाब०। बस थोड़े दिन आप और सब्र कीजिए, ईस मामले का सब हेस-नेस हुआ जाता है, तिलिस्म कुंअर साहब के हाथ से ही टूटेगा और जरूर टूटेगा, इस सम्बन्ध में आप जरा भी सन्देह न कीजिये।

इन्द्र०। जब आपकी कृपा है तो जरूर ऐसा ही होगा।

इन्द्रदेव और उस अजनबी में थोड़ी देर तक और भी कई तरह की बातें होती रही, इसके बाद वह बिदा हुआ और इन्द्रदेव भी उठ कर अपने महल में चले गए।

दसवां बयान

अब हम अपने पाठकों को साथ लेकर एक बार पुनः रोहतासगढ को तरफ चलते और राजमहल के उस हिस्से में पहुंचते है जिधर देवीरानी का डेरा है। हमें आशा है कि पाठकों को इन देवोरानो का परिचय देने की कोई आवश्यकता न होगी क्योंकि वे इन्हे पहिले भी देख चुके हैं, उस मौके पर जब कि पुजारीजी इनके यहा भानुमति का पिटारा लेने आए थे मगर बीच में कोई दूसरा ही उसे उठा ले गया था।

उस मौके की तरह आज देवीरानी की तबीयत खराब नही है। वे स्वस्थ सबल और इस समय कुछ प्रसन्न भी है और दक्खिन तरफ के एक दालान में जिसमे सुबह की धूप अच्छी तरह आ रही है, एक गलीचे पर बैठी हुई संगमर्मर की चौकी पर रक्खे किसी ग्रन्थ को देखने मे इतनी तन्मय हो रही है कि उन्हे यह खबर नहीं है कि एक लौंडी बगल का दर्वाजा खोल कर [illegible]

उनके किसी हुक्म का इन्तजार कर रही है। शायद पाठक इस लौंडी की सूरत देख कर चौकें मगर उन्हे शक करने की कोई बात नही है, उनका ख्याल बहुत ठीक है और यह लौडो व स्तव मे नन्हो हो है जिसने बहुत कारीगरी से अपनी सूरत बदली हुई है मगर इस जगह हम यह अभी नही बता सकते कि नन्हो को लौडी बनने की क्या जरूरत पड़ी या वह इन देवीरानी की खिदमत में क्यो दिखाई पड रही है।

नन्हो ने पहिले तो पैर की धमक से देवीरानी को अपने आने की सूचना दी और जब उस पर भो वे चैतन्य न हुईं तो बाद मे हलके से खासी भो परन्तु जब इस पर भी वह उनका ध्यान आकर्षित न कर सकी तो उसको कुछ आश्चर्य और साथ ही कौतूहल भी हुआ कि वह कौन सी पुस्तक है जिसके पढने मे देवीरानी इस कदर मशगूल हो रही है कि दीन दुनिया की खबर भूली हुई हैं। नन्हों ने एक बार अपने चारो तरफ देखा और जब अपने सिवाय किसी को भी वहां न पाया तो दबे पांव देवीरानी के पीछे पहुंच उनके सामने रखे ग्रन्थ पर नजर दौड़ाना शुरू किया।

दो ही चार पंक्ति पढ़ी होगी कि नन्हो चमक उठी। न जाने उस पुस्तक का क्या मजमून था या वह किस विषय पर थी कि नन्हो का समूचा शरीर एक बार कांप उठा और उसके चेहरे से बडा ही आश्चर्य और साथ साथ कुछ डर भी प्रकट होने लगा। उसने चाहा कि कुछ और आगे बढे तथा अच्छी तरह कुछ पढे मगर इसका मौका न मिला क्योंकि उसको अपने पीछे कोई आहट सुन पडी जिसके साथ ही वह चैतन्य होकर बगल हट गई और उसी समय उसने शेरसिंह को दर्वाजे पर खड़े पाया। पहिले तो उसे यह शक हुआ कि शायद शेरसिंह ने उसको देवीरानी के ऊपर झुक कर वह पुस्तक पढते देख लिया है मगर यह शक तुरन्त ही चला गया जब शेरसिह के माथे पर पड़ी चिन्ता की लकीरें उसने देखी और साथ ही यह भी लक्ष्य किया कि वे बहुत ही उतावली मे हैं और कोई बहुत ही जरूरी बात देवीरानी से कहना चाहते है। शेरसिंह ने इशारे मे अपनी इत्तिला देवीरानी से करने को कहा, और नन्हों ने भी जरा सामने होकर देवीरानी से हाथ जोड कर कहा, "सर्दार साहब आए हैं और कुछ अर्ज करना चाहते हैं।"

देवीरानी ने घूम कर देखा और कहा, "शेरसिंह, आ गये तुम! कहो क्या हुआ, कुछ पता लगा ?" शेरसिंह ने सामने आकर सलाम किया और तब नन्हों को वहाँ से चले जाने का इशारा करते हुए खुद देवीरानी के पास जाकर धीरे से बोले, "जी हां कुछ पता तो लगा, मगर......?"

शेरसिंह का भाव देख देवीरानी चिन्तित होकर बोली, "क्या बात है, साफ

साफ कहो, आओ इधर बैठ जाओ।" शेरसिंह बैठने लगे मगर उसी समय उन्हें कुछ शक हुआ और उन्होंने पलट कर दर्वाजे की तरफ देखा जो कुछ खुला हुआ था। उसे खींच कर उन्होंने बन्द कर लिया और तब बैठ कर बोले, "आपका खयाल सही निकला। पुजारीजी तिलिस्म म ही फस गये हैं और इस बुरी तरह फस गये हैं कि उनका छूटना मुश्किल दीखता है।"

शेरसिंह ने समझा था कि देवीरानी उनकी बात सुन कर चौकेंगी या दुःख प्रकट करेंगी, मगर सो कुछ न हुआ। देवीरानी ने बहुत गम्भीरता से उनकी यह बात सुनी और तब कहा, "ठीक है, यही ख्याल मेरा भी था। खैर बताओ कि तुमने क्या किया और किस तरह क्या क्या पता लगाया।"

"जो हुक्म" कह कर शेरसिंह ने धीरे धीरे कुछ कहना शुरू किया और देवीरानी गौर से सुनने लगी, मगर शेरसिंह ने क्या कहा यह हम इस जगह नहीं लिखते और आगे का हाल बयान करते हैं।

अपना किस्सा कह कर शेरसिंह चुप हो गये, देवीरानी भी कुछ देर तक चुप रही और न जाने क्या सोचती रही, इसके बाद वे बोली—

देवी०। शेरसिंह, इस बात का शक मुझे बहुत दिनों से था। जिस दिन वह भानुमति का पिटारा मेरे कब्जे से बाहर हुआ उसी दिन मुझको शक हो गया था कि अब जरूर कोई न कोई आफत आवेगी और आखिर वह शक सही उतरा। अफसोस कि मैं औरत की जात ठहरी, इतनी ताकत मुझमे नहीं कि मैं तिलिस्म के अन्दर घुसूं और अपने गुरु महाराज को खोजूं दूसरे तिलिस्म के अन्दर फसा हुआ आदमी इतने सहज मे छुड़ाया भी नहीं जा सकता, फिर भी में इतना कह सकती हूं कि इस तिलिस्म की उम्र समाप्त होने पर आ गई है और कोई न कोई बहादुर जल्दी ही इसके तोड़ने मे हाथ लगा देगा।

शेर०। आप ठीक कहती हैं, बाबाजी का भी यही कहना था और इसीलिए उन्होंने जमानिया के कुअर गोपालसिंह के हाथ से उस तिलिस्म को तोड़वाना चाहा था पर अफसोस!

देवी०। अफसोस करने की कोई बात नहीं है। यह जो ग्रन्थ तुम मेरे सामने देख रहे हो इसमे तिलिस्म का ही हाल लिखा है। यह वास्तव मे तिलिस्म के पुराने दारोगाओं के हाथ का लिखा हुआ रोजनामचा है जो मेरे तोशखाने मे मुद्दत से पड़ा हुआ था और जिसकी उस दिन यकायक मुझे याद आ गई। इसको पढ़ने से मुझे कई बातें मालूम हुई हैं और मेरा इरादा है कि मैं वह काम पूरा करूं

जिसके करने का इरादा गुरु महाराज ने किया था।

शेर०। (आश्चर्य मे आकर) आपका मतलब मै समझ न सका, क्या आप....?

देवी०। मेरा इरादा है कि गोपाल की मदद करूं और उसके हाथ से तिलिस्म तोड़वा कर अपने गुरु महाराज को उस जजाल से छुड़वाऊं।

शेर०। मगर क्या ऐसा करना सम्भव होगा? क्या आपके हाथ मे कोई ऐसी तर्कीव है जिससे ऐसा हो सके?

देवी०। इस रोजनामचे के पढने से पता लगता है कि तिलिस्म को तोड़ने की तर्कीव केवल किसी एक ही पुस्तक मे नही है बल्कि कई किताबो से वह हाल लिखा हुआ है और मुझे यह भी अच्छी तरह मालूम है कि जमानिया की रानी अर्थात् गोपाल की मा के कब्जे मे भी ऐसी एक किताब है जिसका असल भेद यद्यपि उसको मालूम नही है मगर जिसकी मदद से गोपाल सहज मे यह काम पूरा कर सकता है।

शेर०। अच्छा, उनके पास ऐसी चीज है और फिर भी उन्हे उसका हाल इतना भी मालूम नही कि अपने लड़के को दे के उससे तिलिस्म तोडवा सके।

देवी०। हा, क्योंकि वह पुस्तक गुप्त रीति से छिपाई हुई है। असल मे वह एक उल्लू के पेट के अन्दर बन्द है जो हमारे हा घर से दहेज के रूप मे विवाह के समय उसे दिया गया था मगर जिसका असल भेद किसी को कुछ भी मालूम नही है और खुद वह तो उसके बारे मे सिर्फ यही जानती है कि वह एक कीमती खिलौना मात्र है।

शेर०। (चौक कर) अच्छा अच्छा, सोने का जडाऊ उल्लू, मै समझ गया। मगर (अफसोस के साथ) अब वह चीज जमानिया की महारानी के पास रह नही गई!

देवी०। (आश्चर्य से) इसका क्या मतलब?

शेर०। एक ऐयार ने मड़ी देकर उनसे वह उल्लू ले लिया।

देवी०। ऐयार ने ले लिया? इसका क्या मतलब? वह कौन ऐयार है? उसे यह हाल कैसे मालूम हुआ? और उसने ऐसी कीमती चीज उसे दे ही क्योंकर दी।

शेर०। मुझे इस बारे मे ठीक ठीक और पूरा हाल नही मालूम है मगर इतना जरूर जानता हू कि वह सोने वाला उल्लू अब जमानिया की महारानी के कब्जे मे नही रह गया।

देवीरानी यह सुन चिन्ता के भाव से कुछ देर तक चुपचाप कुछ सोचती रही। तब वो बोली, "अगर सचमुच ऐसा ही है तो बात बहुत बुरी है। फिर भी कोई हर्ज नही, एक दूसरी पोथी और भी है जिसका हाल मुझे मालूम है और जिससे

मैं काम ले सकती हूं। मगर उसको हासिल करने मे कुछ तरद्दुद उठाना पडेगा क्योकि वह बहुत अंडस की जगह मे है। खैर कोई हर्ज नही, मैं वह भी करूंगी और जैसे भी बनेगा वह पुस्तक अपने काबू मे कर तिलिस्म तोडने का काम हाथ मे लूंगी। मगर इसके पहिले दो काम करने जरूरी हैं, जरा आगे बढ आओ और जो कुछ मै कहती हू उसे गौर से सुनो।

शेरसिंह आगे होकर देवीरानी की बातें सुनने लगे।

दोनों मे से किसी को भी खबर न थी कि जिस दर्वाजे को शेरसिंह ने अच्छी तरह बन्द कर दिया था उसमें फिर कुछ दरार पड़ गई है और उसके दूसरी तरफ से कोई इन लोगों की बातें सुन रहा है। यह नन्हों थी जो यद्यपि डर भी रही थी कि शेरसिंह कही इस बात को समझ न जायें, फिर भी जो कुछ बातचीत उधर हो रही थी उसका जी उन्हे सुनने को भी व्याकुल हो रहा था। अब इस समय जब शेरसिंह देवीरानी की बातें सुनने लगे, उनका मुंह दूसरी तरफ हो जाने के कारण नन्हो को मौका मिला और वह बन्द दर्वाजे को जरा सा खोल कर इन दोनों की बातें गौर से सुनने लगी।

आखिर देवीरानी का बातें खतम हुईं और उन्होंने उठ कर बगल की दीवाल की एक आलमारी खोल उसके अन्दर से कोई चीज निकाल शेरसिंह के हाथ में दी। यह क्या चीज थी यह तो नन्हो देख न सकी पर उसने देवीरानी की यह बात अच्छा तरह सुनी—"इससे तुमको बहुत मदद मिलेगी और जब तक तुम वहां रहना इसको अपने बदन से अलग न करना।"

कुछ बातें और हुईं और तब देवीरानी की आज्ञा से शेरसिंह बिदा होकर उस दालान के बाहर हुए। उस समय इस बाहर वाले कमरे में कोई भी न था क्योकि इनको आते देख नन्हो वहा से रफूचक्कर हो गई थी पर नीचे की मजिल में उतरने पर उन्हे देवीरानी की विश्वासी लौंडी मैना मिली जिसे देखते ही वे बोल उठे, "मैना, आज मै एक नई लौंडी को यहा देख रहा हू। यह कौन है और कहा से आई है?" मैना मुस्कुरा कर बोली, "किसको कह रहे है, वह नाटी गोरी सी?" शेरसिंह ने कहा, "हा, कुछ देर पहिले मैने उसे देखा था पर अब न जाने कहा चली गई!" उंगली से बता कर मैना बोली, "देखिये वह चली जा रही है। यह नयी आई है, किसी भले घर की है मुसीबत में फंस कर यहा पड़ी हुई है। महारानी की दया होने से उन्होने खिदमत में रख लिया है।" शेरसिंह ने नजर उठा कर उधर देखा जिधर से नन्हो जा रही थी और तब कुछ दूसरी बातें मैना

से करने लगे, मगर धूर्त नन्हों फौरन समझ गयी कि उसी के सम्बन्ध में बात हो रही हैं। वह भी फौरन उधर ही आ पहुँची और शेरसिंह को सलाम करके खडी हो गयी। शेरसिंह उसके सलाम का जवाब देकर बोले, "मै अभी तुम्हारे बारे में इनसे बातें कर रहा था क्योंकि तुम्हारी सूरत मुझे कुछ कुछ पहिचानी हुई सी जान पड़ती है।"

इसके पहिले कि नन्हों कुछ जवाब दे मैना को देवीरानी की आवाज सुन पडी और वह चौंक कर लपकती हुई उधर ही को चली गयी। नन्हों और शेरसिंह अकेले रह गये। मौका देख नन्हो ने शेरसिंह का हाथ पकड़ लिया और सूनसान कोने में ले जाकर बोली, "वाह आप भी मुझे पहिचान न सके, मैं नन्हो हू !"

शेरसिंह चौक पडे। कुछ देर तक गौर से उसकी सूरत देखते रहे तब बोले, "बेशक तू नन्हों ही है, मगर अब तक तू कहा रही और आज इस तरह महल में क्यों दिखाई पड़ रही है ?"

आंखों मे बनावटी आंसू भर कर नन्हों बोली, "मुझे आपके भाई भूतनाथ ने बड़ा गहरा धोखा दिया और इतनी बडी आफत मे फसा दिया कि जिसका नाम।" शेरसिंह चौक कर बोले, "भूतनाथ ने तुम्हे आफत में फसा दिया ? मगर मैंने तो कुछ दूसरी ही बात सुनी थी !" नन्हो बोली, "बेशक सुनी होगी, पर मैं जब असल हाल कहूंगी तो आपको पता लगेगा कि मेरे साथ कैसा भयानक अत्याचार किया गया है। आपके भाई ने मेरे पिता को तिलिस्म मे डाल दिया और मुझे दीन दुनिया कही का न छोडा !"

इतना कहते कहते शैतान की बच्ची नन्हो ने आंसू गिराना और जोर जोर से रोना शुरू किया। यद्यपि शेरसिंह को उसके बारे में बहुत कुछ हाल मालूम था मगर इस समय वे उसके जाल में फस ही गये और उसे दम दिलासा देकर शात करने के बाद बोले, "तू घबड़ा नही नन्हो और मुझसे अपना पूरा हाल कह। मैं वादा करता हूं कि जैसे भी बनेगा तेरी मदद करूंगा और तेरे पिता को भी छुडाने का उद्योग करूंगा, पर मुझे सब हाल सही सही और सच सच मुझको बता देना होगा।"

नन्हों ने जवाब दिया, "मै बिलकुल सही सब हाल आपसे कहने को तैयार हू क्योंकि सच तो यह है कि इस महल में मेरा आना आपसे मिलने के लिए ही हुआ है क्योंकि अब इस दुनिया में सिवाय आपके और कोई मेरा बड़ा सरपरस्त या बुजुर्ग नही रह गया जिस पर मैं भरोसा करूं और जिससे मदद की कोई उम्मीद कर सकूं। अगर आप कही एकान्त में चले चलें तो मै सब कुछ आपसे

कह डालूं ।" शेरसिंह यह सुन बोले "इस समय तो नहीं मगर सन्ध्या को मैं आऊंगा और तुम्हारा हाल सुनूंगा क्योंकि यह जानने का कौतूहल मुझे जरूर हो रहा है कि तुम इस जगह कैसे या किस इरादे से नजर आ रही हो ?"

नन्हो० । मैं बहुत थोड़े में आपको बताए देती हूं । जैसा कि मैंने आपसे कहा भूतनाथ ने मेरे पिता को तिलिस्म में बन्द कर दिया और मुझे इस कदर परेशान किया कि मेरी जिन्दगी भारी पड गई, लाचार कहीं शरण न पा मैं इस किले में पहुंची । महारानी ने मुझ पर दया की और मुझे अपनी खिदमत में ले लिया, पर देखती हूँ कि यहां से भी मेरा दाना पानी छूटा चाहता है ?

शेर० । सो क्यों ?

नन्हो० । कुंअर साहब की निगाह मुझ पर अच्छी नहीं है और वे मुझे अपने जाल मे फसाया चाहते हैं ।

शेर० । ऐसा होना कोई ताज्जुब की बात नहीं है और तुमको इस तरफ से बहुत होशियार रहना चाहिए ।

नन्हो० । मैं उनसे बहुत बच कर रहती थी पर आखिर औरत की जात, बेवकूफी कर ही गई ।

शेर० । (चौंक कर) सो क्या !

नन्हो० । उन्होने तरह के सब्जबाग मुझे दिखाए और मेरा सही हाल जानना चाहा । धोखे में पड़ कर मैं कुल हाल उनसे कह गई । वे बोले कि 'तू घबड़ा नहीं नन्हों, मैं तिलिस्म मे घुस कर तेरे बाप को छुडा लाऊंगा ।'

शेर० । क्या उन्होने तुझे पहिचान लिया !

नन्हों० । मैं ही ने गलती की और उनको अपना असली परिचय दे दिया, नहीं तो सूरत बदली रहने से वे क्या कभी मुझे पहिचान सकते थे, आप तक भी तो धोखे में पड़ गए । पिताजी के यहा उनका आना जाना तो बराबर रहता था और सैकड़ो दफे मुझे देख भी चुके थे अस्तु नाम सुनते ही पहिचान गए ।

शेर० । खैर तब क्या कहा ? उन्होने कहा कि मैं तिलिस्म मे घुस कर तेरे बाप को छुड़ा लाऊंगा ।

नन्हो० । जी हा, वे यह भी बोले कि मेरे पास तिलिस्मी किताब है और मैं सहज ही मे यह काम कर सकता हूं !

शेर० । उनके पास तिलिस्मी किताब है ?

नन्हो० । जी हां ऐसा ही तो उन्होने कहा ।

शेरसिंह यह बात सुन कुछ सोचने लगे। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, "अच्छा तो फिर क्या हुआ? उन्होंने तेरे पिता को छुडाने के लिए कुछ किया भी?"

नन्हों० । नही, पहिले तो मुझसे अपनी लसी लगानी चाही, पर जब मैं उनके फंदे में न फंसी तो अब यह कहना शुरू किया है कि उनके पास जो किताब है उसमें पूरा पूरा हाल तिलिस्म का दिया हुआ नही है इससे मेरे पिता को छुडा नही सकते, हा एक दूसरी किताब कोई और भी है वह अगर मिले तो जरूर वे ऐसा कर सकते हैं। मैंने पूछा कि वह दूसरी किताब कहा मिलेगी, तो बोले कि बूआजी के पास है मगर उनसे मागने की हिम्मत नही पड़ती और शायद मागने से वे दें भो नही। उनकी यह बात सुन के ही मैं बूआजी की खिदमत मे लगी हू कि शायद कभी मुझ पर खुश हों तो मैं अपना दुखडा इनसे बयान करूं और प्रार्थना करूं कि वे अपनी किताब दे दें ताकि मेरे पिता को छुटकारा मिल जाय।

बिजली की तरह शेरसिंह के मन में यह ख्याल दौड़ गया कि कहीं उनकी किताब को चुराने ही के इरादे से तो नन्हों भेष बदल कर देवीरानी के यहां नही जमी हुई है, पर नन्हों ने कुछ इस तरह की आकृति बना कर ये बातें कही थी कि चालाक और बुद्धिमान होने पर भी वे इसके जाल में फंस ही गए। फिर भी उन्होंने पूछा, "क्या तूने देवीरानो पर अपना असली हाल जाहिर नही किया है? तुझे तो वे अच्छी तरह पहिचानती ही है।" नन्हो भोलेपन से बोली, "अभी तक तो नही किया है, क्या बता दूं कि मैं कौन हूं?" शेरसिंह बोले, "खैर अभी तक नही कहा है जो आज भर और रहने दे। मैं तेरा सब किस्सा सुन कर निश्चय करूंगा कि क्या करना मुनासिब होगा।"

नन्हों० । ठीक है ऐसा ही सही, मगर आप क्या समझते हैं? क्या कुमार का ऐसा कहना सही है? क्या बूआजी के पास सचमुच ऐसी कोई किताब हो सकती है।

शे० । अगर हो तो......

न जाने क्या सोच कर शेरसिंह रुक गए मगर नन्हों ने तुरत ही फिर पूछा—

नन्हो० । तिलिस्मी मामलो में उनको भी कुछ दखल हो सकता है क्या? आप जब उनसे बातें कर रहे थे तो मुझे उनको पूजा का सामान ठीक करने के लिए एक बार उधर ही से जाना पड़ा था, उस समय कुछ भनक मेरे कान में गई थी कि शायद वे तिलिस्म और मेरे पिता ही के बारे में आपसे कुछ कह रही हैं पर डर के मारे मेरी हिम्मत न पड़ी कि कुछ पूछती या वह बात ही गौर से सुनती।

शेर० । हां कुछ इसी तरह की बात कह तो जरूर रही थी मगर...

नन्हों० । (उत्कंठा का भाव दिखाती हुई) क्या कहती थी ? मुझे जरूर बताइये । आप नही समझ सकते कि मैं अपने पिता के लिए किस तरह व्याकुल हो रही हूं और कहां तक करने को तैयार हूं !

शेरसिंह कुछ सोच कर बोले, "अच्छा शाम को जब मैं मिलूंगा तो बताऊंगा, पर अब इस वक्त देर हो रही है और मुझे एक बहुत ही जरूरी काम से जाना है।" नन्हों ने भी जिद् नही की, मगर जब शेरसिंह जाने लगे तो इतना जरूर पूछा, "शाम को किस वक्त आप आवेंगे और कहा भेंट होगी ?" शेरसिंह ने जवाब दिया, "सूर्यास्त के कुछ हो बाद मैं आऊंगा और जनाने नजरबाग में रहूगा, तू वहीं आइयो और बडे कमरे के पास मुझसे मिलियो ।" नन्हो ने "बहुत अच्छा" कहा और शेरसिंह महल के बाहर निकल गये, मगर जाते जाते धीरे से उनके मुंह से इतना जरूर निकला, "कम्बख्त कैसी धूर्त है, कुछ पता नही लगता कि सच कह रही है या अपने पिता के लिए इसकी यह उत्कण्ठा बिल्कुल बनावटी है !"

× × ×

संध्या का समय है । महल के जनाने नजरबाग मे नन्हों धीरे धीरे इधर से उधर टहल रही है और साथ ही सिर झुकाए न जाने क्या क्या सोचती भी जा रही है । बीच बीच मे कभी कभी सिर उठा कर वह उस दर्वाजे की तरफ भी देखती है जिधर से उसे आशा है कि शेरसिंह बहुत जल्दी ही आकर उससे मिलेंगे। वह इस समय यही सोच रही है कि शेरसिंह के सामने किस तरह की बातें करे, क्योंकि सच तो यह है कि वह उनसे बहुत डरती थी मगर साथ साथ उनको भुलावे मे डाल कर अपना कोई मतलब भी सिद्ध करना चाहती थी, इसलिए कि वह छिप कर देवीरानी और शेरसिंह की बातें सुन चुकी थी और जान गई थी कि उनको क्या काम बताया गया या क्या चीज दी गई है !

धीरे धीरे समय बीतने लगा, संध्या का अंधकार बढा और रात्रि की कालिमा फैलने लगी । नन्हो को कुछ चिन्ता होने लगी, फिर भी उसे विश्वास था कि शेरसिंह जब कह गए हैं तो आवेंगे जरूर इसलिए उसने बागीचे मे टहलना न छोड़ा, हां घूमती हुई उस हिस्से की तरफ चली गई जिधर पुराने जमाने की कुछ इमारतें थी और उनकी आड में उस सर्द हवा से भी कुछ बचाव हो सकता था जो सन्ध्या के खातमे के साथ साथ तेज होने लगी थी । इन इमारतों का कुछ हाल चन्द्रकान्ता सन्तति वगैरह में लिखा जा चुका है अस्तु इस जगह इनके बारे में सिवाय इसके हम और कुछ न कहेंगे कि यद्यपि इन कमरों दालानों और तहखानों

में रहता कोई न था फिर भी इधर पहरा बराबर पडा करता था। इस समय भी पहरे के सिपाही यहां मौजूद थे मगर एक दालान में डेरा डाले पडे थे, बाहर कोई है या नहीं और अगर है तो क्या कर रहा है इस पर उनका ज्यादा ध्यान न था।

नन्हों टहलती हुई जब एक बन्द कमरे के पास से जा रही थी तो उसकी चाल में यकायक फर्क पड गया और वह ठमक कर रुक गई। कारण भी स्पष्ट था, मामूल के खिलाफ इस कमरे की हमेशा बन्द रहने वाली खिडकियों में से एक खुली हुई थी और उसके भीतर से किसी के बोलने की आवाज आ रही थी। नन्हो को आवाज कुछ पहिचानी हुई सी मालूम हुई और उसें शेरसिंह का गुमान हुआ जिससे वह ठमक गई और गर्दन घुमा कर अन्दर की तरफ देखने लगी। जो कुछ उसने देखा वह उसको ताज्जुब में डालने के लिए काफी था।

नन्हो ने देखा कि उस कमरे के अन्दर हल्की सी रोशनी हो रही है और यद्यपि यह पता तो नहीं लगता कि रोशनी किस चीज की या कहां पर हो रही है फिर भी उसकी सहायता से कमरे के अन्दर की चीजें कुछ कुछ देखी जा सकती है। आज से पहिले भी एकाध बार किसी दूसरे तरीके पर नन्हो को इस कमरे के भीतर जाने का मौका मिल चुका था और वह जानती थी कि यह कमरा मामूली तौर पर सजा हुआ है पर इस समय उसे यह देख आश्चर्य हुआ कि कमरे के अन्दर कई शकलें दिखाई पड़ रही है जो न जाने किस फिराक मे पड़ी उधर घूम फिर रही है। यह समझ कर कि वे लोग जरूर ही सरकारी आदमी होंगे और मुमकिन है कि इनमे कोई उसका परिचित भी हो, वह यह जानने के लिए रुक गई कि कोई जान पहिचान का दिखे तो उससे पूछे कि यहां क्या तैयारी हो रही है, मगर उसे बहुत आश्चर्य हुआ जब खिड़की के पास पहुचने पर उसने देखा कि वह इन शक्लों को बिल्कुल नहीं पहिचान सकती क्योंकि वे सभी आदमी अपने अपने चेहरों पर नकाब डाले हुए हैं।

शायद नन्हों रुकती और किसी से कुछ पूछती, और कुछ नहीं तो शायद पहरे पर के सिपाहियो से ही जिक्र करती कि बड़े कमरे में कुछ लोग मौजूद है, पर इस सब का मौका न मिला क्योंकि यकायक उसके कान मे भीतर के किसी आदमी के कहे हुए ये शब्द पड़े—"इसमे कोई शक नहीं कि यह जरूर नन्हो का काम है!" वह चमक गई, अब तक जो खुले तौर पर खिड़की के सामने खड़ी हो के देख रही थी सो बगल हट के आड़ में हो गई और कुछ अधिक गौर से सुनने लगी, साथ ही साथ दूसरे की कही हुई यह बात उसके कान मे पहुंची, "और मैंने यह भी

सुना है कि आज कल वह भप बदले हुए इसी किले मे मौजूद है। अगर हम लोग उसे पकड़ पावें तो बहुत सहज में इस बात का पता लग जायगा कि श्यामजी तथा कामेश्वर कहां बन्द है।" एक तीसरा आदमी बोल, उठा, "बेशक इसमें क्या शक है, थोडी सख्ती करने ही से नन्हों वह भेद खोल देगी और तब हम लोग सहज ही में दोनों को छुडा कर अपने साथ ले जा सकेंगे।"

नन्हों ये बातें सुन घबडा उठी, साथ ही उसे यह भी विश्वास हो गया कि ये सब सरकारी आदमी नही बल्कि दुश्मन हैं और जरूर किसी बुरी नीयत से यहां पहुचे हैं। उसने इरादा किया कि इनकी खबर पहरे वालो को दे दे, क्योंकि वह बखूबी जानती थी कि इस कमरे के अन्दर से एक रास्ता सीधा इस किले के बाहर और दूसरा तिलिस्मी तहखाने के अन्दर चला गया है,* मगर वह ऐसा भी न कर सकी। जिस समय वह दबे पाव उस खिडकी के पास से हट रही थी उसको अपने पीछे किसी की आहट सुन पडी और घूम कर देखते वह चौंक गई क्योंकि उसने न केवल दिग्विजयसिंह को वहा खड़े पाया बल्कि यह भी लक्ष्य किया कि वे भी कमरे के अन्दर का हाल देख और भीतर वालों की बातें सुन रहे हैं। नन्हों को अपनी तरफ देखते पा उन्होने मुंह पर उंगली रख उसको चुप रहने का इशारा किया। नन्हो उनके पास चली गई और बहुत धीरे से बोली, "इन लोगों की बातें आपने सुनी होंगी? ये कामेश्वर और श्यामजी के बारे में क्या कह रहे हैं!!"

इसी समय भीतर से एक खटके की आवाज आई और साथ साथ ही कमरे के अन्दर अंधकार हो गया। लोगों के चलने फिरने और बातें करने की आहट बन्द हो गई और इसके बाद नन्हों ने देखा कि वह खिडकी भीतर से किसी के द्वारा बन्द कर ली गई जिसकी राह वह उधर का हाल देख रही थी। दिग्विजयसिंह ने यह देख हाथ बढा नन्हों की कलाई पकड ली और एक तरफ हट कर एक छोटे दालान के अन्दर हो गए जो बगल ही मे पडता था और जिसके सामने की तरफ मालती की लता चढ़ी रहने के कारण अन्दर काफी आड़ भी थी। यहा पहुंच दिग्विजयसिंह ने नन्हो से पूछा, "वे लोग कौन थे जिनकी बाते हम लोगो ने सुन।?" दिग्विजयसिंह सिर हिला कर बोले, "मैं कुछ नही कह सकता, क्योंकि मेरे पहुचने तक बातें बन्द हो गई थी। मगर क्या तुमने कुछ सुना!' नन्हो बोली, "मैं देर से यहा हूं, वे लोग मेरा ही जिक्र कर रहे थे और कहते थे कि श्यामजी और कामेश्वर का छुड़ा ले जायेंगे। जरूर दुश्मन हैं और इनको गिरफ्तार करना चाहिए। मगर यह तो कहिये,

* इस तिलिस्मी तहखाने के बारे में बहुत कुछ हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है।

क्या गैर आदमी आकर तिलिस्मी तहखाने के अन्दर से कैदियों को निकाल ले जा सकते हैं। आपने वही न उनको बन्द किया है।" दिग्विजयसिंह बोले, "भला किसकी मजाल है जो तहखाने के अन्दर से कैदियों को निकाल ले जा सके, लेकिन अगर वे लोग ऐसी बातें कह रहे थे तो जरूर उनको पकड़ना चाहिये। अच्छा तुम महल में जाओ मैं पता लगाने की कोशिश करता हूं कि वे लोग कौन हैं?" नन्हों बोली, "क्या आप अकेले ही जाइयेगा? कहिये तो मैं पहरे पर से कुछ सिपाहियों को भेज दूं?" दिग्विजयसिंह सिर हिला के बोले, "नही अगर जरूरत देखूंगा तो मैं खुद उन्हें बुला लूंगा मगर तुम महल मे जाओ, यहा रहना ठीक नही।"

दिग्विजयसिंह नन्हों से बातें करते जाते थे और साथ ही बगल की दीवार में हाथ लगा कर न जाने क्या करते भी जाते थे। नन्हों ने देखा कि उन्होंने किसी खास जगह अंगूठे से दबाया जिसके साथ ही खटके की आवाज आई और पत्थर की एक सिल्ली बगल हट गई जिससे भीतर जाने का रास्ता दिखाई पड़ने लगा। दिग्विजयसिंह ने उस रास्ते के अन्दर पैर रखा और नन्हों को पुनः वहाँ से जाने के लिए कह छोटी छोटी कुछ सीढ़ियो की राह कही नीचे उतर गये, साथ ही पुनः खटके की आवाज आई और वह रास्ता बन्द हो गया।

नन्हो कुछ देर तक वहा खड़ी कुछ सोचती रही, इसके बाद हटी और दालान के नीचे उतर महल की तरफ चली, पर अफसोस कि ज्यादा दूर जा न सकी। न जाने कहां से आकर दो आदमियों ने दोनों तरफ से उसे पकड लिया और उसका मुंह बन्द कर उसे उठा ले चले। नन्हों बहुत कुछ छटपटाई और उनके कब्जे से छूटने के लिए जोर करने लगी मगर उनमे से एक ने किसी दवा से तर एक रूमाल उसकी नाक पर रख दिया जिसके साथ ही उसे दोन दुनिया की सुध न रह गई।

अब हम थोडी दूर के लिए नन्हों का साथ छोड देते हैं और एक दूसरी ही जगह चल कर एक बिल्कुल दूसरा ही दृश्य पाठकों को दिखाते हैं।

प्रातःकाल का समय है और सूर्य की पहली किरणें कोहरे के पर्दे तोड़ कर उस गुफा के अन्दर घुसने की कोशिश कर रही है जिसके भीतर अंधकार सिमटता हुआ घुसता जा रहा है और ये किरण हमे एक बडा ही भयानक दृश्य दिखा रही हैं।

यह पहाड़ी गुफा जिसका मुहाना यद्यपि छोटा है पर जो भीतर से बहुत ही कुशादा और पहाड़ के अन्दर दूर तक घुसी हुई है सूर्य की किरणें पा कर चमक उठी है, मगर वे ही किरणें हमे यह भी दिखा रही हैं कि गुफा की समूची जमीन खून से तरबतर हो रही है और वहीं कुछ लोथें भी दिखाई पड़ रही हैं जिनके विल-

कुल मुर्दा होने में कुछ भी शक नहीं है क्योंकि उनमे से किसी के भी हिलने डुलने की तो बात ही क्या कराहने तक की आवाज नहीं मिलती है। इसमे शक नही कि कुछ ही घण्टे पहिले इस जगह घोर मारकाट हुई है क्योंकि हथियारो के चलने के सबूत साफ उन लाशों पर नजर आ रहे है जिनकी गिनती चार पांच से ज्यादा नहीं है फिर भी प्रायः सभी का अंग भंग हुआ भया है। किसी का हाथ कट गया है तो किसी को तलवार ने जनेवा काट दिया है, किसी का सिर बीच से फट कर दो टुकड़े हो गया है तो किसी की छाती मे खंजर घुसा हुआ है। इधर उधर की चट्टानों पर भी जगह जगह खून के छीटे और लड़ाई के समय बहक कर जा पड़ने वाली तलवारों के निशान पडे हुए हैं और जमीन तो लहू से तर हो रही है।

ये लोथें किनकी हैं या यह लडाई किन आदमियों के बीच में हुई यह तो हम बिल्कुल नही कह सकते पर हम उन दोनों आदमियो के बारे मे जरूर कुछ कह सकते हैं जो बहुत दूर से पैदल ही चले आते हुए इस पहाडी पर आ चढ़े हैं और अब इस गुफा की तरफ बढते आ रहे है। इसमे से एक तो निःसन्देह इन्द्रदेव हैं और दूसरा शायद वही नकाबपोश है जिसे ऊपर वाले बयान मे पाठक उनसे बातें करते देख आए है मगर जिसका चेहरा इस वक्त भी नकाब से ढका होने के कारण हम निश्चय रूप से कुछ कह नही सकते और न सूरत शक्ल के बारे मे ही कुछ बता सकते हैं।

दोनो आदमी गुफा के मुहाने पर पहुचे मगर वहां आते ही ठमक कर आश्चर्य तथा कुछ घबराहट से उन खून के निशानो को देखने लगे जो जमीन पर जगह जगह पडे हुए थे। इन्द्रदेव का तो उनको देखते ही माथा ठनका और वे बोल उठे, "जरूर कुछ मामला गड़बड है। अपने आदमियो के आने मे देर होती देख मैं चौंका था तो ठीक ही था, यहा जरूर बहुत कुछ खून खराबा हुआ है।" उनके साथी नकाबपोश ने जिसकी निगाहें गुफा के भीतर घुस कर अन्दर की हालत जानने की कोशिश कर रही थीं यह सुन जवाब दिया, 'केवल इतना ही नही, मुझे तो जान पड़ता है कि आपके आदमियो पर हमला किया गया और केवल कैदी ही नही छुड़ा लिए गए बल्कि उन आदमियो को जान से भी हाथ धोना पड़ा है, देखा चाहिए कोई जीता भी बचा कि नही।"

इस बीच इन्द्रदेव की तेज निगाहो ने भी भीतर पड़ी लाशें देख ली थी और उनके मन में भी ठीक ये ही खयाल जाग उठे थे। नकाबपोश की बात सुन उन्होने अफसोस के साथ गर्दन हिलाई और तब गुफा के अन्दर घुस कर भीतर की लाशो को देखना शुरू किया। थोडी ही जांच के बाद उन्होने अफसोस भरी आवाज में

कहा, "मेरे छः आदमियों मे से पांच इस जगह मरे पड़े हैं, केवल एक दिखाई नहीं देता है, शायद वह भीतर की तरफ हो अथवा भाग निकला हो, मगर देखना चाहिए कि इनमे से किसी में कुछ दम भी है या सभी बेजान हैं ताकि कुछ पता लगे कि यह कार्रवाई किसकी है और कैदियों का क्या हुआ "

इन्द्रदेव ने फिर से एक एक आदमी की जांच करनी शुरू की। चार आदमी तो एकदम ही मुर्दा थे, पर एक जिसकी छाती मे खंजर घुसा हुआ था—उसकी जांच करने पर इन्द्रदेव को कुछ उम्मीद जान पड़ी और वे देर तक बहुत गौर के साथ उसकी नब्ज देखते रहे। इसके बाद अपना बटुआ खोल उन्होंने किसी दवा की एक शोशी निकाली और उसकी कुछ बूंदें जबर्दस्ती उसके मुंह के अन्दर डाल दी। एक बार दवा जाने का कुछ असर न जान पड़ा पर थोडी देर बाद जब फिर वैसा ही किया तो नब्ज कुछ चलती सी मालूम हुई और उसका मुंह जरा खुल गया तथा गले से भी कराहने का आवाज निकली। इन्द्रदेव ने तीसरी बार फिर वही दवा जुबान पर टपकाई जिसका असर बहुत ज्यादा हुआ। उस जख्मी ने क्षण भर के लिए आंखें खोल कर देखा। इन्द्रदेव को अपने ऊपर झुका पा उसने सलाम करने की कोशिश की पर हाथ जरा सा उठ कर रह गया, मगर उसके मर्राए गले से इतनी आवाज जरूर निकली—"महाराज आप आ गए। पर अफसोस, हम लोगों की सब मेहनत अकारथ गई !"

इन्द्रदेव ने पूछा, "बलराम यह तुम्हारी क्या हालत है और तुम्हारे साथी किसके हाथों मारे गए ?" जख्मी इस पर बोला, "सो कुछ कह नही सकता' हम लोग कैदियो को छुड़ा के बाहर निकाले ला रहे थे जब इस जगह छिपे हुए कई आदमियो ने हम पर हमला किया और उनके साथ नन्हो को भी ले भागे जिसे हम कैद.. " जख्मी के गले से घर्राटे की एक आवाज निकली और उसकी जुबान बन्द हो गई।

इन्द्रदेव ने उसके कान के पास मुंह ले जाकर पूछा, "तुमने किस किस को यहा से छुड़ाया था ? तुम पर हमला करने वाले किसके आदमी थे ?" मगर जख्मी के मुंह से कोई आवाज न निकली, हा उसने एक बार आंखे जरूर खोली। इन्द्रदेव ने शीशी की समूची दवा उसके गले में उतार दी। मरने वाले का बदन जरा कांपा, उसने पुनः मुंह खोला और कहा, "दो कैदी तथा....." मगर इससे ज्यादा कुछ कह न सका और इन्द्रदेव के हाथों ही में उसने दम तोड दिया।

इन्द्रदेव ने उस अजनबी नकाबपोश की तरफ देखा और कहा, "मालूम होता है कि केवल कामेश्वर ही नही बल्कि कोई और भी इन लोगो के हाथ लगा और

साथ में नन्हों को भी इन लोगों ने पकड लिया था, पर अफसोस सारी मेहनत बेकार गई और साथ साथ इतने मेरे बहादुर आदमियो ने भी जान से हाथ धोया। मगर यह तो कहिये, क्या मैं समझूं कि केवल कामेश्वर ही नहीं बल्कि श्यामजी भी इनके हाथ लग गये थे ? क्या इनके भी यही होने की सम्भावना थी ?"

अजनबी ने सिर हिलाया। इन्द्रदेव ने फिर कहा, "तब यह किस दूसरे कैदी का जिक्र करता है।"

यकायक इन्द्रदेव रुक गए। उनकी निगाह कागज के एक टुकड़े पर पड़ी जो खून से लथपथ गुफा के मुहाने के पास ही जमीन पर पड़ा हुआ था। उन्होंने मुर्दे को धीरे से जमीन पर रख दिया और लपक कर उस कागज को उठाया। किसी चीठी का वह एक फटा हुआ टुकडा जान पडता था जिसका मजमून खून में डूब जाने के कारण साफ पढा न जाता था फिर भी इन्द्रदेव ने कोशिश करके इतना तो पढ ही लिया—"......नो दोनो हो हाथ मे आ गये, अब महाराज गिरधरसिंह को जान से...."

इन्द्रदेव ने वह कागज उस अजनबी की तरफ बढ़ाया और कहा, "यह जरूर उन्हीं लोगों का लिखा है जिन्होंने मेरे आदमियो को मार नन्हो और कामेश्वर पर कब्जा किया है, पर इसको पढने से यह भी पता लगता है कि इन लोगो का इरादा महाराज गिरधरसिंह की तरफ से भी अच्छा नही है। शायद..." आगे कोई बात उनके कण्ठ से न निकली और किसी आशंका ने उनका गला दबा दिया। इधर अजनबी ने भी उनके कहे की ताईद यह कह कर की—"बेशक ऐसा ही है, आपको इधर की फिक्र छोड़ फौरन जमानिया जाना चाहिये।" इन्द्रदेव बोले, "मैं भी यही मुनासिब समझता हूं। मगर इन लाशो का क्या होगा।" अजनबी बोला, "इनकी फिक्र मैं कर लूंगा, आप इस बारे मे चिन्ता न करें और महाराज की जान बचाने की कोशिश करें।" इन्द्रदेव ने फिर पूछा, "और कामेश्वर या श्यामजी के बारे मे।" अजनबी ने जवाब दिया, "उनका पता लगाने की भी कोशिश की जायगी, पर इस वक्त सबसे जरूरी है आपका जमानिया में मौजूद रहना। वहां कुअर गोपालसिंह पर जो आफत आई है उसका हाल मैं आपसे कह चुका हूं। उनके साथ साथ इस समय अगर महाराज पर भी कोई वार हो गया तो हम लोग कहीं के भी न रह जायेंगे।"

इन्द्रदेव और उस अजनबी मे थोडी देर तक कुछ बातें होती रहीं, इसके बाद अफसोस के साथ गर्दन झुकाए हुए इन्द्रदेव गुफा के बाहर हुए, मगर वह

अजनबी उनके साथ साथ बाहर न निकला बल्कि उस गुफा के भीतर की तरफ चल पड़ा जिधर तीस चालीस कदम जाते जाते अन्दर के अंधकार ने उसे अपने काले पर्दे की ओट में छिपा लिया।

इन दोनों के जाने के कुछ ही देर बाद न जाने कहां से छिपा हुआ एक तीसरा आदमी उस जगह आ मौजूद हुआ। मालूम होता है यह उसी गुफा में ही कहीं किसी ढोंके की आड़ में छिपा हुआ था। इसने एक बार गुफा के भीतर की तरफ देखा और दूसरी बार बाहर मुहाने की तरफ और तब कहा, "मेरा यहां छिपे रहना कितना अच्छा हुआ! मेरा शक बहुत ठीक था और बेशक यह सब कारंवाई इन्द्रदेव ही की थी। मगर वह नकाबपोश इनके साथ कौन था। आवाज तो कुछ पहिचानी हुई सी मालूम होती थी, पर ठीक पता नहीं लगा। खैर क्या हर्ज है, देखा जायगा। इस समय मुझे भी फौरन जमानिया पहुंचना और वहां का काम पूरा करना चाहिये। अब जिस तरह से हो बड़े महाराज को इस दुनिया से उठ ही देना होगा, नहीं तो वे अगर जीते रहे तो हम लोगों का सोचा विचारा सब धरा रह जायगा और गोपा........"

गुफा के अन्दर की तरफ से कुछ आहट आई और वह आदमी अपनी बात बन्द कर पीछे हट फिर किसी आड़ की जगह में छिप गया। मुश्किल से वह वहां से हटा होगा कि अन्दर की तरफ से आते हुए पैरों की आहट सुनाई पड़ी और साथ ही एक काली शकल दिखाई पड़ी जो अपने हाथ में एक बहुत बड़ा त्रिशूल लिए इसी तरफ को बढ़ी आ रही थी।

क्या भयानक सूरत थी इस आने वाले की! काला आबनूस का रंग, बड़ी-बड़ी लाल आंखों से मानों लहू टपक रहा था, सारा बदन लहू लुहान था, मगर यह लहू शरीर पर के किसी घाव से न निकल रहा था बल्कि ऐसा जान पड़ता था जैसे इसने खून की नदी में स्नान कर लिया है। इसके बायें हाथ में किसी का ताजा कटा हुआ सर था जिसमें से लहू टपक रहा था और दाहिने हाथ का त्रिशूल भी खून से सना हुआ था। यकायक देखने से साक्षात् कालभैरव होने का गुमान होता था और इस भावना को वह बाघ की खाल और भी पूरा कर रही थी जो उसके बदन पर लिपटी हुई थी मगर जिसके रहने के ही कारण इस बात का पता कुछ भी न लगता था कि यह औरत है या मर्द।

इस भयानक सूरत ने वहां पहुंच जमीन पर पड़ी लाशों को देखा और उसके मुंह से गुस्से के साथ कोई बात निकल पड़ी जो ठीक समझ में न आई। उसने

एक बार अपना त्रिशूल जमीन पर पटका। इसके साथ ही उसमें से भयानक ढंग से आग की लपटें निकल पड़ीं, आप ही आप कुछ गुनगुनाती हुई वह शकल गुफा के बाहर निकल गई और उस जगह मौत का सन्नाटा छा गया।

॥ दूसरा भाग समाप्त ॥

१३ वां संस्करण] १९७५ ई० [११०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी।

रोहतासमठ

तीसरा भाग

पहिला बयान

जमानिया में महाराज गिरधरसिंह के देहान्त के समय होने वाली घटनाओं का हाल चन्द्रकान्ता सन्तति तथा भूतनाथ उपन्यासों मे खुलासे तौर पर लिखा जा चुका है इसलिए इस उपन्यास मे हम उसके बारे में विशेष कुछ न लिख कर केवल उन्ही बातों को लिखेंगे जो हमारे इस किस्से का सिलसिला ठीक करने के लिए जरूरी होगी अथवा जिनका जिक्र उन जगहो मे होना रह गया है।

और इसी तरह की एक घटना थी रोहतासगढ़ के महाराज त्रिभुवनसिंह की अचानक होने वाली मृत्यु। महाराज गिरधरसिंह के देहान्त के कारण हुई भईहलचल और घटनाओं के जाल में फसे गोपालसिंह की परेशानी के कारण रोहतासगढ़ राज्य की इस भयंकर दुर्घटना पर ध्यान देने का किसी को अवसर ही न मिला और हमने भी उस जगह इसका वर्णन इसलिए नही किया कि हमारे किस्से से इस घटना का कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध न था, पर अब इसका कुछ हाल लिखे विना यहां का सिलसिला ठीक न होगा अतः इस जगह थोड़ा सा बहुत ही जरूरी हाल संक्षेप मे लिख कर तभी हम आगे बढ़ेंगे।

वृद्ध परन्तु प्रतापी राजा त्रिभुवनसिंह ने अपने जीवन काल मे ही राज्य का बहुत कुछ कार्यभार अपने लडके दिग्विजयसिंह पर डाल दिया था और स्वय राजधानी से दूर एक एकान्त स्थान मे रहते हुए सादा और धार्मिक जीवन व्यतीत करने लगे थे। यद्यपि बीच बीच में राजकाज के लिए इन्हे राजधानी आना और लाचारीवश रियासत के मामले भी देखने ही पड़ते थे पर अपने भरसक वे इन कामों से

बहुत ही बचते थे और जहां होता था दिग्विजयसिंह के काम में बहुत ही कम हस्त-क्षेप करते थे, फिर भी कभी कभी इसकी जरूरत पड ही जाती थी, क्योंकि दिग्विजयसिंह चाहे काफी बडे और अनुभवी हो गये थे फिर भी जवानी की उमंगों में पड कर अकसर गड़बड़ी कर ही जाते थे और इनकी कोई कोई कार्रवाई ऐसी भद्दी और भूंडी हो जाती थी कि प्रजा को वृद्ध महाराज से शिकायत करने की जरूरत पड ही जाती थी। महाराज भी, जिन्हे अपनी प्रजा से बहुत प्रेम था, ऐसे मौके पर मुनासिब कार्रवाई करते और दिग्विजयसिंह पर अंकुश रखते थे, पर जैसा कि हमने कहा, ऐसे अवसर बहुत कम ही आते थे और महाराज अपने भरसक रियासती मामलो से बचे ही रहते थे।

ऐसी अवस्था मे जब अचानक इनकी प्यारी लड़की—जमानिया के महाराज गिरधरसिंह की पत्नी—का देहान्त हुआ जिससे ये बहुत ही प्रेम करते थे, तब तो इन्हे और भी धक्का लगा तथा इन्होने राजधानी आना और भी कम करके अपना समस्त समय पूजा पाठ ध्यान भजन आदि मे ही बिताना शुरू कर दिया। सभी कोई जानते थे कि महाराज को बेटी के मरने का गम बहुत ज्यादा हुआ है अस्तु लोगों ने भी साधारण बातों के लिए महाराज को तंग करना एकदम छोड़ दिया जिससे महाराज का समय एकदम एकान्त और पूजा-पाठ में कटने लगा।

पर भाग्य की बात कुछ कही नही जा सकती। यकायक अपनी बड़ी बहिन देवीरानी द्वारा किसी बहुत ही जरूरी काम से अत्यन्त आग्रह के साथ बुलाये जाने पर वे बहुत ही बेमन और लाचारी से रोहतासगढ आये और उसी मौके पर राजधानी में ही कुछ ऐसी बीमारी मे पड़ गए कि फ़िर उनका वापस जाना न हुआ। तीन रोज की कठिन बीमारी के बाद ही उनका नश्वर शरीर छूट गया और वे स्वर्ग-लोक को सिधार गए। राजमहल और राजधानी ही क्या समूचे राज्य में शोक फैल गया क्योकि वृद्ध महाराज बडे ही प्रजावत्सल थे और जिस तरह अपनी रियाया से उन्हें प्रेम था उसी तरह रियाया को भी उनसे अत्यधिक प्रेम था और वह उन्हे बहुत ज्यादा मानती थी। मगर मौत पर किसी का चारा ही क्या था? सब लोग मन मसोस कर रह गये और धीरे धीरे समय बीतने लगा। मुनासिब समय बीत जाने पर दिग्विजयसिंह सिंहासन पर बैठे और कुअर की जगह रोह-तासगढ के राजा कहलाने लगे, तथा प्रजा ने भी उनको अपना प्रतिपालक मंजूर किया। यद्यपि बहुत से अनुभवी और जमाना देखे हुए बूढे इनका जिक्र आने पर गर्दन हिला कर कहते थे—उस पानी से भेंट नही हो सकती! पर फिर भी यह

कहना ही पड़ेगा कि दिग्विजयसिंह ने बहुत जल्द ही रियासत की बागडोर पूरी तरह से अपने हाथ में ले ली और बेखटके राज्य करने लगे।

औरों पर तो इस घटना का जो कुछ असर हुआ सो हुआ ही पर हमारी बूढ़ी देवी-रानी को अपने छोटे भाई की मृत्यु से बहुत ज्यादे सदमा पहुंचा। उनके विशाल गम्भीर और गहरी नदी की भांति बहते जाने वाले शान्त जीवन-स्त्रोत में इधर बहुत सी घटनाओं ने थपेड़े मार मार कर लहरों की श्रृष्टि करनी प्रारम्भ कर दी थी, मगर इस दुर्घटना ने तो भयंकर आंधी का काम किया जिससे उनका जीवन बहुत ही कष्टकर हो गया। यद्यपि चालाक और अपना मतलब खूब समझने वाले दिग्विजयसिंह ने अपनी बूआ के रहन सहन या खर्चे में किसी तरह का फर्क पड़ने न दिया पर वे स्वयं अपनी मर्जी से ही अपने को बहुत ही सिकोड़ कर रहने लग गईं। वह विशाल राजमहल, जिसमें एक रानी की शान शौकत और इज्जत के साथ वह रहती थीं, उन्होंने छोड़ दिया और पुराने महल के एक कोने की केवल कुछ कोठरियों मे और बहुत थोड़ी लौडियों के साथ रह कर बड़े ही सादे तौर पर अपनी जिन्दगी बिताने लगी और जब दिग्विजयसिंह ने विरोध किया तो कसम देकर उनका मुंह बन्द कर दिया। दिग्विजयसिंह ने भी, मानों उनकी इज्जत के खयाल से, उस महल को जिसमे वे रहती थी बन्द करा दिया और हुक्म दे दिया कि देवीरानी का जो सामान जहां पड़ा है वैसे ही रहने दिया जाय और सिवाय मौके मौके पर सफाई के उसमे किसी तरह का भी रद्दोबदल न किया जाय। इस प्रकार वह बड़ा राज-महल बन्द हो गया और कुछ ही दिनों बाद उधर लोगो की आवाजाही तक बन्द हो गई। किले का वह हिस्सा सुनसान और वीरान रहने लगा। सब लोग जान गये कि उसमे कोई नही रहता और न किसी को उसके अन्दर जाने की इजाजत ही है। परन्तु यह सब केवल ऊपरी दिखावा और दिग्विजयसिंह की एक चाल मात्र थी। बात यह थी कि इस महल के अन्दर वाले कुछ हिस्सों से रोहतासगढ के तहखाने और तिलिस्म का बहुत ही गहरा सम्बन्ध था और यहां से कई तरफ को जाने के गुप्त रास्ते थे जिनका हाल देवीरानी को तो मालूम था और महाराज त्रिभुवनसिंह भी अवश्य ही बखूबी जानते थे पर दिग्विजयसिंह को भी उनमे से कुछ की खबर थी और बाकी का हाल भी वह बहुत जल्द जान जायगे ऐसी उनको उम्मीद थी। इसलिए बाहर से और जाहिर मे इस महल को बन्द करके भी भीतर ही भीतर और गुप्त रीति से वह अकसर यहां आया जाया करते थे, केवल यही नही, इधर कुछ समय से उन्होंने यहां एक ऐसे व्यक्ति को भी ला बैठाया था जिसे

हमारे पाठक वखूबी जानते हैं क्योकि उससे उन्हे वहुत कुछ सान्त्विका पट चुका है। पाठक समझ ही गये होगे कि हमारा मतलब नन्हो से है जो न जाने कहा से घूमती फिरती और कहा कहां की खाक छानती पुनः यहा आ पहुंची है और बड़ी ही गुप्त रीति से इस महल मे इस प्रकार रहती है कि किसी को उसके होने की मुतलक खबर नही है, अस्तु—

आधी रात का समय है। इस महल के एक बडे कमरे में जिसमे रोशनी मामूली ही हो रही है एक खूवसूरत मसहरी पर पडी नन्हो करवटे वदल रही है। इसकी आखों मे नीद भरी हुई है और रह रह कर झपकियां आने लगती है पर फिर भी न जाने किस फेर मे पड़ी हुई यह वहुत कोशिश करके नीद को दूर भगा रही है और रंग ढग से यह भी जाहिर हो रहा है कि किसी का इन्तजार कर रही है।

यकायक कमरे के दर्वाजे पर थपकी पड़ी और नन्हो चमक कर उठ वैठी। सिरहाने की बन्द खिड़की पर एक निगाह डाल कर उसने शमादान की रोशनी तेज की और दर्वाजे के पास पहुंच उसे खोला। काले कपड़ो से अपने को अच्छी तरह ढाके हुए एक आदमी भीतर आया जिसने पहुंचते ही कहा, "यह क्या, बावाजी अभी आए नही!" नन्हो ने दर्वाजा बन्द कर दिया और आने वाले का हाथ पकड़ कर मसहरी की तरफ ले जाती हुई वोली, "अभी तक नही आये, न जाने कहां रुक गये!"

आने वाले ने अपना लबादा उतार दिया और अब हमने पहिचाना कि ये दिग्विजयसिंह है। नन्हो ने बड़ी खातिर के साथ उन्हे पलंग पर वैठाया और पंखी से हवा करती हुई बोली, "आपके आने मे भी तो वहुत देर हुई। वह काम पूरा उतरा कि नही जिसके लिए आप गये थे?" दिग्विजयसिंह ने थकावट की मुद्रा से एक अगड़ाई लेते हुए कहा, "हां वह काम हो गया, मगर परेशानी उठानी पड़ी और रास्ते मे तकलीफ भी बहुत हुई। वदन एक दम चूर चूर हो रहा है!" कहते हुए उसने इधर उधर देखा। नन्हों ने उठ कर एक आलमारी खोली और उसके अन्दर से वोतल और प्याले निकाल कर सामने रखते हुए पूछा, "रास्ते मे किस तरह की तकलीफ!"

"ठहरो जरा सुस्ता लू तो सब वताता हूं।" कह कर दिग्विजयसिंह ने आगे हाथ वढ़ाया। नन्हो ने प्याला भर कर उसके हाथ मे दिया और उसने होठो से लगाते हुए पूछा, "वावाजी के आने मे वहुत देरी हुई, तुमने दर्वाजा तो खोल रक्खा है न!" नन्हो ने जवाव दिया, "जी हां, पुतलियो वाला दर्वाज खुला हुआ

है और मैं खुद ताज्जुब कर रही हूं कि वे इतनी देर क्यों लगा रहे है, क्योंकि अधिक देर अगर हो गई तो फिर आज...."

मानो इसके जवाब में ही इस कमरे का एक दर्वाजा जो मामूली तौर पर भिड़का हुआ था खुल गया ओर अन्दर से निकलते एक बाबाजी नजर आये। लम्बा कद सिर पर जटा, नाभि तक झूलती हुई सुफेद दाढी, समूचे बदन मे भभूत मली हुई, और एक लम्बा गेरूए रंग का चोंगा शरीर पर, देखते ही किसी पहुंचे हुए सिद्ध तपस्वी महात्मा का भ्रम होता था, पर हम बखूबी जानते है कि ये ओर कोई नहीं, हम लोगो के जाने पहिचाने तिलिस्मी दारोगा साहब है जिन्होंने लोगो को ठगने और धोखे मे डालने के लिये यह रूपक रच रक्खा है। मगर इस समय हमारे बाबाजी खाली हाथ नही थे बल्कि एक भारी गठरी उठाये हुए थे। दिग्विजयसिह उन्हें देखते ही बोल उठा, "वाह वाह, लो बाबाजी भी आ पहुंचे!" पलंग से उतर उनके पास पहुच उसने उनके चरण छूए और तब कुछ ताज्जुब के साथ पूछा, "इस गठरी मे क्या है बाबाजी, बहुत भारी जान पड़ती है!" बाबाजी ने गठरी को जमीन पर रखते हुए जवाब दिया, "इसी कम्बख्त के सबब से तो मुझे रास्ते में इतनी देर लग गई। न जाने कैसे यह तहखाने में पहुंच गया था और वहां छिपा हुआ था। मैं उधर से आने लगा तो इसने मुझ पर हमला किया और सख्त चोट पहुंचाई होती अगर मैं होशियार न रहता तो!"

दिग्विजयसिह ने ताज्जुब से कहा, "हैं, तो क्या इस गठरी मे कोई आदमी है और यह तहखाने मे पहुच गया तथा इसने आप पर हमला भी किया! यह कौन है जिसकी इतनी जुर्रत हो गयी!" और तब वह उस गठरी की तरफ झुका।

इस बीच नन्हो ने बाबाजी का देखते ही एक संगमर्मर की चौकी पर कीमती रेशमी गालीचा बिछाया और तब उनके चरण छूकर बोली, "महाराज आकर आसन पर बैठ जांय तो वातें करें। आपकी सूरत से मालूम होता है कि इस कम्बख्त के सबब से आपको बहुत परेशानी उठानी पड़ी है।" बाबाजी ने कहा, "बेशक ऐसा ही है।" और तब चौकी पर जा विराजे। नन्हों अपने नाजुक हाथों से उन्हे पखा झलने लगी मगर दिग्विजयसिह ने कपडा हटा कर उस आदमी को जो गठरी मे बंधा था खोल डाला और तब गौर से उसकी सूरत देख कर कहा, "कौन आदमी है, मैं इसे बिल्कुल नही जानता!" नन्हों शमादान उठा कर पास ले गई और खूब गौर से उसकी शकल देख कर बोली, "मै भी इसे नही पहिचानती शायद बाबाजी........!"

बाबाजी बोले, "मुझे इसकी सूरत कुछ कुछ पहिचानी हुई सी तो जान पड़ती है मगर ठीक ठीक ख्याल नही पडता ! होश मे लाकर बातें करने से शायद कुछ पता लगे, मगर इस वक्त उतनी फुरसत नही है, अभी तो (दिग्विजयसिंह की तरफ देख कर) तुम इसे कही हिफाजत की जगह रख दो और जो कुछ मैं कहता हू उसे सुनो फिर मौका रहा तो इसकी भी जांच की जायगी ।"

"जो आज्ञा" कह कर दिग्विजयसिंह ने उस बेहोश को पुनः गठरी मे बांधा और उठा कर कमरे के बाहर निकल गया । उसके जाते ही नन्हो बोली, "मगर दारोगा साहब यह तो—" लेकिन दारोगा ने ओठो पर उंगली रख चुप रहने का इशारा करते हुए कहा, "चुप चुप सो सब कहने की जरूरत नही, पीछे निराले में बाते होगी । इस समय यह बताओ कि तुमने वह काम कर डाला जिसके बारे मे मैंने कहा था ?" नन्हो की निगाह एक बार दर्वाजे की तरफ घूमी और तब उसने कहा, "जी नहीं, मैंने बहुत कोशिश की पर देवीरानी कुछ ऐसी जिद्दी औरत है और शेरसिंह ने उनकी कुछ ऐसी हिफाजत कर रक्खी है कि मैं कुछ न कर पाई, हां हमारे राजा साहब को जो कुछ आपने बताया था वह इन्होंने जरूर पूरा कर दिया है ।"

दारोगा० । इन्होने क्या किया और उसका क्या नतीजा निकला ?

नन्हों० । सो मै अभी पूछ नही पाई, आपके आने के कुछ ही पहले ये आये है और सिर्फ इतना ही कह सके कि वह काम हो गया मगर बहुत तरद्दुद उठाना पड़ा, अब आप ही पूछिये तो पूरा हाल मालूम हो ।

दारोगा० । उससे तो पूछूंगा ही लेकिन तुम्हारा काम अगर पूरा न हुआ तो मुश्किल होगी । तुम जैसे भी हो सके देवीरानी से वह चीज कब्जे मे करो, नही तो सब करा धरा चौपट हो जायगा ।

नन्हों० । मैं फिर कोशिश करूंगी और जो कुछ भी हो सकेगा करने से बाज न आऊंगी मगर मेरा दिल कहता है कि जब तक शेरसिंह मौजूद रहेंगे कुछ न हो सकेगा ।

दारोगा० । तो मै उन्हे भी बहुत जल्द ही रास्ते से हटाने का उपाय करूंगा, तुम उस फिक्र मे लगी रहो ।

नन्हो० । जो आज्ञा ।

इसी समय दर्वाजा खुला और दिग्विजयसिंह वापस लौटते नजर आए । न जाने वे उस बेहोश को कहां रख आये थे या किसके सुपुर्द कर आए थे । बाबाजी

ने उनके आते ही पूछा, "अच्छा बताओ तुम क्या करके आये? वह काम हुआ?"

दिग्विजय०। जी हां वह काम तो पूरा हो गया पर तरद्दुद बहुत उठाना पड़ा। आपने यह नही बताया था कि रास्ते मे इस तरह गिरहे पड़ी हुई मिलेगी और कदम कदम पर जान जोखिम का सामना होगा!

दारोगा०। (जोर से हंस कर) वाह, इतने ही से घबड़ा गये! तब फिर हो चुका! मै समझ गया कि तिलिस्म तोड़ने का काम तुमसे नही होने का! जब ऐसी मामूली जगह में जाने और इतना छोटा सा काम करने मे तुम्हारी यह हालत है तो तुम तिलिस्म के अन्दर जाकर क्या करोगे? वह तो तिलिस्म का बिल्कुल बाहरी हिस्सा था जहां मैंने तुम्हे भेजा था।

दिग्वि०। (कुछ दब कर) नही नही, तिलिस्मी मामलों मे यह सब होना लाजमी ही है, पर मेरा मतलब यह कि आपने जो कुछ कहा उससे मै यही समझा था कि रास्ता बिल्कुल साफ होगा और मै बेखटके जाकर उस काम को पूरा कर सकूंगा।

दारोगा०। हां तो तुम उसे बिल्कुल साफ रास्ता ही समझो, अभी तो आगे मैं जहां तुम्हे भेजूंगा वहां और भी गाठें लगी हुई मिलेंगी और सच्चे खतरों का मुकाबला करना पडेगा, यह तो श्रीगणेश भी न था। खैर जाने दो और यह बताओ कि तुमने क्या किया, वहां तक पहुंच गए, वह चीज मिली?

दिग्वि०। जी हां मै वहां तक पहुंच गया और मुझे वह चीज भी मिल गई, अगर कोई धोखा नही हुआ तो देखिए यही वह चीज है।

कहते हुए दिग्विजयसिंह ने कपड़ों के अन्दर हाथ डाला और लोहे का एक गोल डिब्बा जिसका पेटा बालिश्त भर से कम ही होगा निकाल कर दारोगा के सामने रख दिया। इस डिब्बे की बनावट कुछ अजीब किस्म की पहलदार सी थी और इसके ऊपर कुछ अक और अच्छर बने हुए थे जो साफ पढे न जाते थे। दारोगा ने शमादान की रोशनी मे गौर से उन अच्छरों को देर तक देखा और तब कहा, "बेशक यही है।"

दिग्वि०। मगर इसका पता नही लगता कि यह डिब्बा खुलेगा कैसे, न तो कही जोड नजर आता है न कोई ताली लगाने की जगह!

दारोगा०। देखो यह ऐसे खुलता है।

यह कह कर दारोगा साहब ने उस डिब्बे को उठाया और जोर से जमीन पर पटक दिया। गिरते ही उस डिब्बे के चार टुकड़े हो गए, मानो उसमे चार जगहों से जोड़ लगा हुआ हो। उसके अन्दर से एक ताली निकल पड़ी जिसे दारोगा ने

उठा लिया और उलट पुलट कर गौर से देखने बाद कहा, "वेशक यही है।"

इस ताली की बनावट कुछ अजीव किस्म की थी। इसमें तरह तरह की पत्तियां वनी हुई थी और कही कही कुछ खुदा हुआ भी था। दारोगा के हाथ से लेकर दिग्विजयसिह और फिर नन्हों ने भी उस विचित्र चाभी को देखा और उसकी अद्भुत बनावट पर गौर किया।

दिग्वि०। कहिए वावाजी, यही है न वह चीज ?

दारोगा०। हां मालूम तो यही पड़ती है, पर अब काम लिया जाय तो ठीक ठीक पता लगे, तुमने निशान तो ठीक देख लिया था न ?

दिग्वि०। जी हां खूब अच्छी तरह, वहा कुल बारह डिब्बे गोलाकार सजाए हुए थे और हर एक डिब्बे के ऊपर आदमी की एक एक खोपड़ी रक्खी हुई थी, बाकी डिब्बों पर पूरी खोपड़ी थी और एक पर आधी ही थी। मैंने उस आधी खोपडी से गिनना शुरू किया और नौवें नम्बर तक पहुंच खोपड़ी फेंक डिब्बा उठा लिया जो यह हाजिर है। मेरे गिनने में कोई भूल नही हुई न उस जगह तक पहुंचने मे, अब इसे आप जानिये कि डिब्बा और ताली यही है कि नहीं।

दारोगा। इसका भी वहुत जल्द ही पता लग जायगा, तहखाने मे जाने भर की बात है।

दिग्वि०। तो कब चलियेगा, आज चलेगे ?

दारोगा०। इतना घवडाने से होगा ? अभी वह किताव भी तो मिलनी चाहिये !

दिग्वि०। जब तिलिस्म की चाभी मिल गई तो अब क्या कसर रह गई, तिलिस्मी पोथी आपको दे ही चुका हूं, और अब यह ताली भी मिल गई, अब देरी क्यो और किस लिये !

दारोगा०। (हंस कर) तुम्हारी बात सुन कर मुझे हंसी आती है, तिलिस्मी मामलो की तुम्हे इतनी कम जानकारी है यह मैं नही जानता था !

दिग्वि०। (कुछ झेंप कर) क्या मैंने कोई ऐसी बात कही........?

दारोगा०। (दिग्विजय की पीठ पर हाथ रख कर) क्या तुमने वह पोथी पढी थी जो पुजारीजी से तुमने ली थी !

दिग्वि०। हा अच्छी तरह, मुझे उसका एक एक लफ्ज अभी तक याद है।

दारोगा०। तो क्या उसमे यह बात लिखी तुमको नही मिली कि उसी तरह की एक तिलिस्मी किताब और है तथा जब तक दोनों पोथियां एक साथ न होंगी वह तिलिस्म टूट नहीं सकता !

दिग्वि०। (चमक कर और सर नीचा करके) बेशक यह तो मैंने उसमें पढा था (कुछ रुक कर) मगर मेरा मतलब यह था कि मैंने और आपने भी उस दूसरी किताब को कब्जे में करने की कोशिश की लेकिन कुछ सफलता न मिली। आपको याद ही होगा—क्योंकि आप ही ने यह बात मुझसे कही थी—कि वह दूसरी किताब नहीं मिली तो तिलिस्मी चाभी कब्जे में करने की कोशिश होनी चाहिए और इसी पर मैंने अपनी जान जोखिम में डाल कर (दारोगा के हाथ वाली चाभी की तरफ इशारा करके) यह चाभी कब्जे में की। तो क्या अब इस चाभी और उस पुजारीजी वाली किताब की मदद से तिलिस्म तोड़ा नहीं जा सकता ?

दारोगा०। यह चाभी तिलिस्मी पोथी का काम नहीं दे सकती और न इस इरादे से मैंने इसे मंगवाया ही है, इससे जो काम मैं लेना चाहता हूं वह बिलकुल दूसरा ही है !

दिग्वि०। वह क्या !

दारोगा०। मुझे एक तिलिस्मी पोथी का पता लगा है और जहां पर वह रक्खी हुई है उस जगह को खोलने का काम यह चाभी करेगी।

दिग्वि०। ऐसा ! (खुशी से) तब फिर देर क्यों ! उस जगह को खोलिये और किताब काबू में कर काम शुरू कर दीजिये।

दारोगा०। बेशक कोई शुभ घड़ी देख कर वह काम शुरू कर देना चाहिए मगर मैं चाहता था कि जब तिलिस्म तुम्हें तोड़ना है तो उस पोथी को निकालने का काम भी तुम्हीं शुरु करते।

दिग्वि०। मैं बहुत खुशी से तैयार हूं, बताइए कि मुझे कहां जाना और क्या करना पड़ेगा।

दारोगा०। मैं बताने को तैयार हूं, (नन्हों से) तुम भी पास आ जाओ क्योंकि शायद तुम्हारी मदद की भी इस काम में दिग्विजय को जरूरत पड़े।

नन्हों और दिग्विजय खसक कर दारोगा के पास आ गए और दारोगा साहब ने धीरे धीरे उन दोनों से कुछ कहना आरम्भ किया !

दूसरा बयान

रोहतासगढ़ किले के पश्चिम की पहाड़ियों में दबे हुए उस स्थान पर अब हम अपने पाठकों को चलते हैं जो जोगी बाबा की समाधि के नाम से पुकारा जाता है और जहां इससे पहले भी हमारे पाठक जा चुके हैं।

दिन ढल चुका है और यहां का पुजारी मातादीन अपने सब कामो से निश्चिन्त होकर भोजन का कुछ जुगाड करने की फिक्र में लगा हुआ है। छत पर बैठा वह थाली में आटा लिए उसे गूंध रहा है तथा साथ ही सामने पड़ने वाली छोटी खिड़की मे से झांक कर नीचे तथा चारो तरफ के जंगल पहाड़ों के मनोरम दृश्य को भी देखता जा रहा है जिसकी शोभा इस संध्या के समय में और भी बढ गई है। उसकी निगाह बावली तथा उसके बगल से बहते जाने वाले नाले के किनारे पर के उन तरह तरह का काम करते हुए सैलानियों की तरफ भी जा पड़ती है जिनकी संख्या सध्या की अवाई के कारण अब कम हो रही है और उन्ही में की एक नई शकल पर वह खास तौर से ताज्जुब को निगाहे डालता है जिसे आज के पहिले इस जगह आते उसने कभी देखा नही था।

यह एक लम्बे चौड़े डील डौल और रोबीली शकल वाला आदमी है जिसके चेहरे से जान पड़ता है कि जरूर किसी ऊंचे रुतबे का है। इसका रंग हलका गेहुंआ, आंखें बड़ी और मोछ तथा मोटे गलमुच्छे काले और गझिन है। कपड़े वेशकीमत और भड़कदार हैं और वे दो तीन नौकर जो इसके साथ है जब कभी इससे बात करते या कुछ पूछते है तो बहुत ही अदब से और हाथ जोडे हुए। इसकी सवारी का घोड़ा जो बहुत ताकतवर और कीमती है इसी जगह पास ही बंधा हुआ है और उस पर के चारजामे और साज सामान से भी उस आदमी की हैसियत का पता लगता है, मगर इसके साथ सामान के किस्म में एक गठरी तक नही है। अभी थोड़ी ही देर हुई घोडे पर सवार यह इस जगह पहुंचा है और शायद इस स्थान को रमणीक समझ कर कुछ देर के लिये ठहर कर सुस्ता रहा है।

मगर इधर उधर देखते हुए यकायक मातादीन का ध्यान एक दूसरे सवार की तरफ गया जो दूर से घोडा दौडाता हुआ अभी अभी आकर बावली के पास रुका था और जिसे देखते ही यह चमक कर उठ खड़ा हुआ। आंटे की थाली इसने दूर हटा दी और पास के लोटे से जल्दी जल्दी पानी उंडेलता हाथ साफ कर ही रहा था कि यह नया आदमी सीढिया तय कर बावली की ऊंची जगत पर आ पहुंचा और तब इस मकान की तरफ बढ़ा। जब तक वह इसके अन्दर पहुंचे तब तक मातादीन भी सीढिया उतर नीचे आ गया और उस आदमी के भीतर घुसते घुसते उसके सामने जा पहुंचा।

यह आने वाले शेरसिंह थे जिनके सामने पहुंचते ही मातादीन ने दोनों हाथ उठा लम्बे चौड़े आशीर्वाद देने शुरु किये मगर उन्होंने बेसब्री के साथ रोक कर कहा,

"बस बस बहुत हुआ, मैं बड़ी जल्दी मे हूं, फुर्ती से तोशेखाने की तालियां लाओ।"

"अभी लाया" कह कर मातादीन पुनः सीढ़ियां चढ़ ऊपर वाली अपनी कोठरी मे पहुंचा और बक्स खोल तालिया निकालने लगा, इधर शेरसिह तब तक मकान की निचली मन्जिल के दालान में पहुंचे और उसके भीतर पड़ने वाली एक कोठरी के दर्वाजे पर जा खड़े हुए जिसमे भारी ताला बन्द था। इस जगह दालान की बगली दीवार मे एक छोटी खिड़की पड़ती थी जिसकी राह बाहर बावली की तरफ का दृश्य देखा जा सकता था। इस खिड़की मे से होती हुई शेर-सिंह की निगाह बाहर के उसी बड़ी बड़ी मोछों और गलमुच्छो वाले आदमी पर पड़ी और जब मातादीन तालियो का बड़ा गुच्छा लिए पहुंचा तो उस अजनबी की तरफ दिखा के उन्होंने पूछा, "मातादीन, यह कौन आदमी है!" मातादीन ने खिड़की से झांक कर देखा और कहा, "सरकार, यह अभी थोड़ी ही देर हुआ कहो से आया है और कोई रईस जान पड़ता है, पर आज के पहिले कभी इसे यहां मैने नहीं देखा था, क्या मैं दरियाफ्त करूं कि यह कौन है या कहां का रहने वाला है!"

"कोई जरूरत नही" कहते हुए शेरसिह ने हाथ बढ़ा मातादीन से तालियों का गुच्छा ले लिया और उसमे से एक ताली छांट उस कोठरी के ताले को खोला इसके बाद उससे यह कह कर कि 'तुम जाओ अपना काम करो, मुझे अन्दर देर लगेगी' वे उस कोठरी के अन्दर घुस गये। मातादीन ने पूछा, "सरकार रोशनी ले आऊं।" पर उन्होंने जवाब दिया, "कोई जरूरत नही" और तब उस कोठरी का दर्वाजा भिड़का लिया।

थोड़ी देर के लिए शेरसिह का साथ छोड़ अब हम उस व्यक्ति की तरफ चलते है जिसके बारे मे शेरसिह ने मातादीन से सवाल किया था। शेरसिह को आते और इस मकान मे जाते सभो की तरह उसने भी देखा था और वह इन्हीं के बारे मे कुछ सोच रहा था जब कि उसके एक नौकर ने झुक कर धीरे से कुछ कहा जिसे सुन वह चमक गया। अपने नौकर की तरफ उसने गहरी निगाह से देखा और तब कुछ इशारा किया जिसे समझ वह नौकर कही चला गया।

थोड़ी देर बीत जाने बाद वह आदमी उठा और धीरे धीरे चलता हुआ उस मकान के अन्दर आया। सहन पार करने के बाद ठीक सामने एक ठाकुरद्वारा पड़ता था जिसमे संगमर्मर का फर्श लगा हुआ था और पीछे की दीवार के साथ सुन्दर बैठकी बना कर उस पर कई मूर्तियां पधराई हुई थी जिसकी तरफ यह बढ़ा। लालची ब्राह्मण मातादीन जो उसे मकान की तरफ आता देख रुक गया था और

अब यह समझ कर कि शायद यह ठाकुरजी पर कुछ चढ़ाये ठाकुरद्वारे की तरफ बढ रहा था, इसे भी उधर ही घूमता पा जल्दी से आगे बढा, वह मखमली परदा जो ठाकुरद्वारे के सामने पड़ा हुआ था इसने खींच कर अलग कर दिया और मूर्तियों के पास जा खड़ा हुआ। वह आदमी भी हाथ जोड़ कर बड़े भक्तिभाव से उसी जगह पहुचा और आंखें बन्द कर जरा ध्यान करने के बाद कुछ प्रार्थना कर के उसने अपनी जेब से निकाल कर एक अशर्फी ठाकुरजी के सिंहासन के सामने पड़ी आरती की थाली म रख दी। अशर्फी देख मातादीन की आंखे चमक गई। उसने भोग की थाली मे से निकाल कर चरणामृत और तुलसीदल इसे दिया और तब एक मूर्ति के गले मे से माला उतार कर इसे पहिनाने के लिए हाथ उधर बढाया मगर उस आदमी ने रोक कर कहा, "रहने दीजिये, रहने दीजिये, भगवान के गले मे कैसी शोभा दे रही है। इसे मत उतारिए!"

"जो मर्जी सरकार की" कह मातादीन ने मूर्ति के पैरो के पास से कुछ फूल उठाये और उसके हाथ मे दिए जिन्हे उसने ले के सूंघा माथे से लगाया और तब उसी जगह एक बगल रख दिया, तब इधर उधर एक निगाह डाल कर बोला—

अजनबी०। स्थान बडा ही रमणीक है और इन मूर्तियो को देख कर तो तबीयत प्रसन्न हो गई! बड़ी सुन्दर मूर्तियां है, ऐसी मनोहर प्रतिमाएं मैंने कही नहीं देखी, ये तो शायद बडे महाराज की बहिन........

माता०। जी हां सरकार, ये बूआजी—देवीरानीजी—की मूर्तियां है, बहुत दिनो से उनके पास चली आ रही है, पहिले वे खुद ही नित्य इनकी सेवा पूजा करती थी, अब कुछ बरसो से इन्हे यहां पधरवा दिया है।

अज०। पूजा अर्चना के लिए शायद आप ही.......

माता०। जी हां मुझ पर ही भगवान की सेवा का भार है, बहुत दिनों से मैं इसी काम पर हू।

इसी समय उस अजनबी का एक नौकर चांदी की एक थाली में कुछ पूजा का सामान फूल माला चन्दन आरती धूपबत्ती आदि सजाथे हाथ मे लिये वहा पहुंचा जिसे देखते ही कुछ डांट कर उस अजनबी ने कहा, "इतनी देर कर दी! मैं जल्दी लाने को कह आया था न?"

उन नौकर ने डरे हुए ढग से कहा, "हुजूर, फूल बड़ी मुश्किल से मिले, यहां कहीं पास मे थे ही नही.......!"

मातादीन ने कहा, "वह पीछे वाले बाग मे चले जाते, एकदम फूल ही फूल

गंजे है !" नौकर ने जवाब दिया, "जी हां गया था पर माली ने घुसने नहीं दिया।" "बड़ा पाजी है कम्बख्त !" कहते हुए मातादीन ने वह रकाबी ले ली जिसे वह अजनबी नौकर से ले के उसकी तरफ बढ़ा रहा था और उस सामान से ठाकुरजी की साधारण भाव से पूजा करने लगा। अजनबी और नौकर उसी जगह भक्ति-भाव से हाथ जोडे खड़े मूर्तियों का दर्शन करते रहे।

मगर यह सब भक्तिभाव नकली था और मातादीन ने गहरा धोखा खाया। जैसे ही उसने वह घी का दीया और मोटी धूपबत्ती हाथ मे ली जो पूजा की सामग्री में बलती हुई तैयार थी और उससे आरती करना शुरू किया उसके सिर मे एक चक्कर आया। इतनी तेज बेहोशी का असर उन दोनों चीजों मे था कि दो चार सांस नाक मे जाते ही उसके हाथ ढीले पडने लगे और वह लड़खड़ाया। पूजा की रिकाबी उसके हाथ से गिरने लगी जिसे उस अजनवी ने सम्हाला और गिरते हुए पुजारी को नौकर ने हाथो पर ले लिया। शायद पहले ही से सब बातें तय थी क्योकि दोनो ने मिल कर उसे उठाया और फुर्ती से बगल की एक कोठरी मे घुस गये। बेहोश मातादीन जमीन पर लिटा दिया गया और अजनबी ने नौकर से कहा, "जाओ और दरवाजे के पास खडे रहो, खतरा देखना तो इशारा करना, तब तक मै पुजारी बन कर इसे ठीक करता हूं। गोकुल बाक़ी काम कर रहा है न ?" जवाब मे उसने कहा, "जी हा, बाहर सब ठीक हो रहा है।" और तब एक छोटी पोटली वहां रखता हुआ कोठरी के बाहर निकल गया।

बड़ी फुर्ती फुर्ती इस अजनबी ने अपना काम शुरू किया। पोटली से सामान निकाल पहिले तो उसने अपनी सूरत मातादीन जैसी बनाई, तब कपडे उतार उसके कपडे पहिने, फिर अपनी पौशाक उसे पहनाई और उसका चेहरा रंग रगा तथा नकली गलमुच्छे वगैरह लगा कर ठीक अपनी शकल का किया। इसके बाद रंग भरने का सामान वगैरह फिर उसी पोटली मे बांध वह उठ खडा हुआ। दर्वाजे से बाहर झांका तो देखा क्या कि ठाकुरद्वारे के सामने वाले दालान मे उसके नौकरों ने एक साधारण सा बिस्तरा बिछा दिया है और दवाओ की कुछ शीशियां, खल बटिया, तथा और रोगी की परिचर्या का सामान भी रख दिया है। इसने इशारा किया, दो आदमी इधर बढे और बेहोश बदली सूरत वाले मातादीन को उठा कर उस बिस्तरे पर ले जाकर लेटा दिया, इसके बाद उसकी किसी बात के जवाब मे "बहुत अच्छा" कह दोनो मकान के बाहर निकल गये।

अब हम थोड़ी देर के लिए शेरसिंह की तरफ चलते है। हम पहिले लिख

आये हैं कि यह मकान बहुत बड़ा था और इसका जितना हिस्सा ऊपर नजर आता था उससे कहीं ज्यादा जमीन के अन्दर था जिसमे कितने ही दालान कमरे और कोठरियां थी। शेरसिंह इस समय बहुत ही भीतर और नीचे पड़ने वाले एक हिस्से के अन्दर खड़े कुछ कर रहे थे कि बाहर से किसी ने पुकारा—"सरदार साहब, सरदार साहब !" उन्होंने चौंक कहा, "कौन है ?" और तब जो कुछ कर रहे थे उससे हाथ रोक कर कोठरी के बाहर निकल आए। कोठरी के दर्वाजे के पास ही बहुत तेज रोशनी की एक लालटेन जल रही थी जिसे उन्होंने उठाया और हाथ ऊंचा किया तो देखा कि सामने से मातादीन सीढ़ियां उतरता चला आ रहा है। इन्होंने दो कदम उधर बढ़ कर पूछा, "क्यों क्या बात है मातादीन ?" उसने कुछ घबराहट के साथ जवाब दिया, "सरकार वह अजनबी जो बाहर टिका हुआ था न, न जाने उसको क्या हो गया, मुझे तो जान पड़ता है वह मर जायगा !"

"है, मर जायगा ! सो क्यो ?" शेरसिंह बड़े ताज्जुब से बोले। पुजारी ने जवाब दिया, "यकायक उसके पेट में शिद्दत का दर्द हुआ, उसके नौकरों ने मुझसे कहा तो मैंने अन्दर कुछ जगह दे दी जहां आते ही वह जमीन पर गिर पड़ा और तब बेहोश हो गया। मालूम नहीं यकायक उसे क्या हो गया। या तो किसी ने उसे कुछ खिला या पिला दिया है और या फिर...!"

शेरसिंह ने कहा, "तो क्या मै चल कर देखूं ?" पुजारी बोला, "जी हां, जरा चलिए और देखिये, शायद आपके कोशिश करने से बेचारे की जान बच जाय।" आगे आगे शेरसिंह और उनके पीछे पीछे पुजारी मातादीन उस जगह के बाहर की तरफ चले।

मगर दो ही चार कमरों से शेरसिंह गुजरे होंगे कि यकायक वे चमक गये और रुक कर बोले, "यह धूआ यहां कैसा फैला हुआ है ? बड़ा कड़ुआ धूआं है!" मातादीन भी इधर उधर देख कर बोला, "जी हां, ठीक तो हैं, मैं आ रहा था तो मुझे भी कुछ बदबू सी लगी थी पर मैने समझा था कि शायद आपने कोई कार्रवाई की होगी। मगर देखिये तो सही—उस तरफ उस कोठरी मे, उसी मे से धूआं निकल रहा है।" शेरसिंह ने ताज्जुब से उस ओर गर्दन घुमाई और चमक कर बोले, "हां हां ठीक तो है, उसी के अन्दर से धूआ निकल रहा है मगर वहां तो....!" कहते हुए जल्दी जल्दी चल कर वे उस जगह पहुंचे और उस कोठरी के अन्दर झांक कर देखने लगे जिसमें से धूआं निकल रहा था, मगर उसी समय उनके सिर मे बड़ी जोर से चक्कर आया और उनके मुंह से निकला—

"अरे, यह तो बेहोशी........!" पर वे अपनी बात पूरी भी न कर सके और जमीन पर गिर गये। उस नकली पुजारी ने झपट कर उनको सम्हाला और उनके हाथ की लालटेन को भी सम्हाल कर उन्हे धीरे से जमीन पर सुला दिया। इसके वाद उनकी तरफ झुक कर गौर से उनकी हालत देखी और तब गर्दन हिला कर कहा, "चलो इधर से तो निश्चिन्ती हुई, अव जल्दी होश में नही आते, अव अपना काम निपटा डालना चाहिए।" बेहोश शेरसिंह को उसने उसी तरह वही छोड़ा और उनकी तेज रोशनी वाली लालटेन हाथ में उठा उस कोठरी मे पहुंचा जिसके अन्दर शेरसिंह थे जब वह इस जगह पहुंचा था।

यह कोठरी बहुत बडी न थी, मुश्किल से चार पाच हाथ लम्बी और इससे भी कम चौड़ी होगी, मगर इसकी बनावट कुछ अजीब ढंग की थी। इसमें चारो तरफ नीचे ऊपर दाहिने बायें सभी तरफ ताखे ही ताखे बने हुए थे और ये सब ताखे भी एक ही किस्म या रंग ढंग के नही बल्कि ऊंचे नीचे छोटे बडे गहरे और छिछले तथा लम्बे नाटे तिकोने चौकोने पचकोने या गोल बने हुए थे। मगर जिस तरफ नकली पुजारी की नजर गई वहां ये ताखे नही थे बल्कि एक छोटी सुरग का मुहाना था जो बाईं तरफ खुला नजर आ रहा था। इस रास्ते को खुला हुआ देख इस अजनबी ने सन्तोष की एक लम्बी सांस खीची और धीरे से कहा, "बारे कम्बख्त दरवाजा बन्द न कर पाया, नही तो सब मेहनत ही बरबाद हो जाती!"

हाथ की लालटेन ऊंची कर एक निगाह उसने इस कोठरी के चारो तरफ डाली। देखा कि वे सब आले खाली नही है बल्कि कई में तरह तरह का सामान भी रक्खा हुआ तथा कई पर तरह तरह की छोटी बड़ी मूर्तियां भी बैठाई हुई है। कही मनुष्य की, कही जानवरों की, और कही चिड़ियों की मूर्तिया बनी हुई थीं पर इन्हें गौर से देखने में उसने समय नष्ट न किया और फौरन ही अपनी निगाह उधर से हटा उन सीढियों पर पैर रक्खा जो उस रास्ते के अन्दर नजर आ रही थी। पतली पतली दस या बारह डंडा सीढियां थी जिन पर वह फुर्ती फुर्ती उतर गया और तब यकायक एकदम ठिठक कर रुक गया क्योंकि उसके सामने ही एक ऐसी भयानक वस्तु थी जिसने उसके रोंगटे खडे कर दिये। एक बहुत बड़ा अजदहा कुण्डली मारे जिस जगह वे सीढियां खतम होती थी उसके कुछ ही आगे बैठा हुआ अपनी चमकीली निगाहों मे एकटक उसकी तरफ देख रहा था जिस पर निगाह पड़ते ही वह कांप गया, मगर जब हिम्मत कर गौर से देखा और हाथ की लालटेन ऊंची की तब उसकी जान मे जान आई और उसे मालूम हुआ कि यह अज-

दहा असली नहीं बल्कि बनावटी और किसी धातु का बना हुआ है। एक क्षण के लिए यह आदमी रुका और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये, आगे बढे या पीछे हटे, मगर फिर हिम्मत करके आगे बढा। अजगर से बहुत फासला रखते हुए यह उस कमरे की दीवार के साथ साथ चक्कर काटता हुआ उसके पीछे की तरफ गया जहां एक दूसरा दर्वाजा खुला हुआ नजर आ रहा था। हाथ की लालटेन दर्वाजे के अन्दर डाल इसने एक बार खूब गौर से भीतर चारो तरफ देखा और तब खुशी की एक किलकारी मार कर बोला, "यही जगह तो है !" इसके बाद फुर्ती से उस दर्वाजे के अन्दर चला गया।

यह एक इतनी बड़ी जगह थी कि वहां की पूरी लम्वाई चौड़ाई और ऊंचाई को दिखाने मे उस लालटेन की तेज रोशनी भी असमर्थ थी जो इस समय अजनबी के हाथ में थी। एक बहुत ही बड़ा कमरा जिसकी ऊंची छत मोटे मोटे कितने ही खम्भो पर टिकी हुई थी इसके सामने था जिसकी लम्बाई चौड़ाई का अन्दाजा करना भी कठिन था। यह आदमी थोड़ी देर इधर उधर देखता रहा, तब आगे वढा और अपने हाथ की लालटेन ऊंची किए इधर से उधर देखने फिरने लगा।

इस वडे कमरे की दीवारो और खम्भों के साथ भी बहुत सी पत्थर की खूंटियां लगी हुई थी और उनके साथ तरह तरह की चीजें लटकी हुई थी। कही तलवार और खजर थे तो कही तरह तरह के कीमती शाल दुशाले टगे थे, कही पर तरह तरह की शकल के छोटे वडे झोले लटके हुए थे तो कही पर कितना ही ऐसा सामान जिसका कोई मतलब या प्रयोग समझ मे न आता था। मगर मालूम होता है कि उस अजनवी को इन्ही मे से कुछ सामानो की जरूरत थी क्योकि इधर उधर कुछ देर तक घूमने फिरने और देखने के बाद उसने उन्ही खूटियो पर की कुछ चीजे उतारना शुरू किया। पहिले तो एक लम्बे चोगे जैसी एक पौशाक जो किसी प्रकार के बहुत ही महीन महीन तारो से बुन कर बनाई हुई जान पड़ती थी उतारी और वाहर भीतर से अच्छी तरह गौर से देख भाल और झटकार कर जमीन पर रक्खी, तव एक अजीव किस्म का टोप जो उसके पास ही की एक दूसरी खूंटी पर लटक रहा था उतारा और देख भाल कर उसे भी उस पौशाक के साथ ही रक्खा, तव दूसरी तरफ गया और एक वड़ा सा झोला जिसके अन्दर न जाने किस तरह का सामान था एक तीसरी खूटी से उतारा और उन्ही पहिले उतारी हुई चीजो के साथ रक्खा पर फिर न जाने क्या सोच कर उसे उठाया और हाथ वाली लालटेन की रोशनी मे वड़े गौर से उसके अन्दर की चीजों को देख

विचित्र मुद्रा से अपनी गर्दन हिलाई, तथा उसे वहीं छोड़ उस तरफ गया जिधर की खूंटियों पर तरह तरह के हथियार लटक रहे थे। इसमे से भी खोज ढूंढ़ कर उसने एक वजनी और चमचमाता हुआ त्रिशूल उतारा जिसका फल सुनहरा था। इसे हाथ में लिए वह एक तरफ की दीवार के पास गया जिधर ऊपर से नीचे तक और बाकी लम्बाई चौड़ाई मे आलमारियां ही आलमारियां बनी नजर आ रही थी जिनमे से कुछ बन्द और कुछ खुली थी। वह एक ऐसी आलमारी के पास जाकर रुका जिसके अन्दर तरह तरह के डिब्बे शीशियां और बोतलें रक्खी हुई थी। इनमे से भी कुछ सामान उठा कर अपने कब्जे मे किया और तब एक निगाह चारो तरफ डाल यह कहता हुआ पीछे को लौटा, "बड़ी बड़ी नायाब चीजें यहां पर है पर अफसोस ज्यादा रुकने का मौका नही है।" अपने हाथ का सब सामान लिये वह उसी जगह आया जहां वह पौशाक़ उतार कर रक्खी हुई थी। यहां पहुंच उसने अपनी कमर से एक चादर खोली और उसे जमीन पर बिछा सब चीज की एक गठरी बनाई। वह त्रिशूल पेच पर था और खुल कर टुकड़े टुकडे हो जाता था, उसको भी खोल कर उसी गठरी मे बांधा और तब उस गठरी को हाथ में उठाये हुए उलटे पैर जिधर से आया था उसी तरफ को लौटा। लौटती बार भी वह उस अजगर के पास न गया बल्कि दूर ही दूर से कावा काटता हुआ सीढ़ी पर पहुंचा और ऊपर चढ़ गया।

ऊपर पहुंच इस आदमी ने एक सहमी हुई निगाह अपने चारो तरफ डाली और सब कुछ ज्यों का त्यो पा सन्तोष की सास खीची। ताखो वाली कोठरी के बाहर निकल उस जगह पहुंचा जहां शेरसिंह को छोड़ गया था, देखा कि वे उसी तरह बेहोश पड़े हुए है। लालटेन पास ले जाकर एक बार गौर से उनका चेहरा देखा और तब उसे उसी जगह एक तरफ रख हाथ की गठरी उठाये सीढियां चढ़ ऊपर को निकल गया। इस समय उस जगह का धूआं बहुत कुछ साफ हो चुका था।

बहुत देर के बाद शेरसिंह की बेहोशी दूर हुई और वे दो एक करवटें लेने के बाद उठ बैठे। उनके सिर मे बेतहाशा दर्द हो रहा था जिस कारण उन्होंने अपने हाथों से बहुत जोर से अपना सिर पकड़ कर दबाया और लड़खड़ाती आवाज में बोले, "यह मुझे क्या हो गया था!" इसके साथ ही पिछली सब बाते उन्हे याद आ गईं। उन्होने गर्दन घुमा उस कोठरी की तरफ देखा जिसके अन्दर से धूआं निकलता देखा था, बाहर जाने वाली सीढ़ियों की तरफ निगाह की, तब उस कोठरी की तरफ देखा जिसके अन्दर वे थे जब नकली मातादीन वहां पहुंचा था

और साथ ही चमक कर बोल उठे, "ओफ ओह, गजब हो गया, अजगर वाले तह-खाने का दर्वाजा तो मैं खुला ही छोड आया था।" इस कहने के साथ ही तरह तरह की बातें उनके दिमाग मे घुस गई और वे घबड़ा कर उठ खडे हुए। उनके सिर मे अभी तक चक्कर आ रहे थे पर उन्होने उस तरफ ख्याल न किया और झप-टते हुए उस ताखो वाली कोठरी के अन्दर पहुचे। बाईं तरफ वाले मुहाने को उसी तरह खुला पा जैसा कि वे छोड़ गये थे उन्होंने अपने माथे पर हाथ मारा और कहा, "अफसोस, मेरी अक्ल को भी न जाने क्या हो गया था जो इस रास्ते को खुला ही छोड के मैं बाहर निकल आया, अब न जाने क्या क्या सामान लुट गया होगा!"

कुछ क्षण तक उसी जगह खडे शेरसिंह सोचते रहे कि उनके लिये क्या करना मुनासिब होगा—अन्दर जाकर उस कम्बख्त को खोजना जिसने उन्हें बेहोश किया था या ऊपर जाकर पता लगाना कि वह निकल गया कि अभी तक यहीं कहीं है? पर अन्त में उन्होंने ऊपर ही जाना मुनासिब समझा। खुले हुए मुहाने के ऊपर की तरफ वाले एक ताख में एक साधू की मूर्ति बनी हुई थी जिसकी तरफ हाथ बढ़ा कर शेरसिंह ने न जाने क्या किया कि वह मुहाना एक खटके की आवाज के साथ बन्द हो गया और तब यह कहते हुए कि 'अगर वह कम्बख्त अभी तक इसी के अन्दर है तो अब किसी तरह बाहर नही निकल सकता' वे इस इमारत के बाहरी तरफ चले।

कितने ही कमरों कोठरियो दालानों और सीढ़ियों को तय करते हुए जब शेर-सिंह उस तहखाने के बाहर हुए तो यह देख कर चमक गये कि रात खासी जा चुकी है और जगह जगह रोशनी हो रही है। 'जरूर मै बहुत देर तक बेहोश रहा' कहते हुए वे मकान के सहन में पहुचे जहां इस समय एक अजीब सा बावेला मचा हुआ था। इस जगह के जितने नौकर चाकर माली पहरेदार इत्यादि थे वे सब एक जगह इकट्ठे होकर बहुत ताज्जुब और अफसोस के साथ कुछ देख और आपस मे बातचीत कर रहे थे और जिस समय शेरसिंह वहा पहुंचे तो एक आदमी जो वास्तव मे वहां के पहरेदारों का जमादार था गर्दन हिला हिला कर कह रहा था, "दुनिया का हाल देखा! बेचारे को मौत के मुंह मे छोड कर सब नौकर चाकर इसका माल असबाब लेकर चम्पत हुए, नमक का खयाल तक न किया, जिन्दगी भर जिसकी बदौलत खाया पीया और चैन किया, उसके मरते वक्त काम न आये!" एक दूसरे आदमी ने जवाब दिया, "गंगासिंह उनके पीछे गये तो हैं, देखें शायद वापस लौटा ला सकें।"

शेरसिंह को देखते ही सब लोग अदब से हो गये और उनके पूछने पर उस

जमादार ने कहा, "सरकार, हम लोग आज दोपहर ही से तनखाह लेने के लिए किले पर गये हुए थे, शाम को जब लौटे तो देखा क्या कि यह आदमी इसी तरह पड़ा है और इसके नौकर चाकर तथा पुजारीजी कुछ दवा दारू का इन्तजाम कर रहे है। पूछने पर पुजारीजी ने बताया कि कोई रईस है, इधर से जा रहा था, यकायक इसके पेट में दर्द पैदा हुआ, आराम करने की नीयत से यहां रुक गया, मगर दर्द बढ़ता ही गया और अब यह हालत हो गई है इसकी। हम लोगों को इसको देख रेख के लिए छोड़ पुजारीजी यह कह के चले गये कि सरदार साहब (यानी आप) आये हुए है और भीतर कुछ काम कर रहे है, आपको बुला लावें शायद कुछ दवा दारू दे सकें, मगर वे जो गये सो अभी तक वापस न लौटे, इधर इसके नौकर चाकरों ने जो देखा कि हालत ज्यादा खराब है तो चुपके से एक एक करके खिसकने लगे। पहिले तो हम लोगों ने कुछ खयाल न किया पर जब आखिरी आदमी को एक गठरी उठाये जाते देखा तो शक हुआ। उसको पकड़ लाने को एक आदमी भेजा पर वह कहीं न मिला, शायद अंधेरे मे किसी तरफ निकल गया। हम लोगों को तो यही जान पड़ता है कि इसकी हालत खराब देख और जान बचने की कोई उम्मीद न पा वे सब के सब इसका माल असबाब ले के चम्पत हुए है। कोई ऐसा भी न बचा कि जिससे पता लगता कि यह बेचारा कौन या कहां का रहने वाला था या किधर जा रहा था।"

शेरसिंह ने यह हाल सुन कर लम्बी सांस खीची और मन ही मन कहा, "अफसोस, बड़ा धोखा हुआ, जरूर वह शैतान कोई ऐयार था जो पुजारी की सूरत बन तोशेखाने में घुसा और मुझे बेहोश कर अपना काम कर गुजरा। जरूर वह किसी चीज की खोज में आया होगा और उसे ले भी गया, मगर उस हालत मे बेवकूफ पुजारी कहा गया, कहीं....?"

शेरसिंह उस बेहोश की तरफ बढे। पहिली निगाह में ही मालूम हो गया कि यह वही आदमी है जिसे यहां आते समय बाहर बावली पर बैठे देखा था। पास जाकर बगल मे बैठ गये और जांच करने लगे, नाक पर हाथ रक्खा, नब्ज देखी, पता लग गया कि मरा नही बल्कि गहरी बेहोशी से है, बटुए मे से लखलखा निकाल कर सुंघाया और ठंडे पानी का छींटा मुह पर देने लगे।

पानी के छींटे पड़ते ही कुछ रंग उतरता सा जान पड़ा और नकली बाल अलग होने लगे। शेरसिंह ने यह देख उसका चेहरा अच्छी तरह धोया और तब पुजारी मातादीन की शकल निकल आई जिस पर वे बोल उठे, "करबस्तसीवे इस

सादे पुजारी को धोखा दे अपना काम कर गुजरे ।"

मातादीन होश मे आया और अपनी यह हालत देख ताज्जुब करने लगा, मगर शेरसिंह ने दो ही चार सवालों मे उससे सब भेद मालूम कर लिया और तब सिपाहियों और नौकरो को हुक्म दिया कि रोशनी लेकर मकान के बाहर निकलें और चारो तरफ तलाश करें, अगर उन शैतानों मे से कोई मिल जाय तो पकड़ लावें । हुक्म पाते ही नौकर और सिपाही चारो तरफ फैल गये मगर शेरसिंह जिनको यह उम्मीद बिल्कुल न थी कि उनमें से कोई पकड़ा जायगा पुजारी से संक्षेप में सब हाल कह कर बोले ,"मातादीन, इस जगह पर दुश्मनों की निगाहे पड़ गई। तुम अब बहुत होशियारी से यहां रहो नही तो काम न चलेगा और देवीरानी दिन दहाडे लुट जांयगी । मैं एक बार भीतर जाकर देखता हूं कि वह कम्बख्त कौन कौन सा सामान लेकर भागा है, इसके बाद लौटूंगा और किले मे जाकर देवीरानी को इस घटना की खबर करूंगा ।"

इतना कह शेरसिंह पुनः मकान के भीतर घुस गये और बहुत देर के बाद वापस लौटे । उस समय तक सब नौकर और सिपाही इधर उधर ढूंढ़ फिर कर वापस आ गये थे और उनकी जुबानी मालूम हुआ कि उन लोगो का कही भी पता न लगा । सुन कर शेरसिंह ने कहा, "सो तो होना ही था ।" तब मातादीन से यह कह कर कि 'तुम बहुत होशियारी से रहो, मैं देवीरानी को यह खबर देने जाता हूं' वे मकान के बाहर हुए । जाते समय तालियो का गुच्छा उन्होने पुजारी को वापस न दिया बल्कि कहा, "ये तालिए मैं लेता जाता हूं, तुम्हारे पास रहने से खतरा हो सकता है । तुम्हारी तबीयत ठीक हो जाय तो तुम भी वहां आओ और देवीरानी से मिलो । वे जैसा हुक्म देंगी वैसा किया जायगा ।"

तीसरा बयान

एक छोटे कमरे मे जिसमे किसी तरह का विशेष सामान तो नजर नही आता फिर भी जो कुछ है बहुत ही साफ सुथरा है, एक छोटी पलगड़ी पर लेटी देवीरानी कोई पुस्तक देख रही है । उनके सिरहाने एक शमादान जल रहा है और पास ही में चौकी के ऊपर एक छोटी गठरी लाल रंग के कपड़े में लिपटी हुई रक्खी है जिसके अन्दर क्या है कुछ पता नही लगता ।

यह किताब जो देवीरानी के हाथ मे है कुछ विचित्र तरह की है । इसकी जिल्द चांदी की है और पन्ने भोजपत्र के, जिन पर महीन अक्षरों मे बहुत ही सुन्दर लिखावट है मगर अक्षर इतने ज्यादे बारीक हैं कि देवीरानी की बूढ़ी आंखों को

उन्हें पढने में कष्ट होता है और इसलिए वे बार बार किताब को शमादान के पास ले जाती, तकिये के सहारे उचक कर देखतीं, और फिर सीधी हो जाती है। पढ़ते ही पढ़ते उनकी निगाहे कभी कभी कमरे के दर्वाजे की तरफ भी घूम जाती है और उनके मुंह से निकल पड़ता है, "न जाने शेर कहां अटक गया, अभी तक नही आया।"

इधर उधर से उलट पुलट कर बहुत देर तक उस किताब को देखते और पढते हुए अन्त में देवीरानी ने उसे बन्द किया और एक बार माथे से लगाने बाद तकिये के नीचे दबा कर उस गठरी की तरफ झुकी मगर उसी समय दर्वाजे की तरफ़ कुछ आहट सुनाई दी जिस पर रुक कर उन्होने उस तरफ देखा और पूछा, "कौन है?" जवाब मिला, "मै हूं, शेरसिंह।" जिसे सुन उन्होंने कहा, "भीतर आओ।" और तब बिछावन पर उठ कर बैठ गई। शेरसिंह ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा और देवीरानी ने उनकी तरफ देखते हुए कहा, "बहुत देर लगा दी तुमने शेरसिंह?"

शेरसिंह ने आगे बढ कर देवीरानी के पैर छूए और तब थकावट की मुद्रा से उसी जगह जमीन पर बैठ गये। देवीरानी उनकी तरफ देखती हुई आश्चर्य से बोली, "क्या मामला है, बहुत सुस्त हो रहे हो। क्या कुछ काम नही हुआ?" शेरसिंह ने सिर हिला कर कहा, "जी नहीं, मुझे एक दम बैरंग वापस लौटना पड़ा।" देवीरानी ने गर्दन हिला कर कहा, "मुझे भी यह अन्देशा था, मगर खैर घबराओ नही, मैने दूसरा बन्दोबस्त किया है और आशा है कि अब हम लोगो का काम बखूबी हो जायगा।" शेरसिंह ने सवाल की निगाह से देखते हुए कहा, "किस तरह? जिस प्रकार से पद पद पर हमलोगो को रुकावटें मिल रही है और हर एक काम में बाधा पड़ रही है उसको देखते हुए मुझे तो बहुत बड़ी निराशा होने लग गई है।"

देवीरानी हसी, तब झुक कर उन्होनें तकिए के नीचे हाथ डाला और वह पुस्तक निकाल कर दिखाती हुई बोली, "मुझे एक ऐसी चीज मिल गई है जिससे आशा है कि हम लोगों की इच्छा जरूर पूरी होगी। देखो यह भी एक तिलिस्मी किताब है!" शेरसिंह का चेहरा चमक उठा और उन्होने ताज्जुब से कहा, "है, यह तिलिस्मी किताब है! यह कैसे आपको मिली?" देवीरानी ने जवाब दिया, "आज अकेले बैठे बैठे मेरी तबीयत घबराई और मै तिलिस्मी तहखाने मे घुसी। वहां इधर उधर घूमते फिरते यकायक मुझको इस चीज की याद आ गई और ख्याल आया कि अगर यह किताब मिल जाय तो भी बहुत कुछ काम चल सकता

है। यद्यपि तरद्दुद तो बहुत उठाना पड़ा और खतरा भी था पर बारे मेहनत सुफल हुई और यह मुझे मिल गई।"

इतना कह देवीरानी ने वह किताब शेरसिंह की तरफ बढ़ाई और उन्होंने हाथ बढा कर ले ली। एक बार माथे से लगाया और तब इधर उधर उलट पुलट कर देखा, फिर शमादान के पास हो कर देखने लगे क्योंकि उसके अक्षर इतने बारीक थे और लिखावट भी इतनी पुरानी थी कि ठीक ठीक पढ़ना कठिन था। इधर देवीरानी ने उचक कर अपने सिर्हाने की वह लाल गठरी उठाई और सामने रख कर कपड़ा हटाते हुए कहा, "अब शेरसिंह तुम्हे भी उस तिलिस्मी काम के लिये तैयार हो जाना चाहिये जिसके बारे मे तुम्हारे गुरु महाराज तुमसे कह चुके है।" शेरसिंह प्रसन्नता से बोले, "मै बहुत खुशी से तैयार हू मगर इतना समझ लीजिये कि मुझे तिलिस्मी मामलो की बहुत कम खबर है तथा हमारे दुश्मन बहुत होशियार और सब तरफ फैले हुए है।"

"वह सब कुछ ठीक हो जायगा।" कहते हुए देवीरानी ने हाथ बढ़ाया और वह किताब शेरसिंह से ले ली, तब उसे एक जगह से खोल चिराग के पास ले जाकर गौर से पढ़ती हुई बोली, "देखो, इसमें लिखा है कि जिस वक्त जमानिया के...." यकायक वे रुक गईं और दर्वाजे की तरफ देख कर बोली, "कौन है?" शेरसिंह ने भी उस तरफ देखा और तब न जाने क्या समझ यकायक उठ कर दर्वाजे की तरफ बढ़ते हुए बोले, "शायद कोई छिप कर आपकी बाते सुन रहा है, मै अभी देख कर आया।"

शेरसिंह कमरे के बाहर निकल गए मगर देवीरानी ने उधर कुछ विशेष ध्यान न दिया और उस किताब मे जो कुछ देखा था उसे ही पुनः मन ही मन पढ़ती रही। जब आहट से उन्होंने समझा कि शेरसिंह पुनः वापस आ गए है तो बोली, "कौन था कुछ पता लगा?" और तब सिर उठा शेरसिंह की तरफ देखा।

शेरसिंह ने अदब से सलाम किया और पूछा, "कहां कौन था?" देवीरानी ने आश्चर्य से कहा, "किसी के छिप कर हमारी बातें सुनने का शक करके तुम कमरे के बाहर निकले थे न!" शेरसिंह ताज्जुब से बोले, "जी नही तो, मैं तो अभी अभी जोगी बाबा की समाधि पर से चला आ रहा हूं जहां आप ही ने मुझे कोई चीज लाने वास्ते भेजा था!"

देवीरानी चमक उठी और बोली—"तब वह कौन था जो अभी अभी शेर-सिंह बना मुझसे बात कर रहा था!" शेरसिंह बोले, "अगर कोई आदमी मेरी

सूरत बन कर आपसे बातें कर रहा था तो इसमें कोई शक नहीं कि वही था जिसने वहां समाधि पर मुझे बहुत गहरा धोखा देकर बेहोश किया और कई तरह का सामान लेकर भाग निकला ।" देवीरानी ताज्जुब से बोली, "तुम कह क्या रहे हो ? क्या किसी ने तुमको धोखा देकर बेहोश कर दिया ?"

देवीरानी का इशारा पाकर शेरसिंह वहीं जमीन पर बैठ गये और तब संक्षेप में उन्होंने अपना वह सब हाल जो पिछले बयान में हम लिख आए है कह सुनाया, अन्त मे यह भी कहा, "मैंने तोशेखाने में पुनः घुस कर पता लगाने की कोशिश की कि क्या क्या चीजें वह कम्बख्त वहां से निकाल ले गया है, पर वहां इतने तरह के सामान हैं कि बिना काफी वक्त लगाए कुछ ठीक ठीक पता लगाना कठिन था, फिर भी सरसरी निगाह देखने से जान पड़ा कि ये चीजे गायब है ।" कहते हुए उन्होंने कागज का एक पुर्जा देवीरानी की तरफ बढ़ाया पर उन्होंने हाथ हिला के उसे वापस करने का इशारा करते हुए कहा, "सो मै पीछे देखूगी, तुम यह बताओ जो चीज लेने मैंने तुमको वहां भेजा था वह तुमको मिली कि नही या उसको भी दुश्मन ले गया ?"

शेर० । उस चीज को मैं ले आया हूं अगर यही है वह तो, शुक्र इतना ही हुआ कि इस तक उसकी पहुच न हुई—देखिए !

कहते हुए शेरसिंह ने अपने भीतरी जेब मे हाथ डाला और सोने की एक डिबिया निकाल कर देवीरानी की तरफ बढ़ाई जिसे लेकर उन्होने खोला । डिबिया के अन्दर एक बहुत ही कीमती पन्ने का टुकड़ा था जो काट तराश कर कुछ कुछ एक ताली की शकल का बना दिया गया था मगर साथ ही इसके उसमे दो कुण्डे सोने के भी इस तरह लगे हुए थे कि जिनके सहारे वह तावीज की तरह गले या हाथ में पहना भी जा सकता था । देवीरानी कुछ देर तक गौर के साथ उलट पुलट कर इसे देखती रही और तब—'बेशक यही चीज है' कह कर उसे इज्जत के साथ माथे से लगा कर बोली, "यही वह चीज है जिसे तुम्हारे वास्ते तुम्हारे गुरु महाराज मेरे पास रख गये थे । परमात्मा को धन्यवाद है कि आज मै इसे सही सलामत तुम्हारे सुपुर्द कर पाती हूं ।"

शेरसिंह ने बहुत ही ताज्जुब से कहा, "क्या इसे मेरे लिए मेरे गुरु महाराज आप को दे गये थे ! यह क्या चीज है ?"

देवी० । यह तिलिस्मी ताली है और तिलिस्म के दारोगा के लिये बनाई गई है । अब तक यह तुम्हारे गुरु महाराज के पास पुश्त दर पुश्त एक धरोहर की

तरह चली आ रही थी, जब वे हिमालय जाने लगे उस समय तुम छोटे थे और तिलिस्म टूटने का वक्त भी नही आया था इसलिये इसे मुझे देते हुए वे कह गये थे कि जब वक्त आवे तो इसे शेरसिंह को दे देना। वही अब मैं तुम्हें दे रही हूं। इसे बहुत ही बेशकीमत चीज समझना और आज से अब कभी भी अपने बदन से अलग न करना। जब तक यह तुम्हारे पास रहेगी तुम पर किसी तरह की आफत नही आ सकती और न तिलिस्मी मामलो मे पड़ कर किसी तरह की तकलीफ ही कभी तुम उठाओगे। इसकी मदद से तिलिस्म के कुल दर्वाजे खुल सकेंगे, तुम जब चाहे उसके अन्दर आ जा सकोगे और वहा पहुंच कर जो कुछ चाहे कर सकोगे, हां इसकी मदद से किसी कैदी को तिलिस्म से छुडा न सकोगे और न किसी को उसके अन्दर बन्द ही कर सकोगे।

इतना कह देवीरानी ने अपने गले से एक पतली सोने की जंजीर जो वे हमेशा पहिने रहा करती थी उतारी और ताबीज अथवा ताली को उसमें पिरोया इसके बाद अपने हाथ से उसे शेरसिंह के गले मे पहिनाती हुई बोली, "अब जब तक तिलिस्म टूटने का काम पूरा न हो जाय इसे अपने गले से हरगिज मत उतारना और साथ ही साथ इसकी अपनी जान से बढ़ कर हिफाजत करना। इस बात से बहुत होशियार रहना कि ऐयारी करके कोई आदमी तुम्हे धोखा देकर इसे छीन न ले, बराबर सावधान रहना।"

शेरसिंह ने उस अद्भुत ताली को एक बार इज्जत के साथ अपने माथे से लगाया और तब अपने कपड़ों के अन्दर कर लिया, इसके बाद देवीरानी के पैरो पर अपना सिर रख दिया जिन्होने प्यार से उनकी पीठ थपथपाते हुए कहा, "अब तुम कमर कस कर तैयार हो जाओ। अद्भुत अद्भुत काम तुमको करने पड़ेंगे और बडे बडे विचित्र तिलिस्मी तमाशे तुम्हारी निगाहों से गुजरेंगे जिनको शायद ही कभी किसी दूसरे को देखने का मौका मिले।"

शेरसिंह का चेहरा खिल उठा, मगर तुरत ही फिर कुछ सोच कर उन्होने कहा, "मगर मै तो तिलिस्मी मामलो की कुछ भी जानकारी नही रखता। तब कैसे...... ?" देवीरानी ने वह तिलिस्मी किताब जो कुछ ही देर पहिले नकली शेरसिंह को दिखाई थी हाथ मे उठाई और कहा, "वह जानकारी तुमको यह किताब करावेगी।"

शेर०। (आश्चर्य से) यह कैसी किताब है ?

देवी०। यह भी एक तिलिस्मी किताब है जिसके बारे में मुझे बहुत पहिले

से खबर थी और जो हमारे तिलिस्म के तहखाने में रक्खी हुई थीं पर ऐसी जगह पर कि जहां जाने में बहुत तरह के खतरे थे। तुम्हारी सूरत बन कर जो ऐयार आया था उससे अभी अभी मैं कह रही थी कि आज मै खुद तिलिस्मी तहखाने में घुसी और वहां से खोज ढूंढ कर इस चीज को ले ही आई, डर तो बहुत लग रहा था पर भगवान की दया से यह चीज मिल ही गई। यह किताब तुम्हे तिलिस्म के उस हिस्से का सब भेद बतावेगी जो अब टूटने ही वाला है।

इतना कह देवीरानी ने वह किताब शेरसिंह की तरफ बढ़ाई जिन्होंने उसे लेकर माथे से लगाया और तब इधर उधर से उलट पुलट कर देखने लगे मगर देवीरानी ने रोक कर कहा, "अब इसको तुम घर ले जाकर अच्छी तरह देखना, इस वक्त कुछ और भी बातें सुन लो।"

शेर०। आज्ञा ?

देवीरानी ने वह लाल गठरी खोली जो अभी तक उनके सामने पड़ी थी। उसके अन्दर बहुत से कागज पत्र और कई छोटी बड़ी किताबें तथा कुछ कपडे भी थे जिनके अन्दर लिपटा हुआ चांदी का एक बडा डिब्बा था जो करीब हाथ भर के लम्बा और एक बालिश्त के चौड़ा तथा ऊचा होगा। देवीरानी ने इस डिब्बे को खोलते हुए कहा, "यह तिलिस्मी किताब इसी डिब्बे के अन्दर थी और उसके साथ यह ताली भी।" डिब्बे के अन्दर हाथ डाल कर सोने की एक चाभी देवीरानी ने निकाल कर शेरसिंह के हाथ में दी जिन्होने वडे ताज्जुब से उलट पुलट कर देखने के बाद कहा, "बड़ी विचित्र बनावट है इसकी, यह कहां की चाभी है बूआजी ?"

देवी०। यह सब हाल इसी किताब में तुम्हे मिलेगा और इसको काम मे लाने की तर्कीब भी मिलेगी। उस तिलिस्म को बनाने वालो ने एक चाभी और एक किताब तिलिस्म तोड़ने वाले के लिये बनाई थी और वैसी ही एक एक तिलिस्म के दारोगा के लिये, दारोगा वाली किताब और चाभी यह तुम्हे मिली।

शेर०। और तिलिस्म तोड़ने वाले की ?

देवी०। वह कहा है इसकी ठीक ठीक जानकारी मुझे नही है। उड़ती हुई खबर एक बार सुनी थी कि वह हेलासिह के पास है पर यह बात कहा तक ठीक है मै कह नही सकती। *

शेर०। (ताज्जुब से) हेलसिह के पास वह अद्भुत चीज कैसे गई !

---

* देखिए भूतनाथ तेरहवां भाग, छठां बयान, यही दूसरी किताब और ताली चांदी के डिब्बे के अन्दर रक्खी मालती को मिली।

देवी० । उसके बाप दादा जमानिया राज्य के दीवान थे और कुछ दिन तक उसने खुद भी यह काम किया था पर नालायकी मे निकाल दिया गया । उसी मौके पर किसी तरह उसके हाथ लग गई हो, या शायद वह खबर झूठ ही हो, मैं कुछ ठीक कह नही सकती । मगर खैर वह जहां भी हो, अगर मेरा खयाल ठीक है तो वह चीज भी बहुत जल्दी ही अपने ठिकाने अर्थात् तिलिस्म तोड़ने वाले के पास पहुच जायगी ।

शेर० । तिलिस्म टूटेगा किसके हाथो यह तो आप ठीक ठीक नही कह सकती !

देवी० । नही, मगर अपना शक तुम्हे बता चुकी हूं ।

शेर० । वह टूटेगा जरूर यह आपको विश्वास है !

देवी० । बेशक और उसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि आज ये सब चीजे, वह पन्ने वाली तावीज और यह किताब तथा सोने की ताली एक जगह हो सकी । वह ऐयार तुम्हारी सूरत बन कर आया और एक बार यह किताब उसके हाथों मे जाकर भी पुनः निकल आई यह भी क्या एक शुभ लक्षण नही है !

शेर० । बेशक ऐसा ही है, मगर मुझे बहुत ताज्जुब है कि वह कौन आदमी था जिसने इतनी बड़ी जुर्रत की ! इसमे तो कोई शक नही कि वही वहां जोगी बाबा की समाधि मे गया और वही यहा पहुंचा । इससे बहुत होशियार रहने की जरूरत है ।

देवी० । बेशक, मगर खैर वह सब पता तुम करते रहना, पहिले दो चार बातें मेरी और सुनो । (लाल गठरी मे से कागज का एक बड़ा सा मुट्ठा निकाल कर) देखो यह मुट्ठा वास्तव मे तिलिस्मी तहखाने के पुराने दारोगाओ का रोजनामचा है, इसको पढ़ने से तुमको बहुत सी बातें मालूम होगी और ये कागज पत्र (अन्य बहुत से कागजो और जिल्दों को दिखा कर) भी उसी तरह के है । इन सभो को तुम एक बार गौर से पढ जाना, पुराने जमाने की बहुत सी बाते इनसे तुमको मालूम होगी । इनके अलावे एक बात और, एक तिलिस्मी हथियार बहुत दिन हुए मैंने तुमको दिया था और कहा था कि इसे कभी अपने बदन से अलग मत करना

शेर० । (अपनी कमर से एक छोटी छुरी निकाल कर दिखाते हुए) यही वह छुरी है और (उगली से दिखा कर) यह इसके जोड़ की अंगूठी, मै इसे कभी बदन से दूर नही करता ।

देवी० । हा ठीक है, इसको भी हिफाजत से रखना मगर शायद इससे काम न चले इसलिए तुम्हे एक तिलिस्मी पोशाक और एक दूसरा हथियार तिलिस्म में

से मिलेगा, इन सभी चीजों को तुम्हें बहुत हिफाजत से रखना होगा।

शेर०। मै जान से बढ़ कर इन चीजो की हिफाजत करूंगा।

देवीरानी ने तिलिस्मी किताब शेरशिंह से ले ली और उसी चांदी वाले डिब्बे में रख तथा वह सोने वाली ताली भी उसके ऊपर रख उस डिब्बे को बन्द कर दिया। दोनों तरफ के हिस्से मिला कर दबा देने से ही वह डिब्बा कुछ ऐसे ढग पर बन्द हो गया कि इस बात का भी पता न लगता था कि इसमें कही जोड़ भी है या नही। इसको खोलने की तर्कीब भी देवीरानी ने शेरसिंह को बता दी और तब सब सामान उसी लाल गठरी मे रख उनके हवाले करते हुए कहा, "लो अब यह सब तुम सम्हालो और जहां मुनासिब समझो ले जा कर रक्खो, सिर्फ, इतने से होशियार रहो कि हमारे दुश्मन बहुत से है और उनको भी इसी चीज की खोज है, अगर वे जान गये कि यह सब समान तुम्हारे पास है तो वे तुमको बहुत ही ज्यादा परेशान करेंगे।"

शेरसिंह ने जवाब दिया, "कोई हर्ज नही, मै बहुत होशियार रहूगा। मगर कम्म से कम इतना तो बता दीजिये कि इस अद्भुत काम की शुरुआत कब से या किस तरह से होगी ?"

देवी०। सो सब मै कुछ नही कह सकती, मगर शायद इन्द्रदेव तुम्हे कुछ बता सके, अस्तु बेहतर होगा कि तुम उससे मिलो। अब दो चार बातें मेरी और सुन लो और तब जाओ क्योंकि मै बहुत थक गई हू और रात भी काफी बीत गई है।

शेर०। जी हां, रात जरूर बहुत चली गई है।

देवी०। अस्तु जो कुछ मुझे कहना है मै जल्दी जल्दी और थोडे मे कह जाती हूं। पहली बात तो यह कि हमारी इन गुप्त बातो का कोई गहरा जानकार पैदा हो गया है।

शेर०। जी हां, वही जो समाधि से मुझे धोखा देने के बाद यहां मेरी सूरत बन कर आया।

देवी०। नही नही, वह तो कोई मामूली ऐयार भी हो सकता है, मेरा मतलब तिलिस्मी बातो की जानकारी रखने वाले किसी आदमी से है और इसका पता इस तरह पर लगता है कि आज जब मै इस चीज को लाने के लिए तहखाने मे घुसी तो वहा एक ताज्जुब की बात मुझे दिखाई पड़ी।

शेर०। सो क्या ?

देवी०। जिस जगह यह सामान जो मैने तुम्हें दिया रक्खा हुआ था वह तह-

खाने का एक बहुत ही गुप्त हिस्सा है और उसकी ताली बहुत ही छिपा कर ऐसी जगह रक्खी हुई थी जहां इस तरह की और भी कई तालियां रक्खी हैं। आज जब मै अपनी जरूरत वाली ताली लेने उस जगह पहुंची तो मैने देखा कि वह ताली जिसकी मदद से और भी कई तरह के काम निकल सकते थे गायब है, उसे कोई उड़ा ले गया था।

शेर०। कोई उड़ा ले गया !!

देवी०। हां, और वह जगह खाली पड़ी हुई थी जहा उसे रहना चाहिये था।

शेर०। तो इसके मानी यह हुए कि इन बातो का जानकार कोई और आदमी भी मौजूद है और वही तहखाने मे घुस कर उसे ले गया। अगर आप वक्त पर पहुंच न जाती तो शायद वह इन चीजो को भी ले जाता जो आपने अभी अभी मुझे दी। तो क्या उस ताली के जाने से, कोई ज्यादा हर्ज.......?

देवी०। हर्ज तो जरूर ही कुछ हुआ मगर मैने अपना काम बना लिया और एक दूसरी तर्कीब से इन चीजो पर काबू किया, मगर मेरा मतलब यह है कि अगर वह काफी होशियार हुआ और पुनः उस जगह पहुचा तो इस बात को शीघ्र जान जायगा कि मै किस जगह को खोल कर किस चीज को निकाल लाई हू।

शेर०। बेशक, और तब वह जरूर हम लोगो के कब्जे से इन चीजों को निकाल लेने की कोशिश करेगा।

देवी०। जरूर, और इसी से मैने तुमसे कहा कि दुश्मन अगर जान गये कि यह सब चीजे तुम्हारे पास है तो तुमको बहुत परेशान करेंगे।

शेर०। बेशक ऐसा ही है ?

देवी०। अस्तु पहिली बात तो तुम यह करो कि घर जाते ही इस किताब और इन कागजों को पूरी तरह से पढ जाओ और इसके बाद इनको किसी ऐसी जगह रख दो कि अगर ईश्वर न करे कभी तुम दुश्मनों के फन्दे मे पड भी जाओ तो ये चीजें तुम्हारे कब्जे से बाहर होकर उनके हाथ न लगने पावें।

शेर०। ठीक है, मैं ऐसा ही करूंगा।

देवी०। इसके बाद दूसरी बात यह करो कि तिलिस्म के अन्दर उसी रास्ते से जो मैं तुम्हे बता चुकी हूं घुसो और कुछ जरूरी काम जो श्रीगणेश के तौर पर करने होगे निपटा डालो, वे क्या काम है इसका पता इस तिलिस्मी किताब से तुम्हे लगेगा।

शेर०। ठीक है, यह भी मैं कर डालूंगा।

देवी० । इसके बाद तुम्हे उन लोगों से मिलना चाहिये जिनकी तरफ मै इशारा कर चुकी हूं और जिनकी अब आगे इस काम मे जरूरत पडेगी ।

शेर० । यानी ?

देवी० । जो तिलिस्म तोड़ उसमे बन्द कैदियों को छुटकारा दिला सकें । तुम जानते ही हो कि मैं सिर्फ इसलिए इन सब झमेलो में पड़ी हूं कि जिसमे मेरे गुरु महाराज तिलिस्म के बाहर हो सकें नही तो मुझे स्वयं इन पचड़ो से कोई वास्ता न था ।

शेर० । बेशक यह तो सही है, मगर इस जगह एक बात मेरी समझ में नहीं आई ।

देवी० । सो क्या ?

शेर० । (अपने गले वाली ताबीजनुमा चाभी की तरफ इशारा करके) आपने कहा कि इस चाभी की मदद से मैं तिलिस्म के अन्दर जब और जहां चाहू जा सकता हूं और जो कुछ चाहूं कर सकता हूं ।

देवी० । बेशक ।

शेर० । और जिस दर्वाजे को चाहूं खोल सकता हूं ?

देवी० । जरूर ।

शेर० । तो ऐसी हालत मे मैं खुद वहां जाकर क्या पुजारीजी को तिलिस्म के बाहर नही कर सकता ?

देवी० । नही, क्योंकि मैंने कहा न कि तुम सब कुछ कर सकोगे मगर इसकी मदद से किसी कैदी को तिलिस्म के बाहर न कर सकोगे न वहा बन्द ही कर सकोगे ।

शेर० । ठीक है, आपने जरूर कहा, मगर मैं पूछता हूं कि क्यो ? जब मै जहां चाहूं वहां जा सकता हूं और जिस दर्वाजे को चाहूं खोल सकता हूं तो किसी कैदी को वहां से निकाल क्यों नही सकता ?

देवी० । क्योकि ऐसा ही कायदा तिलिस्म बनाने वाले कायम कर गये है और तिलिस्मी कायदो की पाबन्दी तुम्हारे लिए सब से ज्यादे जरूरी है, या इसके भीतर कोई बात और भी हो तो मैं नही कह सकती ।

शेर० । खैर देखा जायगा, मगर आपकी समझ मे केवल तिलिस्म तोड़ने वाला ही उसके अन्दर के कैदियो को रिहाई दे सकता है ?

देवी० । हां, और इसलिए तुम्हारा काम भी केवल उसको मदद पहुंचाना ही होना चाहिये ।

शेर० । ठीक है, मै वही करूंगा ।

देवी० । अच्छा अब यह बताओ कि मालती प्रभाकरसिंह आदि के बारे में तुमने कुछ किया ?

शेर० । जी हां, इसका तो जिक्र करना ही मै भूल गया था । असल में पूछिये तो उसी काम में मुझे इतनी देर लगी और इधर के कई दिन बिताने पडे । आपका ख्याल बहुत ठीक था और दोनों वही थे जहां आपने बताया था ।

देवी० । अर्थात् जमानिया के दारोगा साहब के यहां ?

शेर० । जी हा ।

देवी० । तब तुमने क्या किया ?

शेर० । मैंने उन दोनों को ही कैद से छुड़ाया, प्रभाकरसिंह तो इन्द्रदेव के पास चले गए और मालती को मैंने लोहगढ़ी मे पहुंचा दिया ।

देवी० । ठीक किया, तो आगे भी तुम इन दोनों पर बराबर अपनी निगाह रखना ।

शेर० । ऐसा ही होगा ।

देवी० । लेकिन साथ साथ उस आदमी से भी होशियार रहना जो मेरे तोशेखाने मे पहुंच कर वे चीजें ले गया, मुझे उसकी तरफ से भी कुछ अन्देशा हो रहा है ।

शेर० । उसके बारे मे आप विशेष परेशान न हों, जैसे भी होगा मै उस शैतान का पता जरूर लगाऊंगा, क्योंकि अगर मेरा खयाल सही है तो वही आज आपके पास मेरी सूरत में आया और जरूर वही तिलिस्मी तहखाने में पहुंच उस ताली को भी ले गया जिसके बारे मे आपने अभी अभी कहा ।

देवी० । बहुत मुमकिन है कि यह तीनों काम एक ही आदमी के हों, मगर जब तक यह पता न लगे कि वह कौन है तब तक........

शेर० । मुझे कुछ कुछ गुमान हो रहा है कि यह सब कार्रवाई किसकी है ।

देवी० । (उत्कठा से) अच्छा ! किस पर तुम्हारा ख्याल ज़ाता है ?

शेर० । इस बात को अभी न पूछती तो बेहतर था ।

देवी० । फिर भी, ज़रा सुनू ?

शेरसिंह ने आगे बढ कर धीरे से देवीरानी के कान मे कुछ कहा जिसे सुनते ही वे चमक गई और शेरसिंह का मुह ताकने लगी । थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, "मुझे तुम्हारा ख्याल ठीक मालूम होता है । कोई ताज्जुब नही कि उसी कम्बख्त की यह कार्रवाई हो । लेकिन अगर ऐसा है तो मै तुमसे कुछ बातें और भी कहूंगी

जिन्हें जान रखने से उसके ऊपर काबू करने में तुम्हे सुभीता होगा।"

देवीरानी ने धीरे धीरे शेरसिंह से कुछ कहना शुरू किया।

पूरब तरफ के आसमान पर से तारे लुप्त होने लगे थे जब देवीरानी से बिदा होकर शेरसिंह उस कमरे के बाहर हुए। इस समय इस महल में चारो तरफ सन्नाटा था और केवल बाहर से पहरेदारों के पहरा देने की आहट मिल रही थी जब शेरसिंह वहां से निकल अपने डेरे की तरफ चले।

मगर इस बात की खबर शेरसिंह को बिल्कुल न थी कि उनके साथ ही साथ काले कपड़ों से अपने को अच्छी तरह ढांके हुए कोई दूसरा आदमी महल के बाहर निकला है और पहरेदारों से अपने को बचाता हुआ उनके पीछे पीछे जा रहा है।

चौथा बयान

सूनसान मैदान में दो आदमी घोडों पर सवार चले जा रहे है।

यद्यपि वक्त दिन का है फिर भी हम इन घुड़सवारों की सूरत शक्ल के बारे मे कुछ भी बता नही सकते क्योंकि इन दोनों ही के चेहरो पर नकाबें पड़ी हुई हैं और बदन भी कपड़ों से इस तरह पर ढंका हुआ है कि इस बात का भी पता नही लगता कि औरत है या मर्द, फिर भी घोडों की हालत और कपड़ो पर पड़ी हुई धूल बता रही है कि ये दोनो कही बहुत दूर से चले आ रहे है और शायद अभी कहीं और भी दूर इन्हें जाना है क्योकि गर्मी और थकावट का कुछ ख्याल न कर दोनों जहां तक हो रहा है तेजी से बढे जा रहे है।

फिर भी कुछ दूर और जाते जाते एक ने गर्दन घुमा दूसरे की तरफ देखा और कहा, "अब तो प्यास के मारे बुरा हाल हो रहा है, तिस पर इस भारी पोशाक ने और भी परेशान कर रक्खा है। कही कोई कूआं या बावली नजर आती तो कुछ देर सुस्ता कर तब आगे बढते।"

उसके साथी ने इधर उधर देख भाल कर कहा, "ऐसा बीहड़ मैदान है कि कोसो से चले आ रहे है कही कूआं या तालाब तो क्या कोई बडा पेड़ तक नजर नही पड़ा जिसके नीचे जरा देर खडे होकर सुस्ता तो लेते।"

पहिला०। तुम्ही ने जान बूझ कर यह रास्ता चुना, अगर सड़क के रास्ते आते तो यह तकलीफ न होती।

दूसरा०। हां मगर कोसो की लम्बाई और बढ़ जाती, यों बीच मे से रास्ता काट कर निकल आने से कम से कम चौथाई रास्ते की बचत हो गई और अब

हम लोगो को ज्यादा चलने की जरूरत भी तो नही है, बस जहां यह मैदान खतम हुआ और पहाड़ी सिलसिला शुरू हुआ तहा यह सफर खतम समझो।

पहिला०। मगर पहाड़ियां भी तो अभी कोसो दूर हैं और प्यास का यह हाल है कि एक कदम चलना नामुमकिन हो रहा है।

दूसरा०। (इधर उधर देख कर) वहां उस तरफ कुछ पेड़ नजर आ रहे हैं, मुमकिन है कि वहां कोई कूआ बावली या नाला हो, अगर प्यास भी बहुत तक-लीफ हो तो उधर चल कर देखा जाय मगर कुछ चक्कर पड़ जायगा।

पहिला०। (गौर से देख कर) कुछ पेड़ तो जरूर दिखलाई पड़ते हैं, चल कर देखना चाहिए, कुछ चक्कर अगर पड़ जायगा तो घोड़े भी जरा सुस्ता लेंगे, कोसों से मारामार चले आते ये भी चूर हो रहे हैं।

दोनों सवारो ने अपने अपने घोड़ा का मुंह घुमाया और उस तरफ चले जहां बहुत दूर कुछ बडे पेड़ हवा मे झूमते नजर आ रहे थे।

यद्यपि रास्ते से हटना और काफी दूर जाना पड़ा फिर भी पास पहुंच कर तबीयत खुश हो गई। वहां किसी पुराने जमाने की एक बावली और उसके चारो तरफ आम का बाग नजर आया। पेड़ो के सबब यहां धूप की गुजर नहीं थी और इसी से कुछ ठंडा भी था। दूसरी बात जो इन लोगो के मन की थी यह थी कि दिन का वक्त होने पर भी इस जगह किसी आदमी की सूरत नजर न आ रही थी, इसी जगह क्यों आस पास कोसो तक कही न तो आबादी का निशान दिखाई पड़ता था और न कोई आता जाता ही नजर पड़ता था।

"वाह, बड़ी अच्छी जगह मिल गई, अब तो कुछ देर आराम करके ही तब आगे बढ़ेंगे!" कहता हुआ वह पहिला सवार घोड़ा रोक कर उतर पड़ा और उसी के साथ साथ दूसरे सवार ने भी घोडे के पीठ खाली कर दी। थोड़ी देर सुस्ता लें इस नीयत से घोडे लम्बी बागडोरो के सहारे चरने के लिए छोड़ दिए गए और ये दोनो बावली के पास पहुंचे। एक ने झांक कर देखा और कहा, "बावली है तो बहुत पुरानी और टूट फूट भी गई है, मगर पानी अच्छा जान पड़ता है।" दूसरे ने कहा, "मगर सीढ़ियां बहुत ऊंची ऊंची और टूट फूट जाने के कारण खतरनाक हैं, सम्हल कर जाना पड़ेगा।"

सचमुच ये दोनो ही बातें ठीक थीं। बावली का पानी तो बहुत साफ और गहरा जान पड़ता था मगर वहां तक पहुंचाने वाली सीढ़ियां बहुत टूटी फूटी और खतरनाक हालत मे थी। एक दूसरे को सहारा देते हुए दोनों नीचे उतरे और जल

के पास पहुंचे। इस जगह दोनों ही ने अपनी अपनी नकाबें पीछे को उलटी और अब हमे मालूम हुआ कि ये दोनों ही नाज़ूक और खूबसूरत औरतें है और सो भी हमारे पाठकों की जानी पहचानी, क्योंकि इनकी सूरतो की एक झलक देख कर ही वे समझ जायेंगे कि इनमें से एक तो गौहर है और दूसरी उसकी सखी गिल्लन*।

गौहर और गिल्लन ने उस बावली के साफ ठंढे जल से अच्छी तरह अपने हाथ और पांव धोये, जी भर कर पानी पिया। इसके बाद वे दोनों ऊपर आईं और बावली के किनारे की एक साफ जगह पर जहां पेड़ों की छांह थी और दूर दूर तक दिखाई भी पड़ता था, बैठ कर अपनी थकावट दूर करने लगी, मगर इस जगह पहुंचते ही दोनों ने अपने चेहरे पुनः ढांक लिए थे। बैठे बैठे ये दोनों आपुस में धीरे धीरे बातें भी करने लगी।

गौहर०। ओफ, प्यास के मारे बेतरह तबीयत परेशान हो रही थी, अब जा के जरा चैन मिला।

गिल्लन०। यही हालत मेरी भी थी पर काम की जल्दी की तरफ ख्याल करके मैं रपेटती चली आ रही थी, लेकिन अब भी तुम्हे यहां ज्यादा देर तक रहना मुनासिब नहीं है।

गौहर०। नहीं नहीं मैं बहुत जल्दी चल पड़ूंगी। यहां से शिवदत्तगढ़ अब कितनी दूर होगा ?

गिल्लन०। अभी पांच छः कोस से कम न होगा।

गौहर०। ओफ!

गिल्लन०। इतना रास्ता तय कर आईं तो यह क्या है ?

गौहर०। खैर इसे भी पूरा करना ही पड़ेगा, मगर यह बताओ कि अगर महाराज शिवदत्त ने हमारी बात न मानी तो क्या होगा ?

गिल्लन०। तुम्हें क्यों यह शक होता है कि वह तुम्हारी बात न मानेंगे ? क्या उस चीठी को पढ़ के भी वे इनकार कर सकते है ?

गौहर०। उम्मीद तो नहीं है लेकिन अगर मान लो कि ऐसा हो ही जाय तो फिर क्या होगा ? हम दोनों की इतनी मेहनत और जांफिशानी सब फिजूल ही चली जायगी।

गिल्लन०। मगर मुझे इसका बिल्कुल अन्देशा नही है। मुझे तो पूरा यकीन

---

* ये दोनों नाम चन्द्रकान्ता सन्तति मे आ चुके है और भूतनाथ उपन्यास मे भी इनके बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है।

है कि जरूर हम लोगों की बात मान कर वे उस काम को फौरन कर देगे जिसके लिये हम लोग जा रहे है।

गौहर०। देखो क्या होता है, मुझे न जाने क्यो कुछ सन्देह सा होने लगा है।

गिल्लन०। (कुछ हंस कर) वहां से चली तब शक न था, धूप लू मे इतना लम्बा सफर कर डाला तब शक न हुआ, और अब जब पास आ गई तब शक होने लगा? यह क्या बात है? इस पुरानी बावली के पानी मे कोई ऐसी कुदरत है क्या?

गौहर०। (हंस कर) हां, यहां के भूत प्रेतो ने मन बदल दिया है। सम्हली रहियो, कही तुझ पर आशिक न हो जांय।

गिल्लन०। वह डर तो तुम्हे होना चाहिये जिसकी सूरत देख के सूखी लकड़ियां करवटें बदलने लगती है, मुझे क्या डर और खौफ!

गौहर०। (बिगड़ कर) कम्बख्त कहीं की! लकड़ियां तुझे देख के करवटें बदलती होंगी! खबरदार जो फिर ऐसी बात जुबान से निकली है!

कह कर उसने एक चपत गिल्लन के गाल पर लगाई पर वह हसती हुई उठ खड़ी हुई और बोली, "अब चलना चाहिये, बहुत देर करना मुनासिब नही है।"

दोनो उठ कर खड़ी हो गई। उस समय गौहर ने कहा, "जरा एक दफे पानी और पी लूं।" जिसके जवाब मे गिल्लन बोली, "मेरी भी तबीयत है, बड़ा ठण्ढा पानी है" और दोनों चल कर पुनः बावली के पास पहुंची मगर सीढ़ियां उतरने के पहिले गिल्लन ने गौहर का हाथ पकड़ लिया और रोक के कहा, "देखो तो वह कौन है?" गौहर ने झांक कर नीचे की तरफ देखा और कहा, "ठीक तो है; कोई पानी पी रहा है, मगर ताज्जुब है कि यह कब आया और किधर से नीचे उतर गया! हम लोग तो पास ही बैठी थी और सब तरफ देख भी रही थी, किसी को आते या बावली मे उतरते तो देखा नही!

गिल्लन०। किसी पर निगाह तो नही पड़ी। खैर फिर या तो पानी पीने का इरादा छोड़ो और चल पडो और या उसके चले जाने की राह देखो।

गौहर ने जरा आगे बढ़ और झांक कर देखा। कोई नीचे को झुका हुआ बावली का पानी पी रहा था जिसकी कुछ कुछ आभा मात्र ऊपर से दिखाई पड़ी क्योंकि सीढियो की आड़ पड़ती थी और ये दोनो आगे बढ़ते हिचकती थी। आखिर गौहर ने अपना कदम पीछे की तरफ हटाया जिस पर गिल्लन बोली, "तो क्या फिर चले, पानी न पियोगी?" जवाब मे उसने कहा, "नही, न जाने कौन है और हम लोगो को देख कर क्या क्या शक करे! चलो चलो, अब कोई ऐसी [illegible]

प्यास भी तो नही है।" गिल्लन बोली, "देख तो उसनें हमें लिया ही होगा क्योंकि आखिर ऊपर ही से नीचे उतरा होगा, मगर खैर चलो, पानी न पिया जायगा।" कह कर उसने फिर एक बार झांक कर नीचे देखा और कहा, "यह क्या! कहां गया वह ?" गौहर ने ताज्जुब से पूछा, "क्या नही है वहां ?" गिल्लन बोली, "कही भी नही, तुम भी देखो।"

दोनो ने आगे बढ तथा झांक झूक कर बहुत गौर से और अच्छी तरह देखा मगर कही भी कोई नजर न आया। गिल्लन ताज्जुब से बोली, "अभी तो यही झुक कर पानी पी रहा था, देखते ही देखते कहां गायब हो गया!" गौहर ने कहा, "सीढ़ियां चढ़ के ऊपर आता तो हमारे सामने से ही गुजरता, तब चला कहां गया ? क्या पानी मे उतर गया ?" गिल्लन बोली, "पानी मे उतरता तो पानी हिलता और हिलकोरें लेता, पर वह तो एकदम शान्त और स्थिर है।" गौहर ताज्जुब से इधर उधर देखती हुई बोली, "तब वह गया तो कहां गया आखिर ? वहां नीचे कोई छिपने की भी तो जगह नहीं है।" गिल्लन ने जवाब दिया, "वहां पानी के पास कौन सी छिपने की जगह रहेगी ?"

दोनों ने ताज्जुब के साथ सब तरफ देखा और अपनी जगह से हट कर इधर उधर से भी झांक झूक की, मगर वहां कोई नीचे होता तब तो दिखाई पड़ता! आखिर गौहर ने डरी हुई आवाज मे कहा, "जरूर वह कोई आसेब था! न हमने उसे आते देखा, न नीचे उतरते देखा, और न जाते ही देखा। वह पानी के पास पैदा हुआ और वही गायब भी हो गया! जरूर ऐसा ही कुछ मामला है।" गिल्लन बोली, "मुझे भी ऐसा ही कुछ मालूम होता है। चलो चले, पानी वानी पीने की जरूरत नही है।" गौहर ने कहा, "किसे जान भारी पड़ी है जो अब पानी पीने उतरेगा! चलो जल्दी यहां से।"

धड़कते हुए कलेजों के साथ दोनों औरतें पीछे हटी और उस तरफ बढ़ी जिधर अपने घोड़े बागडोर के सहारे बांध आई थी, मगर वहां पहुंची तो देखती क्या है कि दोनो घोड़े भी गायब है। गौहर चमक कर बोली, "अरे यह क्या ? दोनों घोडे किधर गए!" गिल्लन ने भी ताज्जुब के साथ इधर उधर देखा और डरी हुई आवाज में बोली, "जब हम दोनों पानी पीने के लिए उतर रही थी तो मैने उन्हे देखा था, इसी जगह पास ही चर रहे थे, मगर इतनी देर मे कहा चले गये ?" गौहर ने कहा, "कही ऐसी आड़ की जगह भी तो नही है जिधर चले गए हों!" गिल्लन बोली, "जाते भी तो कहां जाते, बागडोर से तो बंधे थे।"

दोनों ताज्जुब करती हुई आगे बढ़ी। देखा कि दोनो घोड़ों को बांध रखने वाली डोरियां उसी जगह जमीन पर पड़ी है। गौहर ने गिल्लन की तरफ देख कर कहा, "जरूर किसी ने खोल कर उन्हे भगा दिया, यह देखो रस्सियां मौजूद हैं, अब क्या होगा?" गिल्लन कुछ देर इधर उधर दूर और नजदीक निगाहे दौड़ाती रही, तब बोली, "यह बहुत भारी मुसीबत आ गई, बिना घोड़े के इस धूप मे इतना बड़ा सफर क्योकर हो सकेगा! मगर असल ताज्जुब और डर की बात तो यह है कि यह सब कार्रवाई की तो किसने की? क्या कोई हम लोगों के पीछे पीछे यहां तक आया? या यहां हमे देख हमको रोक रखने के लिए उसने ऐसा किया?"

दोनों कुछ देर तक ताज्जुब के साथ इधर उधर देखती और इसी तरह की बाते करती रही, मगर कुछ भी समझ न सकी कि दोनो घोड़े कहां गए या यह कार्रवाई किसकी हो सकती है। गौहर तो यहा तक डरी और घबराई कि दबी हुई आवाज मे बोल उठी, "कही यह उसी आसेब का काम तो नही है जिसे हम लोगो ने बावली मे जल के पास देखा था?" गिल्लन कुछ जवाब देना चाहती थी कि किसी तरह की आहट पाकर रुक गई और गौर से सुनने लगी। गौहर का भी ध्यान उधर ही को गया और वह कान लगा कर बोली, "टापों की आवाज आ रही है।"

बावली के पीछे की तरफ जो घनी आम की बारी थी उसमे से निकलते हुए एक नौजवान पर इन लोगो की निगाह पड़ी जो सिपाहियाना ठाठ मे चुस्त पौशाक पहने और फौजी हर्बे लगाये हुए था। यह नौजवान खुद तो यद्यपि पैदल था मगर दो घोड़ों की लगामे उसके दोनो हाथो मे थी जिन्हे देखते ही इन दोनो ने पहिचान लिया कि वे ही हैं जिनके गायब हो जाने से ये परेशान होकर डर रही थी। बात की बात मे यह नौजवान इनके पास पहुंच गया और बोला, "क्या ये दोनों घोडे आप लोगो के ही तो नही है? मैने इन्हे बारी के दूसरे तरफ खुले चरते हुए पाया और शायद यही से भाग कर आए है इस खयाल से इन्हें पकडे लिए चला आता हूं।"

गौहर खुश होकर बोली, "जी हां, ये घोडे हमारे ही है और इन्हें हमने सुस्ताने और चरने के लिए छोड़ दिया था, मगर ताज्जुब है कि बागडोर से बंधे रहने पर भी ये कैसे खुल कर भाग निकले! आपने बहुत ही मेहरबानी की जो इन्हे हमारे पास ले आए नही तो हम लोग बहुत घबड़ा रहे थे कि अब क्या होगा और बिना सवारी के हमारा सफर कैसे पूरा होगा।" गिल्लन ने आगे बढ़ कर

दोनों घोड़ों को थाम लिया जिसके हाथ मे लगामें पकड़ाते हुए नौजवान ने एक दफे गौर से इन दोनो की तरफ देखा और कहा, "मालूम होता है कि आप दोनों नए मुसाफिर है और आज के पहले इस तरफ कभी नही आए है।" गौहर बोली, "जी हां, बेशक ऐसा ही है।" जिसे सुन उसने कहा, "तभी आप लोगो ने इस जगह रुकने की हिम्मत की।" गौहर ने ताज्जुब से पूछा, "क्यों, इसमे हिम्मत की कौन सी बात है ?" नौजवान ने जवाब दिया, "क्योंकि इस जगह के बारे मे दूर-दूर तक मशहूर है कि यहा भूत प्रेत और जिन्न दिन मे चलते फिरते नजर आते है, आस पास का कोई जानकार आदमी कभी इस तरफ नही आता।"

गौहर कांप कर बोली, "ओ हो, तब जरूर वह कोई आसेब ही था जिसे हम लोगो ने देखा था ! पानी के पास झुका हुआ कुछ कर रहा था पर दूसरी निगाह डाली तो गायब हो चुका था।" नौजवान कुछ हंसा, तब बोला, "तो शुक्र कीजिए कि इतना ही हुआ और आप लोगों को किसी गहरी मुसीबत मे नही पड़ना पड़ा, नही तो बड़ी बड़ी दुर्घटनाए यहां हो चुकी है, आस पास गाव गंवई के आदमी तो इस जगह के कोसों पास तक भी आने से डरते है !"

गौहर को बातचीत में फंसते देख कुछ इशारा कर गिल्लन ने कहा, "अगर आप मेहरबानी करके हमारे घोडे न ले आते तो बेशक हम लोग भी किसी भारी मुसीबत मे पड़ जाते। अच्छा अब हमारा शुक्रिया लीजिए और इजाजत दीजिए कि हम लोग जाए क्योकि हमारे सामने अभी एक लम्बा सफर है।" कहती हुई गिल्लन ने रकाब पर पैर रक्खा और उसकी देखा देखी गौहर ने भी वैसा ही किया, मगर उसी समय नौजवान ने रोक कर कहा, "अगर बतलाने मे कोई हर्ज न हो तो कहते जाइये कि आप लोगों का इरादा शिवदत्तगढ़ जाने का तो नही है ?" सवाल सुन कर गौहर तो चुप रह गई मगर गिल्लन बोल उठी, "नही हमें उसके आगे जाना है, मगर वह हमारे रास्ते मे जरूर पडेगा। क्या आपके पूछने का कोई खास सबब है ?" नौजवान बोला, "सिर्फ इतना ही कि अगर आप दोनो का इरादा वहां जाने और महाराज शिवदत्त से मिलने का है तो आप लोगो को इतनी तकलीफ करने की जरूरत नही है, महाराज शिवदत्त खुद देखिए इसी तरफ चले आ रहे है।"

नौजवान ने एक तरफ उंगली से बताया और जब इन दोनो ने सिर उठा कर उधर देखा तो बहुत दूर पर सचमुच गर्द उड़ते पाया। गौर करने पर जान पड़ा कि कई सवार घोड़ा फेंके चले आ रहे है जिनकी तरफ देख कर ताज्जुब

के साथ गिल्लन ने पूछा, "क्या यह महाराज शिवदत्त ही आ रहे है ! आप कैसे जानते है !"

नौज०। (मुस्कुरा कर) इस तरह पर कि वे ख़ास मुझसे ही मिलने इस जगह आ रहे है, यही पर हम लोगो के मिलने की वात तय हुई थी ।

क्या करें क्या न करें, रुकें या चल पडें, इस जगह पर राजा शिवदत्त से मिलना ठीक होगा कि नहीं, वे आने वाले शिवदत्त और उसके साथी ही है कि कोई और, या हमारे कोई दुश्मन ही तो नही हैं यही सव बाते ये दोनों खड़ी सोचती विचारती रह गईं और इस बीच वे सवार पास आ पहुंचे। अव इस बात मे कोई शक न रह गया कि दस बारह सवारों के साथ राजा शिवदत्त उधर ही को चले आ रहे थे। गौहर ने गिल्लन के कान में कहा—"क्या करना चाहिये अब ?" उसने जवाव में कहा—"अब यहां से चले जाना भी ठीक नहीं, रुकी रहो और देखो क्या होता है ।"

उधर शिवदत्त को आता देख वह नौजवान उसकी तरफ बढ़ गया। शिवदत्त भी उसको देखते ही घोडे पर से उतर पड़ा और जिस तपाक के साथ उससे मिला उससे इन दोनों औरतों को विश्वास हो गया कि जरूर वह नौजवान भी कोई रुतवे वाला आदमी है। शिवदत्त के इशारे पर उसके सवारो ने घोड़ो की पीठें खाली कर दी और इधर उधर हो गये तथा शिवदत्त उस नौजवान का हाथ पकडे एक घने पेड़ की तरफ बढ गया जहां खडे होकर देर तक दोनों में न जाने क्या क्या बातें होती रही। उधर गौहर और गिल्लन भी आपुस मे धीरे धीरे कुछ बाते करती हुई एक तरफ आड़ मे हो गईं जहां वे लोगो की निगाहों मे जल्दी न पड़ती मगर खुद सभों को वखूबी देख सकती थी ।

नौजवान और शिवदत्त की बातचीत खतम हुई और तब वे दोनों एक दूसरे का हाथ पकडे हुए उस तरफ को बढे जिधर गौहर और गिल्लन थी। गौहर की उंगली दबा कर गिल्लन ने कहा, "लो अब अपना दिल कड़ा करो और सोच लो कि राजा शिवदत्त से किस तरह पर बातें करनी है।"

गौहर ने कोई जवाब न दिया और मन ही मन कुछ सोचने लगी और गिल्लन भी उसके मन का भाव समझ कर फिर कुछ न बोली मगर जब वे दोनों उस जगह के पास पहुंचे जहां ये छिपी हुई थी तो गौहर आड़ के बाहर निकल आई और शिवदत्त के सामने पहुंच उसको अदब से सलाम कर खड़ी हो गई। मालूम होता है कि इनके बारे मे शिवदत से और उस नौजवान से कुछ बातें हो चुकी थी, क्योकि

गौहर को देखते ही शिवदत्त ने मुस्कुरा कर उस नौजवान की तरफ देखा और तब हाथ के इशारे से इससे पूछा, "क्या है ?" जवाब मे गौहर ने अपने कपड़ों के अन्दर से एक चीठी निकाली और उसकी तरफ बढ़ा दी जिसे शिवदत्त ने हाथ में ले गौर से पढ़ना शुरू किया।

गिल्लन ने देखा कि चीठी पढ़ते हुए शिवदत्त के चेहरे पर कभी ताज्जुब कभी प्रसन्नता और कभी अविश्वास के भाव प्रकट हो रहे है, यहां तक कि पूरी चीठी समाप्त कर वह जोर से हंस पड़ा और तब गौहर की तरफ एक कदम बढा कर बोला, "इस छोटे से काम के लिए उन्होने आपको तकलीफ दी यह बिल्कुल अच्छा नहीं किया, इसके लिए तो एक प्यादा भेज देना काफी था, फिर भी जब आप आ ही गई है तो मेरा एक दूसरा बहुत ही जरूरी काम भी पूरा हो जायगा ऐसी उम्मीद होती है। मगर सबसे पहिले यह बताइये कि क्या अभी भी इस पर्दे की (नकाब की तरफ उंगली उठा कर) जरूरत है ?"

जवाब मे गौहर ने उस जवान की तरफ गर्दन घुमाई जिसे देख शिवदत्त फिर हंसा और बोला, "ये आपको बहुत पहिले से जानते है और सच तो यह है कि इन्होंने अभी अभी मेरी आपसे मुलाकात होने के पहिले ही, आपके आने की खबर मुझे दी थी, मगर शायद आप इन्हे न जानती हो, इसलिए आपका हिचकिचाना वाजिब है।" कहते हुए उसने एक सवाल की निगाह उस नौजवान की तरफ उठाई जिसे समझ उसने लापरवाही के साथ गर्दन हिला कर कहा, "आप बेखटके इनसे बात करें मैं जाता हूं, मगर एक बात जरा सुन ले।" कह कर वह कुछ पीछे हट गया और जब शिवदत्त उसके पास पहुचा तो उसके कान के पास मुंह करके धीरे से बोला, "जरूर यह उसी काम के वास्ते आई होगी जिसकी तरफ मेरा इशारा था और इस चीठी का भी वही मतलब होगा जो इसने आपको दी है। मगर इस समय अगर यह जान जायगी कि मै कौन हू तो जरूर हिचक जायगी और यह भी मुमकिन है कि अपने मन की बात आपसे न भी कहे, इसलिए मै हट जाता हूं, आप इससे बाते करे और इस बीच मे मै भी एक जरूरी काम निपटा डालता हूं।" शिवदत्त बोला, "आपका कहना बहुत ठीक है और आपका परिचय इसे किसी हालत मे मिलना न चाहिए। इससे जो कुछ बातें होगी वह तो मै आपको बता ही दूगा।" "ठीक है" कह कर वह नौजवान घूमा और बावली के पिछवाड़े की तरफ चला गया तथा शिवदत्त गौहर की तरफ बढ़ता हुआ बोला, "लीजिए अब आप बेखटके बातें कर सकती है और शायद अब आपको अपनी सूरत दिखाने

में भी कोई परहेज न होगा।" गौहर ने यह सुन गर्दन घुमा कर चारो तरफ देखा और किसी को पास मे न पा अपने चेहरे पर की नकाब उलटते हुए कहा, "मेरा ही नाम गौहर है और मेरे साथ मेरी सखी और ऐयारा गिल्लन है।"

गौहर की बढ़ी चढी खूबसूरती उसकी इस कच्ची उम्र में भी गजब कर रही थीजिसे देख शिवदत्त भौचक सा होकर एक दफे चौक गया, मगर तुरत ही उसने अपने को सम्हाला, उधर गौहर ने भी नकाव पुनः चेहरे पर डाल ली और कहा, "चीठी में यद्यपि सब बाते लिखी हुई है मगर मै समझती हूं कि जब तक थोडे मे मैं पूरा मतलब बयान न कर दूगी आपको बहुत सी बातों मे शक बना ही रह जायगा।"

शिव०। बेशक ऐसा ही है इसलिए हमलोग अगर एक जगह पर वैठ जांय और आराम से वातें करें तो क्या ज्यादा बेहतर न होगा ?

गौहर०। ठीक है लेकिन अगर आप इजाजत दें तो मैं अपनी सखी गिल्लन को भी साथ ले लूं क्योकि असल में उसी ने अपनी चालाकी और हिकमत से उन बातो का पता लगाया है जिनके बारे में उस चीठी मे जिक्र किया गया है जो मैंने आपको दी है।" शिवदत्त ने कहा, "जरूर" और गौहर का इशारा पाकर गिल्लन भी उसके पास आ गई। तीनो आदमी जाकर उस कम्बल पर बैठ गए जो शिवदत्त के आदमियो ने पहिले ही से एक साफ जगह देख कर बिछा रक्खा था। बावली के पास जाते समय एक बार उस आसेब का ख्याल कर गौहर का कलेजा धड़क उठा मगर वह दिल कड़ा करके चली ही गई।

शिवदत्त की सवाल की निगाह गिल्लन की तरफ उठी जिस पर गौहर की मर्जी समझ कर उसने भी एक सायत के लिए नकाब हटा अपनी सूरत दिखा दी। गौहर ने फिर कहा, "यह मेरी सखी औरऐयारा गिल्लन है।"जिस पर शिवदत्त हंस कर बोला, "वेशक ये आपकी सखी होने लायक है।" उसका मतलब समझ दोनों ही मुस्कुरा उठी मगर उसी समय शिवदत्त फिर बोल उठा, "अच्छा अब हमें मतलव की वात करनी चाहिए। (गौहर से) सब से पहिले तो आप मुझे यह वताइए कि आप लोगो को इन मामलो की खबर क्योकर लगी या यो कहिये कि आपको इन झमेलो मे पड़ने की जरूरत ही क्या पड़ी ?"

गौहर०। व्योरेवार पूरा किस्सा तो मैं किसी और मौके पर सुनाऊंगी पर इस समय मुख्तसर में इतना कह सकती हूं कि मुझे कम्बख्त भूतनाथ ने बेकसूर गिरफ्तार करके कैद कर लिया और मैंने उससे इसी बात का बदला लेने की कसम खा रक्खी है।

शिवदत्त० । भूतनाथ ने आपको कैद कर लिया ! मगर सो क्यों ?

गौहर० । एकदम व्यर्थ ही !

शिवदत्त० । मुमकिन है कि उसे आप पर किसी तरह का शक हो गया हो ?

गौहर० । हो सकता है, मगर मैने ऐसा कोई भी काम नही किया जिससे उसका किसी तरह का लगाव हो और तिस पर भी जब उसने मेरे साथ ऐसा बुरा वर्ताव किया तो मुझे उस पर बहुत ज्यादा गुस्सा आया ।

शिव० । गुस्सा आना वाजिब ही है !

गौहर० । मैंने उससे बदला लेने की कसम खाई और इस काम के लिए उसके कई गुप्त भेदों का पता लगाने की फिक्र मे पड़ी । इस काम के लिए मुझे रोहतास-गढ़ जाना पड़ा जहां भूतनाथ अकसर जाता आता रहता है और उसी सिलसिले में दो एक बार राजमहल मे जाने की भी जरूरत पड़ी ।

शिव० । रामजहल मे ! मगर सो क्यों ?

गौहर० । भूतनाथ के गुरुभाई शेरसिंह से हम लोगों को अपना कुछ मतलब निकलने की उम्मीद थी क्योंकि वे अकसर महल मे बूआजी—देवीरानी—के पास आते रहते है ।

शिव० । ठीक है, मुझे मालूम है ।

गौहर० । ज्यादा भेद पाने की उम्मीद मे मेरी यह ऐयारा (गिल्लन को बता कर) देवीरानी की एक लौंडी का भेष धर कर उनके पास ही रहने लगी और उस समय हम लोगों को मालूम हुआ कि कई और लोग भी तरह तरह की उम्मीदें लिए भेष बदले हुए देवीरानी के आस पास मंडरा रहे है ।

शिव० । अच्छा ! वे कौन लोग ?

गौहर० । उनमे से मुख्य तो थी नन्हो, आप नन्हों को जानते होंगे ?

शिव० । मैं बखूबी जानता हू, मगर वह तो........!

गौहर० । वह भी एक लौंडी बनी हुई देवीरानी के साथ लगी हुई थी ।

शिव० । ठीक है ऐसा ही होगा ।

गौहर० । और वही आपके भी एक ऐयार को हम लोगो ने देखा जो....

शिव० । (मुस्कुरा कर) यह ख़बर तो शायद आपको गलत लगी !

गौहर० । (हंस कर) तब शायद वह और कोई होगा जो शेरसिंह के पीछे लगा जोगीबाबा की........

शिव० । खैर आगे कहिए, वहां जाने से आपको क्या कोई खास बात मालूम हुई ?

गौहर० । एक दो नही बलिक बहुत सी बाते मालूम हुईं, मगर उन सब में खास यह थी कि देवीरानी शेरसिह को सिखा पढ़ा कर तिलिस्म के अन्दर भेजने और वहां कोई बहुत ही गहरा काम करने की धुन बांध रही है ।

शिव० । तिलिस्म के अन्दर भेज कर !

गौहर० । जी हां, किस जरिये से वे ऐसा करेंगी यह तो अभी मै नहीं जान सकी, पर इतना पता लगा कि देवीरानी को उस तिलिस्म का बहुत कुछ हाल मालूम है जिसके अन्दर किसी तरह उनके गुरु महाराज जा फंसे है और उनका इरादा यह है कि वे शेरसिह को तिलिस्म मे भेज कर उनको यानी अपने गुरु महाराज को छुटकारा दिलावें ।

शिव० । ठीक है मुझे भी इस मामले की कुछ खबर है लेकिन मै ऐसा नहीं समझता कि देवीरानी की मदद से शेरसिह इस लायक हो जायंगे कि तिलिस्म में घुस जायं और उनके गुरु महाराज को छुडा लावें ।

गौहर० । मगर वास्तव मे बात ऐसी ही है ।

शिव० । आप कहती है तो ठीक ही होगा, मगर........

गौहर० । देवीरानी कही से खोज ढूंढ़ कर कोई तिलिस्मी किताब निकाल लाई है और उसके साथ साथ कोई एक और भी ऐसी चीज उन्हे मिल गई है जिसकी मदद से वे इस काम को बखूबी करा सकेंगी ऐसा उन्हे यकीन है । उन्होंने वे दोनों ही चीजें शेरसिह को दे दी हैं जो तिलिस्म के अन्दर जाकर कोई कार्रवाई शुरू ही करने वाले है अथवा शुरू कर भी चुके हो तो ताज्जुब नही ।

शिव० । (चमक कर) क्या यह बात आप सही कह रही है ?

गौहर० । बिल्कुल सही, मालूम होता है कि अभी तक आपका वह ऐयार जो शेरसिह के पीछे लगा हुआ था लौट कर आपसे मिला नही है, नही तो आप कुछ भी शक न करके मेरी बात पर यकीन कर लेते ।

शिव० । (कुछ देर तक किसी गहरे सोच मे डूबे रहने के बाद) अच्छा खैर अगर आपकी यह खबर सही भी हो तो मैं आपको क्या मदद कर सकता हूं ? इतना तो आप समझ ही सकती है कि इन बातों से मुझे कुछ भी मतलब नही और न हो ही सकता है ?

गौहर० । (गिल्लन की तरफ देख और मुस्कुरा कर) अब इसे तो आप ही समझें, लेकिन इतना मैं कह सकती हू कि अगर आपको तिलिस्मी मामलों मे किसी तरह की असली दिलचस्पी है तो आपके लिए मौका बहुत अच्छा है ?

शिव० । मौका अच्छा है यह किस बारे में आप कहती है ?

गौहर० । आपके कई ऐयार आज कल जमानिया के आस पास जिस फिराक में घूम रहे हैं वह हम दोनों को मालूम है और इसीलिए मैं कहती हू कि अगर आप मुझे अपना इरादा साफ साफ बताएं और मुझसे मदद लें तो मै आपका काम बहुत ही सहज मे पूरा करा सकती हूं ।

शिव० । (चौक कर) आपसे किसेने कहा कि मेरे ऐयार जमानिया मे पहुंचे हुए है ?

गौहर इसके जवाब में सिर्फ मुस्कुरा कर चुप रही । शिवदत्त पुनः कुछ देर तक न जाने क्या सोचता रहा, इसके बाद बोला, "मै देखता हू कि आपको बहुत ज्यादा बातें मालूम है और इसका सबब खाली आपकी ऐयारी नही है जरूर कुछ और भी सबब होगा, ऐसी हालत मे आपसे कोई बात छिपाने की कोशिश करना व्यर्थ और नामुनासिब भी होगा, अस्तु आप साफ साफ अपना इरादा बयान करें तो बहुत अच्छा हो ।"

गौहर० । मै सब कुछ साफ साफ कहने को तैयार हू मगर डरती हू कि कोई बात ऐसी मेरे मुंह से न निकल जाय जो गैरमुनासिब या........

शिव० । (हंश कर) आप सब तरह से बेफिक्र और निडर होकर जो कुछ आपके मन मे हो सो कहे । मै आपको यकीन दिलाता हू कि आपकी किसी बात से भी मेरे मन में कोई दूसरा ख्याल पैदा न होगा ।

गौहर० । (मुस्कुरा कर) ठीक है, तो उस हालत मे सुनिये फिर । मुझे यह मालूम हो चुका है कि किसी जमाने मे भूतनाथ आपकी खिदमत में रह कर आप का बहुत कुछ काम कर चुका है और उसी मौके पर उसे कुछ ऐसी चीजें मिल चुकी है जिनकी आपको अब जरूरत है ।

शिव० । (चौक कर) वह किस तरह की चीजें ?

गौहर० । (छिपी निगाह गिल्लन की तरफ डालने के बाद मुस्कुरा कर धीरे से और शिवदत्त के पास झुक कर) मिसाल के तौर पर एक चीज यही ले लीजिये—शिवगढी की ताली ।

शिवदत्त गौहर की यह बात सुनते ही चमक उठा और बडी गहरी निगाह से गौहर की तरफ देखने लगा जिसकी नजर एक अजीब तौर पर उसके चेहरे पर गड़ी हुई थी । आखिर शिवदत्त ने कहा, "खैर इस बारे मे हां या ना कुछ भी न कह कर मै कहता हूं कि अच्छा आगे चलिए !"

गौहर० । इस चीज या उन दूसरी चीजों को जिन पर आप अपना हक समझते है उसके कब्जे से लेने के लिए आपने बहुत कुछ कोशिश की थी मगर वह अभी तक बेकार ही साबित हुई है ।

शिव० । तब ?

गौहर० । जाहिर है कि अगर वे चीजें भूतनाथ के कब्जे से निकल कर आपके पास आ जायं तो आपकी कोई बहुत बड़ी ख्वाहिश पूरी हो सकती है ।

शिव० । आगे फिर ?

गौहर० । लेकिन अगर शेरसिंह जिनको, जैसा कि मैने अभी अभी आपसे कहा—तिलिस्म की ताली मिल गई है, तिलिस्म मे घुस गये तो केवल आपकी वह मुराद ही पूरी होने से रुक जायगी सो नहीं वल्कि आपके कुछ दुश्मन भी छूट कर बाहर निकल आवेंगे और तब बहुत मुमकिन है कि आपको उनके हाथों तकलीफ पहुंचे ।

शिव० । इसके आगे ?

गौहर० । इसके आगे सिर्फ इतना ही कि अगर इस समय आप मेरी कुछ मदद करें तो बदले में मैं न केवल भूतनाथ के कब्जे से शिवगढ़ी की ताली आपको दिला सकती हूं बल्कि उम्मीद तो यह करती हूं कि शेरसिंह को मिली हुई वह तिलिस्मी किताब भी दिला सकूगी जो आपका दिली मकसद पूरा करने में आपकी बहुत बड़ी मददगार साबित होगी और जिसकी मदद से आप तिलिस्म तोड़ कर उसकी दौलत निकाल सकेंगे ।

शिव० । (कुछ देर तक सर नीचा कर कुछ सोचते रहने के बाद) मेरी किस तरह की मदद की आपको दरकार है ?

गौहर० । और कुछ भी नही, सिर्फ इतनी सी कि आपको भूतनाथ के जो पिछले भेद मालूम है उन्हे आप मुझको बता दे और इस सम्बन्ध में जो कुछ सामान आपके पास है वह तथा जो कैदी अभी तक आपके कब्जे में है उन्हें मेरे हवाले कर दें ।

शिव० । (चौक कर) सामान !

गौहर० । जी हां, सामान और कैदी ।

शिव० । मै बिल्कुल नही समझ पाता कि किन कैदियो से आपका मतलब है।

गौहर० । मैं उनके बारे मे कह रही हूं जिन्हे किसी जमाने में आपके दोस्त दिग्विजयसिंह ने अपने तिलिस्मी तहखाने मे बन्द कर रक्खा था और जिन्हे हाल ही मे आपके ऐयार वहां घुस कर निकाल लाये है, अगर आपको अब भी ख्याल न पड़ता हो तो कहिए मै उनके नाम भी सुना दू ?

शिव० । (मुस्कुरा कर) नही इसकी जरूरत नही, मुझे वह बात ख्याल आ गई। लेकिन एक बात तो आपको भी ख्याल रखनी ही चाहिए कि अगर वे कैदी अभी तक कहीं मौजूद हैं तो उन पर पहिला हक राजा दिग्विजयसिंह का होगा।

गौहर० । हां, मगर तभी जब उन्हे इस बात की खबर हो कि वे लोग अभी तक जीते जागते और आपके कब्जे मे है । वे तो अभी तक यही समझ रहे है कि उनको इन्द्रदेव के आदमी उस तहखाने से निकाल कर ले भागे और वे कभी के मर खप गए ।

शिव० । और दरअसल यही बात है भी, शायद आपको उनके बारे मे पूरा हाल नहीं मालूम है ।

गौहर० । मुझको खूब मालूम है कि इन्द्रदेव के कुछ आदमी उस तहखाने में घुस कर उन कैदियों और साथ साथ नन्हों को भी ले भागे थे* मगर मै यह भी जानती हूं कि आपके आदमी भी उसी वक्त उस जगह जा पहुचे और इन्द्रदेव के आदमियों से लड़ भिड़ उन सभों को कब्जे मे कर ले भागे ।

शिवदत्त कुछ देर तक ताज्जुब से गौहर का मुंह देखता रहा, इसके बाद बोला, "मेरी समझ में बिल्कुल नही आ रहा है कि ये सब बातें जिनके बारे मे अब तक मै यही समझता था कि मेरे सिवाय कोई भी गैर कुछ नही जानता आपको क्योकर मालूम हुई । अगर आप लोगों ने स्वयं अपनी चालाकी से इन बातो का पता लगाया है तो मैं आपकी ऐयारी की तारीफ करता हूं, मगर शायद ये बातें आपको किसी दूसरे जरिये से मालूम हुई हों।"

गौहर ने इस बात के जवाब में कुछ भी न कहा और सिर्फ मुस्कुराती रही। शिवदत्त कुछ देर तक मन ही मन तरह तरह की बाते सोचता रहा इसके बाद बोला, "खैर, अगर थोड़ी देर के लिए मै मान लूं कि आपका कहना ठीक है, वे कैदी मेरे ही पास है, और आपका हुक्म मान मै उन्हें आपके हवाले भी कर दू, तब उससे क्या होगा ? मेरा कौन सा मतलब आपके जरिये पूरा हो सकेगा ?

गौहर० । (शिवदत्त की तरफ झुक कर धीरे से) मेरी मदद से आपको तिलिस्म की ताली मिल जायगी जिससे आप अपनी वह ख्वाहिश पूरी कर सकेंगे जो बहुत दिनों से आपके मन में है, और अगर आप इस बात से इनकार कर देते है तो याद रखिये कि शेरसिंहको उस तिलिस्म की ताली मिल चुकी है, और वे अपनी कार्रवाई शुरू कर चुके या करने ही वाले है और तब आपके मनसूबे मन ही मे रह जायेंगे !

* देखिये रोहतासमठ दूसरा भाग, अन्तिम बयान ।

शिवदत्त बहुत देर तक कुछ सोचता रहा, इसके बाद एक लम्बी सांस लेकर बोला, "आपका कहना ठीक मालूम होता है, मगर यह मामला उतना सीधा या सहज नही है जितना आप समझती है। इसमे कुछ ऐसी गिरहें पड़ी हुई है जिनके बारे मे शायद आपको कुछ मालूम नहीं है। आगे बढ़ आइये और सुनिये कि असल मामला क्या है और तब खुद ही अपनी राय कायम कीजिये।"

गौहर थोडा और आगे खसक गई और शिवदत्त ने धीरे धीरे उससे कुछ कहना शुरू किया।

पांचवां बयान

रोहतासगढ किले के उसी कमरे मे जिसमें पाठक एक दिन नन्हों दिग्विजयसिह और दारोगा को देख चुके है, आज हम पुनः चलते है।

यहां का साज सामान आज भी ठीक वैसा ही है जैसा पाठक उस मौके पर देख चुके है, अगर कुछ फर्क है तो केवल इतना ही कि आज यह कमरा एक दम सूनसान है और इस समय यहां कोई भी नही है। कमरे मे रोशनी यद्यपि उसी ढंग की मद्धिम और कम हो रही है और पलंग भी उसी तरह बिछा है, तथा उसकी बगल मे संगमर्मर की वह बड़ी चौकी भी रक्खी हुई है जिस पर रेशमी गलीचा बिछा हुआ है पर न तो पलग पर ही कोई है और न उस चौकी पर ही।

मगर नही, हमारा सोचना गलत है। यद्यपि वह पलंग और चौकी सूनी है और कमरे मे भी कोई दिखाई नही पड़ता फिर भी इस जगह कोई आदमी मौजूद जरूर है। वह देखिये बाईं ओर वाली उस बड़ी आलमारी की तरफ जिसका पल्ला यद्यपि अभी तक बन्द था पर अब धीरे धीरे खुल रहा है। लीजिये अब पल्ला काफी खुल गया और उसके अन्दर खड़ी एक काली शक्ल पूरी पूरी दिखाई पड़ने लगी।

काली शक्ल ने पहले तो आलमारी के अन्दर ही से इधर उधर चारो तरफ कमरे को पूरी तरह देखा और जब कही किसी आदमी पर नजर न पड़ी तो अपनी गर्दन बाहर निकाल कर अच्छी तरह देखा। कमरे मे आने जाने वाले सब दर्वाजों को अच्छी तरह बन्द पा उसने आलमारी के दोनो पल्ले खोल दिये और अब हमें उसकी पूरी आकृति नजर आने लगी। सिर से पैर तक काले कपड़े मे ढंकी और मुंह पर भी काली नकाब डाले इस सूनसान कमरे मे वह काली शक्ल कुछ भयानक सी नजर आती थी।

एक बार इस काली शक्ल की निगाह ऊपर छत की तरफ घूमी। चारो

तरफ के रोशनदानों को मजबूती से बन्द पा उसने पुनः एक बार सब दरवाजों और खिड़कियों को देखा और तब सब तरफ से निश्चिन्त हो वह आलमारी से उतर कमरे मे आ गई। लम्बे डग भरती हुई वह काली शक्ल कमरे के एक कोने की तरफ बढ़ी जहां लकड़ी का एक बडा सा सन्दूक रक्खा हुआ था जिसमे मजबूत ताला बन्द था। काली शक्ल ने इस ताले को उलट पुलट कर बडे गौर से देखा, तब अपने कपड़ों के अन्दर से कोई औजार निकाला और ताली लगाने के छेद मे डाला। कुछ ही कोशिश मे वह ताला खुल गया जिसे जमीन पर रख उसने सन्दूक का पल्ला खोला।

तरह तरह के सामानों से वह बक्स करीब करीब पूरा भरा था जिन्हे उलट पुलट कर वह काली शक्ल बहुत देर तक देखती रही। अच्छी तरह देख भाल के वाद उसने एक गठरी जो रेशमी मजबूत कपड़े मे बंधी थी और जिसके अन्दर न जाने क्या था निकाल कर बाहर रक्खी और पुनः देख भाल करने लगी, मगर मालूम होता है जिस चीज की उसको जरूरत थी वह उसे वहां नजर न आई, क्योंकि थोड़ी देर की देख भाल के बाद उसने यह सन्दूक बन्द कर दिया और उसका ताला भी ज्यों का त्यों दुरुस्त कर वह उस गठरी को उठाए हुए आलमारी की तरफ बढ़ी जो सन्दूक के पास पड़ती थी। मगर इस आलमारी की तरफ घूम कर भी न जाने क्या सोच कर वह काली शक्ल रुकी और तब पलट कर पलंग की तरफ बढ़ी जिसका बिछौना तकिया चादर आदि सिरहाने पैताने उलट पुलट कर वह देख भाल करने लगी।

यकायक उस काली शक्ल के मुंह से खुशी की एक आवाज निकली। बिछावन की आखिरी तह के भीतर दबी हुई किसी चीज पर उसका हाथ पड़ा और उसने उसे बाहर खींचा। एक छोटा रेशमी बटुआ जिसके अन्दर कोई चीज थी नजर आया। फुर्ती फुर्ती उसको खोल उसके अन्दर वाली चीज को निकाला और उलट पुलट कर देखा, तब और भी गौर से देखने की नीयत से शमादान की तरफ बढ़ी, मगर उसी समय चमक कर रुक गई। कही से एक अजीब किस्म की खटके की सी आवाज आई थी। उसने एक सायत के लिए थम कर उस आवाज पर गौर किया और तब झपट कर उसी आलमारी मे घुस गई। वह गठरी और बटुआ उसके हाथ ही मे था।

मुश्किल से काली शक्ल ने आलमारी मे घुस कर उसके पल्ले बन्द किये होंगे कि कमरे का एक दर्वाजा खुला और उसके अन्दर से दिग्विजयसिंह और दारोगा

साहब निकलते नजर पडे। मगर इस समय ये दोनों ही परेशान और घबराहट की हालत में नजर आ रहे थे। दिग्विजय तो सीधा पलंग पर जा कर पड़ गया और दारोगा उस चौकी की तरफ बढ़ा पर फिर रुका और सिर झुकाये गम्भीर चिन्ता में डूबा कमरे में इधर से उधर घूमने लगा।

बड़ी देर तक कमरे मे सन्नाटा रहा। आखिर एक लम्बी सांस ले कर दिग्विजयसिंह ने सिर उठाया और दारोगा साहब की तरफ देख कर कहा, "अब क्या होगा बाबाजी?"

टहलते टहलते रुक कर दारोगा साहब बोले, "क्या बताऊं! मेरी कुछ समझ ही मे नही आता कि मामला क्या है और वहां से वह चीज कौन ले गया, मगर जरूर यह तिलिस्मी मामलों से काफी जानकार किसी आदमी की कार्रवाई है!"

दिग्विजय०। उस चीज के वहां होने मे तो कोई शक नही किया जा सकता? हम लोग पहुंचे तो थे ठीक ही जगह पर?

दारोगा०। इन दोनों ही बातों मे कोई भी शक करने की गुंजाइश नही। हम लोग पहुंचे ठीक जगह पर और वह चीज वहा थी भी जरूर, मगर कुछ ही देर पहिले कोई वहां पहुंच उसे निकाल ले गया था। क्या वह खुला हुआ सन्दूक साफ साफ नही कह रहा था कि कोई वहा पर आया और उस चीज को ले गया?

दिग्वि०। लेकिन अगर कोई ले गया तो वह कौन था? कैसे वह वहां पहुचा? और कैसे उसने उस गुप्त जगह को खोला जिसे तिलिस्मी चाभी पास होते हुए भी हम लोग इतनी मुश्किल के बाद खोल पाए?

दारोगा०। यही तो ताज्जुब, केवल ताज्जुब ही नहीं, डर की बात है। यही तो बता रही है कि तिलिस्मी मामलो का कोई गहरा जानकार वहां पहुंचा। वह कौन था और किस नीयत से उस चीज को ले गया इसका पता लगाना बहुत ज़रूरी है।

दिग्वि०। नीयत तो उसकी साफ ही है, जो हम लोगों का इराद था वही उसका भी होगा, तिलिस्म खोल कर उसकी दौलत निकाल लेने के सिवाय और मतलब ही क्या हो सकता है?

दारोगा इस बात को सुन चमक उठा पर चुप रहा। थोड़ी देर बाद दिग्विजय फिर बोला, "मगर बाबाजी, जब उस कोठरी की ताली हम लोगों के पास थी तो उसे किसी गैर ने खोला ही किस तरह? क्या बिना ताली पास में रहे कोई उस जगह तक पहुंच सकता था?"

दारोगा०। अभी तक तो मेरा भी यही ख्याल था कि बिना ताली पास में

रहे उस जगह को खोलना या वहां से किसी चीज को ले आना असम्भव है, पर अब तो यह ख्याल गलत ही साबित हो रहा है।

दिग्वि०। उस खुली हुई आलमारी और उसके भीतर के तंग रास्ते को देखते ही मेरा जी खटका था। मेरी समझ मे तो कोई जरूर उसी राह से आया और उस चीज को उड़ा ले गया। क्या कहूं, आपने उस रास्ते के अन्दर मुझे जाने न दिया नही तो मै जरूर घुसता और कुछ पता लगाता।

दारोगा०। (झुंझला कर) जानते भी हो कुछ कि वह कहां का रास्ता था या यों ही बकबक किये जाते हो! उस रास्ते में घुसते तो फिर लौट कर बाहर न निकलते। उसे भी क्या कोई ऐसी वैसी सुरंग का मुहाना समझे बैठे हो, तिलिस्मी मामलो मे लडकपन नही चल सकता।

दिग्विजयसिह दारोगा की डपट खाकर सहम गया पर इतना कहे बिना उससे रहा न गया, "तब फिर आप ही बताइये कि वह तिलिस्मी किताब और ताली कहां है जिसको दिलाने का आपने वादा किया, जिसके लिए मैने इतनी आफते झेली, और जिसके लिए उस भयानक जगह में घुस कर उस डिब्बे को लाया?"

दारोगा ने इस सवाल के जवाब मे कुछ न कहा और इधर उधर देख कर बोला, "नन्हों नजर नही आती, कहां गई!"

दिग्वि०। आप ही ने उसे........

मगर वह अपनी बात पूरी न कर सका। उसी समय कमरे का एक बाहरी दर्वाजा बड़ी जल्दी मे खुला और घबराई हुई नन्हो भीतर घुसी। जल्दी से उसने दर्वाजा बन्द किया और इन दोनों के पास पहुच कर हांफती हांफती बोली "किताब! तिलिस्मी किताब!"

दारोगा ने चमक कर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "सम्हलो सम्हलो, क्या बक रही हो!"

नन्हो अपने को सम्हाल कर बोली, "वह तिलिस्मी किताब! जिसे लेने आप लोग तहखाने में घुसे थे, क्या वह आपको मिली?"

दारोगा ने अफसोस से सिर हिलाया, दिग्विजयसिह उदासी से बोला, "हम लोगों की समूची मेहनत बर्बाद हो गई, कोई हमसे पहिले उस जगह पहुंच उसे ले गया!"

नन्हों जल्दी से बोली, "तो मैं जानती हूं कि वह कहां है। आप लोग अगर फुर्ती और हिम्मत करें तो अब भी उसे कब्जे में कर सकते है।"

अब तो दिग्विजय भी पलङ्ग से उठ पडा और नन्हों के पास जा उसका हाथ पकड़ कर बोला, "जल्दी बताओ वह किताब कहां है ?"

नन्हों० । वह शेरसिंह के पास है । अभी अभी देवीरानी ने उन्हें वह किताब और साथ साथ तिलिस्मी ताली दी है और उन्हें तिलिस्म के अन्दर जाकर अपने गुरु महाराज को छुड़ाने का काम सौंपा है ।

दारोगा० । (चमक कर) हैं, देवीरानी ने !

नन्हो० । जी हां, देवीरानी ने ।

दारोगा० । मगर उनको वह किताब........

नन्हों० । वे तहखाने मे घुस उन चीजो को निकाल लाईं जिन्हें लेने आप लोग जाने वाले थे, मैंने खुद उन्हे अपने मुंह से यह बात कहते सुना है ।

दारोगा ने दिग्विजय की तरफ देखा और दिग्विजय ने दारोगा की तरफ, नन्हो फिर बोली—

नन्हो० । उन्होने शेरसिंह से यह भी कहा कि उस कोठरी की ताली जिस जगह रहनी चाहिये थी वहां न थी अस्तु मै एक दूसरे रास्ते से उसके अन्दर पहुची और इस चीज को निकाल लाई, अब वह आदमी जो ताली ले गया है जब उस जगह पहुंचेगा और इस चीज को न पायेगा तो बहुत घबरायेगा ।

दारोगा० । क्या उन्होने ऐसा कहा था !

नन्हो० । हां, उन्हे ऐसा कहते हुए मैंने अपने कान से सुना !

दारोगा० । (दिग्विजय की तरफ देख कर) लो अब तो सब बात साफ हो गई न ! तुम उस चीज को वहां न पाकर मुझ पर तरह तरह के शक कर रहे थे ।

दिग्वि० । बेशक, मै समझ रहा था कि शायद आपको गलत खबर लगी और वह चीज उस जगह थी ही नहीं या रहती ही न थी, मगर बूआजी किस तरह उस जगह तक पहुच गईं और सो भी बिना ताली के !

दारोगा० । तुमको उनकी कुदरत का पता नही है । (नन्हों से) मैं बार बार तुमको कहता था कि देवीरानी पर निगाह रक्खो और उनसे वह चीज किसी प्रकार ले लो, पर तुम........

नन्हों० । अब इन सब बातों और शिकवे शिकायतों का वक्त नही है, अगर शेरसिंह उन चीजो को लेकर तिलिस्म में घुस गए तो फिर आप लोगो के किए कुछ न हो सकेगा इसलिये जैसे बने अभी ही उन पर काबू करके तिलिस्मी किताब और चाभी कब्जे मे करिए नही तो फिर हाथ मल के पछताइएगा ।

दारोगा० । (सम्हल कर) हां तुम ठीक कह रही हो, अच्छा कैसे कैसे क्या क्या हुआ जरा संक्षेप में कह तो जाओ !

नन्हों० । आपने मुझसे कहा था कि मैं राजा साहब को लेकर तिलिस्मी ताली निकालने जाता हूं तुम जाकर देवीरानी के पास रहो और तब तक उनका साथ न छोड़ो जब तक कि हम लोग लौट कर न आ जाय । आपने यह भी कहा था कि अगर तुम देखना कि देवीरानी का इरादा तहखाने मे जाने का है तो फौरन इस कमरे में पहुंचना और (एक कोने की तरफ बता कर) उस तार को खींच देना ।

दारोगा० । हां हा मैने यह सब कहा था, तब फिर क्या हुआ सो बोलो ।

नन्हों० । मैंने अपनी सूरत बदली और देवीरानी के कमरे मे पहुंची पर वे वहां थी नही । उनकी लौंडी मैना से पूछा तो वह बोली कि बहुत देर से जाने कहां गई है, घण्टों इन्तजार करते हो चुके है । सुन कर मुझे शक मालूम हुआ । मैने खोद विनोद किया तो मालूम हुआ कि वे बहुत देर ही से नही बल्कि आज दो पहर के बाद से ही गायब है और कहती गई है कि मुझे देर लगे तो घबराना नहीं और जो कोई भी आवे उससे कह देना कि तबीयत ठीक नहीं है आज मुलाकात न होगी, लेकिन अगर शेरसिह आवे तो उसे रोक रखना और पूजा वाले कमरे में बैठा रखना । मेरे कान खड़े हुए, क्योकि आपने कहा हुआ था कि जिस कमरे में बैठ कर वे पूजा करती हैं उसमे से भी एक रास्ता तहखाने मे गया है । मुझे गुमान हुआ कि वे शायद तिलिस्मी तहखाने में ही न घुसी हो, और इस हालत में आप लोगों से कही उनकी भेंट न हो जाय, तब बडी गडबड़ी मचेगी, यह सोच मै लौटी कि आप लोगों को होशियार कर दू, मगर उसी समय उनकी आवाज सुन पड़ी । वे मैना को पुकार रही थी, मैना के पीछे पीछे मैं भी उनके पास जा पहुंची । वे उसी पूजा वाले घर में एक खुली आलमारी के सामने खड़ी थी । उनके हाथ मे एक बड़ी सी गठरी थी और वे इस तरह हाफ रही थी मानों कही बहुत दूर से चलती हुई आ रही हों । मैना को देखते ही उन्होने पूछा, "शेरसिह आया ?" उसने कहा, "जी नही ।" वे बोली, "न जाने कहां रह गया ! अच्छा वह आये तो फौरन मेरे पास भेजना, और अब तुम लोग जाओ, जब तक मै न बुलाऊं कोई मेरे पास न आना ।" सब लोग हट गए, मैना तो कही चली गई मगर मै उसी जगह घूम फिर कर ताक झांक लगाने लगी । मैने देखा कि उन्होने अपने हाथ से पलगड़ी बिछाई और शमादान पास रख कर उस पलगडी पर बैठ वह गठरी खोली, फिर न जाने क्या समझ उठी और कमरे का दर्वाजा भिड़का

आईं। मेरा शक और भी बढा और मै छिप कर एक छेद की राह देखने लगी। उन्होंने वह गठरी खोली, उसमे वहुत तरह के समान थे, उन्हे साधारण रीति से देखा भाला, तब उसमें से एक बड़ा सा चादी का डिब्बा निकाला, इस डिब्बे को किसी तर्कीब से उन्होंने खोला तो उसके अन्दर से एक बड़ी चाभी और एक किताब निकली। उन्होंने दोनो चीजो को माथे से लगाया, तब देख भाल करने वाद वह चाभी तो उसी डिब्बे मे रख कर बन्द कर दी और किताब को पढने लगी, साथ ही उनके मुह से नकला, "शेर न जाने कहां रह गया, अभी तक नही आया?"

बहुत देर तक वे इस किताब को देखती रही, मगर बीच बीच मे बराबर दर्वाजे की तरफ देखती और शेरसिह को याद करती थी। उनके रंग ढंग से साफ मालूम होता था कि जो कुछ सामान उस लाल गठरी मे है वह शेरसिंह के वास्ते ही लाई है अस्तु मेरे मन में ख्याल हुआ कि अगर मै शेरसिंह बन कर उनके पास जाऊं तो शायद वे चीजें देख सकूं या उन पर कब्जा भी कर सकूं। इस खयाल ने यहां तक जोर पकड़ा कि आखिर मै सब्र न कर सकी और वहां से हट आई, जल्दी जल्दी अपनी सूरत शेरसिह जैसी बनाई और उनके पास पहुंची।

दारोगा०। बहुत गलत कार्रवाई हुई यह तुम्हारी अगर शेरसिंह आ जाता तब?

नन्हों०। (अफसोस के साथ) वही तो हो गया आखिर! लेकिन अगर उनके आने मे आधी घड़ी की भी देर हो जाती तो मै दोनो चीजें मार ही लाती और तब आप मेरी तारीफ करते न अघाते।

दिग्वि०। अच्छा तब क्या हुआ, तुमको मालूम हुआ कि वह किताब और ताली कैसी थी?

नन्हो०। जी हां, मुझे शेरसिंह समझ वे बहुत खुश हुईं और बोली कि 'यह तिलिस्मी किताब मै तहखाने मे घुस कर निकाल लाई, अब तुम्हे भी उस काम के लिए तैयार हो जाना चाहिए। मैने कहा कि मै तैयार हूं, और तब वह किताब उनसे लेकर देखी। बड़ी विचित्र ढंग की थी, उसकी जिल्द चांदी की थी और पन्ने भोजपत्र के जिनसे एक प्रकार की भीनी भीनी विचित्र सुगन्ध निकल रही थी, पर उसकी लिखावट इतनी बारीक थी कि बड़ी मुश्किल से पढ़ी जाती थी। मै सोच ही रही थी कि किताब लिए दिए किसी बहाने से वहा से चल दू कि वह किताब उन्होने मुझसे वापस मांग ली और उसके अन्दर से कुछ पढ कर सुनाने लगी। उसी समय शेरसिह वहां पहुच गये और मै डर कर भागी। अगर आधी घड़ी की भी मोहलत मिली होती तो मै वह किताब मार ही लाती!

दारोगा० । तब क्या हुआ ?

नन्हों० । शेरसिंह ने मुझे इधर उधर बहुत खोजा मगर मैं उनके हाथ क्यों लगने लगी थी, आखिर जब वे लौट कर देवीरानी के पास पहुंच गए तो मै फिर छिप कर दोनों की बातें सुनने लगी । उस समय मुझे उस किताब के बारे में पूरा पूरा हाल मालूम हो गया और मै जान गई कि इस किताब की मदद से तिलिस्म के अन्दर घुसा जा सकता है ।

इतना कह नन्हों ने वह सब बातें जो देवीरानी और शेरसिंह से हुई थी इन लोगो को कह सुनाईं और ये दोनो ताज्जुब से सुनते रहे । पाठक तो अब समझ ही गये होंगे कि वह नकली शेरसिंह असल में यह नन्हों ही थी जो देवीरानी से मिली थी मगर हम नही कह सकते कि जो आदमी शेरसिंह के पीछे पीछे गया था वह भी यही नन्हों ही थी या कोई और ।

सब बातें सुन कर दारोगा साहब बोले, "यह तुमने बडे काम की बात बताई नन्हों, और इसमें कोई शक नही कि अगर इस समय शेरसिंह का पीछा करके उस पर काबू कर लिया जाय तो वे सभी चीजें मिल जायंगी जो देवीरानी ने उसे दी है, हमलोग उस फिक्र मे लगते है मगर तुमको हमारी मदद करनी होगी, बिना तुम्हारी मदद के कुछ न हो सकेगा !"

नन्हों० । मै सब तरह से तैयार हूं, जो कुछ कहिये सो करू ।

दारोगा० । तुम अभी चली जाओ और छिपे छिपे शेरसिंह के साथ रह कर तब तक उसका पीछा न छोडो जब तक कि हम दोनो उसके पास पहुंच नही जाते । हमे अपनी तैयारी करने मे कुछ देर लगेगी, कही ऐसा न हो कि इस बीच मे वह कही निकल जाय ।

नन्हों० । ठीक है, मै जाती हू पर यदि आपके पहुंचने के पहिले ही वे कही के लिए रवाना हो गये, या तिलिस्म के अन्दर ही........

दारोगा० । तो तुम भी उसके साथ हो जाना या फिर अपनी ऐयारी से उसे रोकने की कोशिश करना । आखिर उसे भी तो तिलिस्म मे जाने के लिये कुछ तैयारी करने की जरूरत पडेगी । अगर वह कही के लिये रवाना हो तो तुम उसके साथ लग जाना, और अगर वह किसी रास्ते से तिलिस्म मे घुसे तो उसके मुहाने पर मौजूद रहना, हम लोग खोजते ढूंढते वहां तक पहुंच ही जायगे जहां तुम होगी । मगर एक बात और, यदि मौका लगे तो यह जानने की भी कोशिश करना कि वह आदमी कौन था जो शेरसिंह को धोखा देकर देवीरानी के तोशेखाने मे घुस ।

और वहां से उनके कथनानुसार बहुत कुछ सामान लेकर गायब हो गया !

नन्हों० । बहुत अच्छा, लेकिन उस हालत में अगर आप हुक्म दें तो मै अभी शेरसिंह के पीछे लग जाऊं, क्योकि रंग ढंग से मुझे मालूम होता है कि वे एक सायत का भी व्यर्थ का विलम्ब न करेंगे और जहा तक हो सकेगा जल्दी ही अपनी मुहिम पर रवाना हो जायेंगे ।

दारोगा० । हा हां, तुम्हारा अभी ही चले जाना मुनासिब है, अगर वह कही जाय तो जैसा मैने कहा, तुम या तो उसको रोक रखने की कोशिश करना और या फिर उसके पीछे पीछे लगी चली जाना, मै तुम्हे ढूंढ लूंगा । मगर देखो एक बात का और ख्याल रखना ।

दारोगा साहब ने जल्दी जल्दी नन्हो को कुछ बातें और भी समझाई और तब उसे बिदा किया । वह उस कमरे का एक दर्वाजा खोल किसी तरफ को चली गई और तब वह दर्वाजा बन्द करता हुआ दारोगा पुनः दिग्विजसिंह के पास पहुंचा जिसने उसकी तरफ सवाल की निगाह से देखा । दारोगा बोला, "मैंने नन्हो से कह दिया है कि शेरसिंह के कब्जे से वे चीजें ले लेने मे तरद्दुद न पडेगा और तिलिस्मी पोशाक की मदद से हम लोग पलक झपकते से और बडे बेमालूम तौर पर वह काम कर डालेगे अस्तु तुम वही पौशाक निकालो और जल्दी से पहन लो ।" दिग्विजयसिंह खुश होकर बोला, "ओह, उस पौशाक की बात तो मै बिल्कुल ही भूल गया था !" उसने अपनी कमर से एक ताली निकाली और फुर्ती से उस सन्दूक के पास पहुचा जो उस कमरे मे था अथवा जिसे अभी अभी इन लोगो के आने के कुछ ही देर पहिले उस काली शक्ल ने खोला था । उसका ताला खोल फुर्ती फुर्ती उसमे की चीजे हटाते हुए दिग्विजयसिंह ने कहा, "आपने अच्छी याद दिलाई मुझे, इस तिलिस्मी पौशाक की बात तो मैं एकदम भूल ही गया था । मगर है, यह क्या ! वह गठरी कहां गई !" दिग्विजयसिंह के मुह से घबराहट की एक आवाज निकली और वह जल्दी जल्दी उस सन्दूक का सामान उलट पलट कर कुछ खोजने लगा ।

मगर जो कुछ भी वह खोज रहा था वह चीज उसे न मिली । दिग्विजय ने समूचा सन्दूक छान मारा बल्कि उसमे का सब सामान निकाल कर बाहर रख दिया मगर बिल्कुल वेकार । आखिर वह परेशान होकर बोला, "यह क्या बात है बाबाजी, वह तिलिस्मी पौशाक तो कही गायब हो गई ?"

दारोगा भी दिग्विजयसिंह के पास ही खड़ा हुआ उसकी परेशानी देख रहा था । उसने पूछा, "कही और तो नही रख दी थी तुमने ?" दिग्विजय सिर हिला

कर बोला, "कदापि नहीं, मुझे खूब खयाल है कि इसी सन्दूक में उसको मैंने रक्खा था, और उसके साथ वाला भुजबन्द.... (माथे पर उंगली मार कर) उस जगह रक्खा था।" उसने अपने पलंग की तरफ हाथ उठाया और लपकते हुए वहां जा उस पर का बिस्तरा उलटा, पर वहां भी जिस चीज की उसे खोज थी वह उसे दिखाई न पड़ी। उसने पलंग पर के समूचे कपडे उतार कर फेंक दिये और तब बदहवासी की मुद्रा में दोनों हाथों से अपना सर पकड़ कर बोला, "जरूर कोई जानकार आदमी आया और वे दोनों चीजें ले गया!"

छठवां बयान

देवीरानी के महल से निकल शेरसिंह अपने डेरे की तरफ रवाना हुए और बहुत जल्द ही वहां जा पहुचे क्योकि वह स्थान जनाने महल से ज्यादा दूर न पड़ता था।

शेरसिंह का ख्याल था कि उनके कमरे में इस समय कोई भी न होगा मगर उनका यह सोचना सही न था। जिस समय वे अपने कमरे में घुस रहे थे उनके खिदमतगार ने जो दर्वाजे के बगल ही मे एक कम्बल ओढ़ चुपचाप बैठा ऊंघ रहा था मगर इनको आते देख जाग कर खडा हो गया था इनके हाथ में कागज का एक टुकड़ा देकर धीरे से कुछ कहा जिसे सुनते ही यह चौक गए। इन्होने उससे कुछ पूछा और तब रोशनी के पास ले जाकर उस पुर्जे को गौर से पढा, पढ कर कुछ देर न जाने क्या सोचते रहे और तब उसी पुर्जे की पीठ पर कुछ लिख खिदमतगार के हवाले किया जो उसे हाथ मे लिए किसी तरफ को चला गया और इधर शेरसिंह अपने कमरे मे घुसे। सामने ही गद्दी पर भूतनाथ एक तकिये के सहारे उठंगा हुआ था जिसने इन्हे आता देख सिर उठाया और कहा, "बारे किसी तरह आप आए तो सही!"

शेरसिंह ने जवाब दिया, "इस समय तुमको यहां देख मुझे ताज्जुब होता है" और तब कमरे के एक कोने मे जा अपने कपडे उतारे, एक चादर ओढी और चुपचाप आकर भूतनाथ के सामने बैठ गये। वह बोला—

भूत०। मुझे यहां देख आपको ताज्जुब हुआ?

शेर०। बेशक, क्योकि आज कल जिन झमेलो मे तुम पड़े हुए हो उसकी थोड़ी बहुत खबर मुझे अकसर लगती रहती है।

भूत०। (सिर झुका कर) जरूर लगती होगी और शायद आप....

शेर० । नही उन बातों का जिक्र करके और समझा बुझा कर या लानत मलामत करके तुम्हे रास्ते पर लाने की उम्मीद अब मैं बिल्कुल छोड़ चुका हूँ और इसीलिए तुम जो कुछ भी कर रहे हो या करने का इरादा कर रहे हो उस पर सिवाय अफसोस करने के और कुछ तुमसे कहना नही चाहता ।

भूत० । (ताज्जुब से) क्या आपको मेरे बारे में कोई ऐसी बात मालूम हुई है....

शेर० । (कुछ तेजी से) अवश्य ही तुम्हारी सब बातें और तुम्हारे सब भेदों की जानकारी मुझे नही है मगर दारोगा की मदद करके जो कुछ तुमने पाया और शिवदत्त का जो कुछ काम तुमने किया वह हाल थोड़ा बहुत मुझे जरूर मिला है । अब अगर मुझे कुछ पूछना है तो सिर्फ इतना ही कि यह सब करके क्या तुम सुखी हुए ?

भूत ० । अफसोस सुख और प्रसन्नता तो मेरे लिए सिरजी ही नही गई है ! अपने पापो की मैली चादर को ज्यो ज्यो धोकर साफ करना चाहता हू वह और भी काली होती जाती है !!

शेर० । क्योंकि तुम उस मैली चादर को धोने के लिए लालच खुदगर्जी और बेईमानी का मसाला इस्तेमाल कर रहे हो !

भूत० । (सिर नीचा करके) लालच या खुदगर्जी का इल्जाम तो किसी कदर मुझ पर लग सकता है मगर बेईमानी का बिल्कुल नही ! आप कोई भी काम मेरा ऐसा नही बता सकेंगे जिसके लिए मैं बेईमान कहला सकूं ।

शेर० । भुवनमोहिनी और अहिल्या का किस्सा मुझे पूरा पूरा मालूम है और इनके साथ जो कुछ तुमने किया वह अगर बेईमानी नही है तो दुनिया मे ईमानदारी नाम की कोई चीज रह ही नही जाती !

भूतनाथ यह बात सुन एकदम सन्नाटे मे आ गया और शेरसिंह का मुह ताकने लगा । उसने कुछ कहना चाहा पर उसके मुह से कोई आवाज न निकल सकी । जरा देर रुक कर शेरसिंह पुनः बोले, "नन्हो के साथ मिल कर जो कुछ तुमने किया और आज कल जिस अवस्था और कार्रवाई मे तुम हो वह भी मुझे मालूम है, इसलिए तुम अपने को बेकसूर साबित करने की कोशिश मत करो, ऐसा करना व्यर्थ की मेहनत होगी । सच यह है कि इन्द्रदेव ने और मैंने भी, सब तरह की कोशिश कर यह बात अच्छी तरह समझ ली कि तुमको रास्ते पर लाना एकदम असम्भव है और इसीलिए हमलोगो ने तुमको बिलकुल ही तुम्हारी किस्मत पर छोड़ दिया है । अब अगर तुम्हारा भाग्य ही तुम्हे ठोकर दे देकर रास्ते पर लावे

तो तुम आ सकते हो नहीं तो और किसी तरह भी तुम्हारा सम्हलना मुमकिन नहीं, खैर तुम इन सब बातों को तो जाने दो और यह बताओ कि इस वक्त किस लिए मेरे पास आने की तकलीफ की है।"

भूत०। जब आप मुझ पर इस कदर खफा है तो मेरी मदद कर ही कैसे सकेंगे ?

शेर०। तुम्हारा यह कहना भी साबित करता है कि इस समय जिस काम के लिए तुम्हारा आना हुआ है वह भी कोई भला काम नहीं है और उसकी आड़ में तुम्हारी बदकिस्मती तुमसे कुछ और भी करा लेना चाहती है, खैर तुम कहो तो सही क्या बात है।

भूतनाथ शेरसिंह की झिड़की खा एक दफे तो सहम गया मगर फिर न जाने क्या सोच हिम्मत करके बोला, "अगर आप इस बात का वादा करें कि मेरी बात सुन मेरा काम चाहे करे या न करें मगर उसका जिक्र किसी गैर के सामने न करेंगे, तो मै कुछ कहने की हिम्मत करूं ?"

शेर०। (कुछ हंस कर) खैर कहो, मै उसका जिक्र किसी गैर से न करूंगा।

भूत०। किसी से नहीं, इन्द्रदेव से भी नहीं।

शेर०। अच्छा इन्द्रदेव से भी न करूंगा।

भूत०। तो मै दो कामों से आपके पास आया हूं। पहिले तो यह कि मुझे नन्हों से कुछ मतलब है जो आजकल भाग कर यहां आई हुई है और राजमहल मे ही कहीं छिपी हुई है।

शेर०। (हंस कर) क्या उस तिलिस्मी किताब की खोज मे हो जिसे तुम्हे झांसा देकर उसने उड़ा लिया है ? अगर इतना ही है तो समझ लो कि वह उसके पास नहीं है।

भूत०। आपको उस किताब की खबर कैसे लगी या उसके बारे मे कितना हाल मालूम है यह तो मै नहीं जानता, पर इतना जरूर कह सकता हूं कि वह है अभी तक उसी कम्बख्त के पास! अगर वह शैतान मेरे हाथ लग जाय तो मै उसके कब्जे से अपनी किताब जरूर निकाल सकता हूं।

शेर०। खैर जो कुछ भी हो, नन्हो कहां और किस हालत मे है इस बात को मै बखूबी जानता हूं और अगर तुम उसे गिरफ्तार करके अपना कोई काम बनाना चाहते हो तो मै तुमको इससे रोकूंगा नहीं बल्कि इस काम मे जो कुछ मदद तुम्हारी कर सकूंगा करूंगा क्योंकि मै उस कम्बख्त से भी आजिज आ गया

हूं, तरह तरह की कारंवाइयों से उसने मेरी नाक में दम कर रक्खा है ।

भूत० । (ताज्जुब से) तो उस हालत में आप खुद ही उसे गिरफ्तार करके कही बन्द क्यों नहीं कर देते ?

शेर० । सिर्फ इसलिए कि मेरे वर्तमान मालिक महाराज दिग्विजयसिंह की उस पर मेहरबानी की नजर हैऔर जिसका मैं नमक खाता हूं उसकी मर्जी के खिलाफ कुछ करना इन्सानियत नही समझता ।

भूत० । मगर फिर भी उसके खिलाफ कोई कार्रवाई करने मे मेरी मदद कर सकते है ?

शेर० । हा, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि उसका साथ मेरे मालिक को भी उसी तरह बर्बाद कर देगा जिस तरह उसने तुम्हे बर्बाद करके कही का न छोडा । तुम खुद चाहे इस बात को मानो या न मानो मगर कम से कम मुझको इसमे कोई भी सन्देह नही कि तुम्हारी नीयत को बिगाड़ने का सबसे बडा सबब वही कम्बख्त हुई । जब से तुम उसके फेर मे पड़े और उसकी राय के मुताबिक काम करने लगे तभी से तुम्हारी मुसीबतों की शुरुआत हुई यह बात आज नहीं तो कुछ दिन बाद तुम जरूर समझ जाओगे ।

भूत० । नही इस बात को भी मै अच्छी तरह समझ गया हूं और इसी लिए उसे काबू मे करके पापों का कुछ प्रायश्चित करना चाहता हूं ।

शेर० । ठीक है, अच्छा वह दूसरा काम कौन सा है !

भूत० । (सिर नीचा करके) अगर आप खफा न हो तो मै कहूं ।

शेर० । कहो ।

भूत० । मुझे ठीक ठीक पता लगा है कि दयाराम मरे नही जीते है और अपने एक दोस्त के पास है,पर इस बात को किसी भी तरह साबित नही कर पा रहा हूं ।

शेर० । (चौक कर) दयाराम जीते है ! मगर यह कैसे हो सकता है ? उनकी मौत के सबब खुद होकर तुम ऐसी बात जुबान से कैसे निकाल सकते हो ?

भूत० । औरों को चाहे जो कुछ भी विश्वास हो मगर क्या आप भी सच्चे दिल से ऐसा समझते है कि मैं कभी दयाराम का खून अपने हाथो से कर सकता हूं !

शेर०। (कुछ देर तक रुक कर) अगर मेरे दिल की सच्ची बात जानना चाहो तो मै कह सकता हूं कि—नही, मगर धोखे मे सब कुछ हो सकता है । जो काम जान बूझ कर कोई भी आदमी जो होश मे है न कर सके, वही गफलत बेहोशी या नशे की हालत मे वह कर बैठता है ।

भूत० । और मैं न कभी गाफिल था, न बेहोश था, और न........

शेर० । तुम नागर की मुहब्बत के नशे मे चूर थे जब की वह घटना है ।

भूत० । मगर अब तो मैं यकीन दिलाता हूं न कि वे जीते है, जरूर जीते है, और एक गुप्त जगह मे स्वतन्त्रता के साथ विचर रहे है । अगर आप इस समय मेरी मदद करें तो मैं उन्हे जीता जागता दुनिया के सामने पेश कर सकता हूं और जिस दिन ऐसा हो जायगा उसी दिन से मेरी जिन्दगी की किताब का एक नया वर्क उलट जायगा ।

शेर० । यह मैं बेशक मानता हूं पर इसको मानने से मेरा दिल इन्कार कर रहा है कि वे अभी तक जिन्दा है । क्या तुमने उन्हें अपनी आंखों से देखा है ?

भूत० । नहीं, मगर मेरे दिल मे उनके जीते रहने का विश्वास इतनी मजबूती से जड़ पकड़ गया है कि सहज मे हट नहीं सकता, अफसोस यही है कि जहां वे है मैं जा नही सकता ।

शेर० । और मैं जा सकता हूं ?

भूत० । हां मेरा दिल ऐसा कहता है ।

शेर० । कहां है वे !

भूत० । (झुक कर धीरे से) उस तिलिस्म मे जो इन्द्रदेव के कब्जे मे है ।

शेर० । (ताज्जुब से) और वहां वे इन्द्रदेव की जानकारी मे है ।

भूत० । जी हां ।

शेर० । (सिर हिला कर) ऐसा कभी नही हो सकता ! अगर दयाराम जीते होते और इन्द्रदेव को उनकी खबर होती तो कम से कम मुझे जरूर यह बात मालूम होती ।

भूत० । मै सिवाय इसके और कुछ नही कह सकता कि मुझे अपनी बात पर पूरा यकीन है ।

शेर० । (कुछ देर चुप रह कर) खैर, मैं इस बात का भी वादा करता हू कि इसका पता लगाऊंगा और यह खबर सही निकली तो तुमको मुबारकबाद दूंगा !

भूत० । जरूर सही निकलेगी ।

शेर० । मगर इसमे एक दिक्कत नजर आती है ।

भूत० । सो क्या ?

शेर० । तुमने कहा कि वे तिलिस्म के अन्दर है । ऐसी हालत मे बिना इन्द्रदेव से कुछ हाल कहे और तिलिस्म के अन्दर गए मै कैसे उनका पता लगा सकता हू ?

भूत० । इसके जवाब में कुछ कहने की हिम्मत मैं नही कर सकता !

शेर०। (मुस्कुरा कर) मगर कम से कम तिलिस्म के अन्दर जाने मे तो मेरी मदद कर सकते हो ?

भूत०। मैं आपका मतलब समझ गया, आप शायद उस सोने वाले उल्लू के बारे मे कह रहे है।

शेर०। बेशक ऐसा ही है, अगर उसको तुम मेरे हवाले करो तो शायद मैं तिलिस्म में जाने की हिम्मत कर सकूं।

भूत०। वह चीज अब मेरे पास नही है, इसी कम्बख्त नन्हों की बदौलत वह मेरे कब्जे से निकल गई।

शेर०। (कुछ देर चुप रह कर) तब भला मै कैसे क्या कर सकता हूं। बिना ताली की मदद के तिलिस्म के अन्दर जाने की हिम्मत कैसे की जा सकती है ?

भूत०। मै पुन: कहता हूं कि इसके जवाब में कुछ कहते मैं डरता हूं।

शेर०। (चौंक कर) सो क्यों, क्या तुम्हारा कुछ और मतलब है ?

भूत०। (कुछ रुकता रुकता) मेरा मतलब उस बातचीत से है जो अभी कुछ ही देर पहिले आपसे और देवीरानीजी से हो चुकी है।

शेर०। (चमक कर) तुम्हें वे बातें कैसे मालूम ?

भूत०। क्योंकि मै उस जगह मौजूद था, केवल मैं ही नहीं अगर मेरा खयाल ठीक है तो कोई और भी वहां छिपा हुआ आप दोनों की बातें सुन रहा था।

शेर०। (ताज्जुब से) वह कौन ?

भूत०। मै ठीक ठीक तो नही कह सकता हूं कि वह असल में कौन था पर इतना जानता हू कि वही था जो आपके पहुंचने के थोड़ी देर पहिले आपकी सूरत बन कर देवीरानी के पास पहुचा था। अगर मैं चाहता तो उसे पकड़ सकता था परन्तु आपसे होने वाली देवीरानी की बातो को सुनने से अपने को रोक न सका।

शेर०। और वह आदमी फिर कहां गया !

भूत०। मैं आपके पीछे पीछे इधर लौटा और कतरिया कर आपसे कुछ ही पहिले यहा आकर बैठ गया इससे ठीक नही कह सकता मगर मुझे ऐसा गुमान होता है कि वह उस महल की तरफ चला गया जो आज कल बिल्कुल बन्द है और सूनसान रहता है या जिसमे कभी देवीरानी रहा करती थी।

शेर०। ओह तब मैं समझ गया, वह जरूर नन्हों थी।

भूत०। यही शक कुछ कुछ मुझे भी होता है।

शेर०। तो क्या तुम्हें मालूम है कि वह आज कल......

भूत० । मुझे अच्छी तरह मालूम है कि वह आज कल इसी किले में मौजूद और उसी महल में रहती है, मगर अफसोस इतना हो है कि उस महल की बनावट ऐसी है कि मै किसी तरह भी उसके अन्दर जा नही सकता और इसीलिए उसके वारे में आपसे मदद मागने आया हू ।

शेर० । अगर तुम्हे इतनी बातें मालूम है तो क्या तुम यह भी कह सकते हो कि वह कौन आदमी था जिसने जोगीबाबा की समाधि में पहुंच कर मुझको धोखा दिया और बेहोश करके वहां से बहुत सा सामान चुरा ले गया ?

भूत० । हां हां, मैं उसे भी जानता हूं ।

शेर० । (चौंक कर) कौन था वह ?

भूत० । (शेरसिंह की तरफ झुक कर धीरे से) महाराज शिवदत्त का एक ऐयार ।

शेर० । (चमक कर) है, राजा शिवदत्त का ऐयार !

भूत० । जी हां, अगर जरूरत हो तो मै कोशिश करके यह भी बता सकता हूं कि वह कौन था ।

शेर० । नही इसकी कोई जरूरत नहीं, शिवदत्त आजकल किस फेर में है इसकी कुछ कुछ खबर मुझे है इसलिए तुम्हारे इतना कहने हो से मै बहुत कुछ समझ गया, मगर इस हालत मे मुझे अपना काम करने का ढंग बदल देना पडेगा ।

शेरसिंह शायद और कुछ कहते मगर इसी समय दर्वाजे पर से कुछ आहट पा कर उन्होने सिर घुमा कर उस तरफ देखा और कहा, "कौन है ?" उनका खिदमतगार दर्वाजे पर खड़ा था जो यह सवाल सुन कमरे के भीतर आ गया । शेरसिंह ने उसे देख कुछ इशारा किया जिसे समझ उसने भी अपनी गरदन हिला कर कुछ इशारा किया और तब झुक कर इनके हाथ में एक पुर्जा देने के बाद पीछे हट गया ।

शमादान की रोशनी मे वह पुर्जा पढ़ शेरसिंह ने भूतनाथ से धीमी आवाज मे कहा, "तुम नन्हो के वारे में मुझसे अभी अभी कह रहे थे, अगर उस पर काबू करने की तुम्हारी तबीयत है तो इस वक्त मौका अच्छा है, वह मेरे कमरे के बाहर कही छिपी हुई हम लोगो की बातें सुनने की कोशिश कर रही है ।"

भूतनाथ ने भी यह सुन धीमे स्वर मे कहा, "तब मै अभी ही उसे गिरफ्तार करता हूं, मगर मेरी दूसरी बात ? तिलिस्म में जाकर दयाराम का पता लगाने की !"

शेर० । उस सम्बन्ध से मैं वादा करता हूं कि तुम्हारा काम करूंगा मगर मुझे अभी एक ऐसी बात मालूम हुई है जिससे मुझे तुरत ही यह किला छोड़ देना

पड़ेगा, इसलिए वेहतर होगा कि तुम दो चार दिन वाद मुझसे पुनः एक वार मिल लो।

भूत०। कहां, कव ?

शेर०। (कुछ सोच कर) शिवदत्तगढ़ से पांच सात कोस इधर ही एक पुरानी वावली है जो भूतही कह कर मशहूर है।

भूत०। मुझे मालूम है।

शेर०। वही, परसों किसी समय।

भूत०। ठीक है।

जल्दी जल्दी भूतनाथ ने और भी कुछ बातें शेरसिंह से कहीं और तव उनसे विदा हो कमरे के वाहर निकल गया। उसके जाते ही शेरसिंह भी उठे और अपने दाहिनी तरफ का दर्वाजा खोल उसके भीतर जाने के वाद उसे वन्द कर लिया। यह एक छोटा सा कमरा था जिसमें सिर्फ एक पलंग बिछा हुआ और कुछ मुख्तसर सामान रक्खा था। एक काली शक्ल इस समय इसी पलंग के पास खड़ी थी। शेरसिंह ने पहुंचते ही उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "मैना, कहो वह काम हुआ ?" जवाव में उस शकल ने धीरे से "जी हां" कहा और तव अपने कपड़ों के अन्दर से एक गठरी निकाल कर शेरसिंह के सामने रख दी।

शेरसिंह ने जल्दी जल्दी वह गठरी खोली और उसके भीतर की चीजें देखी, इसके वाद कहा, "इसके साथ वाली चीज नहीं मिली।" जवाब में काली शक्ल ने एक खलीता उनकी तरफ वढाया जिसे देख वहुत ही खुश होकर शेरसिंह बोल उठे, "वाह मैना, आज जो काम तुमने किया उसने हमेशा के लिए मुझे तुम्हारा गुलाम वना दिया। अगर तुम मदद न करती तो यह चीज इतने सहज में कदापि मुझे मिल नहीं सकती थी और बिना इसकी मदद........" कुछ कहते कहते अपने को रोक कर शेरसिंह वोले, "इसको लाने में क्या बहुत तरद्दुद हुआ ? बदशकल कर देने वाली अपनी यह पोशाक उतारो और यहां वैठ कर मुझे कुछ हाल बताओ।"

शेरसिंह पलग पर बैठ गए और हाथ बढ़ा कर मैना को भी अपने पास बैठा लिया, जिसने उनकी वात सुन वह काली पोशाक दूर कर दी थी। तब वह बोली, "जी तरद्दुद तो वहुत नहीं हुआ मगर डर वेतरह लग रहा था कि कहीं राजा साहव आ गए तो क्या होगा!" शेरसिंह ने उसकी पीठ थपथपा कर कहा, "बेशक डर की वात जरूर थी और अगर कोई दूसरी तर्कीब होती तो मैं कभी तुमसे यह काम न लेता मगर इस मोके पर लाचारी पड़ गई थी। तुम उसी गुप्त रास्ते से वहां पहुंची ?"

मैना० । जी हां और आपके दिये हुए औजार से मैंने वह बक्स खोल डाला। यह गठरी तरह तरह की चीजो के नीचे कई कपड़ों मे दबा कर रक्खी हुई थी पर आपकी बताई हुई निशानी से मैने इसे पहिचान लिया, मगर वह खरीता....

यकायक बात करते करते मैना रुक गई और सहम कर उठने लगी, बाहर कही से कुछ हाथापाई की आहट और तब एक दबी हुई चीख और हलके धम्माके की आवाज आई थी जिसने उसे डरा दिया था ।

मगर शेरसिह ने उसे दिलासा देकर शान्त किया और कहा, "डरो नही, तुम्हारे घबराने की कोई बात नही है, बिना मेरी मर्जी के यहां किसी की पहुंच नही हो सकती, निश्चिन्त होकर बैठी रहो और अपनी बात कहो ।"

मैना० । यह खरीता पलंग पर बिछौने के नीचे था, भाग्यवश मुझे वहा खोजने की धुन आई और यह मुझे मिल गया नही तो रही जाता क्योकि उसी वक्त राजा साहब और बाबाजी वहां आ पहुंचे और मुझे भाग आना पडा ।

शेर० । (पुन: मैना की पीठ थपथपा कर) तुमने बहुत बड़ा काम किया, इतना बड़ा कि मैं तुम्हारी तारीफ नही कर सकता ! अफसोस कि अभी मै तुमसे पूरा पूरा हाल कह नही सकता पर जब मुनासिब वक्त आवेगा तब तुम समझोगी कि तुमने क्या मदद मुझे पहुचाई है। अच्छा यह तो कहो कि नन्हो यहां आई है यह बात कैसे तुम्हे मालूम हुई जो तुमने मेरे खिदमतगार को बताई ?

मैना० । मै उस आलमारी में छिपी कुछ देर खड़ी रह गई और उन लोगों की बाते सुनती रही । राजा साहब और बाबाजी की बातचीत मे नन्हो भी आकर शामिल हो गई और उसकी कुछ बातें मै सुन सकी, साफ साफ तो समझ मे न आया पर इतना पता लगा कि वह आपकी सूरत बन कर कोई किताब लेने बूआजी के पास गई थी मगर आपके आ पडने से भाग आई, इस पर बाबाजी ने आप पर निगाह रखने वास्ते उसी दम उसे इधर भेज दिया और वही बात मैने आपके नौकर को बताई थी ।

शेर० । तब तो तुमने उन लोगों की कुछ और बातें भी जरूर सुनी होगी, पास धंसक आओ और जो जो बातें हुई हो मुझे सुनाओ ।

शेरसिह ने मैना का हाथ पकड़ कर अपने और पास खीच लिया और धीरे धीरे उससे बातें करने लगे ।

सातवां बयान

आधी रात के सन्नाटे मे भयानक जंगल सांय सांय कर रहा है । किसी तरफ से कोई आहट नही आ रही है । हवा एकदम बन्द है और इसी सबब से पेड़ों

की एक पत्ती भी हिल कर इस वक्त के सन्नाटे को तोड़ नही रही है। जंगली जानवर भी न जाने कहां दबके पड़े है कि उनकी भी कोई आहट यहां तक पहुंच कर इस जगह के सन्नाटे को तोड़ नही रही है।

लुटिया पहाड़ी के निचले हिस्से मे बनी हुई उस इमारत में जो रोहतासमठ के नाम से मशहूर है, जिसमे किसी जमाने मे बाबाजी और नन्हो रहते थे और जहां पाठक पहिले भी बहुत दफे आ चुके है हम ऐसे समय मे अपने पाठको को ले चलते है। यद्यपि आजकल कोई इस जगह रहने वाला या यहा की हिफाजत और सफाई करने वाला नही है और इसीलिए इस जगह की हालत और भी खराब हो गई है फिर भी इस इमारत के कुछ कमरे और कोठरियां अच्छी हालत मे है और उनमें आदमी का गुजर बखूबी हो सकता है, मगर इस जगह के बारे मे कुछ इस तरह की बातें आस पास के लोगो मे मशहूर थी कि रात की तो बात ही क्या दिन मे भी कोई कभी इस जगह जल्दी आता न था और यही सबब है कि इस भयानक रात में जब हम एक आदमी को इस इमारत की छत पर खडे देखते हैं तो हमे कुछ ताज्जुब होता है।

न जाने कब से यह इस जगह है या किस इरादे से यहां आया हुआ है, मगर इसमे कोई शक नही कि यह जरूर किसी के आने की राह देख रहा है। इसका वार वार छत के ऊपर इधर उधर घूम कर बाहर की तरफ देखना या मुंडेरों से नीचे का झांकना इस बात में कोई शक नही रहने देता।

दूर जंगल से आती हुई हलकी सीटी की आवाज ने इसका ध्यान खीचा और यह उसी तरफ कान लगा कर देर तक आहट लेता रहा। पहिले तो कुछ मालूम न हुआ पर फिर थोड़ी देर के बाद किसी तरह की आहट सुनाई पड़ने लगी और इसके मुंह से निकला, "आ पहुंचे।" यह थोड़ी देर के लिए छत से नीचे उतर मठ के भीतर चला गया जहां अंधेरे ही मे घूम फिर न जाने इसने क्या कुछ किया पर थोड़ी देर वाद यह फिर छत पर लौट आया। अब तक यह आहट साफ होकर वता रही थी कि रात के सन्नाटे को तोड़ते हुए कुछ आदमी इसी तरफ को आ रहे है। पैर के नीचे पड़ कर आवाज देने वाले पत्तों की चरमराहट साफ सुनाई पड़ने लगी थी और कभी कभी कुछ वातचीत की भी आवाज आ जाती थी।

जगल मे मे निकल कर दो आदमी इसी इमारत की तरफ आते दिखाई पड़े जिनको यह गौर से कुछ देर तक देखता रहा और तब यह कह कर कि 'बेशक वे ही है' एक ओर को हट गया। थोड़ी देर के लिये हम इस आदमी के पास से हट

कर उन दोनों नए आने वालों की तरफ बढ़ते और देखते है कि वे कौन है या किस इरादे से इस भयानक आधी रात के समय इस डरावनी जगह में आये है।

मठ के बाहरी भाग में एक दालान था जो किसी समय मे जरूर अच्छी हालत मे रहा होगा मगर इस समय टूटा फूटा और खतरनाक हो रहा था। ये दोनों आने वाले इसी दालान तक पहुंच कर रुके और कुछ देर खडे होकर आहट लेते रहे, जब सब तरफ सन्नाटा पाया और मठ के अन्दर से भी किसी तरह की आवाज़ आती सुनाई न पड़ी तो एक ने दूसरे से कहा, "कोई आहट तो मालूम नही हो रही है, क्या रोशनी कर लूं ?" जवाब मे दूसरे ने कहा, "करनी तो पडेगी ही मगर यहां नही मठ के भीतर पहुंच लें तब, यहां से शायद किसी की नजर पड़ जाय।" इसे सुन पहिला आदमी बोला, "ऐसे भयानक सन्नाटे में कौन भला इस जंगल मे आने की हिम्मत करेगा ? पर खैर भीतर ही चले चलिये, यहां रुकने की जरूरत भी क्या है ?"

दोनो आदमी उस दालान से हट कर सदर दर्वाजे के पास आये और वहां खडे होकर कुछ देर आहट लेने के बाद मकान के अन्दर घुसे। टटोलते और अन्दाज से चलते हुए ये लोग उस कोठरी मे पहुंचे जो किसी जमाने में बाबाजी के रहने के काम मे आती थी और अभी तक भी अच्छी हालत मे थी। यहां पहुंच एक ने कहा, "अब रोशनी कर लेने मे कोई हर्ज नही।" और दूसरे ने "बहुत अच्छा" कह कर अपने कपड़ो के अन्दर से सामान निकाल एक छोटी लालटेन जलाई। हलकी रोशनी सब तरफ फैल गई और जलाने वाले ने चारो तरफ देख कहा, "किसी के यहां न रहते हुए भी इस जगह सफाई है!" दूसरे ने जवाब दिया, "यह जगह रोहतासगढ की अमलदारी मे पड़ती है और वहां का राजा कभी कभी यहां की सफाई करा देता है। खैर अब देर न करके हम लोगो को अपना काम शुरू कर देना चाहिये!"

लालटेन की रोशनी मे हमने देखा कि ये दोनो ही काले कपड़ो और नकाबों से अपने बदन के हर एक भाग को अच्छी तरह छिपाये हुए हैं, पर अब इन्होंने अपने लबादे हटाये और नकाबें दूर की। अब इस बात मे कोई शक न रहा कि ये दोनों और कोई नहीं हमारे जाने पहिचाने राजा शिवदत्त और वही नौजवान है जिसे पिछले किसी बयान में पाठक बावली के पास शिवदत्त अथवा गौहर तथा गिल्लन आदि से मिलते देख चुके है। शिवदत्त ने दीवार मे बनी आलमारी की तरफ बता कर कहा, "शायद इसी आलमारी के अन्दर हम लोगो को जाना

पड़ेगा ?" जिसके जवाब में नौजवान बोला, "जी हां" और तब उस तरफ बढ़ा। शिवदत्त ने वह लालटेन उठा ली और दोनों आदमी उस आलमारी के अन्दर घुस गए जो काफी लम्बी चौडी और ऊंची थी। आलमारी का पल्ला बन्द कर लिया गया और नौजवान उसकी एक तरफ की दीवार के साथ कुछ करने लगा, खटके की आवाज सुनाई पड़ी और बगल ही में एक सुरंग का मुहाना दिखने लगा जिसके अन्दर ये दोनों घुस गये।

हमारे पाठकगण इस रास्ते का हाल जानते है क्योंकि इसके पहले भी वे भैयाराजा के साथ इसमें आ चुके है* अस्तु इस जगह पुनः इसका हाल लिखने की जरूरत नही। मुख्तसर यह कि दोनों आदमी इस सुरंग में घुस सीढियां उतर नीचे की कोठरी में गये और वहां रास्ता पाकर उस दूसरी कोठरी में पहुंचे जिससे ऊपर जाने वाली सीढ़ियां मिलती थी। मामूल के मुताबिक खूंटियां उमेठ यह रास्ता भी खोला गया और दोनो आदमी इस कोठरी मे घुस सीढ़ियां चढ़ने लगे, कोठरी का दर्वाजा बन्द हो गया।

अब तक तो शिवदत्त चुप था और इस विचित्र रास्ते को गौर और ताज्जुब के साथ देख रहा था, पर अब नौजवान के साथ ही साथ सीढ़ियां चढते हुए बातें करने लगा—

शिव०। बड़ा अजीव रास्ता है ? मगर मालूम होता है कि आप पहिले कई बार यहां आ चुके हैं।

नौज०। केवल आ ही नही चुका हूं बल्कि इस रास्ते से भीतर के तिलिस्म मे भी जा चुका हू।

शिव०। उस हालत में तिलिस्मी तमाशे भी आपने खूब देखे होंगे।

नौज०। कुछ थोड़ा बहुत तो जरूर देखा है मगर असली तमाशे अब देखने की उम्मीद करता हूं, अभी तक तो चोरो की तरह लुक छिप कर और डरते ही डरते आना जाना होता था।

शिव०। लुक छिप कर क्यों ? आपने कहा था न कि पुजारीजी के साथ आप गये थे।

नौज० हां मगर सिर्फ एक दफे और सो भी महाकाल के मन्दिर तक! उसके आगे वे मुझे नहीं ले गये। असल तिलिस्मी हाल तो तब देखने में आता था जब मेरे बहुत कहने सुनने पर हेलासिंह मुझे कभी अपने साथ ले लेते थे। पर मैंने

* देखिये रोहतासमठ दूसरा भाग, पहिला बयान।

आपसे कहा कि वे न जाने क्यों पुजारीजी से बहुत ही ज्यादा डरते थे और भर-सक कभी उनके सामने तक नही आते थे अस्तु वे जब कभी इस रास्ते से तिलिस्म में घुसते तो बहुत ही डरते रहते और जब पुजारीजी कहीं और रहे तभी।

शिव०। तो क्या इस तिलिस्म मे जाने के और रास्ते भी है।

नौज०। हां कई, उनमे से दो तीन को मै जानता हूं पर सुनने मे आया है कि कुल बारह रास्ते इस तिलिस्म मे जाने के है।

ये दोनों अब तक तो आपुस मे बातचीत करते चले आये पर अब बराबर सीढियां चढते आने के कारण इनका दम फूलने लगा और बातचीत मे रुकावट पैदा हो गई जिससे इन्होने बाते करना बन्द कर दिया और सीढ़िया चढ़ने की तरफ ध्यान रक्खा। चढते रुकते और सुस्ताते तथा पुनः सीढ़ियां चढ़ना शुरू कर देते हुए इसी तरह आखिर दोनो ने सीढ़ियो के इस लम्बे सिलसिले को तय किया और सब के अन्त में पड़ने वाली कोठरी में पहुंचे जिसे उस नौजवान ने खोला। दोनों बीच वाले मैदान में पहुचे जिसमें पाठक आज के पहिले भी कई बार आ चुके है अथवा जिसमें महाकाल का मन्दिर बना हुआ था। शिवदत्त थकावट की मुद्रा में पास ही एक पत्थर पर बैठ गया और बोला, "ओफ, बड़ी चढ़ाई है। दम फूलने लगा, अब जरा देर सुस्ता लें तभी आगे बढ़ेंगे।" हसता हुआ नौज-वान भी उसके बगल में बैठ गया और बोला, "कुछ देर सुस्ता लेने मे हर्ज नही, पर बहुत देरी करना मुनासिब न होगा।"

शिवदत्त के हाथ की लालटेन इस मैदान का पूरा हाल नहीं दिखा सकती थी और काली रात का अन्धकार इस जगह को अपनी गोद मे समेटे हुए था अस्तु शिवदत्त कुछ देर तक गौर और ताज्जुब के साथ अपने चारो तरफ देखता रहा, इसके बाद उसकी निगाह जब कुछ जमी और आस पास की चीजें कुछ कुछ दिखने लगी तब उसने बीच वाले मन्दिर की तरफ दिखा कर कहा, "शायद यही वह महाकाल का मन्दिर है जिसके बारे मे आपने बताया था ?" नौजवान ने जवाब दिया, "हा और अब हमें उठना चाहिए, ज्यादा देरी करना मुनासिब नही।" शिवदत्त ने कहा, "मै तैयार हूं, चलिए" और दोनों आदमी उठ कर उस बीच वाले मन्दिर की तरफ चले।

यह महाकाल का मन्दिर कैसा था या इसके अन्दर की मूर्ति किस रंग ढग की थी यह हम पहिले बता आए है और इस जगह पुनः लिखने की जरूरत नहीं देखते फिर भी शिवदत्त जब उस नौजवान के साथ जाकर उस भयंकर मूर्ति के

सामने खड़ा हो गया तो उस भीषण आकृति को देख वह एक दफे सकते में आ गया। मगर क्या उसकी आंखो ने उसे धोखा दिया या सचमुच उस भीषण मूर्ति ने अपनी जुबान को हिला कर अपने होंठ चाटे! वह कुछ निश्चय न कर सका और डरे हुए ढग से मूर्ति की तरफ देर तक देखता रह गया।

कुछ देर बाद शिवदत्त बोला, "आप तो कहते थे कि पुजारीजी इस महाकाल की रोज पूजा किया करते थे और उनके चले जाने पर अब कोई यहां झाड़ देने वाला तक नही रह गया पर सो बात तो नही है! मै देखता हूं कि मन्दिर एकदम साफ है और मूर्ति की भी जान पड़ता है जैसे अभी कुछ ही देर पहिले पूजा की गई हो, यह देखिये एक दम ताजे फूलों की माला इसके गले मे पड़ी हुई और बेल-पत्र सिर पर रक्खे है!

नौज०। यही ताज्जुब की बात तो मैं भी देख रहा हूं।

शिव०। तो क्या इससे समझा जाय कि अब भी कोई बराबर यहां आता और इस मूर्ति की पूजा करता रहता है!

नौज०। हा या तो यह, और या फिर कोई आज ही यहां आया और इसकी पूजा कर तिलिस्म के अन्दर गया।

शिव०। (चौक कर) सो आप कैसे कहते है!

नौज०। (दूर से उंगली से बता कर) देखिये मूर्ति के गले में खुदाई के काम में बनी हुई जो वह माला दिखाई गई है इसका यह एक फूल खिला हुआ है!

शिव०। (आगे बढ़ और लालटेन वाला हाथ ऊंचा करने के बाद गौर से देख कर) हां ठीक तो है, बाकी की कलियां है और यहां यह एक फूल खिला हुआ है। मगर इससे क्या? शायद कारीगर ने ऐसा ही बनाया हो!

नौज०। नही यह तिलिस्मी कारीगरी है, इस राह से तिलिस्म के अन्दर जितने आदमी जायगे उतने ही फूल इस माला मे खिल जायगे।

शिव०। अच्छा! यह तो बडे ताज्जुब की बात है, अगर दस आदमी जायंगे तो दस फूल खिल जायंगे?

नौज०। हां।

शिव०। और कोई न गया रहेगा तब?

नौज०। तब सब फूल बन्द यानी कलियो के आकार में रहेगे।

शिव०। ऐसा! यह तो बड़ी विचित्र बात आपने बताई। अच्छा, इस माला की कलियां तो गिनी गुथी होंगी, अगर जितनी वे हैं उनसे ज्यादे आदमी

तिलिस्म में चले जांय तो?

नौज० । जितनी इस माला में कलियां हैं उससे ज्यादा आदमी इस राह से जा ही नहीं सकते, तिलिस्मी मामलों में किसी की जोर जबर्दस्ती नही चल सकती !

शिव० । बडे ताज्जुब की बात है ! (पुन: गौर से उस माला को देख कर) मगर देखिए, यहां तो एक नही वल्कि दो फूल खिले हुए है। यह देखिये यहां इस गजरे के नीचे एक फूल का कुछ अंश खुला दिखाई पड़ता है, ठहरिये मै इस माला को हटाता हूं तब आप देखिए !

शिवदत्त ने हाथ बढ़ाया और वह माला उस मूर्ति के गले से खींच कर अलग कर दी । वह नौजवान "हां हां !" करता ही रह गया मगर शिवदत्त यह काम कर ही गुजरा और साथ ही इसका भयानक असर भी हुआ । मूर्ति के गले में से एक भयंकर चिग्घाड़ की सी आवाज निकली और उसने अपने दोनों हाथ फैला कर शिवदत्त को इस जोर से पकड़ लिया कि उसके मुंह से एक चीख निकल पड़ी।

शिवदत्त का चेहरा पीला पड़ गया और वह इतना डर गया कि कोई बात तक कह न सका, मगर वह नौजवान उसकी यह हालत देख जरा भी न घबराया वल्कि जोर से हंस पड़ा और बोला,"राजा साहब, यह तिलिस्म है तिलिस्म, यहां न जल्दीबाजी करनी चाहिए और न गलती ! ऐसा करने वाला कदम कदम पर धोखा खाता है ! अच्छा घबराइये नही, मै अभी आपको छुड़ाता हूं ।"

बड़ी मुश्किल से शिवदत्त की जुबान से निकला, "जो कुछ करना हो जल्दी कीजिये, मेरी हड्डी पसली इस कम्बख्त के हाथ से दब कर टूटना चाहती हैं ।" वह इतना कह ही रहा था कि महाकाल की मूर्ति का भयानक जबड़ा खुला और उसने इस तरह अपना मुंह शिवदत्त की तरफ बढ़ाया मानो उसे कच्चा ही खा जायगा, जिसे देख शिवदत्त के मुंह से बेतहाशा चीख निकल पड़ी, पर वह नौजवान जरा भी परेशान न हुआ और शिवदत्त से यह कहता हुआ कि—'राजा साहब, आप जरा भी न घबराइये, मै अभी आपको छुड़ाता हूं !' वह जमीन की तरफ झुका । कुछ टूटे फूटे बेलपत्र तथा बेल की दो एक टहनियां उसी जगह पड़ी हुई थी जिनमे से देख के एक लम्बी टहनी उसने उठा ली और उसे उस मूर्ति के कान मे खोंस दिया । खोसने के साथ ही मूर्ति की गर्दन जो शिवदत्त की तरफ झुक चुकी थी सीधी हो गई और उसके हाथ भी ढीले पड़ने लगे, देखते देखते शिवदत्त को उन हाथो ने छोड़ दिया मगर वह इतना घबड़ा गया था कि सम्हल न सका और जमीन पर गिर गया । नौजवान ने उसको सहारा देकर ,

उठाया और उसका बदन झाड़ते हुए उससे कहा, "मैंने आपको जो कुछ कहा था आप भूल गये, आखिर खा न गये धोखा !"

डरी हुई निगाहो से उस मूरत की ओर देखता हुआ शिवदत्त बोला, "मैं क्या जानता था कि यह पत्थर की मूरत इस तरह का गजव बरसावेगी !" नौजवान हंसा और बोला, "मगर अब तो आप जान गए न ? अब आगे से होशियार रहियेगा !" शिवदत्त ने कहा, "बहुत होशियार रहूंगा और विना आपकी इजाजत किसी चीज को हाथ न लगाऊंगा, अगर मै दूर खडा रहूं तव तो यह मूरत कुछ नही कहेगी न ?" नौजवान जोर से हस कर बोला, "नही आस पास भी रहें तव भी कुछ न कहेगी, सिर्फ इसको छूना ही गजब करता है।" शिवदत्त यह सुन कुछ पास आ गया और गौर तथा डर की निगाहे उस मूरत पर डालने लगा। कुछ देर बाद उसने पूछा, "अच्छा अब क्या करना है ?"

नौजवान ने कहा, "मै यह सोच रहा हूं कि तिलिस्म के अन्दर इस समय कौन हो सकता है ? यह खिला हुआ फूल साफ बता रहा है कि उसमें कोई है मगर वह हो कौन सकता है और हमे इस समय तिलिस्म मे जाना चाहिए या नही सो सोच लेना मुनासिब है। कहिए आपकी क्या राय है ?"

शिव०। अगर आपको यह डर है कि वह आदमी, चाहे वह जो भी हो, हम पर हमला करेगा और नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा तव तो यह खयाल आप अपने दिल से निकाल दीजिये, हम लोग दो आदमी है और सव तरह से लैस हैं, जिनका एक अकेला आदमी कुछ बिगाड़ नही सकता, हां अगर कोई और ख्याल आपके मन में हो या दूसरी बात हो तो उसे आप विचार लीजिए। तिलिस्मी मामलो मे मुझे कुछ जानकारी नही है और आप बहुत कुछ जानते है।

नौज०। वह हम पर हमला करेगा या चोट पहुचायेगा यह डर मुझे बिलकुल नही है, जो ख्याल है वह इस बात का कि कही कोई जानकार आदमी न घुसा हुआ हो जो हम लोगो को रोके अथवा तकलीफ पहुंचावे।

शिव०। जानकार आदमी से आपका........

नौज०। (चमक कर) ओह मै व्यर्थ ही घबरा रहा हूं, वह खिली हुई कली जिसकी तरफ बता रही है उसे मै जान गया। क्या मैने आपसे कहा नहीं कि इस मूर्ति के पुजारी किसी तरह से इसी तिलिस्म मे फंस गये है। बेशक वे अभी तक इसके अन्दर बन्द है और उन्ही की तरफ यह खिला हुआ फूल इशारा कर रहा है। वे जब तक तिलिस्म मे फसे रहेगे हमारा कुछ बिगाड़ नही सकते बल्कि हम

लोगों को देख वे खुश ही होंगे, अस्तु हमें उनसे डरने की कोई जरूरत नहीं।

शिव०। बेशक आपका कहना ठीक है, हमें उनसे कुछ मदद ही मिल सकती है तकलीफ नहीं।

नौज०। बेशक ऐसा ही है। तो उस हालत में हमें देर करने की भी कोई जरूरत नहीं, आगे बढ़ना चाहिए।

शिव०। बेशक ऐसा ही है, अब आपको तिलिस्मी रास्ता खोलना चाहिये ताकि हम लोग तिलिस्म के भीतर जा सकें और वह रास्ता शायद इस मन्दिर के अन्दर ही है।

नौज०। हां यह मूर्ति उस रास्ते का बाहरी भाग है और इस जगह से एक सुरंग हमे सीधा तिलिस्म के भीतर ले जायगी जहां ठीक इसी तरह की एक दूसरी मूर्ति के पास हम लोग बाहर निकलेगे, या यों कहिए कि यह मूरत उसका बाहरी दर्वाजा है और वह दूसरी मूरत इसका भीतरी दर्वाजा है।

शिव०। हां ठीक है, मुझे याद आ गया, आपने यह बात मुझसे कही थी कि तिलिस्म के भीतर महाकाल की एक दूसरी मूरत है और उसी जगह यहां से चल कर हम लोग निकलेंगे। मगर यह तो कहिए क्या वह मूरत भी इसी की तरह भयानक है ?

नौज०। (हंस कर) बल्कि इससे ज्यादे भयानक, मगर आप डरिये नही, मेरे रहते आपका कुछ बिगड़ेगा नही।

शिव०। ठीक है, यह तो मुझे विश्वास है, और तभी तो मैं आपके साथ आने को हिम्मत कर सका हूं, अच्छा अब क्या करना चाहिए ?

नौज०। तिलिस्म का रास्ता खोलने के लिए बाहर सभामण्डप मे चलना होगा, चलिए बाहर।

दोनो आदमी मन्दिर के बाहर होने के लिए दर्वाजे की तरफ घूमे मगर उसी समय ठिठक कर रुक गए। किसी तरफ से जोर के एक ठहाके की आवाज आई जिसने इन दोनों ही को चौका दिया। शिवदत्त जो अभी अभी ही तिलिस्मी तमाशे के चक्कर मे पड़ कर तकलीफ उठा चुका और डरा हुआ था सहम कर नौजवान के पास हो गया मगर उस नौजवान ने घूम कर चारो तरफ देखा और कहा, "यह कौन हंसा ?"

कही से आवाज आई—"मै !" मगर किसी तरफ कही कोई बोलने वाला नजर न आया। शिवदत्त ने लालटेन वाला हाथ ऊंचा किया और सब तरफ देखा

पर कहीं कोई होता तब तो नजर आता। इसी समय नौजवान ने पुनः पूछा, "तुम कौन ?" जवाब मिला, "वही जिसके मन्दिर में तुम लोग खड़े हो !"

तब क्या वह महाकाल की मूरत ही बोल रही थी ! शिवदत्त डर के साथ उसकी तरफ देखने लगा मगर नौजवान न तो डरा और न घबराया ही बल्कि अपनी आवाज तेज करके बोला, "तुम हंसे किस लिये ?"

जवाब मिला, "तुम लोगों की वेवकूफी पर।"

नौज०। बेवकूफी कैसी ?

आवाज०। यही कि बिना मेरी पूजा किए तिलिस्म मे घुसना चाहते हो।

नौज०। तुम्हारी पूजा हम लोग क्यों करें ?

आवाज०। बिना मेरी पूजा किए जो इस तिलिस्म में घुसेगा वह सही सलामत वापस नही लौट सकता।

नौज०। मगर तुम आखिर हो कौन ?

आवाज०। बता तो दिया कि मैं वही हूं जिसके मन्दिर में तुम दोनो इस समय खड़े हो।

नौज०। वह पत्थर की मूरत तो मेरे सामने है।

जवाब में एक डरावनी हंसी सुनाई दी और तब फिर उसी आवाज ने कहा, "हः हः हः, मुझे पत्थर की मूरत कहता है !"

डरावनी हंसी ने शिवदत्त को कंपा दिया मगर वह नौजवान बड़ा ही हिम्मतवर था, वह जरा भी न घबराया और जवाब में बोला, "तब ? पत्थर की मूरत नही तो और क्या ? यह मन्दिर तो महाकाल का है और वह महाकाल पत्थर की मूरत के रूप मे मेरे सामने है। हां तुम अगर कोई और हो तो दूसरी बात है।"

आवाज०। मै असली महाकाल हूं, वह मूरत तो सिर्फ मेरा घर है, मैं उसी के अन्दर रहता हूं।

नौज०। यह हो नही सकता, अगर कुछ हो सकता है तो महज एक तिलिस्मी तमाशा।

कहने को तो नौजवान ने इतना कह दिया, मगर अब शायद कुछ कुछ आशंका उसको भी होने लगी क्योकि वह इधर उधर देखता हुआ कोई और बात सोचने लगा। मगर जो कुछ वह कह गया था उसके जवाब में पहले से भी भयंकर एक हंसी की आवाज आई और जवाब मिला, "तमाशा ! क्या मैं कोई तमाशा हूं ? अच्छा तो सम्हल जा फिर, मैं तेरे सामने प्रकट होता हूं और दिखाता हूं तमाशा"।

एक पटाखे की सी आवाज सुनाई पड़ी और तब इन लोगों के सामने कुछ ही दूर पर ढेर सा घूआं नजर आने लगा। वह धूआं धीरे धीरे दूर हुआ और तब एक बड़ी ही भयंकर सूरत इन लोगों की निगाह में पड़ी। हड्डियों का एक ढांचा जिसके बदन में मांस का नाम निशान भी न था इन लोगों के सामने खड़ा अपने बड़े बड़े दांत फैला कर भयावनी हंसी हंस रहा था।

हमारे पाठक इस तिलिस्मी शैतान को कई बार देख चुके है इसलिये वे तो इस भयानक आसेब को देख कर न घबरायेंगे मगर ये दोनों—वह नौजवान और शिवदत्त इस आसेब को देख कर एक दम से ही घबड़ा गये। डर के मारे शिवदत्त के मुंह से तो चीख की आवाज भी न निकल सकी, मगर वह नौजवान बहुत हिम्मत कर फिर भी अपने होश हवास कुछ कायम किये रहा बल्कि बोला, "तुम कौन हो और हमसे क्या चाहते हो!"

डरावने ढंग से अपने दांत निकाल कर वह हड्डियों का ढांचा बोला, "इतने दफे कहने पर भी तुमने नही समझा? मै वही हूं जिसके नाम पर यह मन्दिर बनाया गया है, और मैं चाहता हूं कि तुम लोग बिना किसी तरह की खुराफात किए इस जगह के बाहर हो जाओ।"

डर अब नौजवान पर भी अपना असर जमाने लगा था पर अपने को सम्हालते हुए वह कहता चला गया, "हम क्यो बाहर जायं? अगर हम न जायं तो तुम क्या करोगे?"

हड्डियो का ढाचा अपनी भयावनी हंसी हंसा, तब बोला, "साफ है कि तुम मेरी कुदरत को नही जानते और अपने मे कोई बहुत भारी ताकत समझ रहे हो, अस्तु सुन लो कि मै इस तिलिस्म के पहरेदार की तौर पर यहां मुकर्रर किया गया हूं और इसकी हिफाजत करना ही मेरा काम है। बिना मेरी इजाजत पाए एक चिड़िया भी इस तिलिस्म मे पर नही मार सकती, तुम लोगो की तो बात ही क्या जिन्हें बसन्त की कुछ खबर ही नही है। अगर तुम दोनों मुझे खुश करके, मेरी इजाजत ले के, इस तिलिस्म मे आते तो एक बात भी थी, पर वैसा न करके तुम मुझसे अड़ गए इसलिए मै तुम्हे किसी तरह भी आगे जाने नही दे सकता और बताए देता हूं कि जहां से आये हो वही फौरन वापस लौट जाओ नही तुम्हारी खैर नही है।"

कहते हुए उस ढांचे ने एक अजीब किस्म से अंगड़ाई ली और तब अपना मुंह खोल कर मानों एक जंभाई सी ली। साथ ही उसके मुंह से आग की भीषण लपट

निकली और समूचे वदन से चिनगारियां छूटने लगी जो देखते ही देखते इतनी बढ़ी कि वह भयंकर आसेब विल्कुल ही छिप गया और वहां सिर्फ एक आग का फौवारा सा ही नजर आने लगा ।

शिवदत्त तो यह देख एकदम से डर कर कांपने लगा साथ ही उस नौजवान की भी हालत अच्छी न रही और वह घबड़ा कर सोचने लगा कि अब क्या करे और किस तरह इस भयानक महाकाल से अपनी जान बचाए । केवल यही नहीं, मालूम होता है कि उस आग और धूएं मे जो उस आसेब के चारो तरफ पैदा हो रहा था कुछ बेहोशी का असर भी था क्योंकि जरा ही देर बाद इन दोनों की तबीयत घबरा उठी और सिर में चक्कर आने लगे, तनोबदन की सुध जाती रही और दोनों आदमी बेहोश होकर उसी जगह गिर पडे ।

आठवां बयान

गौहर और शिवदत्त की बातें काफी देर तक होती रहीं और इसके बाद वे लोग अलग हुए । गौहर तो अपनी सखी गिल्लन के साथ घोडे पर सवार हो न जाने किस धुन में रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हो गई और शिवदत्त उठकर उस नौजवान की तरफ बढा जो बहुत देर से बेचैनी के साथ इन लोगो की बातचीत समाप्त होने की राह देख रहा था ।

शिवदत्त को देख उस नौजवान ने कहा, "बारे किसी तरह आपकी बातें खतम हुई ! आप तो उस कम्बख्त के साथ ऐसा चिपके कि दीन दुनिया की सुध भूल गये, ऐसा ही था तो उसे अपने महल मे ले जाते और आराम से बातें करते ?"

शिवदत्त हसा और बोला, "आपका नाराज होना वाजिब है, मुझे बेशक बहुत देर हो गई, पर उस शैतान की नानी को न जाने किस तरह इतने प्रकार की बातें मालूम हो गई है कि उसे मिलाये रखना बहुत जरूरी हो गया । दूसरे मुझे उसके बाप से भी कुछ मदद पाने की उम्मीद हो गई है जिसे दिलाने का वह वादा कर गई है । फिर, एक बात यह भी है कि वह भूतनाथ के पीछे पड़ी हुई है जिसके बहुत से गुप्त भेद उसने मालूम कर लिये है और भूतनाथ के जरिये हम लोगो का जो काम बन सकता है वह तो आप बखूबी जानते है ।"

नौजवान ने जवाब दिया, "बेशक मै जानता हू पर क्या आप समझते है कि यह लड़की जिसके दूध के दांत भी अभी न टूटे होगे भूतनाथ जैसे कातिल ऐयार का मुकाबला कर सकेगी ! ऐसा हरगिज नही हो सकता बल्कि उलटा वह इसे बर्बाद करके छोड़ देगा । आप इसके दिखाये सब्जबाग मे न पड़ें और जिस तरह

मैं कहता हूं वैसे चलें, तभी आपका काम बनेगा और बहुत दिनों की इच्छा पूरी हो सकेगी।"

शिव०। ठीक है, आपके कहे मुताबिक चलने को तो मै तैयार ही हू और जो कुछ आप हुक्म दे रहे है मैं कर ही रहा हू, अब आगे भी जो आप कहे मै करूं।

नौज०। मुझे जो कहना था मैं आपसे कह ही चुका हूं।

शिव०। तो मैं भी आपका आदेश मानने को तैयार हूं, आप कब उधर चलना चाहते है?

नौज०। शुभस्य शीघ्रम, अभी बस और क्या! अगर आपको मेरी बातों पर विश्वास हो तो अपने साथियों को बिदा कीजिये और मेरे साथ चलिए।

शिव०। बहुत ठीक, मैं ऐसा ही करता हूं। आप यही रहिए मै अपने साथियों को बिदा करके आया।

नौज०। ठीक है जाइए मगर जल्दी कीजिए, क्योकि सफर लम्बा और रात सिर पर है। हां, एक बात और।

नौजवान ने झुक कर धीरे से कोई बात शिवदत्त के कान मे कही जिसके जवाब में—"बहुत अच्छा, मैं इसका भी बन्दोबस्त करता आता हू" कहता हुआ वह अपने आदमियो की तरफ बढ गया जो कुछ ही दूर पर खडे आपुस मे तरह तरह की बातें कर रहे थे। शिवदत्त ने इनमे से कई आदमियों के सुपुर्द कई तरह के काम किये तथा बहुत तरह की बातें समझा बुझा सभों को बिदा किया, तब पुनः उस नौजवान के पास लौटा और बोला, "लीजिये मैने सभो को बिदा कर दिया और अब बिल्कुल आपके हुक्म के मुताबिक चलने को तैयार हूं, चलिए आप किधर चलते है।"

नौजवान ने जवाब दिया, "बस उधर ही जिधर के बारे मे आपसे कह चुका हूं अर्थात् शिवगढी की तरफ, मगर एक बात का फैसला इसी वक्त हो जाना चाहिये।"

शिव०। (हंस कर) अभी एक आंच की कसर रह ही गई! खैर उसे भी कह डालिये।

नौज०। आप तिलिस्म के अन्दर चलना चाहते है, मगर वहां तरह तरह के खतरे रहेगे और एक से एक डरावनी बाते नजर आवेगी। नायाब चीजे एक से एक नजर आवेंगी इसमे शक नही, पर वहां डर घबराहट परेशानी या जल्दीबाजी ने अगर आप पर हमला किया और आप आपे से बाहर होकर कुछ गलत कारंवाई कर बैठे तो बड़ा ही बुरा हो जायगा और हम दोनो ही की जाने खतरे मे पड़ जायगी। इसलिए आप इन सब बातो के लिए पहिले ही से होशियार हो लें और

अच्छी तरह सब कुछ समझ बूझ लें, ऐसा न हो कि कोई काम उल्टा पड़ जाय और पीछे से मुझ पर दोष लगे।

शिव०। (बहुत जोर से हंस कर) आप भी मुझे कोई लड़का समझ कर बहला रहे है क्या? क्या मैं जानता नही कि तिलिस्म क्या बला है? या मैंने कभी तिलिस्म का नाम नही सुना है? मै इन बातों को तब से जानता हूं जब से बीरेन्द्रसिंह ने मेरी अमलदारी में जबर्दस्ती घुस कर विक्रमी तिलिस्म तोड़ा, और सच पूछिए तो तभी से मेरे मन मे यह ख्वाहिश पैदा हुई कि मै भी किसी तिलिस्म का मालिक बनूं और बीरेन्द्रसिंह से कसर निकालूं, मगर वह ख्वाहिश आज तक पूरी न हुई।

नौज०। तो ईश्वर चाहेगा तो यह ख्वाहिश बहुत जल्दी पूरी हो जायगी बशर्ते कि आप बाद में वादाखिलाफी न कर बैठें।

शिव०। (कलेजे पर हाथ रख कर) मुझे आप अपने कहे से एक कदम भी पीछे हटते कभी न पावेंगे।

नौज०। ठीक है, तो मैं भी अपनी कही करके आपको दिखा दूंगा। अच्छा ठहरिये, मैं अभी अपना घोड़ा लेकर आया।

नौजवान तेजी के साथ एक तरफ को चला गया और थोड़ी ही देर मे एक बढ़िया नस्ल के घोडे की रास थामे हुए वापस लौटा जिसे वह बावली के पीछे वाली आम की बारी मे किसी जगह छिपा आया था। शिवदत्त और वह नौजवान अपने अपने घोड़ों पर सवार हुए और उस तरफ को रवाना हो गए जिधर लुटिया पहाड़ी पड़ती थी। ये लोग कहां गए और इन्होंने क्या किया यह पाठक ऊपर के बयान मे पढ़ चुके हैं अस्तु इनका हाल आगे न लिख हम इस जगह कुछ दूसरा ही जिक्र करते है।

शिवदत्त और उस नौजवान के चले जाने के बाद उस जगह एक दम सन्नाटा हो गया और सुनसान मैदान फिर भांय भांय करने लगा, मगर थोड़ी ही देर बाद यहां की अवस्था पुनः बदली। बावली की सीढियों के पास ठीक उसी जगह के नीचे जहां अब से कुछ ही देर पहले गौहर गिल्लन और शिवदत्त बैठ कर बातें कर रहे थे, बावली की जगत का जल की तरफ पड़ने वाला एक पत्थर हिला और तब धीरे धीरे अपनी जगह से हट कर भीतर को झूल गया उसके अन्दर से दो आदमी निकलते हुए दिखाई पडे जिन्होंने पहिले तो अपने चारो तरफ और ऊपर नीचे अच्छी तरह गौर से देखा और जब सब तरफ सन्नाटा पाया तो बावली की जगत पर चढ़ कर बैठ गए, वह पत्थर पुनः ज्यों का त्यों बन्द हो गया।

पाठक इन दोनों को यहां देख शायद कुछ ताज्जुब करें क्योंकि इनमें से एक तो शेरसिंह हैं और दूसरी पाठको की जानी पहिचानी और देवीरानी की प्रिय लौडी मैना । आइए हम लोग पास चल कर छिपे हुए इनकी बातें सुनें, शायद उससे कुछ पता लग जाय कि ये लोग इस जगह कैसे आ पहुंचे या अब क्या किया चाहते है ।

शेर० । तुमने इस शैतान मण्डली की बातें सुनी ? कैसे कैसे बाधनूं बांध गये है !

मैना० । कुछ न पूछिये, ये लोग तो आस्मान मे कीलें ठोंकना चाहते है, मगर यह तो कहिये वह नौजवान कौन था जो इतनी लम्बी चौड़ी बातें कर गया ? उसका तिलिस्म से कुछ लगाव मालूम होता है और ऐसा जान पडता है कि मै उसको कुछ कुछ पहिचानती भी हूं क्योंकि आवाज कभी की सुनी हुई मालूम होती थी पर कुछ ठीक ख्याल नही पड रहा है ।

शेर० । उसे तुमने नहीं पहिचाना ? वह श्रीविलास है, सेठ चंचलदास का भतीजा* ।

मैना० । अरे, वह यही है ! राम राम, इतने बडे खानदान का लड़का होकर इसकी यह करतूत ! छीः छीः !!

शेर० । अरे यह कम्बख्त वडा ही पाजी है, सच पूछो तो इसका खानदान इसी की बदौलत चौपट हुआ और इसका भाई कामेश्वर भी इसी की करनी से जहन्नुम मे मिल गया । इस कम्बख्त को वहुत दिनों से तिलिस्म का मालिक बनने का शौक है और उसके लिए यह क्या क्या नही कर चुका ।

मैना० । मगर इधर इसके हाथ मे कोई ऐसी चीज जरूर लग गई है जिसके भरोसे पर यह अपने को कुछ समझने लगा है, यहा तक कि तिलिस्म मे घुसने का हौसला बांध रहा है ।

शेर० । वेशक ऐसा ही है और इसो वास्ते मेरे लिए यह जरूरी हो गया कि मै इन दोनों कम्बख्तों का पीछा करूं और इनका मकसद पूरा न होने दूं, नही तो न जाने ये दोनों शैतान तिलिस्म में घुस कर क्या क्या फसाद मचावें, अस्तु मैं चाहता हूं कि तुमको बाकी बातें भी बता कर बिदा कर दूं और इसी वक्त अपने काम में लग जाऊं ।

मैना० । जो कुछ आपने मुझे बताया वह मै बखुबी समझ गई हूं और अपने

* ... में यह नाम पाठक पढ़ चुके है ।

भरसक बूआजी की हिफाजत करने से बाज न आऊंगी, मगर इस काम में दो बहुत बड़े तरद्दुद मुझे नजर आते है।

शेर०। वह क्या ?

मैना०। रोहतासगढ के हालचाल की खबर बराबर मै आपको देती रहा करूंगी मगर आप चाहते है कि उन ऐयारों से भी सम्पर्क बनाए रहें जो हमारे राजा साहब के भेजे हुए जमानिया में घुसे अपना काम कर रहे है और जिनको आपके असली मकसद की कोई खबर नहीं है।

शेर०। तो इसमे तुमको तरद्दुद क्या नजर आता है ? रामचन्द्र* के भेष में उन लोगो के साथ रह कर जो कुछ मै कर चुका हू वह तुम्हे मालूम ही है और आगे जो कुछ अब करने को बाकी है वह सब भी मैने बहुत अच्छी तरह समझा दिया है, अस्तु तुमसे कोई भूल होने की सम्भावना नहीं। अब रही यह बात कि जब तक मुझे तिलिस्म के अन्दर रहना और प्रभाकरसिंह तथा मालती की मदद करना है तब तक के वास्ते मेरी जगह कौन पूरी करेगा ?

मैना०। बेशक और यही बात मै कहना चाहती थी। अगर गोपाल और श्यामसुन्दर वगैरह† आपको यकायक गायब पावेंगे तो जरूर तरह तरह के शक करेंगे और उस काम में भी हर्ज पडेगा जिसकी तरफ आपने इशारा किया था।

शेर०। मगर यह बात न होने पावेगी। मैंने दलीपशाह से इस सम्बन्ध में बातें कर ली है और वे इस पर राजी भी हो गये है कि जब तक मैं खाली होकर पुनः लौट नही आता वे मेरी जगह पर रामचन्द्र बने हुए रोहतासगढ़ के ऐयारों के साथ घुले मिले रहेंगे और उनको किसी तरह का सन्देह न होने देंगे।

मैना०। तो बस फिर ठीक है, वे अगर हम लोगों की मदद पर रहेंगे तो किसी को किसी तरह का शक न होने पावेगा।

शेर०। यह तुम मत सोचो, राजा साहब को तो शक हो ही गया है और वह अब किसी तरह दूर होने का नही, शक क्या मै तो समझता हूं कि नन्हों की बदौलत उनको सभी बाते मालूम हो चुकी है, पर रही यह बात कि मैं उनसे खुले आम बिगाड़ करके रहना नही चाहता और इसलिये अभी तरह दिये जा रहा हू कि अभी तक रोहतासगढ किले और महल मे आते जाते रहना बहुत जरूरी है, और

---

* रामचन्द्र के चोले में छिप कर जो कुछ शेरसिंह ने जमानिया में किया वह सब पाठक भूतनाथ उपन्यास में पढ चुके है।

† ये सब नाम पाठक भूतनाथ उपन्यास मे पढ़ चुके है।

किसी वजह से नहीं तो कम से कम देवीरानी से मिलने जुलने, इसलिए मै यह सब चालें चल रहा हूं और तुमको भी तकलीफ दे रहा हूं, नहीं तो दिग्विजयसिंह को फटकार देना मेरे लिये कुछ भी मुश्किल नही था।

मैना०। हां सो तो ठीक है, पर इस तरह की दोतर्फी चाल आप कब तक चल सकेंगे इसी का मुझे सन्देह है। खैर जाने दीजिये और यह बताइये कि अब आप क्या करना चाहते हैं और मुझे क्या हुक्म देते है ?

शेर०। मैं पहिले तो शिवगढी में जाऊंगा और देखूंगा कि ये दोनो कम्बख्त, शिवदत्त और श्रीविलास, यहां पहुंच कर क्या करना चाहते है, इन दोनों को यहां से बाहर निकाल मैं आगे बढूंगा और मालती के पास पहुंचूंगा जो मुझे विश्वास है कि मेरी बात मान कर अभी तक लोहगढ़ी मे होगी।

मैना०। तब मुझे क्या करना है !

शेर०। अभी कुछ देर तक तुम्हे मेरे साथ ही रहना होगा ताकि मै तुम्हे तिलिस्म के दो एक नए रास्ते दिखा दूं और दो चार ऐसी बातें बता दूं जिनके जान लेने पर फिर तुम्हे कोई तरद्दुद न रहे और, तुम जब चाहो तिलिस्म मे घुस मुझसे मिल कर देवीरानी का सन्देश मुझ तक और मेरा देवीरानी तक पहुंचा सको। इसके वाद मैं तुम्हें तिलिस्म के बाहर कर दूंगा और तुम सीधी बलभद्रसिंह के यहां चली जाना, वहां जो कुछ तुम्हे करना है मैं तुम्हे समझा ही चुका हूं ?

मैना०। ठीक है, वह सब मुझे बखूबी याद है। तो तिलिस्म मे जाने के लिए क्या हम लोगों को पुनः उसी शिवगढ़ी तक जाना पडेगा जिधर शिवदत्त और श्रीविलास गये हुए है ?

शेर०। नहीं नही, वहां तक जाना कोई जरूरी नही है, तिलिस्म मे जाने का एक रास्ता यह बावली भी है। मगर हम लोगो को वहां तक इसलिए जाना पडेगा कि जिसमे उन दोनों कम्बख्तों की कार्रवाई रोकी जा सके जो उधर गए है।

मैना०। तब समय रहते वहां तक हम लोग पहुचेंगे कैसे ? वे दोनों घोड़ों पर है और हम लोग पैदल, हमारे उस जगह तक पहुचने के कही पहिले वे दोनो वहा पहुच जायगे और न जाने क्या क्या कर चुके होगे।

शेर०। (हंस कर) नही ऐसा नही होगा, जिस तरह रोहतासगढ़ तहखाने से अन्दर ही अन्दर हमलोग यहा तक आ पहुचे उसी तरह यहां से एक सुरंग की राह अन्दर ही अन्दर शिवगढी तक भी जा पहुचेंगे और रास्ते मे बहुत देर भी न लगेगी। वे दोनो घोडो पर है पर तुम देखोगी कि हम लोग पैदल चल के भी उनसे

बहुत पहिले वहां जा पहुंचते है।

मैना०। ठीक है, अच्छा एक बात और बता दीजिये जो वहुत देर से मेरे मन में घूम रही है।

शेर०। बोलो।

मैना०। यह गौहर किस कैदी के बारे मे राजा शिवदत्त से बातें कर रही थी? उसने कहा था न कि—'वह कैदी जिसे किसी जमाने मे दिग्विजयसिंह ने अपने तिलिस्मी तहखाने मे बन्द कर रक्खा था और जिसे आपके ऐयार वहां घुस कर निकाल लाये थे'।

शेर०। ओह, हां ठीक है मुझे याद आ गया। ठीक ठीक तो नही कह सकता पर मुमकिन है कि गौहर का इशारा कामेश्वर की तरफ रहा हो। बहुत दिनोकी बात है जब किसी सबब से शिवदत्त ने कामेश्वर को गिरफ्तार कर लिया था और हिफाजत के ख्याल से दिग्विजयसिंह के सुपुर्द कर दिया था कि वे अपने तिलिस्मी तहखाने मे उसे बन्द कर रक्खे। इसके बाद जब उसको कामेश्वर की जरूरत मालूम हुई तो उसने दिग्विजय से उन्हे वापस मांगा मगर न जाने अपने किस मकसद से दिग्विजय झूठ बोल गया कि वे तो छूट कर न जाने कब कहा चले गये, पर शिवदत्त ने अपने ऐयारो को रोहतासगढ़ भेजा और वे उसे पकड़ ले गए।

मैना०। हां हां, ठीक याद आ गया, आपने इन्द्रदेवजी को उनके जीते रहने की खबर बताई थी जिस पर उन्होंने अपने आदमी भेजे जो तिलिस्मी तहखाने मे घुस उनको निकाल ले गए पर रास्ते ही मे कुछ लोग आ पडे जो उन आदमियो को मार कामेश्वर को पुनः पकड़ ले गए। तो वें आदमी यही शिवदत्त के ऐयार रहे होंगे।

शेर०। हां, अब मैं ऐसा ही समझता हूं, अफसोस कि इस बात की पहिले खबर न लगी नही तो मै अभी तक कब का उन्हे छुड़ा चुका होता।

मैना०। उसी गुफा के अन्दर लडाई हुई थी जिसमें आप मुझे....

शेर०। हां हां तुम्हे ठीक याद है, तुम वे लाशे देख कर डर गई थी।

मैना०। और आपने मुझे (हंस कर) इसके लिए सजा भी दी थी। अच्छा यह तो कहिये कि उस मौके पर एक बडी विकराल भैरव-मूर्ति हम लोगो को दिखाई दी थी* जिसे याद कर मैं अभी तक कांप उठती हू। वह क्या शय थी या कोई आदमी था यह अब तक आपने बहुत पूछने पर भी मुझे न बताया।

---

* देखिये रोहतासमठ, दूसरे भाग का अन्त।

शेर० । उस वक्त एक तो इस बात को बताने का मौका न था और दूसरे मैं खुद भी कुछ सन्देह मे पड़ गया था, पर अब सन्देह जाता रहा । वह विकराल भैरव-मूर्ति और कोई नहीं, स्वयम् तुम्हारे वर्तमान राजा साहब ही थे ।

मैना० । (ताज्जब से) राजा दिग्विजयसिंह !

शेर० । हां, उन्होने तिलिस्मी चीजो की मदद से वह रूप धारण किया था । उस दिन जो सामान मैने तुमसे उनके खास सन्दूक के अन्दर से निकलवा कर मंगवाया वह यही चीज थी और वह कैसी है यह अभी तुम देख लोगी क्योकि मैं उसी को पहिन कर शिवगढ़ी मे जाऊगा । अच्छा अब उठो, ज्यादा बात करने का वक्त नही रहा ।

शेरसिंह और मैना उठ खडे हुए और पुनः उसी जगह के अन्दर पहुंचे जहां से थोडी देर के पहिले बाहर हुए थे । शेरसिंह ने बावली की दीवार पर हाथ रख कर न जाने क्या तरकीब की कि वह पत्थर पुनः पहिले की तरह हट गया और भीतर एक तंग कोठरी नजर आने लगी । ये दोनो उसके अन्दर घुस गये और शेरसिंह ने अपने पीछे वह पत्थर बन्द कर लिया । उस समय मालूम हुआ कि कोठरी मे चारो तरफ कई छेद बने हुए है जिनकी राह साफ हवा आती और बाहर का दृष्य भी कुछ कुछ दिखाई पड सकता है । जरूर इन दोनों ने इन्ही छेदों की राह शिवदत्त और उस नौजवान तथा गौहर गिल्लन वगैरह को देखा या उनकी बाते सुनी होगी । पर शेरसिंह इस जगह भी न रुके, उन्होने एक दूसरा रास्ता खोला और कुछ सीढ़ियां उतर कर एक दूसरी कोठरी मे पहुचे जो पहिली कोठरी से कुछ बडी मगर एकदम अन्धकारमय थी । शेरसिंह ने पहिले तो यहा तक आने वाले रास्ते को अच्छी तरह बन्द किया और तब अपनी कमर से देवी-रानी की दी हुई तिलिस्मी छुरी निकाल कर उसका कब्जा दबाया जिसने वहां भरपूर रोशनी हो गई । इसकी मदद से ढूंढ कर उन्होने रोशनी करने का सामान निकाला जिसे बालने बाद वे बोले, "अगर तुमको मेरी मदद के लिए तिलिस्म में आते जाते रहना है तो तुमको भी एक न एक तिलिस्मी हथियार अपने साथ रखना पड़ेगा अस्तु मै यह छुरी तुमको देता हू, तुम इसको बडी होशियारी से अपने पास रखना और कभी अपने बदन से अलग न करना ।"

शेरसिंह ने छुरी जमीन पर रख उसके जोड की अगूठी अपनी उगली से उतारी और मैना को पहिनाने लगे पर उसकी पतली उंगलियों मे से किसी मे भी वह ठीक न बैठती थी जिस पर वे बोले, "अच्छा इस वक्त तो किसी तरह तुम काम चलाओ पर घर जाकर इसे तावीज की तरह बाह मे बांध लेना, वैसे भी यह ठीक

काम करेगी !"

मैना ने कहा, "लेकिन आपको भी तो इस चीज की जरूरत पड़ेगी ?" शेरसिंह ने कहा, "मेरे लिए तिलिस्म बनाने वाले इन्तजाम कर गये हैं। अच्छा वह गठरी उठाओ जो तुमने राजा साहब के बक्स मे से निकाली थी ।"

मैना ने एक कोने मे रक्खी वह गठरी उठाई और शेरसिंह के सामने की जिन्होंने उसे खोला और उसके अन्दर का सामान बाहर किया। वह सामान और कुछ नही वही तिलिस्मी पौशाक थी जिसे पहिन कर भूत जैसी शक्ल बन जाती थी और जिसके बारे मे पाठक बहुत कुछ पढ चुके है। शेरसिंह ने वह पौशाक पहिन ली और तब मैना से कहा, "देखो यही भूत न उस दिन तुमको गुफा मे दिखाई पड़ा था ?"

मैना डरी हुई आवाज मे बोली, "जी हा, यही शकल है, मगर इन हड्डियो के जाल को बदन पर पहिनने से फायदा क्या ?"

शेर०। यह हड्डियां नही है जिन्हे तुम देख रही हो, बल्कि मसालो को जमा कर इस तरह की शकल बना दी गई है, और इस पौशाक मे बडी बडी सिफतें है। एक तो यह कि यह बडे ही मजबूत जिरह बख्तर का काम करती है और कोई हथियार इसको काट कर पहिनने वाले पर ज़रब नही पहुचा सकता, दूसरे अगर भीतर से इसके साथ कोई तिलिस्मी हथियार छुला दिया जाय तो पहिनने वाला लोगो की नजरों से गायब हो जायगा, किसी को दिखेगा नही, तीसरे इसमे से जब चाहे आग का फौवारा निकाला जा सकता है।

शेरसिंह ने उस पौशाक के अजीब कर्तब मैना को दिखाए जिन्हे देख वह इतने ताज्जुब में पड गई कि उसके मुंह से कोई आवाज तक निकल न सकी। मगर शेरसिंह ने बहुत जल्दी ही उन खेलों को बन्द किया और कहा, "तिलिस्म के अन्दर जो कुछ मुझको करना पडेगा उसमे यह पौशाक मेरी बहुत मदद करेगी और कई मौको पर इसकी जरूरत पड सकती है इसी वास्ते मैने इसे तुम्हारे जरिये मगवा भेजा, अच्छा अब आगे का काम शुरू करना चाहिये ।"

शेरसिंह ने उस गठरी का कुछ और भी सामान अपने कब्जे मे किया और अपने पास का कुछ सामान उसी मे बाध वही एक कोने में रख देने के बाद उस कोठरी के बाये कोने मे गये जहा किसी तर्कीब से उन्होने एक रास्ता पैदा किया। एक लम्बी पतली सुरङ्ग नजर आई जो नीचे की तरफ झुकती हुई न जाने किधर को निकल गई थी। शेरसिंह के कहने से मैना ने अपनी तिलिस्मी छुरी का कब्जा दबा कर रोशनी पैदा की और दोनो आदमी इसी सुरग के अन्दर घुसे जिसका रास्ता अपने पीछे शेरसिंह ने बन्द कर लिया। थोड़ी दूर जाने बाद मैना ने पूछा

"यह तिलिस्मी पौशाक राजा साहब को कहां से मिली ?"

शेर० । इस तरह की बहुत सी अजीब अजीब चीजें तिलिस्म में जगह जगह रक्खी हुई हैं । जिस तरह इस पौशाक को पहिन आदमी से भूत बना जा सकता है उसी तरह अन्य कई ढाचे वहां ऐसे है जिनकी मदद से शेर भालू गाय बैल आदि जानवरों की शक्लें धारण की जा सकती है । किसी काम से ऐसी ही दो एक पोशाकें किसी जमाने में पुजारीजी तिलिस्म के अन्दर से निकाल लाये थे जिनकी मदद से शेर भालू आदि की शकलें बनी जा सकती थी, उन पोशाको को पहिन वे अकसर जंगल में विचरा करते थे ।

मैना० । ओह हां ठीक है, मुझे याद आया, एक दफे भालू की सूरत मे वे जमानिया के कुंअर गोपालसिंह को भी मिले थे ।

शेर० । हां ठीक है, दिग्विजयसिंह ने किसी तरह इस बात को जान लिया और न जाने कैसे तिलिस्म मे घुस वे यह पोशाक उठा लाये जो असल में तिलिस्म तोड़ने वाले के वास्ते तिलिस्म बनाने वाले रख गये थे । इसी की मदद से उन्होंने वह तिलिस्मी किताब चुरा ली जिसे गोपालसिंह को दे बाबाजी उनके हाथ से तिलिस्म तुडवाना चाहते थे, नतीजा यह निकला कि न तो बाबाजी का मकसद पूरा हुआ और न गोपालसिंह ही तिलिस्म के मालिक बन सके । मगर हमारे राजा साहब भी उस किताब से कोई विशेष काम न ले सके क्योकि उनसे जमानिया के दारोगा साहब वह किताब मार ले गये, बल्कि मुझे तो शक है कि उन्होंने ही उभाड़ कर राजा साहब से यह काम कराया था । अच्छा देखो, आगे जरा सम्हल कर, यहां सीढिया हैं ।

कई डण्डा सीढियां उतरनी पडी और तब सुरग दाहिनी तरफ को घूमी । पहिले की बनिस्बत अब वह तंग पतली और ऊंचाई मे भी कम हो गई थी तथा फर्श भी ऊबड खाबड़ और तकलीफदेह हो गया था जिससे चलने मे मुश्किल होती थी मगर थोड़ी दूर के बाद ये बाते जाती रही और एक दर्वाजा लाघने पर फिर रास्ता सीधा मिलने लगा । मैना ने पूछा, "हां तब ? जमानिया के दारोगा साहब ने वह किताब लेकर क्या किया ?"

शेर० । क्या किया सो तो मैं नही कह सकता पर इसमे शक नही कि वह है अभी तक उन्ही के पास । मैंने कई दफे उनके कब्जे से वह किताब निकालने की कोशिश की मगर न जाने कम्बख्त ने कहां उस चीज को छिपा दिया है कि कुछ भी पता न लग सका । वह तो कहो देवीरानी ने इस किताब को खोज निकाला जो मुझे उन्होने दी है और जिसकी मदद से मैं वह भारी काम करने की हिम्मत

कर रहा हूं नही तो न जाने क्या होता और कम्बख्त लोग किस किस तरह के बांधनू बांधते।

इसी तरह की बातें करते करते ये दोनो वहुत देर तक उस सुरंग मे चलते रहे, यहां तक कि मैना बिलकुल थक गई और घबरा कर बोली, "आखिर कब तक इस सुरग मे चलना पडेगा ! यह कभी खतम भी होगी कि नहीं ?"

शेरसिंह ने दिलासा देते हुए कहा, "घबराओ नहीं, आधे से ज्यादे रास्ता हम लोग पार कर चुके है। अगर ऐसा ही है और तुम बहुत थक गई हो तो कहीं जरा बैठ कर सुस्ता लो, लेकिन अगर मेरा अन्दाज सही है तो अब घण्टे भर से ज्यादा हम लोगो को चलना न पडेगा।"

मैना लम्बी सांस खीच कर बोली, "अभी भी घटे भर ! मगर मै तो एकदम थक गई हूं, यदि इतना ही और चलना है तो फिर कही थोड़ी देर सुस्ता लेना ही ठीक होगा, परन्तु आपके काम में बहुत हर्ज न हो तभी।" शेरसिंह ने जवाब दिया, "नही नही, कोई हर्ज न होगा। वे दोनो यद्यपि घोड़ो पर है मगर उन्हे वहुत चक्कर काटते हुए जाना पड़ेगा जब कि हम लोग एक दम सीधे अपने रास्ते पर जा रहे है। तुम बखूबी कुछ देर सुस्ता सकती हो मगर यहां नहीं, थोड़ा और आगे चलो, वहां एक मुहाना मिलेगा जिसकी राह हम लोग बाहर निकल सकेंगे, खुले मैदान मे सुस्ताने से तबीयत जल्द हरी हो जायगी और थकावट भी जल्द जाती रहेगी।"

थोड़ी दूर जाने बाद एक चौमुहानी मिली जहा से रास्ता तीन तरफ को मुड़ जाता था। शेरसिंह ने बाईं तरफ वाला रास्ता पकड़ा और कुछ ही दूर जाने के बाद एक ऐसी जगह पहुचे जहां सुरग ने फैल कर एक कोठरी का रूप धारण कर लिया था। इस कोठरी से आगे बढ कर पुन. एक छोटी सुरंग मिली जिसमें तीस चालीस कदम जाने के बाद कई डण्डा सीढियां नजर आयी जिनके बाद साफ सगीन दीवार थी। किसी तर्कीब से शेरसिह ने इस दीवार मे एक रास्ता पदा किया और दोनो आदमी और कुछ सीढियां चढ कर उस जगह के बाहर हुए। यह एक वहुत ही पुराने जमाने का मन्दिर था जिसके बाहर कुछ टूटी फूटी इमारतें भी थी। इस जगह को पाठक देखते ही पहिचान लेंगे क्योंकि यहां वे पहिले भी एक बार भैयाराजा के साथ आ चुके हैं। शेरसिंह और मैना एक साफ जगह देख कर बैठ गये और सुस्ताने तथा धीरे धीरे आपस में बात करने लगे।

थोड़ी देर बाद मैना की थकावट दूर हो गई और वह पुन. सफर के लायक हो गई। शेरसिंह उठे और उसको साथ लिए मन्दिर के अन्दर गये जहां से सुरग

में घुस उसी चौमुहानी पर पहुचे जिधर से इधर को मुड़े थे । शेरसिंह ने यहां से एक दूसरा रास्ता पकडा और लगभग एक घण्टे के ये लोग बराबर चले गये । किसी तरह मैना ने इस लम्बे रास्ते को भी तय किया और तब दो तीन दर्वाजे खोलने और बन्द करने के बाद शेरसिंह मैना के साथ उसी आलमारी की राह बाहर हुए जो बाबाजी के रहने वाले घर मे पड़ती थी और जहा से महाकाल के मन्दिर में जाने का रास्ता पड़ता था । सन्नाटा मकान एकदम सूनसान था जिसमे कुछ देर आहट लेते रहने के बाद शेरसिंह ने कहा—"जान पडता है अभी तक वे लोग नही पहुंचे । आओ हम लोग छत पर चले, वहां से सब तरफ की आहट लगती रहेगी और साफ हवा मे तबीयत भी बहाल होगी ।"

वे दोनो छत पर चढ गए और शिवदत्त तथा श्रीविलास के आने की राह देखने लगे । उनके आने पर जो कुछ हुआ वह हम ऊपर के बयान मे लिख आये है।

नौवां बयान

शिवदत्त और श्रीविलास के बदहवास होकर गिरते ही उस ढांचे के मुह से एक भयंकर हंसी निकली और वह उन दोनो की तरफ झुका । जब उसे विश्वास हो गया कि ये दोनों गाफिल हो गये और इन्हे तन बदन की सुध नही है तो वह उठा और उस मन्दिर के बाहर निकल उसने जोर से ताली बजाई । ताली की आवाज के साथ ही मैना उसके सामने हुई जो अभी तक न जाने कहां छिपी हुई थी और डरी हुई आवाज मे बोली, "क्या अपने इन दोनो को मार ही डाला ?"

शेरसिंह ने (पाठक समझ ही गए होगे कि वह तिलिस्मी शैतान और कोई नही हमारे शेरसिंह ही थे) हंस कर जवाब दिया, "नही मरे नही है, तुम घबराओ मत, कुछ तो डर ने और कुछ मेरे छोड़े हुए बेहोशी की बारूद के धूएं ने इनकी यह गति की है । तुम यहां आओ और अपनी छुरी से रोशनी करो तो मैं इन लोगों की अच्छी तरह तलाशी लूं । मेरी समझ मे नही आ रहा है कि आखिर किस बूते पर इन दोनो ने तिलिस्म के अन्दर घुसने का साहस किया, जरूर कुछ न कुछ बात है ।"

मैना ने रोशनी की और शेरसिंह ने शिवदत्त और श्रीविलास की अच्छी तरह तलाशी ली । ज्यादा मेहनत करने की जरूरत न पड़ी और दोनों ही के पास से दो ऐसी चीजे निकल आई जिन्होने शेरसिंह को ताज्जुब में डाल दिया । शिवदत्त के भीतरी जेब से एक छोटी सी किताब निकली और श्रीविलास की कमर से एक ताम्रपत्र जिस पर महीन महीन अक्षरो मे कुछ खुदा हुआ था । शेरसिंह देर तक [illegible] के साथ इन दोनों चीजों को देखते रहे यहां तक कि मैना से रहा न गया

और वह बोली, "ये क्या चीजें हैं जिन्हे आप इतने ताज्जुब से देख रहे हैं? क्या इनका तिलिस्म से कोई सम्बन्ध है ?"

शेरसिंह ने जवाब दिया, "हां, यही बात है, और इन चीजों की मदद से ये दोनो पाजी गजब कर सकते थे। वह तो कहो कि ईश्वर ने हम लोगों की मदद की जो हमने इन दोनों की बाते छिप कर सुन ली और इनका पीछा करते यहां तक चले आए, नही तो न जाने क्या हो जाना और तिलिस्म मे घुस कर ये लोग क्या क्या आफत न मचा डालते !"

मैना०। लेकिन आखिर है यह सब क्या ? इस किताब मे क्या लिखा है ? क्या आप इसे पहले देख चुके हैं ?

शेर०। हां, यह किताब जमानिया के तिलिस्म का भेद बताती है और वहां के खजाने मे बराबर पडी रहा करती थी, भैयाराजा के पास इस किताब को मैंने देखा था, और इसकी मदद से उनको तिलिस्म का बहुत कुछ भेद भी मालूम हुआ था। जब अपने भाई से झगडा करके वे जाने लगे तो उन्होने यह किताब गोपालसिंह को दे दी* और तब से यह उन्ही के पास बराबर रहा करती थी मगर आज मैं यहा इस कम्बख्त के पास इसे देख रहा हू ।

मैना०। मालूम होता है कि इसी काम के लिये इसने अपने ऐयारो को जमानिया भेज रक्खा था। आप कई बार कह चुके है कि राजा शिवदत्त के ऐयार आज कल जमानिया का चक्कर लगा रहे है जिसका कुछ कारण समझ मे नही आता, जरूर वे खजाने मे घुस इसी किताब को चुराने की फिक्र मे रहे होगे ।

शेर०। हो सकता है ।

मैना०। मगर यह तो कहिये कि यह किताब जमानिया के महाराज के पास न रह कर भैयाराजा के कब्जे मे कैसे चली गई ? कायदे के मुताबिक तो तिलिस्म का मालिक राजा ही होता है ।

शेर०। ठीक है, वास्तव मे महाराज गिरधरसिंह की साधु-प्रकृति इसका कारण है। उन्हे तिलिस्मी मामलों की जानकारी अवश्य ही थी पर इस विषय मे कोई कौतूहल न था और वे गाडी हुई दौलत या पुराना खजाना निकाल कर खर्च करने को बहुत ही निषिद्ध कर्म समझा करते थे, पर भैयाराजा का ऐसा विचार न था। अस्तु महाराज ने जब इस किताब को खजाने मे रख देने का हुक्म दिया तो उन्होंने किसी तरह इस पर कब्जा कर लिया और मौका समझ गोपालसिंह को दे दिया।

* भूतनाथ आठवा भाग, चौथा बयान। गोपालसिंह ने इस किताब के पाने का हाल अपने दोस्त भरतसिंह से बयान किया।

मैना० । ठीक है, मैं समझ गई ।

शेर०। मगर इस जगह एक ताज्जुब और भी मुझे होता है । तिलिस्मी किताबों की लिखावट और भाषा ऐसी होती है कि हर आदमी उसको पढ़ कर समझ नहीं सकता । अब पता नही कि इस कम्बख्त को उसका भेद मालूम हो चुका है या नही ।

मैना० । मेरी समझ में तो नहीं मालूम हुआ, क्योकि अगर शिवदत्त इस बात को जानता और इस किताब को अच्छी तरह समझे हुए होता तो इस जगह इस महाकाल की मूर्ति के सामने उस तरह का धोखा कभी न खाता जैसा कि उसने खाया, हा अगर इस पुस्तक में इस मूर्ति का कोई भेद लिखा हुआ न हो तो बात दूसरी है ।

शेर० । जो कुछ भी हो, मैने इस किताब को पढा नही अस्तु ठीक ठीक कुछ कह नही सकता पर अब घटनाक्रम से यह मेरे हाथ मे आ ही गई है तो मैं जरूर एक बार इसे पूरा पढ कर तभी वापस करूगा ।

मैना० । (ताज्जुब से) तो क्या आप इसे फिर शिवदत्त को लौटा देगे ?

शेर० । (हस कर) नही पगली, उसे नही बल्कि गोपालसिंह को जिनकी यह चीज है ।

मैना० । ठीक है, अच्छा यह ताम्रपत्र कैसा हे जो श्रीविलास के पास से निकला और इसे देख आप क्यो चौके ? क्या इसमे भी कोई भेद की बात लिखी है ?

शेर० । यह ताम्रपत्र उसी गठरी मे रहा करता था जिसे देवीरानी भानुमति का पिटारा कहा करती थी । क्या तुम्हे याद नही है कि एक आदमी पुजारीजी की सूरत बन कर आया और देवीरानी से वहा की ताली मांग ले गया जहां वह पिटारा रहता था* ?

मैना० । हा हा मुझे बखूबी याद है । मैं तो उस समय आपके साथ ही थी जब आप पुतलियो वाला दर्वाजा खोलने गये थे, पर यह मै अब तक न जान पाई थी कि वह कार्रवाई इसी कम्बख्त की थी ।

शेर० । नही नही, वह करतूत तो जमानिया के दारोगा साहब की थी जिन्होने पुजारीजी का भेष धर कर वह काम किया था, पर उनके पास से यह चीज इस कम्बख्त के पास कैसे आ गई इसी का मुझे ताज्जुब हो रहा है ।

मैना० । तो जरूर इसने उन्ही के पास से चुराया होगा । मगर क्या इसमे भी तिलिस्म का कोई हाल लिखा हुआ है !

शेर० । नही, मगर इसमे एक बडा ही गुप्त तिलिस्मी रहस्य जरूर छिपा

---

* देखिए रोहतासमठ पहिला भाग, पाचवा बयान ।

हुआ है जिसके बारे मे तुमको बहुत जल्द ही सब हाल मालूम हो जायगा, लेकिन अब हम लोगो का यहां रुकना मुनासिब नही, देर हो रही है।

मैना०। आप जहा चलिए मैं तैयार हूं, मगर इन दोनों के साथ अब क्या सलूक कीजियेगा ? क्या इन्हे यही छोड दीजियेगा !

शेर०। हां पडे रहेगे, जब होश मे आवेगे आप ही लौट जाएंगे।

मैना०। कही तिलिस्म में घुस कर कुछ उपद्रव मचाया या आपके काम में बाधक हुए तो !

शेर०। नहीं, मै इधर से तिलिस्म में जाने के सब रास्तों को ऐसा मजबूत बन्द कर देता हू कि इन लोगो की कुछ चलेगी नही, पर एक बार और भी देख लेना चाहिए, शायद कोई और चीज भी इनके पास हो।

शेरसिंह ने पुनः उन दोनो की अच्छी तरह तलाशी ली मगर सिवाय कुछ कागजपत्र के और कोई मतलब की चीज न मिली अस्तु उन दोनो को उसी तरह छोड वे मन्दिर के सभामण्डप में पहुचे। कई मोटे मोटे खम्भो पर इस मण्डप की भारी छत रक्खी हुई थी जिसमे से एक के पास शेरसिंह पहुचे और उस पर खुदी हुई तरह तरह की मूर्तियों मे से एक को किसी खास ढग से दबाया। मूर्ति एक बगल को हट गई और साथ ही उस खम्भे के सामने के फर्श का एक छोटा पत्थर अपनी जगह से झूल कर नीचे को चला गया। वहा पर कई पतली पतली सीढ़िया नजर आने लगी जिन पर उनके इशारे से मैना ने पैर रक्खा और तिलिस्मी छुरी की रोशनी करती हुई नीचे को उतरने लगी। पीछे पीछे शेरसिंह उतरे और नीचे पहुच जाने पर इन्होने उस रास्ते को बन्द करने की तर्कीब भी मैना को बता दी बल्कि उसी के हाथ से बन्द करवाया।

यह एक छोटी कोठरी थी जिसमे ये दोनो इस समय थे मगर इनके सामने ही एक बडा सा दालान था जिसमे मोटे मोटे अनगिनती खम्भे लगे हुए थे। और खम्भे तो मामूली पत्थर के थे पर बीच की तीन दरो वाले चार खम्भे संगमर्मर के थे और इन दर्रो की महराबे भी संगमर्मर की ही बनी हुई थी। इन तीन दर्रो के बीचोबीच एक एक जंजीर लटक रही थी जिन्हे दिखा शेरसिंह ने कहा, "तिलिस्म के अन्दर जाने के कई रास्ते है पर इस जगह से तीन रास्ते वहां गए है, एक तो वह जिसमे अब हम लोग जायेंगे, एक नीचे पुजारीजी के मठ से है, और तीसरा पास के एक जंगल से आता है, और इन तीनों ही को बन्द करने के लिए ये तीन जजीरें लगी हुई है। ये जजीरें जब तक खुली लटकती रहेंगी ये रास्ते खुले रहेगे पर जब इन्हें खींच कर इन खम्भों के साथ बांध दिया जायगा

तो ये रास्ते बन्द हो जायगे। तुम इन्हे खींच कर खम्भों से बाध दो ताकि ऊपर
वाले दोनों दुष्टों के भीतर आने का डर जाता रहे।"

मैना ने यही किया और तब शेरसिंह ने इन रास्तों और उनको खोलने बन्द
करने के बारे मे और भी कई बातें उसे बताईं इसके बाद वे वहा से हटे और उस
दालान के बाईं तरफ के एक कोने मे पहुचे जहां कूए की तरह का एक छेद नजर
आ रहा था जिसके ऊपर एक बडा सा डोल लोहे की जंजीर से बधा हुआ लटक
रहा था और साथ मे चर्खी भी लगी हुई थी। मैना को उस डोल मे बैठा कर शेर-
सिह भी उसी मे खडे हो गये और तब उस चर्खी को घुमाना शुरू किया। डोल
धीरे धीरे इस कूएं के अन्दर उतरने लगा।

काफी नीचे चले जाने के बाद वह डोल रुका और ये दोनो आदमी उस पर
से उतरे, शेरसिंह ने उस डोल को कुछ ऊपर उठा कर जोर का झटका दिया
और वह आपसे आप ऊपर उठता हुआ वहीं पहुच गया जहा से आया था। शेर-
सिह ने मैना से कहा, "मै तुम्हे उस रास्ते से ले जा रहा हू जो इस तिलिस्म के
दारोगा के आने जाने के लिए बना है अस्तु जो कुछ मै करता हूं उसे ठीक तरह
से देखती और समझती जाओ ताकि कभी धोखा न हो, क्योंकि तुम्हे बार बार
इन्ही रास्तों से मेरे पास जाना आना होगा। मगर इस बात का ख्याल रखना कि
इस तरफ से जब भी आओ जाओ वह तिलिस्मी छूरी बराबर तुम्हारे पास रहनी
चाहिए नहीं धोखा खा जाओगी। अच्छा अब आगे बढ़ो और रोशनी करती चलो।"

शेरसिह उस जगह के बाहर हुए और एक बडे कमरे मे पहुंचे जिसकी बना-
वट कुछ अजीब ढग की थी और चारो तरफ कई इस ढग की चीजें नजर आ रही थी
जिन्होने मैना को ताज्जुब मे डाल दिया मगर उसके कुछ पूछने के पहिले ही शेर-
सिह बोल उठे, "इस कमरे की चीजो के बारे मे तुम्हारा ताज्जुब सहज मे दूर न
होगा क्योकि यहा बहुत ही अजीब अजीब चीजे है जिनको समझाने मे बहुत देर
लगेगी और इस वक्त उसका मौका नहीं है फिर किसी मौके पर इनके बारे मे मैं
तुमको बताऊगा, इस वक्त तुम सिर्फ रास्ता देखती चलो।"

इस बडे कमरे की सामने की दीवार के साथ एक कतार मे कई चौकियां
रक्खी हुई थी जो धातु की बनी मालूम होती थी। हरेक चौकी के पीछे की तरफ
दीवाल मे एक एक पत्थर था जिस पर कुछ लिखा था और उसकी तरफ दिखा
कर शेरसिह ने मैना से कहा, "ये चौकिये बैठने वाले को उस जगह पहुचा देती
है जिनका नाम उन पत्थरों पर लिखा हुआ है। इन जगहों से बहुत जल्दी तुम्हारा
परिचय हो जायगा क्योकि मुझे इन सभी जगहो में जाना आना पड़ेगा मगर फिल-

हाल जहां हमें जाना है उस जगह पहुंचाने वाली चौकी यह है।"

कहते हुए शेरसिंह एक चौकी पर जाकर बैठ गये और मैना को भी उन्होंने अपने पास ही बैठा लिया। बैठते बैठते मैना ने रोशनी वाला हाथ उठा कर पीछे वाले पत्थर को पढा, उस पर मोटे हरूफो मे लिखा था—"रत्न-मण्डप"। नीचे कुछ और भी मजमून था मगर उसे पढ़ने के पहिले ही शेरसिंह ने कहा, "सम्हल कर बैठना" जिस पर उसने अपनी आंखें उस तरफ से हटा ली और शेरसिंह क्या करते है यह देखने लगी। शेरसिंह ने अपना हाथ नीचे किया और चौकी के पावे के साथ लगे एक खटके को बता कर कहा, "इस खटके को दवा देने से यह चौकी चलने लगेगी और इस पर बैठने वाले को ठिकाने पहुंचा देगी।"

खटका दबाने के साथ ही उस चौकी मे हरकत पैदा हुई। पहिले तो वह जरा सा हिली और तब आगे को बढ़ी, इसके बाद एक तरफ को घूमी और कमरे की दाहिनी तरफ की दीवार के पास पहुची जिसमे इसके पहुंचते ही एक रास्ता पैदा हो गया और चौकी उसके अन्दर घुस गई। शेरसिह ने मैना से कहा. "हाथ की छुरी कमर मे लगा लो और मजबूती से चौकी को पकड़ लो।"

मैना ने ऐसा ही किया और उस तिलिस्मी छुरी को कमर से लगा चौकी को मजबूत थाम लिया। छुरी से निकलने वाली रोशनी बन्द हो जाने से सब तरफ अन्धकार छा गया और इस कारण मैना के लिए कुछ देखना असमभव हो गया मगर अन्दाज से वह समझी कि चौकी अब किसी ढालवी जगह पर उतर रही है और साथ ही उसकी सतह कुछ गर्म भी होती जा रही है, उसकी चाल में अब तेजी आ रही थी।

धीरे धीरे चौकी की चाल बहुत तेज हो गई और अब ठण्डी हवा के झोंके बदन से लगने लगे जो इतने सद थे कि अगर चौकी की सतह की गर्मी न होती तो बदन को अकड़ा देते। मैना को कुछ डर भी मालूम हुआ पर उसी समय शेरसिह की यह बात सुन उसे ढाढस हुआ, "तुम न तो डरो और न घबराओ, सिर्फ चुपचाप बैठी रहो मगर चौकी को मजबूत पकडे रहना, खतरे की कोई बात नही है।"

देर तक वह चौकी उसी तेज चाल से चलती रही, पर आखिर धीरे धीरे उसकी चाल कम हुई और अन्दाज से यह भी मालूम हुआ कि अब वह किसी ढाल पर ऊपर की तरफ चढ रही है। उसकी चाल और भी कम हुई और अन्त मे एक जगह पहुच कर वह रुक गई। मैना ने समझा कि शायद अब उतरने का मौका आ गया पर उसी समय शेरसिह ने उसके कधे पर हाथ रख कर उसे बैठे रहने का इशारा किया।

लगी। खटके की सी आवाज हुई और ऊपर की तरफ एक छेद दिखाई पड़ा जिसमें से रोशनी आ रही थी। यह चौकी उसी छेद की राह ऊपर निकल गई और तब एक बड़े कमरे मे पहुंच हलके झटके के साथ रुक गई।

इतनी देर तक अंधेरे मे रहने के बाद यकायक रोशनी मे पहुंचने से मैना की आंखें चौंधिया गईं पर उसी समय शेरसिंह ने उसे उठने का इशारा किया और वह चौकी पर से उठ खड़ी हुई। कुछ देर तक आंखें मलते रहने के बाद जब उसने उन्हे खोला और पीछे की तरफ घूम कर देखा तो उसे वह चौकी कहीं दिखाई न पड़ी और उस जगह फर्श मे सिवाय एक काले पत्थर के चौखूटे टुकडे के जो फर्श के साथ जड़ा मालूम होता था और कुछ नजर न आया। उसने निगाह फेरी और अपने चारो तरफ की चीजों को देखते ही चौंक पड़ी।

एक बहुत बड़ा कमरा मैना की निगाहो के सामने था जो बिलकुल संगमर्मर का बना हुआ था और जिसकी अनगिनती खिड़कियो मे से कई खुली हुई थी जिनकी राह वहां काफी रोशनी और हवा आ रही थी। यह कमरा झाड़-फानूस कदीलो आदि के इलावे और भी बहुत तरह के नफीस नफीस सामान से अच्छी तरह आरास्ता था जिनकी खूबसूरती और कीमत का अन्दाज नही लगाया जा सकता था, मगर उन सब चीजो से ज्यादा ताज्जुब मैना को उन बहुत से सन्दूकों को देख कर हुआ जो इस बड़े कमरे के एक तरफ की दीवार के साथ रक्खे हुए थे और उसने उनकी तरफ दिखा कर शेरसिंह ने पूछा, "इन सन्दूको मे क्या है?" शेरसिंह ने यह सुन जवाब दिया, "यह वह सौगात है जो तिलिस्म तोडने वाले के लिए तिलिस्म बनाने वाले रख गये है, अगर तुम चाहो तो दो एक सन्दूक खोलकर देख सकती हो।"

मैना बोली, "कोई जरूरत नहीं", मगर उसी समय उसकी निगाह खिडकी की राह कमरे के बाहर की तरफ चली गई और वह कोई चीज देख कर बोली, "नीचे आंगन मे वह क्या दिखाई पड रहा है?" शेरसिंह ने जवाब दिया, "वह वैसी ही एक महाकाल की मूरत है जैसी कि उस मन्दिर मे है। मामूली रास्ते से आने वाला बहुत घूमता फिरता उसी मूरत के सामने निकलेगा।" मैना ने फिर पूछा, "क्या रत्नमंडप यही जगह है?" शेरसिंह ने जवाब दिया, "वह भी इसी जगह है मगर यह वह जगह नही है!" मैना ने फिर कहा, "क्या मै उसे देख सकती हूं?" शेरसिंह बोले, "जरूर, मगर यदि इस वक्त न देखती तो अच्छा था, कारण वहां की चीजे देख तुम अपने को सम्हाल न सकोगी और तरह तरह की बाते पूछने लगोगी जिससे देर लगेगी।" मैना ने जवाब दिया, "खैर जाने दीजिए फिर कभी

देखा जायगा," मगर इतना बतला दीजिये कि अगर जो कोई भी आवे वही इन सन्दूको को खोल कर देख सकता है तो इनके भीतर रक्खी चीजो की हिफाजत कैसे होती होगी ? देखने वाला इनमे से चीजें निकाल भी तो ले सकता है ?"

शेरसिंह मैना का यह सवाल सुन कर हंसे और बोले, "हर एक ऐरा गैरा इन सन्दूको को खोल तो क्या छू भी नही सकता । इनके पास जाने वाला झपेटा खाकर दूर जा गिरेगा और छूने पर तो उसे तनोबदन की सुध न रहेगी । सिर्फ मैं ही ऐसा कर सकता हू या मेरे साथ रहते हुए तुम कर सकती हो । यदि ऐसा न होता तो क्या इन सन्दूकों मे की कोई चीज यहा बचती ? अब तक न जाने कितने लोग कितनी दफे यहा आ चुके है ।"

मैना० । (ताज्जुब से) अच्छा ! यहां तक लोग आ जा सकते है ।"

शेर० । हां, तिलिस्मी मामलों मे कुछ भी दखल रखने वाला यहां तक आ सकता है, और तो और नन्हो भी यहा आ चुकी है* तथा दारोगा जैपाल और भूतनाथ तो कई बार आ चुके हैं† । दिग्विजयसिंह भी बराबर आते रहते है, मगर यहा की कीमती सौगातें केवल तिलिस्म तोडने वाले के लिए है और वही इन सन्दूको और उस रत्न-मण्डप की दौलत निकाल सकता है‡ । खैर अब आगे बढना चाहिये, देर करना मुनासिब नही ।

शेरसिंह आगे बढे और उस कमरे के दाहिनी तरफ पड़ने वाले एक दर्वाजे को किसी तर्कीब से उन्होने खोला । दर्वाजा खोलते ही मैना चमक गई क्योकि उसे अपने सामने हो वह तिलिस्मी शैतान खडा दिखाई दिया जिसकी सूरत बन कर शेरसिंह अभी थोडी ही देर पहिले शिवदत्त और श्रीविलास को परेशान कर चुके थे, मगर शेरसिंह ने उसे समझा कर कहा, "घबराओ नही, यह दूसरा शैतान तुम्हारे सामने नही आ पहुचा है बल्कि यह भी उसी तरह की एक पोशाक है जिससे मैंने वहा काम लिया था या जो राजा दिग्विजयसिंह के सन्दूक से तुम मेरे लिए निकाल लायी थी और यहा इसमें की एक नही बल्कि दो पौशाकें थी, (हाथ से

---

* रोहतासमठ दूसरा भाग, दूसरा बयान ।

† रोहतासमठ दूसरा भाग, छठवां बयान । इन घटनाओ का हाल भूतनाथ उपन्यास मे खुलासा तौर पर लिखा जा चुका है ।

‡ पाठको को याद होगा कि प्रभाकरसिंह लोहगढी का तिलिस्म तोडते हुए इस कमरे तक पहुच चुके है, मगर उन्हे यह भी स्मरण रखना चाहिये कि वह घटना अब के बाद की है इसलिए इन जगहों की आज ठीक वही हालत नहीं है जो उस समय पाठको के देखने सुनने में आई या आवेगी ।

बता कर) देखो वह बगल वाली खूंटी खाली है।"

मैना यह सुन ताज्जुब से बोली, "दो पौशाके क्यों, क्या तिलिस्म तोड़ने वाले दो व्यक्ति होंगे ? और अगर हो ही तो वह दूसरी कहा गई !"

शेर० । हा इस तिलिस्म को तोड़ने वाले जहा तक मैने सुना है दो ही व्यक्ति होंगे, और वह दूसरी पौशाक वही है जो इस समय मेरे बदन पर है, किसी तरह से तुम्हारे राजा दिग्विजयसिंह यहा तक पहुंच गये और इनमे से एक पौशाक उड़ा ले गये।

मैना० । अच्छा अब मै समझी, इसी पौशाक की मदद से उन्होने पुजारीजी की वह किताब ले ली होगी जिसे वे गोपालसिंह को देना चाहते थे।

शेरसिंह मैना को लिए आगे बढे और एक बड़ी आलमारी के पास पहुंचे जो दीवार के अन्दर बनो हुई थी और जिसमे तख्ते या टाडें लगी हुई न थी। आलमारी का पल्ला खुल ये मैना को लिए हुए उसके अन्दर जा खडे हुए और हाथ बढा उसके दोनो पल्ले बन्द कर लिये। इसके साथ ही उस आलमारी की सतह, जिस पर ये खडे थे, हिली और इन दोनों को लिये दिये नीचे को उतरने लगी।

कुछ देर के बाद नीचे उतरना बन्द हुआ और मैना ने अपने को एक छोटी कोठरी मं पाया जिसमें अन्धकार था। शेरसिंह के कहने से उसने तिलिस्मी छुरी की रोशनी की और तब उसे अपने सामने ही एक छोटी और पतली सुरंग का मुहाना नजर आया। दोनों आदमी इसके भीतर घुसे और साथ ही पीछे की तरफ से एक आवाज आने से मैना समझ गयी कि आलमारी की जिस सतह ने नीचे उतर कर उसको यहा तक पहुंचाया था वह पुनः ऊपर को चली गई।

मैना को बहुत देर तक इस सुरग मे चलना न पड़ा। बहुत जल्द ही यह रास्ता समाप्त हुआ, तब उसने अपने को एक अजीब ही डरावनी जगह मे पाया जिसमे एक तरह की बदबू फैली हुई थी और जहा की हवा भी बन्द और घबड़ा देने वाली थी। छुरी की रोशनी मे मैना ने देखा कि उसके सामने की जमीन आदमियो और जानवरो की हड्डियो से एक दम भरी हुई है तथा दूर दिखने वाली दीवारो के साथ भी तरह तरह के जानवरो की खाले और हड्डियों के ढाचे खडे या रक्खे है। बीचोबीच में कूएं की तरह का एक खाली स्थान था और उसके ऊपर एक देग लटक रहा था*। मैना घबराई हुई निगाह अपने चारो तरफ डालती हुई बोली, "बड़ी गन्दी जगह है ! आप ऐसी जगह मे क्यो आये है ?"

---

* पाठक प्रभाकरसिंह के साथ इस जगह भी आ चुके हैं। देखिये भूतनाथ चौदहवें भाग का अन्त और बीसवें भाग का आठवा बयान।

शेर०। तुम्हें इन हड्डियों ढांचों खोपडियों और खालों को देख कर घबराना न चाहिए। ये हड्डियां असल मे मसालों की बनी हुई है और उन ढांचों और खालो मे भी जो दीवार के साथ सजाये हुए है करीव करीव वही गुण है जो इस तिलिस्मी पौशाक मे है जो मेरे बदन पर है, अर्थात् इनकी मदद से उन जानवरो की शक्ल धारण की जा सकती है और तरह तरह के काम किये जा सकते है। इनको पहिनने वाले की ये पौशाकें जिरह बख्तर की तरह केवल बदन की हिफाजत ही नही करेंगी वल्कि वह जब चाहे तब लोगों की निगाहों से गायव भी हो जा सकेगा मैं तुमसे कह चुका हू कि हमारे पुजारीजी की आदत थी कि इसी तरह की कभी कोई और कभी कोई जानवर की पौशाक पहिन लेते और उसी की सूरत मे घोर जंगल मे विचरा करते थे।

मैना०। हा ठीक है मुझे ख्याल है, तब जरूर यही से उन्होने वह भालू की खाल ली होगी जिसकी सूरत बने हुए जगल मे घूम रहे थे जब गोपालसिंह और कामेश्वर ने उनको देखा और भालू समझ कर घायल किया था।

शेर०। हा यही वात है, मगर मै इस जगह तुम्हे इसलिए लाया हूं कि यह भी तिलिस्म मे आने जाने की एक मुख्य राह है और यहां तुमको वार बार आना पड़ेगा। इस जगह से एक रास्ता बाहर निकलने का ऐसा है जिससे चल कर तुम अपने को घोर जगल मे पाओगी। (कुछ सोच कर) मैं समझता हू कि तुम्हे वह राह भी दिखा ही दू, न जाने कब जरूरत पड़ जाय, अच्छा आओ मेरे पीछे पीछे चली आओ।

जमीन पर पड़ी और चारो तरफ फ़ैली हुई हड्डियो पर पैर रखते हुए शेरसिंह आगे वढे और मैना उनके साथ हो ली। समूची जगह पार कर शेरसिंह सामने की दीवार के पास पहुचे जहां एक बनमानुष की बडी सी खाल लटक रही थी। शेरसिंह ने हाथ वढा कर उस खाल को एक तरफ हटा दिया और तब मैना को उसके पीछे दीवार मे एक छोटा आला नजर आया जिसमे कोई मूरत बनी हुई थी। शेरसिंह ने इस मूरत के पेट पर अगूठा रख कर जोर से दबाया जिसके साथ ही खटके की आवाज हुई और बगल मे एक सुरंग का मुहाना नजर आने लगा। शेरसिंह इस सुरंग के अन्दर घुसे और मैना उनके साथ हुई। ज्यादे दूर जाना न पडा, थोडी ही दूर जाकर सुरग समाप्त हो गई और एक लम्बी चौड़ी जगह नजर आई जहा कुछ अद्भुत सामान मैना को दिखाई दिया। सामने एक छोटा चबूतरा था जिस पर लाल रग की कोई मूरत वैठी हुई थी और उस कोठरी के चारो कोनो मे चार शेर वैठाए हुए थे जो धात के थे या पत्थर के इसका पता

नहीं लगता था* । शेरसिंह ने उन शेरों और मूरत की तरफ बता कर कहा, "यह सब तिलिस्मी कारीगरी है और तर्कीब करने से इन चीजो से तरह तरह के काम लिए जा सकते है, मगर मेरा मतलब तुम्हे यहां लाने से कुछ दूसरा ही है । (हाथ से बता कर) वह उस तरफ देखो, जहां से थोड़ी रोशनी आ रही है । उस राह से थोड़ा आगे जाने पर एक कूआ मिलेगा । इस कूए में कडियां लगी है जिनकी सहायता से आदमी सहज ही मे इस जगह के बाहर जा सकता है ।"

शेरसिंह ने इस जगह और रास्ते के बारे मे और भी कुछ बातें मैना को बताई और तब पुन: वापस हुए, मगर इस बार वे उस पहिली जगह नहीं गए जहां से यहां तक आए थे बल्कि एक दूसरे ही रास्ते पर चले । चबूतरे के ऊपर जो लाल मूरत बैठाई हुई थी उसके पीछे की तरफ जाकर शेरसिंह ने चबूतरे की दीवार मे किसी जगह हाथ रखकर जोर से दबाया जिससे वहां एक रास्ता पैदा हो गया और नीचे उतरने के लिये सीढिया नजर आने लगी । मैना को लिए शेरसिंह इन सीढियों की राह नीचे उतर गए और अब मैना को पता लगा कि मूरत और चबूतरा भीतर से खोखला है और यहां खडे होकर मूरत की आखों और खुले मुंह की राह बाहर का हाल चाल देखा जा सकता है* । काठ की एक सीढी की राह शेरसिंह यहा से और भी नीचे उतरे और एक दूसरी कोठरी में पहुंचे जो ऊपर वाली कोठरी से बड़ी और कुशादा थी । इस कोठरी की पूरब वाली दीवार के साथ एक ताख बना हुआ था जिस पर गणेशजी की मूरत रक्खी थी । शेरसिंह ने इस मूरत के साथ कोई तर्कीब की जिससे उसी जगह दीवार में एक नया रास्ता दिखाई पडने लगा और दोनो आदमी उसके अन्दर चले गए ।

यह सुरंग औरो को बनिस्बत ज्यादा लम्बी थी । मैना को देर तक इसके अन्दर चलना पड़ा जिससे वह कुछ थक गई और घबरा भी उठी । आखिर किसी तरह सुरंग समाप्त हुई और एक छोटी कोठरी से बाहर होते ही मैना के मुह से निकल पड़ा, "ओ हो, हमलोग यहां आ पहुचे ! इस जगह भी तो मैं आ चुकी हूं ।"

पाठक, यह वही खुशनुमा घाटी है जिसमे बहुत दिनो तक प्रभाकरसिह और दयाराम तथा जमुना और सरस्वती आदि रह चुके है और जिसके बारे मे बहुत कुछ हाल आपको मालूम हो चुका है । इन दोनो के ठीक सामने वही बन्दरों वाला बंगला † था और दूसरी तरफ वह मकान जिसमे पहुच कर भूतनाथ छक चुका

* इस मूरत और कोठरी का हाल भी पाठक पढ़ चुके है । देखिये भूतनाथ उन्नीसवा भाग, पाचवां बयान ।

† भूतनाथ तेरहवां भाग, छठवां बयान ।

था* । मगर इस समय सब कुछ अन्धकार के काले पर्दे के अन्दर छिपा हुआ था। यहां इस समय एक दम सन्नाटा था अस्तु ये दोनो एक साफ जगह देख कर बैठ गए और शेरसिंह ने इस जगह की इमारतो और रास्तो के बारे में तरह तरह की बाते मैना को बतानी शुरू की।

बहुत देर तक शेरसिंह मैना को तरह तरह की बातें समझाते रहे यहां तक कि जब उनकी बातें समाप्त हुईं तो रात बिलकुल बीत चुकी थी और पूरब तरफ का आसमान सुफेदी पकड़ रहा था। उस समय शेरसिंह ने अपनी बातो को यह कह कर समाप्त किया—

शेर०। तिलिस्मी रास्तों का हाल जहां तक मुझे मालूम था और अब जो कुछ आगे की कार्रवाई मैं करना चाहता हू वह सब मैने खुलासा तुमसे बयान कर दिया। इस जगह तक मै तुमको पहिले भी ला चुका हू और यहां से बाहर निकलने और यहा तक आने के कई रास्तो का हाल भी तुमको बखूबी बता चुका हू। मै समझता हू कि अब तुम्हारी थकावट दूर हो चुकी होगी और चूकि अब सवेरा होना ही चाहता है अस्तु तुम अब यहां से जाओ और इस घाटी के बाहर होकर बलभद्रसिह के पास पहुंचो, वहा जो कुछ करना है सो तुमको मालूम ही है।

मैना०। मुझे बखूबी याद है और आप उस तरफ से बिल्कुल बेफिक्र रहिये, मै वह काम निपटाती हुई जहा तक जल्दी हो सकेगा रोहतासगढ लौट जाऊगी और बूआजी को सब बातों की खबर कर दूगी, पर यह तो कहिये कि आप अब कहा जायगे और क्या करेंगे?

शेर०। मेरा मुख्य काम तो तुम जानती ही हो, मालती और प्रभाकरसिंह की सहायता करना और उनसे तिलिस्म तुड़वा कर पुजारीजी को छुटकारा दिलाना, मगर इस वक्त का काम अगर तुम पूछती हो तो मै यहा से सीधा लोहगढी जाऊंगा और मालती से मिलूगा। आखिरी दफे जब मैं उससे मिला था तो मैने उससे कहा था कि हेलासिंह के कब्जे से लोहगढी की ताली लिये बिना काम न चलेगा, पर अब जब देवीरानी की कृपा से तिलिस्म की असली ताली मुझको मिल गई है और मैं तिलिस्मी मामलो का अच्छी तरह जानकार भी हो गया हूं तो अब उन सब झमेलो मे पडने की जरूरत नही अस्तु मै उन लोगो को सीधा तिलिस्म तोडने के काम मे लगा दूगा। मगर इस सिलसिले में मुझे भूतनाथ पर कड़ी निगाह रखनी पडेगी बल्कि एक बार उसके सम्बन्ध में इन्द्रदेव से भी मिलना पडे तो ताज्जुब नहीं।

मैना०। हां सो तो जरूरी ही है, मगर तिलिस्मी मामलो की खबर.......

---

* भूतनाथ नौवा भाग, नौवां बयान।

शेर०। नही नही, तिलिस्म के नियमों के अनुसार इन बातों की खबर मैं किसी से भी, यहां तक कि तिलिस्म तोडने वालों को भी नहीं कर सकता, अस्तु मुझे सब कुछ करते हुए भी सभों की निगाहो से बचे रह कर काम करना पडेगा। खैर वह सब बन्दोबस्त मैं कर लूगा और सच पूछो तो इसी वास्ते यह तिलिस्मी पोशाक मैंने कब्जे में की भी है, तुम वह सब फिक्र छोड़ो और अब उठ खड़ी होवो देखो अब पौ फटा ही चाहती है। चूकि तुमको बलभद्रसिंह की तरफ जाना है इसलिए मेरी राय मे तो तुम उस नाले वाले रास्ते से बाहर हो तो अच्छा है। उधर से जाने मे तुमको जरूरी कामों से फारिग होने का भी सुभीता रहेगा और पैदल भी कम चलना पडेगा।

कुछ बहुत ही जरूरी बातें मैंना को और भी समझाने बुझाने के बाद शेरसिंह उठ खड़े हुए और उस बन्दरों वाले बंगले की तरफ रवाना हो गए, उधर मैंना भी उठी और इस छोटी पहाड़ी के नीचे उतर उस नाले के किनारे किनारे चल पड़ी जो इस सरसब्ज जमीन के बीच मे से बह रहा था।

इसी के घंटे भर बाद हम मैंना को जंगल मे उस नाले के रास्ते बाहर निकलते देखते है जिसमे से गोपालसिंह को आते जाते पाठक कई बार देख चुके है*। इधर उधर की आहट लेने बाद जब उसने कही किसी को न पाया तो जल के बाहर निकल सुस्ताने लगी। उस समय उसकी आँखें दूर के एक पेड़ पर फैले कुछ कपड़ो पर पड़ी तथा वह सोचने लगी कि जरूर कोई और आदमी भी इस जगह होगा जिसके ये कपड़े होगे। उसने इधर उधर गर्दन घुमा कर देखा और उसकी निगाह भूतनाथ पर पड़ी जो ललचौही निगाहो से उसकी तरफ देखता हुआ उधर ही बढ़ा आ रहा था। वह क्रोध मे आकर उठ खड़ी हुई और तिलिस्मी छुरी के कब्जे पर हाथ रख गुस्से भरी निगाहो से उसकी तरफ देखने लगी, मगर इसी समय उसे ख्याल आ गया कि सम्भव है कि नजदीक से देख कर भूतनाथ उसे पहिचान ले और तब शेरसिंह का भेद छिपा रहना मुश्किल हो जाय, अस्तु उसने अपना रुख बदल दिया और पलट कर एक चीख के साथ पुनः उसी नाले के अन्दर कूद पड़ी।

पाठक, इसी घटना का हाल हम भूतनाथ दसवें भाग के चौथे बयान मे लिख चुके है और नाले मे कूद कर भूतनाथ की जो दुर्गति हुई यह भी वही बयान कर आए है।

दूसवां बयान

सुबह का समय है और पौ फटा ही चाहती है। घोर जंगल के बीच मे से बहते हुए एक नाले के किनारे पत्थर की चट्टान पर चुपचाप गाल पर हाथ रक्खे

* भूतनाथ आठवां भाग, आठवां बयान।

शेरसिंह बैठे हुए है ।

हम नहीं कह सकते कि इस समय क्या क्या या किस किस तरह के ख्याल उनके मन मे दौड़ रहे है पर इसमे कोई शक नही कि वे किसी तरह की गहरी गम्भीर चिन्ता मे डूबे हुए है क्योंकि उनके माथे पर पड़ी हुई लकीरें इस बात को छिपा रहने नही देती ।

देर तक इसी तरह बैठे रहने के बाद आखिर उनके विचारों ने उनको यहां तक दबाया कि वे परेशान होकर अपनी जगह से उठ खड़े हुए और उसी नाले के किनारे पीठ पीछे दोनों हाथ बांधे हुए इधर से उधर टहलने लगे । साथ ही उनके मुंह से कुछ टूटे फूटे शब्द निकलने लगे जिनसे यद्यपि पूरा तो नही फिर भी कुछ कुछ उनकी चिन्ता का कारण प्रकट होने लगा—"........सोचो क्या तो होता क्या है !........तिलिस्मी किताब मिल जाने........दोनो की मदद करके .... छुड़ा-ऊंगा और पुजारीजी........लेकिन वे ही दोनों गायब........! न तो मालती का पता है न प्रभा....लोहगढ़ी में देखा, अजायबघर में देखा, खास बाग में....जब वे ही दोनो गायब है तो तिलिस्म कैसे टूटे....मेरे मददगार जिनमें कुछ....इन्द्रदेव और दलीप....ये भी अपनी अपन . .."

यकायक शेरसिंह चौंके और घूम कर पीछे की तरफ देखने लगे जिधर से आने वाली किसी तरह की आहट उनके कानो मे पड़ी थी । पैरो के नीचे पड़ कर दबते हुए पत्तों ने किसी के आने की सूचना दी और कुछ ही देर बाद एक नकाबपोश पर निगाह पड़ी जो उन्ही की तरफ बढा आ रहा था । देखते देखते वह इनके पास आ पहुंचा और इनको पहिचानते ही उसने अपने चेहरे पर की नकाब उलट दी जिससे शेरसिंह के मुंह से निकल पड़ा, "वाह वाह, शाहजी ! आपने तो मुझे बहुत बडे तरद्दुद में डाल दिया था । कहां थे आप आखिर !"

दलीपशाह ने जवाब दिया, "मै बहुत बडे झमेले मे पड़ गया था और इसमें शक नही कि ठिकाने पर मुझे न पाकर आपको जरूर तरद्दुद हुआ होगा, पर साथ ही मेरी बातें सुनकर आपकी बहुत कुछ फिक्र दूर भी हो जायेगी । आज कल दुश्मनो के जाल इस कदर चारो तरफ फैले हुए हैं कि सबसे पहिले मै यह निश्चय कर लेना चाहता हूं कि आप शेरसिंह ही है कोई गैर नही और इसलिए कहता हूं—निशापति ।"

शेरसिंह ने जवाब दिया 'शशधर' और तब दलीपशाह का हाथ पकड़ कर बोले, "सबसे पहिले आप यह बताइये कि मालती कहा है ?"

दलीपशाह बोले, "वह दुश्मनो के हाथ पड़ गयी थी पर जहा तक मेरी वाक-

फियत है इस समय हिफाजत की जगह पर और खतरे के बाहर है, आप इसको चिन्ता न करें और तप्रभाकरसिंह की तरफ से ही घबरावें। आइये, इस जगह वैठ जाइये और मेरी बातें सुनिए।"

शेरसिंह और दलीपशाह एक साफ जगह देख कर बैठ गये और आपस मे बातें करने लगे—

दलीप०। आप आखिरी दफे जब मुझसे मिल के और मालती की हिफाजत मेरे सुपुर्द करके गये तब से यद्यपि दिन तो ज्यादे नहीं बीते पर घटना-चक्र इस तेजी से घूमा है कि जिसका कुछ हिसाब नही। जमानिया मे जो कुछ हुआ और जो कुछ हो रहा है वह तो जरूर आपको मालूम ही होगा ?

शेर०। हां मुझे सब हाल पूरा पूरा मालूम है।

दलीप०। और इन्द्रदेव को भी उस जाल मे पड़ कर....

शेर०। वह भी मै जान चुका हू तथा आप जिन चक्करों मे पडे हुए है उनकी भी मुझे कुछ कुछ खबर है। मुझे अफसोस है तो यही कि इस समय मै खुद ऐसी हालत में हूं कि आप लोगो की मदद करना तो दूर रहा उलटा आपको अपनी सहायता करने के लिए मुझे मजबूर करना पड रहा है!

दलीप०। खैर उस बात को जाने दीजिए और मुझसे सुनिये कि मैने उस काम के बारे मे क्या किया जो आप मेरे सुपुर्द कर गये थे। आपने मालती की हिफाजत मेरे जिम्मे की थी और इसके लिए लोहगढी और अजायबघर के कुछ गुप्त रास्तो का हाल भी बताया था ताकि मै वहा जाकर उस पर निगाह रख सकूं।

शेर०। ठीक है।

दलीप०। साथ ही आपने अपना यह अनुमान भी मुझसे कहा था कि आपकी समझ मे मालती तथा प्रभाकरसिह अथवा इनमे किसी एक के हाथ से लोहगढी का तिलिस्म टूटेगा जिसकी ताली हेलासिह के पास है ऐसा आप सोचते है।

शेर०। जी हा, और मैंने उसके कब्जे से ताली निकालने का उद्योग करने की आपको सलाह दी थी।

दलीप०। ठीक है, आपने मालती और प्रभाकरसिह को दारोगा के पजे से छुड़ाया है यह बात तो हम लोगो को तब मालूम हुई जब आपने इन्द्रदेव से और मुझसे ऐसा कहा, मगर यह जानकारी होने के पहिले ही हम दोनो को प्रभाकर-सिह के लोहगढी मे होने की खबर लग चुकी थी और मालती को भी हम वहां देख चुके थे यद्यपि कैद की सख्तियों की वजह से उसकी सूरत इस कदर बदल गई थी उस वक्त हम उसे पहिचान न सके।

शेर० । जी हां, आपने मुझसे कहा था कि आपने किसी औरत के साथ प्रभाकरसिंह को तिलिस्म के अन्दर जाते देखा था* ।

दलीप० । जी हां, खैर तो जब आपके बताने से मैने मालती को पहिचाना तो मौका पाकर मै उससे मिला और अपना परिचय उसको देकर आपने जो जो बाते कही थी वह उससे कही जिससे वह बहुत प्रसन्न हुई । उस समय उसी के कहने से मुझे मालूम हुआ कि आपने किसी जमाने मे उसको थोड़ी बहुत ऐयारी भी सिखाई थी और उसी की मदद से वह स्वय हेलासिह से तिलिस्म की चाभी भी ले लेने की कोशिश कर रही थी । जब यह बात उसने मुझसे कही तो मैने सब तरह से उसकी मदद करने का वादा किया । इसमे कोई शक नहीं कि मालती बड़े दिल की और हिम्मत वाली औरत है । इतने दिनो की कैद ने भी उसे दबाया न था और उसने बड़ी बड़ी चालाकिया की । ताली लेने के सिलसिले मे वह नागर मनोरमा गौहर दारोगा हेलासिह और मुन्दर इन सभो से मिली और इन सभों ही को उसने अपने जाल मे फसाया पर अफ़सोस कि उसकी किस्मत ऐन मौके पर धोखा दे गयी । आप ही की बात मान वह प्रभाकरसिह को लोहगढी मे ले गई थी । पर वे उससे रूठ कर चले गये और दुश्मनों के हाथ मे पड़ गये और उनको छुड़ाने की चेष्टा मे मालती स्वयं भी दुश्मनो के कब्जे मे पड़ गई ।

शेर० । अरे ! अच्छा तब ? किसने उसे गिरफ्तार किया !

दलीप० । दारोगा के हुक्म से जैपाल ने उसका पीछा किया और हेलासिह की मदद से उसे पकड लिया । तब ये दोनों उसे लेकर तिलिस्म के अन्दर की एक ऐसी जगह मे चले गये जहां मैं कुछ भी कर न सकता था अस्तु मुझे सिवाय इसके और कुछ न सूझा कि किसी प्रकार महाराज को तिलिस्म मे जाकर मालती की खोज करने पर तैयार करू, और आखिर मैने ऐसा ही किया । मौका पाकर मालती की अगूठी मैंने उतार ली और उसे एक पत्र के साथ अपने शागिर्द के हाथ महाराज के पास भेजवाया तथा उसे पाते ही महाराज तिलिस्म के अन्दर घुसे † ।

शेर० । तब क्या हुआ ? महाराज के लिए तो उन दुष्टों का पता लगाना और मालती को खोज निकालना कुछ भी मुश्किल न था ।

दलीप० । बेशक और उन्होने बहुत जल्द सभो ही का पता लगा लिया पर अफसोस ऐन मौके पर कम्बख्त दारोगा वहां पहुंच गया जिसने महाराज को काबू मे कर लिया और मेरा सोचा विचारा सब धरा ही रह गया ।

---

* देखिए भूतनाथ नौवां भाग, आठवां बयान ।

शेर० । तब मालती भी पुनः दारोगा के कब्जे में पड़ गई होगी ।

दलीप० । नहीं, उस समय तक मेरी जुबानी यह सब हाल सुन कर और कुछ भूतनाथ के बताये कई भेदो से होशियार होकर इन्द्रदेव तिलिस्म में घुस चुके थे । मालती को तो उन्होने हिफाजत की जगह भेज दिया और स्वयम् महाराज को दारोगा के पंजे से छुड़ाने के लिए चले पर दारोगा के चकमे में पड़ कर बेहोश हो गये जिससे वह अपने वाली कर ही गुजरा । इसके बाद ही महाराज की मौत की खबर हम लोगो को लगी ।

शेर० । तो क्या दारोगा के ही हाथो महाराज की मौत हुई ।

दलीप० । अब तक तो हमलोगों का यही विश्वास था, पर अब भूतनाथ की जुबानी कुछ ऐसी बातें सुनने मे आई है कि इस बारे मे सन्देह मालूम होने लगा है ।

शेर० । किस प्रकार का सन्देह ?

दलीप० । यही कि उनकी सचमुच मे मौत हुई भी या नहीं—अथवा किस प्रकार से हुई ? बात यह है कि दारोगा ने महल की एक खूबसूरत लौडी को जो महाराज के बहुत मुंह लगी हुई थी इस बात पर राजी किया कि वह महाराज के भोजन मे जहर मिला दे । यह बात किसी तरह भूतनाथ को मालूम हुई, उसने उस लौडी को पकड़वा कर उसकी जगह अपने एक कम-उम्र शागिर्द को वहां रख दिया और उसी के हाथ में दारोगा की दी हुई जहर की शीशी पड़ी । इस तरह यद्यपि जहर महाराज को नही दिया गया पर फिर भी उनकी मौत हो गई और यह भारी शक की बात है ।

शेर० । मुमकिन है कि दारोगा ने एक उसी लौडी पर ही यकीन न करके किसी दूसरे को भी वैसा ही काम सौंपा हो ।

दलीप० । ऐसा हो सकता है, पर उस वक्त और भी जो कुछ हुआ वह बहुत सन्देहजनक था । भूतनाथ के उस शागिर्द ने देखा कि महाराज तिलिस्म मे से लौट कर आए और तुरन्त अपना भोजन उन्होंने मंगवाया, उसमे कोई बुकनी मिलाई, और उसे अपने खास खिदमतगार को खिलाया, तब उसे साथ मे लेकर पुनः तिलिस्म मे घुस गये,थोडी देर बाद लौटे और पलंग पर लेट गये जहां सुबह वे मुर्दा पाये गये ।

शेर० । अच्छा ! तब तो बेशक शक की पूरी जगह है । अच्छा जरा इसका खुलासा हाल तो मुझसे कहिये ।

दलीप० । मुझे जो कुछ मालूम है मै बताता हू पर आपको ब्योरेवार हाल भूतनाथ ही से मालूम होगा जिसका शागिर्द उस समय खुद महाराज के कमरे के बाहर मौजूद था जब की यह घटना है ।

शेर०। ठीक है तो मैं उसी से सुन लूंगा क्योंकि मुझे उससे मिलना भी है। अच्छा तो अब आप मालती और प्रभाकरसिंह का हाल कहिये, वे दोनों अब कहा है?

दलीप०। मालती को तो, जैसा मैंने कहा, इन्द्रदेव ने तिलिस्म के अन्दर ही किसी हिफाजत की जगह पर रख दिया है, रहे प्रभाकरसिंह, उन्हे दारोगा ने पकड़वा कर शिवदत्त के आदमियों के सुपुर्द कर दिया जिन्होंने इन्दुमति को भी गिरफ्तार कर लिया था, पर ऐन मौके पर भूतनाथ ने उन्हे छुडाया और इन्द्रदेव के पास पहुचा दिया। इस समय इन्दुमति तो इन्द्रदेवजी के यहां है और प्रभाकरसिंह इन्द्रदेवजी के किसी काम से दारोगा की तरफ गए हैं।

शेर०। दारोगा की तरफ!!

दलीप०। हां, इन्द्रदेव की स्त्री सर्यू दारोगा की कैद मे है और उसी को छुड़ाने के लिए........

कहते कहते दलीपशाह रुक गए। उनके कानों मे किसी तरह की आहट आई थी जिसने शेरसिंह को भी चौंका दिया था। दोनों आदमी इधर उधर देखने लगे और शीघ्र ही जान गए कि कई आदमी एक तरफ को जा रहे हैं जो यद्यपि इनसे बहुत दूर और जंगल के भीतर थे फिर भी कुछ कुछ नजर आ रहे थे। दलीपशाह ने कहा, "इस समय इस जंगल मे से इन आदमियो का गुजरना ताज्जुब पैदा करता है।" शेरसिंह बोले, "बेशक, और मैं चाहता हूं कि इनका पीछा करूं क्योंकि अगर मेरा खयाल गलत नही है तो ये लोग लोहगढ़ी की तरफ जा रहे हैं।"

दलीपशाह और शेरसिंह उठ खडे हुए और पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाते और आहट बचाते हुए उन आदमियों के पीछे पीछे जाने लगे, साथ ही धीरे धीरे बातें भी होती रही। शेरसिंह ने पूछा—

शेर०। मैने यह खबर सुनी थी कि इन्द्रदेवजी की स्त्री और लड़की गायब हो गई थी और अन्त में दारोगा के ही कब्जे से निकली।

दलीप०। हां, उसी कम्बख्त ने अपने ऐयारो के जरिये उनको घर से बहका कर मंगवाया और कैद कर रक्खा था।

शेर०। इन्द्रदेवजी पर भी आज कल मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा है, बेचारे किस किस बात की फिक्र करें, गोपालसिंह की हिफाजत करे कि प्रभाकरसिंह इन्दु दयाराम जमना आदि को बचावें या अपने घर वालों की फिक्र करें! यह तो कहो उन्ही का कलेजा है कि इतनी मुसीबतों के होते हुए भी घबरा नही रहे है और शान्ति के साथ अपना कर्तव्य करते जा रहे है।

दलीप०। बेशक नही, लेकिन फिर भी दारोगा के प्रति उनका

जो व्यवहार हो रहा है वह मुझे बिलकुल पसन्द नही है। वह इनकी जड़ काटने पर तुला हुआ है और ये उसे छोड़ते चले जा रहे है। अभी उसी दिन मेरी उनकी बात हुई थी। मैंने उनको कितना समझाया कि दारोगा को सख्त सजा दे और ऐसे जहन्नुम में पहुंचा दें कि जहां से वह कोई भी शैतानी करने लायक न रहे, पर वह बराबर यही कहते रहे कि 'नही वह मेरा गुरु-भाई है, सैकडों दफे मै उसको 'भाई' कह कर पुकार चुका हूं, उस पर हाथ उठा नही सकता', और यही बर्ताव वे भूतनाथ के साथ भी कर रहे हैं।

शेर०। मगर इधर भूतनाथ बडे रास्ते से काम कर रहा है, दारोगा की गुप्त कमेटी का भण्डाफोड़ करना उसके सिवाय और किसी के बूते की बात न थी!

दलीप०। बेशक, मगर इसका भी असल कारण भूतनाथ खुद नही बल्कि वह डर है जो उस पर हावी आ गया है। उसकी बदमाशियों से खिजला कर आखिर एक दिन इन्द्रदेवजी ने उसकी कुछ ऐसी गोशमाली कर दी कि उसके होश ठिकाने आ गए, मगर इसका असर कब तक रहेगा यह बेशक कुछ भी कहा नही जा सकता।

शेर०। (हस कर) अच्छा! यह मुझे नही मालूम। क्या बात हुई?

दलीप०। तिलिस्म मे कही कुछ मूर्तियां है जो तर्कीब करने से मनुष्यो की तरह कार्रवाई कर सकती है, उन्ही को रंग रंगा कर इन्द्रदेवजी ने दयाराम जमना सरस्वती आदि की सूरतें बनाई और... ०

शेर०। अच्छा अच्छा, आनन्दबाग मे एक बारहदरी है जिसके अन्दर कुछ ऐसे पुतले लगे हुए है जो तरह तरह के काम कर सकते है। मुझे हाल ही मे उधर जाने की जरूरत पडी थी तो उन पुतलो की शकलें जान पहिचान के आदमियों की सी बनी देख मुझे ताज्जुब हुआ था पर मन मे मैंने भी यही सोचा था कि यह सिवाय इन्द्रदेव के और किसी को कार्रवाई नही हो सकती*।

दलीप०। हा तो यह उन्हो का काम था, और उसी जगह....

कहते कहते दलीपशाह रुक गये और शेरसिंह भी ठिठक कर कुछ देखने लगे। बातें करते हुए ये लाग एक ऐसी जगह पर आ पहुंचे थे जहां घना जंगल हलका पड़ कर कुछ कुछ मैदान की सी सूरत पकड़ रहा था और सामने ही थोड़ी दूर पर लोहगढी का ऊंचा टीला नजर आ रहा था। इन दोनो की निगाह उस टीले की तरफ से आते हुए एक रथ के ऊपर पड़ी थी जिसमे दो तेज बैल जुते थे और ऊपर पर्दा पड़ा हुआ था। इन्होंने देखा कि जिन आदमियो का पीछा करते हुए ये इस तरफ आ रहे थे उनमें से कुछ ने आगे बढ़ कर उस रथ के बहलवान से बातें

---

* देखिए भूतनाथ दसवां भाग, चौथा बयान।

करी और तब जरा देर तक आपुस में सलाह करते रहे, इसके बाद उनमें से एक तो रथ पर चढ बहलवान के बगल में बैठ गया और बाकी के लोग जो चार पांच से कम न होंगे लोहगढी की तरफ घूम गये, रथ फिर अपने रास्ते पर लग गया।

शेरसिंह ने कहा, "शाहजी, मुझे कुछ रंग कुरंग नजर आता है, यह रथ यहां क्यों आया है और वे टीले की तरफ जाते हुए आदमी कौन हैं ?"

दलीप०। कहिए तो आगे बढ़ कर पता लगाऊ ?

शेर०। मेरी समझ मे आप तो रथ की तरफ बढिये और मै लोहगढी की तरफ जाऊं, मुझे वहां कुछ काम भी है।

दलीप०। ठीक है, यही मुनासिब होगा। मगर आगे के लिये कुछ सलाह मुझे देते जाइए कि अब मै क्या करू और किस फिक्र मे लगू ? शिवदत्त के ऐयारो के साथ जिस तरह की बातें हुई थो उनका हाल मैंने आपको लिख भेजा था। ये लोग अभी तक यहा मौजूद है और यद्यपि मेरा एक शागिर्द भी अभी तक उनके साथ लगा हुआ है फिर भी मुझे उनकी तरफ से इतमीनान नहीं है। वे न जाने कब क्या कर बैठें, और मैने यह भी सुना है कि आज कल खुद शिवदत्त भी इधर ही आया हुआ है।

शेरसिंह ने कहा, "हां उस विषय मे तो मैं आपसे बातें करना ही भूल गया, आप को एक बडा जरूरी काम करना है !"

शेरसिंह ने जल्दी जल्दी कुछ बाते दलीपशाह को बताईं और तब उन्हें विदा कर लोहगढी की तरफ घूमे। वे आदमी जिनका पीछा करते हुए ये यहां तक पहुंचे थे अब कही दिखाई नही पड़ रहे थे पर इन्होने उसकी ज्यादा फिक्र न की और टीले की तरफ बढने लगे फिर भी इस बात से होशियार रहे कि कोई कही छिप कर उनको देखता न हो।

टीले पर चढ जाने पर भी जब शेरसिंह को कोई नजर न आया तो उनके मुंह से निकला, "बेशक वे लोग इमारत के अन्दर चले गये है। पर खैर कोई हर्ज नहीं, मुझे भी तो अन्दर ही जाना है।" वे आगे बढे और लोहगढी के भीतर जानेके उद्योग मे लगे। बाहरी सदर दर्वाजे से जाने का ख्याल तो उन्होने छोड़ दिया और बगली गुप्त राह को पकडा। पाठक हमारे साथ कई बार इस इमारत मे आ चुके है और इसके भीतरी हिस्सो और रास्तों से भी भली भांति परिचित है अस्तु हम यहा उसका हाल नही लिखते बल्कि थोड़ी देर के लिए शेरसिंह का साथ छोड़ कर सीधे तिलिस्म के अन्दर चलते और वहां से इस किस्से का सिलसिला पकड़ते है।

वह बन्दरों वाला बंगला था अथवा जहां पर इन्द्रदेव ने मालती को भेज दिया था* सीधे उसी जगह हम पहुंचते है। सरसरी निगाह देखने से तो यद्यपि यह घाटी इस समय निर्जन और सूनसान दिखाई पड़ती है परन्तु वास्तव मे ऐसा नही है इन्द्रदेव की भेजी हुई मालती इसी सामने वाले बंगले की छत पर एक बड़ी गठरी। सामने रक्खे बैठी हुई कुछ कागजों को पढ़ रही है और उससे कुछ दूरी पर बने हुए एक दूसरे बंगले की छत पर छिपे हुए कुछ आदमी उसकी तरफ देख रहे है। ये चार या पांच आदमी वे ही है जिनका पीछा करते हुए शेरसिंह यहां तक आए हैं और इस समय शेरसिंह खुद भी इसी जगह मौजूद है मगर प्रकट रूप से नही बल्कि तिलिस्मी पौशाक पहने हुए, जिसके सबब से ये उन सभो को देख और उनकी बातें सुन सकते है पर उन सभो की निगाहे इन पर पड़ नही सकती। वे आदमी बाहर वाली जिस छत पर है शेरसिंह उसी छत के एक कोने मे बने हुए एक कमरे के भीतर है। बाहर वाले आदमियो मे कुछ बात चीत हो रही है जिसे शेरसिंह बहुत गौर से सुन रहे है।

एक०। सिवाय मालती के और कोई तो उस छत पर दिखाई नही पड़ता। तब क्यो नही हम लोग वहां पहुच कर उसको पकड़ ले और उन चीजो पर भी कब्जा कर ले जिन्हे हेलासिंह यहा छिपा गये पर वह खोद ले गई है।

दूसरा०। मै भी यही सोचता हू, देर करने से न जाने कौन आ जाय या किसी तरह की दिक्कत पैदा हो जाय। आखिर भी तो यह तिलिस्म का मामला है और यहां बात बात मे डर मालूम होता है। क्यो जवाब यारअली साहब†, आप यहां कल से है और इस जगह का हाल भी बखूबी जानते है, कहिए यहा से वहां तक जाकर मालती को पकड़ लेने मे क्या कोई खतरा है?

तीसरा०। और यह भी बताइये कि वे कागजात है क्या जिन्हे वह इतने गौर से पढ़ रही है?

यारअली०। हेलासिंह और उनकी लड़की मुन्दर कल रात मे यहां पहुंचे थे और इन चीजो को (हाथ से बता कर) उस जगह जमीन के अन्दर गाड़ गये थे। ये चीजें या कागजात है कैसे यह तो मै नही जानता पर इतना जानता हूं कि तिलिस्म के सिलसिले मे ही कुछ है और इन्ही की हमारे महाराज को जरूरत है। खैर, जब मै उन लोगो के पीछे पीछे यहां तक पहुंचा और उन्हे इन चीजो को यहा

---

* देखिए भूतनाथ तेरहवा भाग, छठा बयान।

† यह नाम चन्द्रकान्ता सन्तति मे आ चुका है और भूतनाथ उपन्यास मे भी इस ऐयार के बारे मे पाठक पढ चुके है। देखिये भूतनाथ दसवा भाग, बयान तीसरा।

गाड़ कर जाते हुए देखा तो मेरा इरादा हुआ कि यह सब कुछ निकाल कर अपने कब्जे मे कर लूं मगर फिर सोचा कि रात के वक्त तकलीफ करने की जरूरत ही क्या है, यहा कौन निकालने को आता है सुबह आराम से निकाल लूंगा और तब महाराज भी यहां मौजूद रहेगे, मगर अफसोस, कम्बख्त मालती जिसके इस जगह होने की मुझको मुतलक खबर न थी रात ही को पहुंच कर उन चीजों को निकाल ले गई और मै गफलत मे ही पडा रह गया।

पहिला०। तो खैर अब भी तो मालती और वह सामान दोनों ही पर कब्जा करना कोई मुश्किल बात नही जान पडती, यहां से उस बगले तक पहुंचने और इन सब चीजों पर कब्जा करने में क्या अन्डस है ?

यार०। अन्डस तो कोई भी नहीं है, मै सिर्फ महाराज के आने का इन्तजार कर रहा था जिन्होने कहा था कि घंटा भर दिन चढ़ने के पहिले यहां पहुंच जायेंगे, वे आ जाते तो उन्ही के हुक्म के मुताबिक आगे की कार्रवाई की जाती।

दूसरा०। मगर वे अभी तक नही आये, जाने कहां रुक गये ?

तीसरा०। और नन्हो भी नही आई जिन्होने चादना होने के पहिले पहुंच जाने का वादा किया था, पर मेरी राय मे तो अब ज्यादा देर उनकी राह न देख हमे मय सब सामान के मालती पर कब्जा कर ही लेना चाहिये, नहीं तो तिलिस्म को बात, देरी करने से न जाने क्या हो जाय।

चौथा०। ठीक है, और फिर महाराज भी आकर और कुछ थोड़ा ही कहेंगे, वही वे भी करने का हुक्म देंगे जो हम करना चाहते है।

पहिला०। मेरा भी यही कहना है।

यारअली०। तो ठीक है चलिए फिर।

दूसरा०। मगर देखिए तो, वह मालती के पास एक और आदमी कौन आ पहुचा ?

सब लोग गौर और ताज्जुब के साथ उस छत की तरफ देखने लगे जिस पर अब तक मालती अकेली ही नजर आ रही थी। सचमुच वहा एक और आदमी आ पहुचा था जिससे मालती से बाते हो रही थी। ये लोग कुछ देर उधर ही देखते रहे और तब एक आदमी के मुंह से निकला, "अरे, ये तो इन्द्रदेव है!!" दूसरे ने कहा, "बेशक वे ही तो है, मगर ये इस समय यहां कैसे आ पहुंचे ?" तीसरे ने कहा, "कही ये अपने साथ मालती को लेकर चल न दें!" पहिला बोला, "तब मालती भी जायगी और वह सामान भी जिस पर कब्जा करने के लिए हम लोग इतने दिनो से हेलासिंह के पीछे फिर रहे है!" यारअली बोला, "अब देर करना मुनासिब नही!!"

इन लोगों के देखते देखते मालती ने इन्द्रदेव को कुछ दिया जिसे इन्द्रदेव ने जोर से जमीन पर पटका और तब कोई चीज उठा कर मालती को दिखाने लगे। उनकी यह कारंवाई देख इन ऐयारों को शिकार हाथ से निकल जाने का डर हुआ और इन लोगो ने अपने काम में फुर्ती की। अपने ऐयारी के बटुए मे से यारअली ने दो तीन गोले निकाले और अपने साथियो के हाथ में देकर कहा, "इन्हे ऐसा निशाने मे फेंको कि ठीक उन दोनों के पास जाकर गिरें, बस फिर वे किसी काम के न रहेगे और हम वहां पहुंच उन्हे कब्जे मे कर लेंगे* ।"

जिस समय इन्द्रदेव मालती का दिया हुआ कोई कागज पढ रहे थे इन लोगों का फेंका हुआ पहला गोला उस छत पर गिरा और उसके जहरीले धूए ने उन दोनों को चारो तरफ से घेर लिया। यारअली के मुंह से खुशी की आवाज में निकला और उसने कहा, "बस अब ये लोग किसी मसरफ के न रहे। दोस्तो, आगे बढ़ो और दोनों को पकड़ लो !!"

लपकते हुए ये लोग सीढी की तरफ बढे और धमधमाहट के साथ नीचे उतर गए, मगर शेरसिंह जो इनके पास ही मे थे और इनकी सब बातें ही नही सुन रहे थे बल्कि मालती और इन्द्रदेव पर भी गहरी निगाह जमाए हुए थे इनके पीछे पीछे नही चले बल्कि उसी कमरे की एक दीवार के पास पहुंचे और वहां बनी हुई एक आलमारी के अन्दर घुस कर उन्होने उसके पल्ले भीतर से बन्द कर लिए। कुछ तर्कीब करते ही बगल का एक पत्थर हट गया और पतली पतली सीढियां नजर आईं जिनकी राह वे नीचे उतर गये। यह एक तिलिस्मी राह थी जिसके जरिये वे बहुत ही सहज मे उस जगह पहुंच गये जहा इन्द्रदेव और मालती थे। एक बड़ी आलमारी के अन्दर उन्होंने अपने को पाया मगर यह देख कर उन्हे ताज्जुब हुआ कि उस आलमारी के फर्श पर ही बेहोश मालती पड़ी हुई है जिसके बगल मे एक छोटी सी गठरी भी है। वह यहां कैसे आ पहुची यह सोचते ही उनके मुह से निकला, "बेशक इन्द्रदेव हिफाजत के ख्याल से इसको इस आलमारी मे बन्द कर गये होंगे, अच्छा तब उनके साथ कुछ दिल्लगी करनी चाहिए !"

अपने जेब से कागज कलम निकाल कर शेरसिंह ने जल्दी जल्दी कुछ लिखा और तब उस कागज को उसी जगह छोड़ वे मालती और उस गठरी को लिए पुनः उसी गुप्त राह में घुस गए जिसमे से यहां तक पहुंचे थे, मगर इस बार वे उस तरफ नही गए जहा से वहां आये थे बल्कि एक दूसरी ही तिलिस्मी राह इन्होने पकड़ी।

---

* इसी घटना का हाल भूतनाथ तेरहवें भाग के नौवे बयान मे लिखा गया। वे सब यारअली वगैरह शिवदत्त के ऐयार थे जिनकी वह कारंवाई थी।

इसके थोड़ी देर बाद एक ऊंची बारहदरी की छत पर पहुंचते हुए हम शेर सिंह को देखते हैं। बेहोश मालती उनके कन्धे पर थी और वह गठरी उनके हाथ मे। मालती को धीरे से उन्होने फर्श पर लिटा दिया और तब जल्दी जल्दी उस गठरी की चीजें देखने लगे। न जाने उन्हे क्या नजर आया कि वे खुश होकर बोले, "देवीरानी का ख्याल कैसा ठीक था! इन चीजो पर मालती का ही हक था और अन्त में ये उसके ही पास पहुंची। इसकी मदद से वह सहज में ही तिलिस्म तोड़ सकेगी। मगर अभी यह सामान अपने पास रखना मुनासिब है।" उन्होंने गठरी पुनः बाध कर अपने हाथ मे ले ली और कागज का टुकड़ा मालती की बगल मे रख कर यह कहते हुए उस तिलिस्मी बारहदरी के नीचे उतरे, "चल कर इन्द्रदेव को देखना चाहिए, कही कम्बख्त शिवदत्त के ऐयार उन्हे परेशान न करें!"

मगर उतरते ही उतरते उनकी निगाह उस बारहदरी के बाहर गई और वे कुछ देख कर चमक उठे। उनके मुंह से निकला, "हैं! यह नन्हों कम्बख्त इस समय यहा कैसे आ पहुंची?"

सचमुच बन्दरों वाले कमरे की छत पर खडी एक औरत यहां से साफ नजर आ रही थी जिसके सामने उस छत पर बने हुए सभी बन्दर इस वक्त इकट्ठे थे और अजीब ढंग से उछल कूद मचा रहे थे। शेरसिंह ने भी इस बात को देखा और साथ ही उनके मुंह से निकला, "यह बात तो मतलब से खाली नही है! मुझे फौरन ही मुनासिब कारवाई शुरू कर देना चाहिए नही तो ये सब कम्बख्त जो इस तिलिस्म में घुस आए है गजब ढा देंगे। इस समय सबसे पहिले मुझे शिवदत्त के ऐयारों और इस कम्बख्त नन्हो की खबर लेनी चाहिए!"

फुर्ती फुर्ती शेरसिंह उस बारहदरी के नीचे उतरे और एक गुप्त राह के अन्दर चले गये। इसके बाद यहा पर जो कुछ हुआ उसका हाल पाठक भूतनाथ उपन्यास मे पूरी तरह से पढ चुके है अस्तु हमे उस सिलसिले मे कुछ लिखने की जरूरत नही है, सिर्फ इतना ही यहा पर लिख देना चाहते है कि इसी दिन की आधी रात के समय शेरसिंह अपना काम पूरा करके उस गुफ़ा वाले रास्ते से तिलिस्म के बाहर निकल रहे थे जब कुछ आदमियो ने उनको देखा और एक ने छुरी से उन पर हमला किया था।*

॥ तीसरा भाग समाप्त ॥

* देखिये भूतनाथ, तेरहवां भाग, सातवां बयान।

१२ वां संस्करण] १९७७ ई० [२२००